

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री  
**सुविधिसागर जी महाराज**

के  
50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर  
सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित  
**जिनवाणी-महोत्सव**

**सहस्रग्रन्थसंग्रह**

\* जन्मदिवस 19-03-1971

\* मुनिदीक्षा-11-05-1989

\* आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मत्तिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)





# कन्नडप्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची

सम्पादक  
के. भुजबली शास्त्री

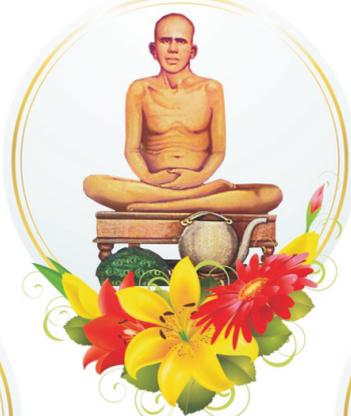
---

प्रकाशक

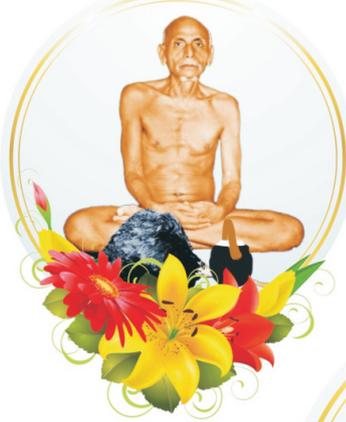
भारतीय ज्ञानपीठ



(परम्परानायक)

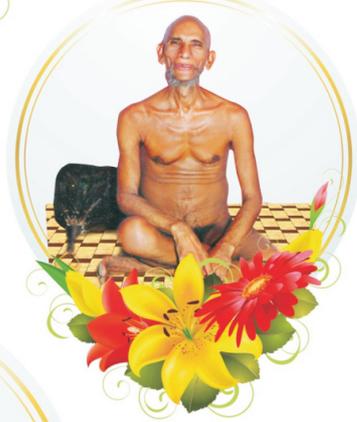


(द्वितीय पट्टाधीश)



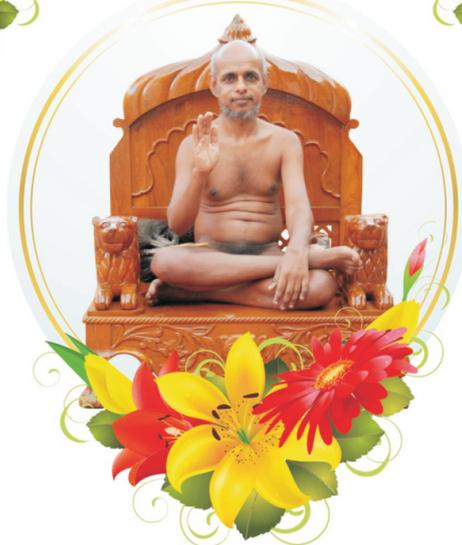
परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,  
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)



परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,  
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें। मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

## विषय-सूची

प्रास्ताविक किञ्चित्	५-६
प्रकाशकीय	७-८
प्रस्तावना	८-३०
जैन वाङ्मय पर एक दृष्टि	८-२२
प्राकृत वाङ्मय	८-१४
संस्कृत वाङ्मय	१४-१७
कन्नड वाङ्मय	१७-२१
जैन वाङ्मयकी रक्षाका श्रेय	२१-२२
ग्रन्थ भण्डारोंका संक्षिप्त परिचय	२२-२४
अत्रकाशित ग्रन्थोंके नाम	२४-२८
ग्रन्थ तालिका-निर्माणमें कठिनाइयाँ	२९
ग्रन्थवाच समर्पण	२९
मंग निवेदन	३०

जनमः के तालिकावलीय ग्रन्थ	जैन भवन	सूडवित्री के अन्य भण्डार	कारकाल	अलिपू
सिद्धास्त	१-२१	१०२-२०४	२५४-२५८	२८२-२८८
अध्यात्म	११-३३	२०५-२०६	२५८	२८४
धर्म	३४-७२	२०६-२१४	२५८-२६०	२८४-२८७ ३०७
यागशास्त्र	७९-८०	२१४	२६१	
प्रतिष्ठा	८१-८३	२१४-२१६	२६१-२६२	२८७-२८८
वनविधान आराधना	८३-९४	२१६-२२०	२६२-२६४	२८८-२८९ ३०७
न्याय तथा दर्शन	९५-१०४	२२०-२२१	२६४	२८९ ३०७-३०८
ध्याकरण	१०४-११४	२२३	२६५	२८९-२९०
क्रोड	११४-११९	२२१-२२२	२६५	२९०-२९१ ३०९
काव्य	११९-१३४	२२४	२६६	२९१-२९३ ३०९
नाटक	१३४			२९३
अलङ्कार आदि	१३५-१३७	२२५	२६६	
छन्दःशास्त्र	१३७-१३९	२२५		२९३
नीति तथा सुभाषित	१३९-१४१	२२५	२६६-२६७	२९३
पुराण	१४१-१४९	२२६-२२९	२६७	२९३-२९४ ३०९
चरित्र	१४९-१५८	२२९-२३५	२६७-२६९	२९४-२९७ ३०९
कथा	१५८-१६३	२३५-२३८	२६९-२७०	२९७-२९८ ३१०
इतिहास	१६४	२३८-२३९	२७०	२९८
आयुर्वेद	१६५-१६६	२३९-२४१	२७०-२७३	२९८-२९९
ज्योतिष	१६६-१६८	२४१-२४३	२७३-२७५	२९९ ३१०

( २ )

गणित शास्त्र	१६८-१६९	२४४	२७५	२९९-३००	
मन्त्रशास्त्र	१६९-१७०	२४४-२४६	२७५-२७६	३००	३१०
लोकविज्ञान	१७१-१७३	२४६	२७६	३०१	३१०
शिल्पशास्त्र	१७४		२७६		३११
लक्षण समीक्षा, तथा					
पाकशास्त्र	१७४-१७५	२४७	२७६-२७७	३०२	
क्रियाकाण्ड	१७५-१८२	२४७-२४९	२७७	३०२-३०३	
स्तोत्र	१८२-१९७	२४९-२५१	२७७-२७९	३०३-३०४	३११
भजन तथा गीत	१९८-१९९	२५१-२५२	२८०	३०४-३०५	३११
प्रकीर्णक	१९९-२०१	२५३	२८०-२८१	३०५-३०६	३१२
ग्रन्थकारसूची	३१३-३२४				



## प्रास्ताविकं किञ्चित्

धर्म-तीर्थ-कुंजोंकी पवित्रवाणी गणधरोंने सुनी और उसे ग्रन्थरूपमें गूँथकर अपने शिष्योंको सुनाई । इस तरह श्रुतानुश्रुत परम्परासे उनके दिव्य उपदेश भव्यजनोंको समताका पाठ पढ़ाते रहे । श्रुत-सुनेगए उपदेश स्मृतिद्वारा नूतन पीढ़ीको अलिखित ही प्राप्त होते गए । कालने करबट ली, लोगोंकी स्मरणशक्ति विनोदित क्षीण होने लगी तब युगप्रधान आचार्योंने उन छिन्न विच्छिन्न उपदेशोंको लिपिबद्ध किया । उन सूत्रात्मक उपदेशोंको मूल आधार बनाकर संख्याबद्ध विविधविषयक शास्त्रोंका निर्माण हुआ । किसी भी संस्कृतिका मर्म आधार उसका साहित्य होता है । साहित्य सुरक्षित रहा संस्कृति जीवित रही, साहित्यके नष्ट होते ही संस्कृति अपने आप विनाशके गर्भमें समा जाती है । अतः पुरातन आचार्योंने इन शास्त्रोंकी संकड़ों प्रतिलिपियाँ कराके समस्त भारतके कोने कोनेमें पहुंचा दीं ।

जैनसंस्कृतिको विदेशियोंसे उतना मोर्चा नहीं लेना पड़ा जितना समान-तन्त्रीय बौद्धसंस्कृति और प्रतितन्त्रीय वैदिक संस्कृतिसे । नास्तिक शब्द तो जैनोंके लिए रूढ़सा कर दिया गया था । मगध देशमें भूलसे भी जानेवाले वैदिकोंको प्रायश्चित्त करना होता था । मागधी अधमागधी या प्राकृत भाषाका जिसमें इन तीर्थकरोंके लोकीदयकारी उपदेश होते थे—उच्चारण करना भी पापका कारण माना जाता था । उस जीवन-मरणके कठिन युगमें इन धर्मप्राण आचार्योंने अपनी संस्कृतिकी निर्धक्की अतिशय मनोयोग पूर्वक रखाया और बढ़ाया ।

दक्षिणके भण्डारोंमें दिग्म्बर परम्पराके ग्रन्थरत्न बिखरे पड़े हैं । जैनग्रन्थोंको जलाकर पानी गरम करनेवाले प्रतितन्त्रियोंकी कमी नहीं थी । इन्हें राजाधय भी प्राप्त था । अतः भण्डाराध्यक्षोंने ताडपत्रीय ग्रन्थोंको बांध बांध कर कुएँमें डाला । भूमिगृहमें उन्हें अतिमुरक्षित किया । फलस्वरूप संकड़ों ग्रन्थरत्न कुओंमें पड़े रह गए और सहस्रों कीटकोंका भोजन बन गए । कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, उमास्वामि जैसे युगनिर्माता आचार्योंका पूरा साहित्य हर्षे उपलब्ध नहीं है । भट्टारक युगमें इन भण्डारोंका बाह्यरक्षण तो रहा पर भीतर ही भीतर वे पुद्गल जीर्ण-शीर्ण और बीमकभक्ष्य बनते गए, जिनपर जीवनकी साधनाका एक एक क्षण मृत रूप लिए हुए था । इन लोगोंने तालियाँ तो सम्हारों पर भण्डारोंको खोलकर उनके जीर्णोद्धारके प्रयत्न नहीं ही किए । कुछके लिए तो ये पूजा प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभके साधन बन जानेके कारण अपने सहस्रों विद्वजनोंको भी दुष्प्राप्य बन गए थे । अधिकल्प प० टोडरमलजी जैसे विद्वद्व्रजोंको भी इनके स्वाध्यायका अवसर न मिला और वह ग्रन्थराशि धीरे धीरे अस्त-व्यस्त जीर्ण-शीर्ण नष्टप्राय होती गई । यद्यपि बीच बीचमें ऐसे भी प्रयत्न हुए जिनसे इन ग्रन्थोंने प्रकाश और धूप देखी । अस्तु ।

आज भी संकड़ों ग्रन्थ दक्षिणके व्यक्तिगत तथा मठोंके भण्डारोंमें पड़े हुए होंगे जिनमें संस्कृतिके विविध अङ्गोंपर प्रकाश डालनेवाली ज्ञाननिधि उत्कीर्ण होगी । दिग्म्बर ग्रन्थोंकी शुद्ध प्रतिलिपियाँ दक्षिणके भण्डारोंमें ही मिलती हैं । क्योंकि इनके प्रमुख आचार्योंने दक्षिण भारतकी ही पुण्यभूमिका गौरवान्वित किया था । वहीं इन ग्रन्थोंकी आद्य प्रतिलिपियाँ हुईं । कन्नड लिपिमें छोटी इ और बड़ी ई अल्पप्राण व और महाप्राण व, द जैसे संयुक्ताक्षर और पूर्व अनुस्वारमें यथा बंध और बद्धमें कोई अन्तर नहीं होता अतः लिपिकारोंको वर्णविपर्यय होना स्वाभाविक है । अनेकों प्रतियोंमें प्रकरणके प्रकरण नकल करनेसे रह जाते हैं । इसके अनुभूत उदाहरण न्यायकुमुदचन्द्र, राजवार्तिक और न्यायविनिश्चय विवरणकी प्रतियाँ हैं । न्यायकुमुदचन्द्रकी उत्तर प्रान्तीय प्रतियोंमें एक स्थलपर २२ पत्रका पाठ छूट गया और यह छूट प्रायः उत्तरकी प्रतियोंमें चालू रही, पर पूनाकी ताडपत्रीय-प्रतिसे उसकी पूर्ति हुई । राजवार्तिकका जिन ताडपत्रीय प्रतियोंसे सम्पादन किया जा रहा है वे अत्यन्त शुद्ध तथा सदृष्टिपूर्ण हैं । मुद्रित राजवार्तिकमें कई स्थलोंमें पंक्तियाँ छूटी हैं । न्यायविनिश्चयविवरणकी यदि दक्षिण प्रान्तीय

ताडपत्रीय प्रति न मिली होती तो इसके सम्पादनकी हिम्मत मेरी भी नहीं हो रही थी। अतः जिन ग्रन्थोंकी प्रतियाँ उत्तरमें सुलभ भी हैं उनकी शुद्धतर प्रतियोंके लिए दक्षिणकी प्रतियोंकी खोज अत्यावश्यक है।

शोध, खोज और प्राचीन ग्रन्थभण्डारोंकी सूचीका निर्माण आदि ऐसे कार्य हैं जिन्हें तन्त्रसञ्चालककी अपनी संस्कृतिके उद्धारकी अटूट श्रद्धा ही सतत चालू रख सकती है। हाता अपनी श्रद्धाके द्रव्यफूल जिनवाणी-माताके चरणोंमें बखेरकर एक प्रकारसे कृतकृत्य है। पर उसकी श्रद्धाके कर्णोंका यथेष्ट विनियोग तो अन्ततः सञ्चालककी वृद्धता और उद्धारकबुद्धिपर ही निर्भर है। भगवान् जितेन्द्रकी सद्भक्तिके प्रसादसे हम सबको वह बल और सूक्ष्म मिले जिससे इस कार्यको उद्धारकबुद्धिसे आगे बढ़ा सकें।

भद्रजीकी साहू शान्तिप्रसादजीकी अटूट श्रद्धा और उन्मुक्तहस्तता तथा उनकी सद्गुण वर्धपत्नी श्री० रमाजीकी समन्वयशीलता और स्थिरता अभिनन्दनीय और अनुकरणीय है। आशा है कि वे अपने सुदीर्घ जीवनमें इस ज्ञानाङ्कुरकी विवेकधारि और सतत लगनसे पल्लवित, पुष्पित और फलित करेंगे। इस ग्रन्थके विद्वान् सम्पादक पं० के० भुजबली शास्त्रीकी अपनी व्यवस्था, कार्यतत्परता और संस्कृतिनिष्ठासे समाज सुपरिचित हैं। उनकी ही कार्यतत्परताका परिणाम है जो ज्ञानपीठकी मूडबिद्री शाखाने दो वर्षमें ही पर्याप्त कार्य किए जिनमें यह सूची मुख्य है। इस सूचीनिर्माणके फलस्वरूप विभिन्न विषयके करीब १२५ अप्रकाशित ग्रन्थोंकी प्रतिलिपियाँ पता लगा। जिनमें अनेक तो अन्यत्र अलभ्य और एकमात्र प्रतियाँ हैं। अनेकों शुद्धतम प्रतियोंकी खोज हुई जिनसे इतिहास और संशोधनप्रतियोंकी सामग्रीमें पर्याप्त वृद्धि हुई। हमें आशा है कि शास्त्रीजीकी शक्तिका इस विशामें आगे भी उपयोग होगा और हमें अपनी खोजें हुई ज्ञाननिधिसे वर्धन हो सकेंगे। शास्त्रीजी तथा शास्त्रीजीके सहयोगी हमारे विशेष धन्यवादके पात्र हैं।

सूचीकी छपाई काशीमें हुई है। यह सम्भव नहीं हुआ कि इसके प्रत्येक प्रूफ मूडबिद्री भेजे जाते अतः कुछ अनुद्वियाँ रह गई हैं। उन त्रुटियोंके उत्तरवायी हम हैं। इस कठिन कालमें जो हो सका वह आप सबके सामने है। इस सूचीके सम्पादक शास्त्रीजीने अपने प्रस्तावनाके अन्तमें आशा की है कि ज्ञानपीठ इस सूचीनिर्माण के कार्यको अवश्य आगे चलावे। ज्ञानपीठके संस्थापककी श्रद्धामें कमी नहीं है वे जल्दीसे जल्दी इस सांस्कृतिक यज्ञको सम्पन्न देखना चाहते हैं। सञ्चालक भी यथावधि प्रयत्नशील हैं कि परिस्थितियाँ अनुकूल होते ही कार्यको क्रमशः आगे बढ़ाया जाय। इस भीषण संक्रमणकालमें हमें संस्कृतिके प्राणोंकी सुरक्षाके लिए अति सतर्कतासे सतत जागरूक रहकर कर्मक्षेत्रमें डट जाना है। वस्तुतः ऐसे ही कार्य ज्ञानपीठकी देन कहे जा सकते हैं।

भारतीय ज्ञानपीठ  
बिजयावशमी  
२०११/०४/७

-महेन्द्रकुमार जैन  
ग्रन्थमाला सम्पादक

#### प्रकाशन टय्य

३०००) सूचीनिर्माण तथा सम्पादन	३००)	प्रूफसोधन
५६०) कागज	२८५)	व्यवस्था
११२५) छपाई	५००)	बैंट
३००) बाईंडिंग	१५००)	कमीशन
१५०) रेपर चित्र		
		७७२०)
५००) प्रति	कागत प्रति १५।७५	मूल्य ११) ३०

## प्रकाशकीय

दक्षिण प्रान्तीय अनुपलब्ध और अप्रकाशित ग्रन्थोंकी शोध-खोजकी भावनासे प्रेरित होकर काशीमें ज्ञानपीठ स्थापित होनेके दो माह बाद ही अप्रैल १९४४ में ज्ञानपीठकी एक शाखा मूडबिद्रीमें भी खोल दी गई। सौभाग्यसे उसी प्रान्तके प्रसिद्ध और योग्य विद्वान् विद्याभूषण पं० के० भुजबली शास्त्रीकी सेवाएँ प्राप्त हो गईं। अतः उनकी देख रेखमें पं० वी० लोकनाथ शास्त्री, पं० पद्मनाभ शास्त्री, पं० एस० चन्द्रराजेन्द्र साहित्य शास्त्री और पं० एम० पी० भोजराज पोणीने दो वर्ष निरन्तर परिश्रम करके पाँच ग्रन्थभण्डारोंकी जाँच पड़ताल की, जिसके फलस्वरूप १२५ अप्रकाशित ग्रन्थोंकी प्रतिलिपियोंका पत्रा चला और ३५३८ ताडपत्रिय और हस्तलिखित शास्त्रोंकी सविस्तर प्रस्तुत ग्रन्थ सूची तैयार हुई।

इन दो वर्षोंमें मूडबिद्री शास्त्रामें ४४५२।।। व्यय हुए। ५ ग्रन्थ भण्डारोंकी जाँच पड़तालके अतिरिक्त दशभक्त्यादि संग्रह (पृ० १००) का सम्पादन हुआ। ८ ग्रन्थों का मूल प्रतिसे मिलान किया गया, पौत्र और रत्न कविका परिचय लिखा गया।

शाखा स्थापित करते समय भावना थी कि दक्षिण प्रान्तके समस्त ग्रन्थ भण्डारों का परिश्रमी और योग्य विद्वानों द्वारा निरीक्षण कराके एक बृहत् तालिका बनवाई जाय। और उनमेंसे उपलब्ध अप्रकाशित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अधिकारी विद्वानोंसे सम्पादित कराके प्रकाशित किए जाएँ। किन्तु हृदयस्थित भावनाएँ पूर्ण न हो सकीं; निम्न बाधाएँ मार्ग रोककर खड़ी हो गईं जिसके कारण दो वर्ष बाद कुछ समयके लिये शाखा बन्द कर देनी पड़ी।

(१) दक्षिणप्रान्तीय ज्ञानपीठ शाखा द्वारा सम्पादित ग्रन्थ कन्नड भाषामें होनेके कारण उनके मुद्रण और विक्रयका प्रबन्ध उसी प्रान्तमें करना पड़ता। कागजका अभाव, प्रेसकी असुविधा और उस प्रान्तका विक्रय आदिका अन्भव न होनेसे प्रकाशनका साहस नहीं हुआ। मुद्रण, प्रचार, विज्ञापन, भेंट, बिक्री आदिका कार्य इतना बढ़ता कि हमारे सम्हाले न सहलता।

(२) ग्रन्थसूची आदिका कार्य भी इतना व्यय-साध्य मालूम हुआ कि कई पुरातत्त्वप्रेमी और सहयोगी विद्वानोंकी सम्मतियों और अपनी समाजकी रुचिको देखते हुए उत्साह नहीं हुआ कि सूची-निर्माणमें इतना अधिक व्यय किया जाय। क्योंकि हमारे समाजकी प्रथम तो ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रकाशनकी ओर रुचि नहीं है और कदाचित् कुछ महानुभावोंको है भी तो उनमें से अधिकांश मूफ्त साहित्य भेजनेकी निरन्तर प्रेरणा करके पारमाधिक प्रकाशन संस्थाओंका उत्साह बढ़ाते रहते हैं (?) जिस समाजमें महाधवल जैसे दुष्प्राप्य सिद्धान्तग्रन्थ मूफ्त पढ़नेकी अभिलाषा लवती हो, उसके लिये इतना अधिक व्यय करके सूचीपत्रके कार्यको जारी रखनेका साहस हमें नहीं हुआ और इन दो वर्षोंमें जिन ग्रन्थ भण्डारोंकी तालिका तैयार हुई, वही प्रेममें दे दी गई।

ज्ञानपीठ हृत्त्वपूर्ण भव्य प्रकाशनके लिये निरन्तर प्रयत्नशील है, परन्तु जब कभी अन्भव और वयोवृद्ध गुरुजनोंसे सुननेमें आता है कि अधिकसे अधिक उपयोगी ग्रन्थोंकी भी ५०० प्रतिशत १५-२० वर्षोंमें टिननासे निकल पाती हैं और उसमें भी अधिकांश भेंटस्वरूप प्राप्त करके ही जिन्वाणी माताका उद्धार देखना चाहते हैं तो उत्साह पर पाला-सा पड़ जाता है।

ज्ञानपीठके संस्थापकोंकी ओरसे पुरातत्त्व साहित्योद्धार और नवीन उपयुक्त सुकृतिपूर्ण साहित्यके निर्माण और प्रकाशनमें लाखों रुपये व्यय किये जा सकते हैं किन्तु वह लाखोंकी लागतका साहित्य पानीकी तरह मूफ्त बहा दिया जाय, इससे बढ़कर साहित्यका और रचयिताका अपमान और क्या हो सकता है? आज हमारी समाजमें इसीलिये गौरवयुक्त सुकृतिपूर्ण साहित्यका अभाव-सा है क्योंकि हमारे यहाँ ग्राहक उँगलियों पर गिने जा सकते हैं। जिस साहित्यके जितने अधिक ग्राहक होंगे, वह उतना ही विकसित और सुलभ होगा।

ज्ञानपीठ-प्रकाशनके सम्बन्धमें कई विद्वानोंने सम्मति दी है कि पुस्तकोंका मूल्य लागतसे तिगुना रखा जाय, ताकि लेखकों, सम्पादकों, अनुवादकों और प्रूफ संशोधकोंको यथेष्ट पारिश्रमिक और पारितोषिक दिया जा

सके। और प्रकाशनके धरातलको ऊँचा किया जा सके। किन्तु अधिक महानुभावोंका संकेत ग्रन्थोंका मूल्य लागतसे भी कम रखनेकी ओर है। परन्तु ज्ञानपीठके संचालक न इसे व्यापारिक संस्था बनाना चाहते हैं, न इसे खेराती संस्थाका ही रूप देना चाहते हैं। वे इसे एक आदर्श और स्वावलम्बी संस्था बनानेकी अभिलाषा रखते हैं। ताकि ज्ञानपीठ अपने पाँवों पर खड़ी होकर उत्तमोत्तम साहित्यका सुजन और प्रकाशन कर सके। न वे लेखकों, सम्पादकोंके श्रमके शोषणके पक्षमें हैं, न वे इतना अधिक ही देना चाहते हैं कि वह ग्राहकोंका बोझ बन जाय।

अनुसन्धानात्मक साहित्यके मूल्यको बाजारू सस्ते साहित्यसे तुलना करना मोतियों का गुँजाके साथ कीमत अँकना है। संस्कृत, प्राकृतके ग्रन्थोंका क प्रतियोंसे पाठान्तर फिर अनेक ग्रन्थोंसे टिप्पण सहित सम्पादन ५-६ बार प्रत्येक फार्मका प्रूफ संशोधन आदि सब ऐसे व्ययसाध्य कार्य हैं जिन्हें अनुसन्धानप्रेमी ही जान सकते हैं। इस तरहके खोज पूर्ण ग्रन्थ कई सहयोगी संस्थाओं द्वारा ५० २४ मूल्य ६), ५० १५० मू० २०), ५० ६०० मूल्य ५) में बिक रहे हैं। उनका यह मूल्य कुछ अधिक नहीं है क्योंकि इनके प्रकाशनमें काफी श्रम और व्यय हुआ है।

ज्ञानपीठका प्रकाशन भी हम उत्तरोत्तर गौरवयुक्त बनानेके अभिलाषी हैं। जिस तरहका कलापूर्ण प्रकाशन हम करना चाहते हैं, वह हमारी अभिलाषा कई कारणोंसे पूरी नहीं हो पा रही है। परन्तु समय अनुकूल होते देर नहीं लगेगी और हम अवश्य अपनी आकांक्षाओंको पूर्ण होते देखेंगे।

सम्पादन और प्रकाशनमें यथेष्ट व्यय होने पर भी ग्रन्थोंका मूल्य सुलभ हो सकता है यदि पाठक मुफ्त न पढ़नेकी प्रतिज्ञा कर लें। यह मुफ्त पढ़नेकी मनोवृत्ति उत्कृष्ट साहित्यके लिए दीमक है। जिस साहित्यके ग्राहक जितने अल्प होंगे, वृद्ध उतना ही अधिक मँहगा होगा। गीता प्रेसका साहित्य इसीलिए इतना सस्ता है कि उसके ग्राहकोंकी संख्या बहुत अधिक है। प्रस्तुत पुस्तकका मूल्य १३ रुपयेकी बजाय लगभग चार रुपये हो सकता था, यदि यह ५०० न छपकर २००० छपी होती। परन्तु अपने समाजमें वह वर्ग जो ग्रन्थ खरीद कर पढ़ सकता है, उसके पास अवकाश नहीं और न उसे इस तरहके कार्योंकी ओर आकर्षण ही है। अधिकांश संस्थाएँ और महानुभाव भेंट स्वरूप चाहते हैं और साधारण पाठक इस तरहके साहित्यको समझ नहीं सकनेके कारण नहीं खरीद पाते, ऐसी स्थितिमें जिस ग्रन्थकी ५०० प्रतियाँ छपवा ली जाती है, तो वह भी १५-२० वर्षोंमें निकल पाती है, ऐसा पुराने साहित्य सेवियों का अनुभव है।

महत्त्वपूर्णतः पयोगी ग्रन्थोंके उद्धार और सुलभ-प्रसारके लिये हमारी समितिमें निम्न बातें आवश्यक हैं:—

(१) जैन मन्दिरों, सरस्वतीभण्डारों, पुस्तकालयोंमें आवश्यकीय उपयोगी ग्रन्थोंका अधिक से अधिक संग्रह खरीद कर किया जाय। प्रकाशन संस्थाओंसे मुफ्त लेकर भण्डार न भरे जाएँ।

(२) वे दानी महानुभाव जो चोर-लुटेरोंको प्रोत्साहन देनेके लिये मन्दिरोंमें सोने चाँदीके बर्तन और धन देते हैं, व्रत, उद्यापन, विवाह आदिके अवसरों पर जैनेतर विद्वानों, जैनमन्दिरों एवं संस्थाओंको ग्रन्थ भेंट करें।

(३) पाठक प्रतिज्ञा कर लें कि ग्रन्थ मुफ्त न माँगकर मोल लेकर ही पढ़ेंगे और यदि मोल लेनेकी सामर्थ्य न हुई तो स्थानीय मन्दिरों, पुस्तकालयोंके प्रबन्धकोंको प्रेरणा करके ग्रन्थ खरीदवाएँगे और वहासे लेकर पढ़ेंगे।

आश्चर्य है कि हम वीतराग भगवानके चारों ओर सोना-चाँदी पुतवाते हैं, और चँबर-छतर लगाते हैं और दर्शन करते समय कुछ न कुछ अवश्य चढ़ाते हैं। किन्तु जिनबाणी माताको खाली हाथ माया टेकनेमें ही कर्तव्यकी इतिश्री समझते हैं। काश, हम वीतरागको तो वीतराग ही रहने देते और वीतरागकी वाणीको इतना अलंकृत कर देते कि उसकी ज्योति से संसार जगमगा उठता। हम जैन वीतराग भगवान के सामने लौंग, बाँदास न चढ़ाकर सरस्वती भण्डार में एक-एक पैसा भी रोज चढ़ाएँ तो कमसे कम २००० २० दैनिक जमा हो सकते हैं, जो ग्रन्थागारोंके स्थापन के लिये बहुत बड़ी निधि है।

## प्रस्तावना



### जैनवाङ्मय पर एक दृष्टि—

यद्यपि जैन वाङ्मय बहुत विशाल है और यह प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, कन्नड एवं तमिल आदि कई भागों में विभक्त है। पर प्रस्तुत ग्रन्थ-तालिकामें प्रधानतः प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड इन तीन वाङ्मय के ग्रन्थ ही सम्मिलित हैं, इसलिये यहाँ पर सिर्फ इन्हीं वाङ्मयों पर दृष्टि डालना मेरा अभिष्ट है। अवकाशाभाव भी इसका अत्यन्त कारण है। विज्ञ पाठकोंको इतना अवश्य जान लेना होगा कि दक्षिण भारतकी भाषाओंमें तमिल तथा कन्नड प्रधान हैं और इन दोनों भाषाओं को साहित्यिक रूप देने वाले जैन (दिगम्बर) ही हैं। अस्तु, अब पाठकोंका ध्यान प्रस्तुत विषय पर आकर्षित करता हूँ।

**प्राकृत वाङ्मय**—यह भाषा सुप्राचीन कालमें यहाँके आर्योंकी बोल-चालकी भाषा थी। इसी भाषामें भगवान् महावीर एवं गौतमबुद्धने अपने पुनित सिद्धान्तोंका उपदेश और प्रचार किया था। इसी भाषाको जैन और बौद्ध विद्वानोंने अपना कर विविध विषयक विपुल साहित्यको जन्म दिया। इसी भाषाके मौलिक साहित्यकी भित्ति पर संस्कृत भाषामें अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थोंका निर्माण हुआ। विद्वानोंकी राय है कि संस्कृतके नाटक-साहित्यमें संस्कृत-भिन्न जिस भाषाका प्रयोग हमें दृष्टिगोचर होता है, जिस भाषासे हमारे भारतवर्षकी वर्तमान अन्यान्य आर्य-भाषाओंकी उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारतवर्षके कई प्रदेशोंमें भिन्न-भिन्न रूपमें बोली जाती हैं—इन सभी भाषाओंका सामान्य नाम प्राकृत है। क्योंकि ये सभी भारतीय भाषाएँ एकमात्र प्राकृतके भिन्न-भिन्न रूपांतर हैं, जो कि काल, देश आदि अन्यान्य कारणोंसे भिन्न-भिन्न रूपोंमें परिवर्तित हुए हैं। जैसे अर्धमागधी प्राकृत, पालि प्राकृत, पेशाची प्राकृत, सौरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत और अपभ्रंश प्राकृत आदि।

सर प्रियसंनने वैदिक काल एवं उसके पूर्वकी सभी बोल-चालकी भाषाओंको प्राथमिक प्राकृत माना है। प्राकृत भाषा-समूहकी यही पहली श्रेणी है। इसका समय ई० पूर्व २००० से ई० पूर्व ६०० तक निर्दिष्ट है। प्रथम श्रेणीकी ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर एवं व्यंजनादिके उच्चारणमें तथा विभक्तियोंके प्रयोगमें वैदिक भाषाके ही समान थीं। इसीसे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल कहलाती हैं। वैदिक युगमें जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ बोल-चालके रूपमें प्रचलित थीं उनमें परिवर्तित-कालमें अनेक परिवर्तन हुए। जैसे (१) ऋ, ॠ आदि स्वरोंका लोप होना (२) शब्दोंके अंतिम एवं संयुक्त व्यंजनों का रूपांतर होना, (३) विभक्ति और वचन समूहका लुप्त होना आदि। जब इन परिवर्तनोंसे उक्त कथ्य भाषाएँ अधिक मात्रामें रूपान्तरित हुईं तब द्वितीय श्रेणीकी प्राकृत भाषाओंका जन्म हुआ। इस श्रेणीकी ये प्राकृत भाषाएँ भगवान् महावीर और गौतम बुद्धके समयसे अर्थात् ई० पूर्व छठी शताब्दीसे लेकर ई० सन् ९ वीं शताब्दी तक प्रचलित रहीं। श्री महावीर एवं बुद्धके समयमें उपर्युक्त सभी प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ द्वितीय श्रेणीके आकारमें भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें कथ्य भाषाके तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्त तथा उपदेशका प्रचार इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओंमेंसे एकमें किया था। वल्कि बुद्धने अपने शिष्योंको यही आदेश दिया था कि मेरा उपदेश संस्कृत-बद्ध न कर इस प्रचलित प्राकृत भाषामें ही करना। इसका मुख्य कारण यही मालूम होता है कि साधारणसे साधारण जनता भी उनके सिद्धान्तोंसे लाभ उठावे। वास्तवमें यह मार्ग ही भी अधिक लाभकारी। इसका रहस्य जैन भी खूब जानते थे। इसीका परिणाम है कि वे भारतके भिन्न-प्रदेशोंमें जैसे-जैसे फैलते गये वैसे वैसे वहाँकी प्रान्तीय भाषाओंमें नये-नये साहित्योंका निर्माण करते गये। आर्य-भाषाओंको कौन कहे! तमिल, कन्नड जैसी द्रविड साहित्योंके भी जन्मदाता में ही कहे जा सकते हैं। इन भाषाओंमें प्राचीन से प्राचीन व्याकरण, अलंकार, छन्द, काव्य एवं नीति

मागधीका मूल उत्पत्तिस्थान ऊपर पश्चिम मगध और मूरसेन देशका मध्यवर्ती प्रदेश बतलाया जा चुका है। परन्तु जैन अर्धमागधीमें मागधी एवं सौरसेनी भाषाके विशेष लक्षण नहीं पाये जाते हैं। प्रो० जैकोबी आदि विद्वानों के कथनानुसार महाराष्ट्रीके साथ ही इसका अधिक सादृश्य दृष्टिगोचर होता है। इसीसे कोई कोई इसके उत्पत्ति-स्थानके संबंधमें शंका उपस्थित करते हैं। प्रो० जैकोबी जैन सूत्रोंकी भाषा और मयूराके शिलालेखों ( ई० सन् ८३ से १७६ ) की भाषासे यह अनुमान करते हैं। जैन अंग ग्रन्थोंकी अर्धमागधीका काल चतुर्थ शताब्दीका शेष भाग अथवा तृतीय शताब्दीका प्रथम भाग है।

( २ ) जैन महाराष्ट्री-जैन सूत्र ग्रंथोंके अतिरिक्त श्वेतांबर जन विद्वानोंके द्वारा प्रणीत अन्य ग्रंथोंकी प्राकृत भाषाको जैन महाराष्ट्री नाम दिया गया है। इस भाषामें महापुरुषोंकी जीवनी (चरित्र), दर्शन, ज्योतिष, भूगोल, काव्य एवं स्तोत्र आदि विषयोंका विशाल साहित्य भरा पड़ा है। प्राचीन प्राकृत व्याकरणोंने जैन महाराष्ट्रीके नामसे किसी भिन्न भाषाका निर्देश नहीं किया है। किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानोंने काव्य, नाटकादि ग्रंथोंमें महाराष्ट्रीका जो रूप मिलता है, उससे श्वेताम्बर ग्रंथोंकी भाषामें पर्याप्त पार्यक्य देखकर इसे जैन महाराष्ट्री नाम दिया है। इसमें प्राकृत व्याकरणमें प्रतिपादित महाराष्ट्रीका लक्षण विशेष रूपसे समन्वित होते हुए भी जैन अर्धमागधीका बहुत कुछ प्रभाव देखा जाता है। पयप्पा ग्रंथ, निर्घुणित्या, पडमचरिउ, उपदेशमाला, कई भाष्यग्रंथ, निशीथचूर्ण, धर्मसंग्रहणी, प्रवचनसारोद्धार, उपदेशरहस्य और भाषारहस्य आदि इसी जैन महाराष्ट्रीके कुछ उदाहरणभूत हैं।

( ३ ) जैन सौरसेनी-डॉ० पिश्चेलके मतसे दिगंबर जैनोंके प्रवचनसार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि ग्रंथोंकी भाषा जैन सौरसेनी है। इस बातको कुछ जर्मन विद्वान् नहीं मानते। परन्तु साथ ही साथ इस विषयमें उन लोगोंने जो कुछ अनुसंधान किया है, उसका परिणाम आज तक कुछ भी नहीं निकला। अब तो इसका फलितार्थ भविष्यके गर्भमें ही समझना चाहिये। अतः जब तक इस डॉ० पिश्चेलके मतके विरुद्ध कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलते हैं, तब तक इन्हींके मतको मानना समुचित होगा। यह जैन सौरसेनी अर्धमागधी और प्राकृत व्याकरणोंमें निदिष्ट सौरसेनीके मिश्रणसे बनी हुई है। जैन सौरसेनी जैन महाराष्ट्रीकी अपेक्षा अर्धमागधीसे अत्यधिक निकटता रखती है। दोनोंकी प्रकृति (मूल) एक होना ही उसका प्रधान कारण है। राजाराम कॉलेज कोल्हापुरके अर्धमागधीके प्रोफेसर मिश्रवर ए० एन० उपाध्येने 'रायचंद्र जैन शास्त्रमाला' बंबई द्वारा प्रकाशित 'प्रवचनसार' की गवेषणापूर्ण अपनी भूमिकामें सहेतुक प्रकट किया है कि प्रवचनसार-जैमे पुरातन और सौरसेनी भाषाके ग्रंथ जो कि देशी शब्दोंसे रहित हैं उन प्रचलित श्वेताम्बरीय आगम ग्रंथोंसे प्राचीन हैं। क्योंकि आगम ग्रंथोंमें तो देशी शब्दोंका विपुल मिश्रण पाया जाता है। उपाध्येजीने अपनी भूमिकामें प्राकृत भाषाकी आलोचनाके साथ साथ एक भाषा पर दूसरी भाषाके प्रभाव आदि विषयको बड़ी ही पाण्डित्यपूर्ण युक्तियोंसे व्यक्त किया है। इस विषयके विशेष जिज्ञामु उपाध्येजी द्वारा लिखी 'प्रवचनसार'की भूमिका एक बार अवश्य पढ़ें।

श्वेताम्बरोंकी तरह दिगम्बरोंपर दीर्घकाल तक महाराष्ट्रीका प्रभाव नहीं पड़ा। इसका प्रधान कारण यह है कि दिगम्बर सौरसेनीके कट्टर पक्षपाती थे और उसी सौरसेनी व्याकरणसे ही वे सहायता लेते थे। दिगंबरोंमें पुष्पदंत, भूतबलि, वटुकेर, कुंदकुंद और शिवार्य आदि इस भाषाके आदिम ग्रंथ-रचयिता थे। इन उद्भूत दिगंबराचार्योंके द्वारा प्रणीत अष्टपाहुड, रयणसार, षट्पाहुड, बारस-अणुवेक्खा, नियमसार, पंचास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार, भगवती आराधना, मूलाचार और कार्तिकेयानुप्रेक्षा आदि कृतियाँ इस भाषाके समुज्ज्वल रत्न हैं। कुछ जर्मन विद्वानोंकी राय है कि षट्पाहुड और कार्तिकेयानुप्रेक्षामें अपभ्रंश शब्द अधिक मात्रामें पाये जाते हैं। पर ए० एन० उपाध्येजीका कहना है कि यह कथन षट्पाहुडके लिये ही लागू हो सकता है। खैर, पीछे दिगम्बर जैन ग्रंथकर्ता जब संस्कृतका आश्रय लेने लगे तब सौरसेनीका संस्कृत पर अधिक प्रभाव पड़ने लगा। श्री समन्तभद्र, पूज्यपाद, अनन्तवीर्य एवं अकलंक आदि आचार्योंने संस्कृतमें ही ग्रंथप्रणयन किया है। इसीसे अर्धमागधीसे संबंध बिच्छिन्नसा होकर सौरसेनी पर संस्कृतका प्रभाव पड़ा। श्वेताम्बरों पर संस्कृतका प्रभाव बहुत पीछे पड़ा। हाँ, उनके साहित्यमें इसके विपरीत संस्कृत भाषापर प्राकृतका ही प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

(४) अपभ्रंश—पतञ्जलि प्रभृति संस्कृत व्याकरणोंके मतमें संस्कृत भिन्न समस्त प्राकृत भाषाएँ अपभ्रंशके अन्तर्गत हैं। किन्तु प्राकृत व्याकरणोंके मतमें अपभ्रंश प्राकृतका ही एक अवान्तर भेद है। इस भाषामें भी जैनोंका विपुल साहित्य भरा पड़ा है। भविष्यदत्तकथा, महापुराण, यशोधरचरित, नागकुमार चरित, कथाकोश, पार्वतपुराण, सुदर्शनचरित, करकण्ठचरित, दर्शनसार, योगसार, श्रुतपञ्चमी कथा, सावयधम्म-दोहा, पाहुड दोहा, एवं षट्कर्मोपदेश आदि रचनाएँ इस अपभ्रंश भाषाके आदर्श-भूत निदर्शन हैं। इनमेंसे कई ग्रन्थ प्रकाशित भी हो चुके हैं। यह बात निर्विवाद सिद्ध हो चुकी है कि इसी अपभ्रंश भाषासे हिन्दीका अवतरण हुआ है। इस दृष्टिसे इस भाषाका स्थान बहुत उच्च है। क्योंकि इसीसे प्रादुर्भूत यह हिन्दी भाषा आज राष्ट्रभाषा होने जा रही है।

डॉ० होर्नलिके मतमें आर्योंकी कथ्य भाषाएँ भारतवर्षके आदिम निवासी अनार्य लोगोंकी अन्यान्य भाषाओंके प्रभावसे जिन विकारोंके प्राप्त हुई थीं वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्रीकी अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। पर उस मतको डॉ० ग्रियर्सन आदि आधुनिक भाषाशास्त्री स्वीकार नहीं करते। सर ग्रियर्सनके मतमें भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ साहित्य एवं व्याकरणमें नियन्त्रित होकर जनसाधारणमें अप्रचलित होनेके कारण जिन नूतन कथ्य भाषाओंकी उत्पत्ति हुई थी वे ही अपभ्रंश हैं। चण्डके प्राकृत व्याकरण तथा कालिदासके 'विक्रमोर्वशीय'के निदर्शनोंसे यह बात स्पष्ट सिद्ध हो जाती है कि ई० सन् पांचवीं शताब्दीके पहलेसे ही ये साहित्यमें स्थान पान लग गये थीं। अतः इससे बहुत पूर्वकालसे भारतमें कथ्य भाषाओंके रूपमें अपभ्रंश भाषाओंका व्यवहृत होना स्वाभाविक है। ये अपभ्रंश भाषाएँ लगभग दशवीं शताब्दी तक साहित्यिक भाषाएँ रहीं। फिर पीछे इन्हींसे हिन्दी, बङ्गला, गुजराती एवं मराठी आदि आधुनिक आर्यभाषाएँ उत्पन्न हुईं। प्राकृत व्याकरणोंके मतमें अपभ्रंशके अनेक भेद माने गये हैं और वास्तवमें यह है भी ठीक। इस भाषाके उत्पत्ति-स्थान भी भिन्न भिन्न माने गये हैं। ई० सन् पांचवीं शताब्दीके पूर्वसे लेकर दशवीं शताब्दी तक भारतके भिन्न-भिन्न प्रदेशोंमें बोलचालके रूपमें प्रचलित जिस-जिस अपभ्रंश भाषासे भिन्न-भिन्न प्रदेशोंकी जो जो आधुनिक आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं उनका विवरण निम्न प्रकार है—

महाराष्ट्री अपभ्रंशसे मराठी और कोंकणी भाषाएँ, मागधी अपभ्रंशकी पूर्वशाखासे बङ्गला, उड़िया और आसामी भाषाएँ, अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी भाषाएँ, सौरसेनी अपभ्रंश से बुन्देली, कन्नोजी, वजभाषा, हिन्दी या उर्दू ये पश्चिम हिन्दी भाषाएँ, नागर अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवीय, मेवाड़ी, जयपुरी, मारवाड़ी एवं गुजराती भाषाएँ, पालिसे सिंहली और मालदीवन भाषाएँ; टाक्की अपभ्रंश से पश्चिमी एवं पूर्वी पञ्जाबी भाषाएँ; ब्राह्म अपभ्रंशसे सिन्धी भाषा और पैशाची अपभ्रंशसे काश्मीरी भाषा उत्पन्न हुईं। ऊपर कहा जा चुका है कि जैन एवं बौद्धोंने संस्कृत भाषाको महत्त्व न देकर उस समयकी कथ्य भाषामें ही अपने पवित्र धर्मोपदेशको लिपिबद्ध करनेकी प्रथा प्रचलित की। इससे जैनसूत्रोंकी अर्धमागधी एवं बौद्धधर्म ग्रन्थोंकी पालि इन साहित्यिक भाषाओंका जन्म हुआ। किन्तु ये दोनों साहित्यिक भाषाएँ अन्यान्य प्राकृत भाषाओंके साथ संस्कृतके प्रभावको उल्लंघन नहीं कर सकीं। इसका यही एक प्रबल प्रमाण है कि इन समस्त प्राकृत भाषाओंमें संस्कृतके अनेक शब्द अविकल रूपमें गृहीत हुए हैं, जो कि तत्सम कहलाते हैं। यद्यपि पूर्व कथनानुसार ये तत्सम शब्द प्रथम श्रेणीकी प्राकृत भाषासे ही लिये गये हैं। फिर भी यह स्वीकार करना ही होगा कि परवर्तिकालकी प्राकृत भाषाओंमें संस्कृत भाषासे ही ये शब्द आ मिले हैं। बल्कि ललित-विस्तर, सद्धर्मपुण्डरीक एवं चन्द्रप्रदीप सूत्र आदि बौद्ध ग्रन्थोंमें तो संस्कृत शब्दोंकी भरमार है। इनमें अनेक प्राकृत शब्दोंके आगे भी संस्कृतकी विभक्ति लगाकर उन्हें भी संस्कृत बना डाला गया है। हाँ, यहाँ पर यह भी याद रखना होगा कि संस्कृत पर भी प्राकृतका प्रभाव कम नहीं पड़ा है। उसके लिये मैंने ऊपर कुछ श्वेताम्बर ग्रन्थोंका नाम-निर्देश किया है। यह बात है भी ठीक; क्योंकि संस्कृतकी जननी जब प्राकृत है—यह अपनी अङ्गपुष्टिके लिये अपनी माताकी उपेक्षा कर किस भाषाके दरवाजेको खट-खटाती फिरें? प्रत्येक कथ्य भाषा सदैव परिवर्तनशील होती है। साहित्यिक और व्याकरण नियमके बन्धनोंसे तो जकड़कर वे गतिहीन (पंगु) एवं कूटस्थ बन जाती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि क्रमशः यह कथ्य भाषासे

अलग होकर जन-साधारणमें अप्रचलित होती हुई मृतभाषामें परिणत हो जाती है। प्रत्येक साहित्यिक भाषा किसी कथ्य भाषासे ही उत्पन्न होती है और जब वह मृतभाषामें परिणत होती है तब उससे एक नई साहित्यिक भाषाकी सृष्टि होती है, इसी अविचल नियमानुसार एक समयकी कथ्य भाषासे ही वैदिक एवं संस्कृत भाषाका जन्म हुआ। जब वह सर्वसाधारणके लिये दुर्बोध हुई तब अर्धमागधी, पालि आदिने साहित्यमें स्थान पाया। ये समस्त प्राकृत भाषाएँ भी समय पाकर जब सर्वसाधारणके लिये दुर्बोध हुई तब संस्कृतकी तरह मृतभाषामें परिणत होकर भिन्न-भिन्न प्रदेशोंकी अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक भाषाओंके रूपमें व्यवहृत होने लगी। अपभ्रंश भाषाएँ भी जब सर्वसाधारणके लिये कष्ट-बोध्य होकर मृतभाषाके रूपमें परिणत हुई तब हिन्दी, बङ्गला, गुजराती और मराठी आदि आधुनिक अर्थ कथ्य भाषाएँ साहित्यिक भाषाओंके रूपमें प्रचलित हुईं। प्रत्येक भाषाका प्रधान लक्ष्य होता है अर्थप्रकाश। इसलिये जिसके द्वारा स्पष्ट एवं अल्प प्रयत्नसे अर्थबोध होता है वही उत्कृष्ट मानी जाती है और ये ही भाषा-परिवर्तनके दो मुख्य कारण हैं।

**संस्कृत बाह्यमय**—संस्कृत शब्दके प्रयोगसे ही यह बात स्वयं विदित हो जाती है कि बहुत पहले हमारे भारतवर्षमें एक प्रकारकी भाषा प्रचलित थी और वही पीछे संस्कारको प्राप्त होकर संस्कृत भाषाके रूपमें प्रतिफलित हुई। सुप्राचीन युगमें म्लेच्छ भाषाओंके सम्मिश्रणसे अपनी भाषाओंको विशुद्ध रूपमें सुरक्षित रखनेके लिये आर्योंने सफल प्रयत्न किया था। फलस्वरूप वर्तमान संस्कृत भाषाका जन्म हुआ। ऋक् मन्त्रके पहले संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएँ किस रूपमें थीं, इस बातको जाननेके लिये हम लोगोंके पास कोई साधन नहीं है। ऋक् मन्त्रके प्रकाशनकालसे वैदिक संस्कृतका निदर्शन हमें मिलता है सही। किन्तु उस समयकी प्राकृत भाषाको जाननेके लिये कुछ भी सामग्री उपलब्ध नहीं दीखती। वैदिक युगके नष्ट होनेके बाद लौकिक संस्कृत भाषा प्रचारमें आई। विद्वानोंकी राय है कि वैदिक युगको वह सुप्राचीन भाषा संस्कृतके नामसे प्रचलित नहीं थी। वाल्मीकिकालसे ही सर्वप्रथम संस्कृत भाषाका प्रयोग और वैदिक एवं संस्कृत लौकिक भाषाओंका पार्थक्य ज्ञात होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पाणिनिके पहले भी लौकिक संस्कृत भाषाके कई व्याकरण रचे गये थे। क्योंकि व्याकरणशास्त्रके अध्ययनके बिना संस्कृत भाषामें निष्णात होना असम्भव है।

पूर्वोक्त कथनसे यह बात सिद्ध हो जाती है कि दो प्रकारकी संस्कृत भाषाएँ देखनेमें आती हैं—एक वैदिक, दूसरी लौकिक। ऋक्, यजु, साम और अथर्व ये चार वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ एवं उपनिषद् वैदिक संस्कृत भाषामें हैं। परवर्तिकालके सूत्रग्रन्थ, संहिताग्रन्थ, इतिहास, पुराण, काव्य आदि लौकिक संस्कृतमें रचे गये हैं। लौकिक संस्कृत साहित्यमें व्याकरणका बन्धन अधिक सुदृढ़ है। परन्तु वैदिक भाषा व्याकरणके नियमोंसे उतनी आबद्ध नहीं है। विद्वानोंका कथन है कि लौकिक संस्कृत भाषाकी उत्पत्तिके साथ ही साथ वैदिक शब्दोंकी विभक्तियोंमें अधिक परिवर्तन हुए। लौकिक संस्कृतमें अनेक वैदिक शब्दोंके प्रयोगका सर्वथा अभाव है। विभक्तियाँ भी विशेष रूपान्तरकी प्राप्त हुई हैं। शब्दोंमें से भी अनेक शब्द भिन्न-भिन्न अर्थोंमें प्रयुक्त हैं। इस परिवर्तनसे वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृतमें विशाल परिवर्तन हुआ। फलस्वरूप संस्कृतमें विशेष पाण्डित्य प्राप्त करने पर भी वैदिक संस्कृत एक प्रकारसे अबोध रह जाती है। अर्थात् लौकिक संस्कृतके मर्मज्ञ भी वैदिक संस्कृतके अर्थोंको नहीं लगा सकते हैं। पारदर्शिक शिक्षण एवं भाष्यकी सहायताके बिना वैदिक शब्दोंका अर्थ जानना सुलभ नहीं। साथ ही विद्वानोंका यह भी कहना है कि वैदिक संस्कृतमें अपशब्दोंका सम्मिश्रण बहुत रहा। संस्कृत शब्दोंकी संख्या भी अधिक थी। इसीलिये परवर्ति-वैयाकरणोंने व्याकरण सम्बन्धी अनेक नियमोंसे भाषाको सुन्दर एवं पूर्ण बनानेके लिये बहुतसे शब्दोंको कम कर दिया। उस युगमें स्त्रियाँ, विदूषक और नौकर आदि प्राकृत भाषा ही बोलते थे। यह बात प्राक्कालीन कवियोंके नाटकोंसे स्पष्ट हो जाती है। इसका सारांश यह निकला कि अशिक्षितवर्ग संस्कृत नहीं बोलता था; या यों कहिए कि संस्कृत भाषा शिक्षितोंकी ही भाषा थी। उस जमानेमें साधारण जनता भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषा बोलती थी। इसीसे प्राकृतमें अनेक भेद दृष्टिगत होते हैं।

भारतवर्षके अनेक स्थानोंमें पालि भाषा भी प्रचलित थी, बल्कि बुद्ध और महावीरके बहुत पहले ही परिपुष्ट इस पालि भाषाने यहाँके कई स्थानोंमें मातृभाषाका रूप धारण कर लिया था। यह भाषा भी एक प्रकार

की प्राकृत ही है। गौतमके समयमें भी इस भाषाका प्रचार काफी रहा। उन्होंने तथा उनके शिष्योंने मातृभाषाके रूपमें प्रचलित इसी पाणि भाषामें ही उपदेश दिया था। इस अपेक्षासे हम कह सकते हैं कि बौद्ध-कालमें संस्कृत भाषाका गौरव कुछ कम हो गया था। अज्ञानके भी संस्कृत भाषाको छोड़ मातृभाषामें ही अपने अनुशासनोंको लिपिबद्ध करनेकी आज्ञा दी थी, जो आज विभिन्न स्थानोंमें उपलब्ध हो रहे हैं। भारतके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें प्राप्त होनेवाले इन अनुशासनोंसे भी स्थान-भेदसे प्राकृत भाषाकी भिन्नता व्यक्त हो जाती है।

विद्वानोंकी ऐसी राय है कि शाक्यसिंहके पहले इस देशमें संस्कृत भाषाका यथेष्ट प्रचार था। जन्ता अधिक संख्यामें संस्कृत भाषा बोलती और लिखती थी। पत्र-व्यवहार आदि सभी कार्य संस्कृत भाषामें ही होते थे। शाक्यसिंहके आविर्भावके बाद भी भारतमें संस्कृत भाषाका प्रचार सर्वथा कम नहीं हुआ। बल्कि बादके बौद्धाचार्योंने संस्कृत व्याकरण, कोश आदि ग्रंथोंको रच कर तन्मूलक संस्कृत भाषाके सम्मानकी रक्षा की। बौद्ध युग भी राजकीय कागज, शिलालेख आदि संस्कृत भाषामें ही लिखे जाते थे। बौद्ध अपने दर्शनके प्रचारके लिये एवं अन्य दर्शनोंके खण्डनके लिये संस्कृत अवश्य सीखते थे। यहाँ तक संस्कृत साहित्यके इतिहासका परिचय हुआ।

अब मैं पाठकोंका ध्यान प्रकृत विषयको ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आज तकके उपलब्ध जैन ग्रंथोंमें श्री कुंदकुंदाचार्यके ग्रन्थ ही सर्व-प्राचीन हैं। ऐतिहासिक विद्वानोंका मत है कि उक्त आचार्य विक्रमीय प्रथम शताब्दीके हैं। इसके पूर्व अर्थात् ऋषभ तीर्थंकरसे लेकर भद्रबाहु आदि श्रुतज्ञानियोंके काल तक जैनगम गुरुपरंपरासे कण्ठस्थ ही रक्षित था और पीछे भूतबलि और पुष्पदंतने कालदोषसे नष्टावशेष उस आगमको लिपिबद्ध करनेका मार्ग दिखलाया—यों दिगम्बरीय श्रुतावतार आदि ग्रन्थोंका कहना है। पूर्वोक्त कुंदकुंदाचार्यकी सभी कृतियाँ प्राकृत भाषामें हैं। इस लिये प्रथम शताब्दीके इन्हीं कुंदकुंदाचार्यके शिष्य श्री उमास्वातिको ही जैन संस्कृत साहित्यका आदि कवि मानना पड़ेगा। इनके बाद क्रमशः समंतभद्र और सिद्धसेन आदि सैकड़ों उद्भूट जैन आचार्योंने जन्म लेकर अपने पवित्र ज्ञानके बलसे संस्कृत साहित्यकी यथेष्ट सेवा की। जैन साहित्य प्रारंभमें केवल धार्मिक रूपको ही धारण किए हुए था। किन्तु पीछे उसने अन्यान्य विभागोंमें भी काफी उन्नति की। न्याय और अध्यात्म विषयमें यह बाह्यमय अधिक उच्च विकास तथा क्रमको प्राप्त है। प्रथम शताब्दीके श्रीउमास्वाति, दशम शताब्दीके श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती, उसी शताब्दीके श्री अमृतचन्द्रसूरि, ग्यारहवीं शताब्दीके श्री शुभचन्द्राचार्य जैसे सिद्धांतविशारद; तृतीय—चतुर्थ शताब्दीके श्री समन्तभद्र, लगभग इसी समयके श्री सिद्धसेन, आठवीं शताब्दीके श्री भट्टकलक और हरिभद्र, नवमीं शताब्दीके श्री विद्यानन्द, ग्यारहवीं शताब्दीके अभयदेव तथा प्रभाचन्द्र, सत्रहवीं शताब्दीके यशोविजय, जैसे नैयायिक; आठवीं शताब्दीके श्री जिनसेन, नवमीं शताब्दीके श्री गुणभद्र जैसे पुराणलेखक इस भारतभूमिमें बहुत कम होंगे। जैन नैयायिकोंमें से अनेकोंने न्याय ग्रंथोंकी टीका भी रची है। श्री सतोशचन्द्र विद्याभूषणके शब्दोंमें मध्य युगमें जैन साहित्यने बहुमूल्य काम किया है। इस कालमें न्यायदर्शनके नामसे जितने ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं वे सभी जैन और बौद्धोंके परिश्रमके फलस्वरूप हैं। आधुनिक प्रणालीको लेकर चौदहवीं शताब्दीमें गङ्गेश उपाध्यायके द्वारा प्रकाशमें आए हुए नव्यन्याय नामक ब्राह्मणोंके न्याय ग्रंथ जैन और बौद्धोंको मध्यकालीन न्यायकी नींवसे ही निकले हुए हैं।

व्याकरण एवं कोशरचनके विभागमें भी श्री शाकटायन, पूज्यपाद, वर्धमान, हेमचन्द्र, धनञ्जय और श्रीधर आदि आचार्य अधिक प्रसिद्ध हैं। गणितशास्त्रमें दो नवमीं शताब्दीके श्री महावीराचार्यका 'गणितसार' विशेष उल्लेखनीय है। कोलंबीय (Ceylon) विश्वविद्यालयके गणिताध्यापक डेविड यूजन स्मिथ (David Eugene Smith) ने लिखा है कि भारतवर्षके संपूर्ण गणित साहित्यमें यह ग्रंथ अधिक पांडित्य-पूर्ण है। इससे पाठक भली भाँति समझ सकते हैं कि जैन संस्कृत साहित्य कितना विपुल, विस्तीर्ण एवं समर्थ है। इसमें प्रत्येक विषयके यथेष्ट ग्रंथ रचे गये हैं। जैन ग्रंथोंकी विषय प्रतिपादनशैली आदर्शको लिए हुए है। इसीसे भिन्न-भिन्न विषयोंमें रचे गये ग्रंथोंको देखकर पाश्चात्य या पूर्वीय बहुतेरे मान्य विद्वान् इसकी भूरि भूरि प्रशंसा करते हैं। जैन बाह्यमयके सम्पूर्ण ग्रन्थ प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और द्रव्यानुयोगके भेदसे चार विभागोंमें

विभक्त हैं। गणितशास्त्रमें पूर्वोक्त गणितसारके सिवा चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, आदि ग्रन्थ भी अपूर्व हैं। इसी-प्रकार धर्मशास्त्रभ्युदय, पार्व्याभ्युदय, यशस्तिलकचम्पू, नेमिनिर्वाण, तिलकमंजरी, चन्द्रप्रभकाव्य, हीरसौभाग्य और हम्मौरमहाकाव्य आदि काव्यग्रंथ, अष्टसहस्री, प्रमेयकमलमार्तण्ड, श्लोकवार्तिक, सम्मतिकर्क, न्यायविनिश्चय, न्यायकुमुदचन्द्र, स्याद्वादरत्नाकर, स्याद्वादमंजरी और जैनतर्कवार्तिक आदि न्याय ग्रन्थ; पंचाध्यायी, राजवार्तिक, ज्ञान्यात्मसार, आत्मानुशासन, इष्टोपदेश, समाधिगतक और अध्यात्मकल्पद्रुम आदि दर्शन एवं आध्यात्मिक ग्रन्थ; महापुराण, पाण्डवपुराण, हरिवंशपुराण और पद्मपुराण आदि पुराण ग्रन्थ; शाकटायनन्यास, अमोघवृत्तिन्यास, सिद्धहेमचन्द्र, जैनैन्द्रन्यास और गणरत्नमहोदधि आदि व्याकरण ग्रन्थ सुप्रसिद्ध हैं। इस प्रकार जैन न्याय, जैन तत्त्व-ज्ञान, आदि अन्यान्य विषयके गद्य-पद्य-मय अनेक उत्तमोत्तम ग्रंथ जैन संस्कृत वाङ्मयमें भरे पड़े हैं। डॉ० सतीश-चन्द्र विद्याभूषण, प्रो० हर्टल जैसे पूर्वीय तथा पाश्चात्य विद्वानोंने जैन न्याय, जैन व्याकरण आदिकी यथेष्ट प्रशंसा की है। जैन साहित्य कलामें भी पीछे नहीं है। मेघदूत पर पार्व्याभ्युदय, शीलदूत, नेमिदूत, इंदुदुत, चेतोदूत आदि; माघपर देवानंदाभ्युदय; नैषध पर शातिनाथ चरित्र; इसी प्रकार भक्ताभर और कल्याणमंदिरस्तोत्र पर भी कई समस्यापूर्ति \* कृतियाँ मौजूद हैं। दूतकाव्य साहित्यमें भी यह पीछे नहीं है। उक्त पार्व्याभ्युदय, शील-दूत, इंदुदूत, नेमिदूत और चेतोदूतके अतिरिक्त पवनदूत, मनोदूत, जैन मेघदूत, रथांगदूत, चन्द्रदूत, सिद्धदूत, उद्धवदूत और देवदूत आदि रचनाएँ इसके लिये पर्याप्त उदाहरण हैं †। द्विसंन्धान काव्यके जोड़का ग्रंथ राघव-पाण्डवीय ब्राह्मण संस्कृत साहित्यमें है अवश्य; पर इसके सिवाय भी जैन वाङ्मयमें पंचसंन्धान, सप्तसंन्धान एवं चतुर्विंशतिसंन्धान ये काव्य भी श्लेषालंकारकी अनुपम तथा आश्चर्यकारी कृतियाँ हैं। हेमचन्द्रका 'द्वयाध्वय' काव्य भट्टिसे न्यून नहीं है। सिद्धाधिकी 'उपनिमित्तभवप्रपञ्चकथा' अत्युच्च श्रेणीका एक रूपक काव्य है। इसकी जॉन बाइरन (John Byrnes) के पिलग्रिम्ज प्रोग्रेस (Pilgrimage Progress) ग्रन्थसे तुलना की जा सकती है। हिन्दी विश्वकोशके संपादक श्री नगेन्द्रनाथ वसु आदिकी ऐसी अभिमति है कि कवित्वशक्तिमें आचार्य जिनसेनका काव्य कविश्रेष्ठ कालिदासकी कृतियोंसे कुछ कम नहीं है। इसी प्रकार आचार्य सोमदेवका गद्य बाणकी कादंबरीसे कुछ न्यून नहीं है। जिन ग्रन्थोंमें अपना धार्मिक पक्षपात कुछ भी नहीं है ऐसे भी ग्रन्थ जैन वाङ्मयमें अनेक हैं। मृगपक्षिशास्त्र और प्रश्नोत्तररत्नमाला इसी श्रेणीके ग्रन्थ हैं। भारतीय कथासाहित्यकी उत्पत्ति एवं रक्षामें भी जैनोंने पर्याप्त परिश्रम किया है। संस्कृत वाङ्मयके अद्वितीय रत्न 'पंचतंत्र' की रक्षा जैन आचार्य पूर्णभद्रकी 'पंचाख्यायिका' नामक ग्रन्थके द्वारा हो हुई है। यथार्थतः कथाओंके द्वारा साधारण जनतामें धार्मिक सिद्धान्तको प्रचार करनेकी सुप्रणाली जैसी जैनोंने थी, वैसी भारतीय अन्य सम्प्रदायोंमें नहीं थी-यों अनुभवी विद्वानोंका कहना है। इसीलिये जैन साहित्यका कथा भाग अधिक विशाल है। श्रीयुत् हर्टल साहबका कहना है कि इन कथाओं में से बहुतसी कथाएँ पूर्वमें भारतवर्षमें ही नहीं, बल्कि सानैः सानैः संसारके अन्यान्य भागोंमें भी फैल गई थीं।

प्राक्कलीन उदार जैन कवियोंने सांप्रदायिकताको त्याग कर जैनेतर साहित्यमें जो कृति उन्हें विशेष उपयोगी एवं प्रशंसाहर्ह मालूम हुई उसे प्रेमसे अपनाया। इस उदारताके फलस्वरूप पाणिनि, मृगधबोध, काशिका-न्यास, कविकल्पद्रुम, सिद्धान्तचन्द्रिका और सारस्वत आदि व्याकरण ग्रन्थों; वृत्तरत्नाकर तथा श्रुतबोध आदि छंद ग्रन्थों; काव्यालंकार, काव्यप्रकाश और विदग्धमुखमण्डन आदि अलंकार ग्रन्थों; कादम्बरी, भट्टि, रघुवंश, कुमार-सम्भव, मेघदूत, नैषध, किराताजुनीय, शिशुपालवध, नलोदय और राघवपाण्डवीय आदि काव्य ग्रन्थों; अनर्घराघव, प्रबोधचन्द्रोदय, राघवभ्युदय, दमयंतीचम्पू और नलचम्पू आदि नाटक और चम्पू ग्रन्थों; तर्कभाषा, तर्करहस्य-दीपिका, न्यायकन्दली, न्यायप्रवेश, न्यायालंकार, न्यायसार और न्यायबोधिनी आदि न्याय ग्रन्थों; योगरत्नमाला, रसचिन्तामणि, वैद्यकसारसंग्रह, वैद्यकसारोद्धार और वैद्यकवल्लभ आदि वैद्यक ग्रन्थों पर जैन आचार्यप्रणीत

\* विशेष परिचयके लिये 'जैन सिद्धान्त-मास्कर' भाग ३, किरण २ में प्रकाशित श्री धगरकन्दवी नाइयका 'जैन पादपूर्ति काव्यसाहित्य' शीर्षक लेख देखो।

† अधिक ज्ञानकारीके लिये 'जैन सिद्धान्त-मास्कर' भाग २, किरण २ और भाग ३, किरण १ में प्रकाशित श्री चिन्ता-मणि चन्द्रवर्ती तथा धगरकन्दवी नाइयका लेख देखें।

टीकाएँ उपलब्ध होती हैं\* । मेघदूतके पद्योंकी समस्या-पूर्ति कई जैन कवियोंने की है । बीड़ोंका 'धर्मविभु' नामक उच्च न्याय ग्रन्थ जैनाचार्य मल्लवादिकी टीकासे ही भारतमें रक्षित है । भासर्वज्ञके 'न्यायसार' नामक ग्रन्थ पर जयसिंह सूरिकृत टीका सर्वोत्तम है । ये कृतियाँ ब्राह्मण एवं बौद्ध ग्रन्थोंके प्रति जैन विद्वानोंके द्वारा की गई उदारताके कुछ उदाहरण हैं ।

वैद्यक विषयमें औषधकल्प, सिद्धान्तरसायनकल्प, भिषक्प्रकाश, जगत्सुन्दरी, कनकदीपक, कल्याणकारक, निघण्टु, रससार, रसतंत्र, वैद्यसार, रामविनोद, योगचिन्तामणि, विद्याविनोद, बालग्रहचिकित्सा, मेरुत्रय, रसमंजरी, ज्वरपराजय, वैद्यवल्लभ, ज्वरनिदान, मेघविनोद, लघनपथ्योपचार और प्रयोगसंग्रह आदि ग्रंथ उल्लेखनीय हैं † । ज्योतिष विषयमें त्रैलोक्यप्रकाश, मेघमहोदय, यंत्रराज, आयज्ञानतिलकटीका, जिनेन्द्रमाला, शन्द्रोन्मीलन, भद्रबाहु-निमित्त, ज्योतिषसार, लग्नशुद्धि, ज्योतिषमारोद्धार, जन्मपत्रीपद्धति, मानसागरीपद्धति, ज्योतिषमण्डलविचार, सामुद्रिकतिलक, शकुनशास्त्र, शकुनशास्त्रोद्धार, जगच्चन्द्रिकासारणी, दिनशुद्धिदीपिका, उदयदीपिका, हस्तसंजीवन, रमलशास्त्र, विवाहपटल, ज्योतिषरत्नाकर, और भूवनतिलक आदि ग्रन्थ ‡ भी महत्वके हैं । अर्थशास्त्रमें नीति-वाक्यामृत एक अनूठा रत्न है । मन्त्रशास्त्रमें विद्यानवाद, ज्वालिनीमत, ज्वालिनीकल्प, भैरवपद्मावतीकल्प, काम-चाण्डालिनीकल्प, श्रीदेवताकल्प, सरस्वतीकल्प, गणधरबलयकल्प, प्रतिष्ठाकल्प, सूरिकल्प, श्रीविद्याकल्प और वर्ध-मानविद्याकल्प प्रभृति भी अच्छे ग्रन्थ हैं । संगीतमें 'Trivendrum Sanskrit Series' में प्रकाशित संगीत-समयसार; सुभाषितमें सुभाषितरत्नसंदोह और सुभाषितावली; अलंकारमें काव्यानुशासन, अलंकारचिन्तामणि और वाग्भटालंकार; छन्दमें छन्दोऽनुशासन और रत्नमंजूषा आदि कृतियाँ बहुमूल्य समझी जाती हैं । इसी प्रकार कानूनी साहित्यमें अहंभ्रीति, भद्रबाहुसंहिता, वर्धमाननीति और इन्द्रनन्दिसंहिता आदि एवं ऐतिहासिक ग्रन्थोंमें तीर्थकल्प, परिशिष्टपर्व, प्रबन्धचिन्तामणि, प्रबन्धकोश, प्रभावकचरित्र, कुमारपालप्रतिबोध, कर्मचन्द्रप्रबन्ध और तेजपालवस्तु-पालचरित्र आदि अपने अपने विषयके जागरूक निदर्शन हैं । यह जैन संस्कृत वाङ्मयका दिग्दर्शन मात्र है । बड़े खेदकी बात है कि अभी तक जैन संस्कृत वाङ्मय पर कोई उल्लेख-योग्य सर्वांगपूर्ण पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है । पाश्चात्य विद्वानोंने इस विषय पर कुछ प्रकाश डाला है अवश्य, फिर भी वह संतोषप्रद नहीं कहा जा सकता । इन पश्चिमीय विद्वानोंके द्वारा लिखी हुई पुस्तकोंमें विटरनिट्ज की "A history of Indian Literature" नामक पुस्तक विशेष महत्त्वपूर्ण है । इन्होंने भी अपनी इस पुस्तक (द्वितीय भाग) में विशेष-तया श्वेताम्बर साहित्यपर ही प्रकाश डाला है । बहुत कुछ संभव है कि इनको दिगम्बर जैन ग्रन्थ अध्ययनार्थ नहीं मिले हों । क्योंकि दिगम्बर साहित्यकी अपेक्षा श्वेताम्बर साहित्य अधिक प्रचार एवं प्रकाशमें आया है । एनत्सम्बन्धी हिन्दी पुस्तकोंमें हिन्दू विद्वद्विद्यालय काशीके दो अध्यापकोंके द्वारा सम्पादित "संस्कृत साहित्यका संक्षिप्त इतिहास" नामक पुस्तक दर्शनीय है । इसमें भी इन लोगोंने कुछ ही जैन ग्रन्थोंका परिचय दिया है । साथ ही साथ इस परिचयमें कई त्रुटियाँ भी रह गयी हैं । गुजराती भाषामें श्वेताम्बर भाई मोहनलाल ढलीचन्द देसाई द्वारा लिखित "जैन साहित्यनों संक्षिप्त इतिहास" पठनीय है । पुस्तक विद्वत्पूर्ण है । परन्तु इसमें भी श्वेताम्बर साहित्य पर ही प्रकाश डाला गया है । दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि दिगम्बर विद्वानोंने इस ओर कुछ उल्लेखनीय कार्य नहीं किया है । हाँ, कुछ विद्वानोंकी कृपासे दस-बीस ग्रन्थकर्ता और उनकी कृतियोंका परिचय यत्र-तत्र प्रकट हुआ है अवश्य । किन्तु इससे क्या होनेवाला है । सावकाश विद्वानोंको इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये । एक शृंखलाबद्ध जैन वाङ्मयका इतिहास प्रकाशित होनेकी परमावश्यकता है ।

**कन्नड वाङ्मय**—दक्षिण भारतमें प्रचलित प्रख्यात पञ्च द्राविड भाषाओंमें कन्नड भी एक है । इस भाषावर्गकी अवशिष्ट चार भाषाएँ तमिल, तेलुगू, मलयालम एवं तुलू हैं । द्राविड भाषाएँ संस्कृत और प्राकृत

\* अधिक जानकारी के लिये 'जैन सिद्धान्त-भास्कर' भाग २, किरण १ में प्रकाशित स्व० बाबू पूरय्यचन्द्रजो नाहर का 'धार्मिक उदारता' शीर्षक लेख देखें ।

† विशेष जानकारी के लिये 'जैन सिद्धान्त-भास्कर' भाग ४, किरण २ में प्रकाशित श्री धरारचन्द्रजो नाहरका 'जैन ज्योतिष और वैद्यक ग्रन्थ' शीर्षक लेख देखें ।

आदि आर्य भाषाओंसे भिन्न इसलिये मानी जाती है कि एक तो इन भाषाओंमें व्यवहारोपयोगी स्वतंत्र शब्द प्रचुर मात्रामें पाये जाते हैं। तात्पर्य यह है कि इन भाषाओंको किसी भी आर्य भाषासे उधार लेनेकी जरूरत नहीं पड़ती। दूसरी बात यह है कि इस भाषावर्गका व्याकरण संस्कृत आदि आर्य भाषाओंके व्याकरणोंसे बहुत कुछ भिन्न है। इसके लिये कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

द्राविड भाषाओंमें लिंग अर्थपरक है; संक्षिप्त भिन्न है; संज्ञाओंके एकवचन तथा बहुवचनमें एक ही प्रकारकी विभक्तियाँ हैं; गुणवाचक शब्दोंमें तरतम भाव नहीं है; संबोधार्थक सर्वनामका सर्वथा अभाव है; कर्मण्य प्रयोग कम है; क्रियाओंमें निषेधरूप हे और कृत्यद्धित प्रत्यय स्वतंत्र हैं। ऊपर कहा गया है कि द्राविड भाषावर्गमें व्यवहारोपयुक्त स्वतंत्र शब्द अधिक मात्रामें पाये जाते हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इस भाषावर्गमें संस्कृत और प्राकृत आदि आर्य भाषाओंके शब्द ही नहीं। पीछे समयके प्रभावसे संस्कृत और प्राकृत आदि आर्य भाषाओंके शब्दोंको कौन कहे, क्रमशः इनमें उर्दू, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओंके शब्द भी यथेष्ट आ मिले हैं। विदेशी शब्दोंकी यह रफ्तार केवल द्राविड भाषाओंमें ही नहीं, प्रत्युत सभी भारतीय भाषाओंमें इसी प्रकार जारी रही। इस प्राकृतिक अटल नियमको कोई रोक नहीं सकता। एक दृष्टिसे यह ही उपादेय। अन्यथा किसी भी भाषाके शब्दभाण्डारकी वृद्धि नहीं हो सकती। इतना ही नहीं, प्रत्येक भाषाकी सीमित शब्दावलीसे काम भी नहीं चल सकता। बल्कि भाषातत्त्वके धुरंधर विद्वान् डॉ० कालूडीवेलके मतानुसार कक्क, अत्त, कुटि, कोट, नीर, पल्लि, मीन, एड, मरुत्त, हेरम्ब, अट्ट, आम्, वल्लि, मूकुल, कुतल, पालि, मंड, काक, माचल, मेक, सीर, ताल, वरुक, उत्क, तटित् या तडित्, मलय, आलि, कलि, गंड, सुदि, खलीन, तल्प, कल्प, और खर्जु आदि शब्द द्राविड भाषाओंसे ही संस्कृत कोशोंमें लिये गये हैं\*। इसी प्रकार दीनार, होरा आदि शब्द संस्कृतमें लैटिन, ग्रीक आदिसे लिये गये हैं। कई पाश्चात्य भाषा-शास्त्रियोंका मत है कि संस्कृत व्याकरणमें प्रचलित ध्वनिविषयक खास कर टवर्गाक्षर द्राविड भाषाओंसे ही लिये गये हैं।

यों तो मोहनजोदडो और हड़प्पा आदि स्थानोंमें उपलब्ध चित्रलिपियोंसे द्राविड भाषाओंका मूल वेदपूर्वकाल सिद्ध होता है। ब्राह्मी लिपिकी तरह उस समय भी इन भाषाओंकी लिपि मौजूद थी। † फिर भी खेद है कि दूसरी शताब्दीके पूर्वका कन्नड साहित्य अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। हाँ, तृतीय शताब्दीके कुछ कन्नड शिलालेख अवश्य प्राप्त हुए हैं। साथ ही साथ ज्ञात हुआ है कि मिश्रमें इसी शताब्दीके लिखे गये एक नाटकमें भी कुछ कन्नड शब्द वर्तमान हैं। ‡ सुदीर्घ कालसे ही कन्नड साहित्यकी ओर ध्यान देनेका प्रयत्न किया गया है। इसी लिये जिस समय हिंदी, बंगला, मराठी और गुजराती आदि भाषाओंका जन्म भी नहीं हुआ था उस समयभी कन्नड साहित्यका भाण्डार अनेक बहुमूल्य ग्रन्थरत्नोंसे भरा हुआ था।

प्राचीन कन्नड साहित्यको उच्च एवं प्रौढ़ बनानेका सारा श्रेय जैन आचार्यों एवं कवियोंको दिया जाता है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि जैनोंके ही द्वारा कन्नड भाषाका उद्धार तथा प्रसार हुआ है और उन्होंने ही इस भाषाके साहित्यको एक उच्च श्रेणीकी भाषाके गौरवयोग्य बनाया है। कन्नड साहित्यको उन्नतिके चरम शिखर पर पहुँचानेमें असीम प्रयत्न करके इन्होंने उन्नत साहित्यमें सदाके लिये अपना नाम अमर कर दिया है। इसीसे आज भी संपूर्ण कर्णाटक बड़े आदरके साथ इनके सुयशका गीत गा गा कर अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। तेरहवीं शताब्दी तक कन्नड भाषाके जितने उद्भूत ग्रन्थकर्ता हुए हैं वे प्रायः सबके सब जैन हैं। कर्णाटक कविचरितेके मान्य सम्पादक महामहोपाध्याय स्व० आर० नरसिंहाचार्य एम० ए० के शब्दोंमें जैन ही कन्नड भाषाके आदि कवि हैं। आज तककी उपलब्ध सभी प्राचीन एवं उत्तम कृतियाँ जैन कवियोंकी ही हैं। ग्रन्थरचनानामें जैनोंके प्राबल्यका काल ही कन्नड साहित्यकी उच्च स्थितिका काल मानना होगा। प्राचीन जैन कवि ही कन्नड भाषाके

\* 'कर्णाटक कविचरिते' भाग ३ को प्रस्तावना देखें।

† 'कन्नड संस्कृति' पृष्ठ ८० देखें।

‡ 'कर्णाटक कविचरिते' भाग १ एवं २ को प्रस्तावना देखें।

सौन्दर्य एवं कातिके विशेषतः कारणभूत है। उन्होंने शुद्ध और गम्भीर शैलीमें ग्रन्थ रच कर ग्रन्थरचनाकीशालको उन्नत स्तरपर पहुँचाया है। प्रारम्भिक कन्नड साहित्य उन्हींकी लेखनी द्वारा लिखा गया है। कन्नड भाषाव्ययनके सहायभूत छन्द, अलंकार, व्याकरण और कोश आदि ग्रन्थ विशेषतः जैनोंके द्वारा ही रचे गये हैं।”

बोल-बालको भाषाको ग्रन्थरूप देनेका सारा श्रेय जैन कवियोंको प्राप्त है। उपलब्ध कन्नड साहित्यमें नृपतुंगका कविराजमार्ग ही आदिम ग्रन्थ एवं कवितागुणार्णव महाकवि आदि पंच ही आदिकवि हैं। कवि चक्रवर्ती महाकवि रत्न काव्यनिर्माणकलामें महाकवि भवभूतिसे कम नहीं था। जिनसमयदीपक यह रत्न बस्तुतः कन्नड साहित्यका एक समुज्ज्वल रत्न था। कन्नड काव्यमें कविचक्रवर्ती उपाधि प्राप्त पोन्न, रत्न तथा जन्न ये तीनों वास्तवमें जैन ‘रत्नत्रय’ हैं। विलक्षणकवितासामर्थ्यप्राप्त उपयुक्त महाकवि पम्प अद्वितीय कीर्तिशाली कवि था। इसी प्रकार महाकवि नागचन्द्रके द्वारा प्रशंसित ‘अभिनववाग्देवी’ उपाधिधारिणी कन्ति आदि कवयित्रा हैं।

कन्नड जैन पुराणोंमें आदिपम्प [ ई० सन् ९४१ ] का आदिपुराण, पोन्न [ ई० सन् लगभग ९५० ] का शान्तिनाथपुराण, रत्न [ ई० सन् ९९३ ] का अजितनाथपुराण, चावुंडराय [ ई० सन् ९७८ ] का चावुंडरायपुराण, नागचन्द्र [ ई० सन् लगभग ११०० ] का मल्लिनाथपुराण, कर्णपायें [ ई० सन् लगभग ११४० ] का नेमिनाथपुराण, अगल [ ई० सन् ११८९ ] का चन्द्रप्रभपुराण, आचण्ण [ ई० सन् ११९५ ] का वधमानपुराण, नेमिचन्द्र [ ई० सन् लगभग ११७० ] का अर्धनेमिपुराण, बन्धुवर्मा [ ई० सन् लगभग १२०० ] का हरिवंशपुराण, पार्श्वपण्डित [ ई० सन् १२०५ ] का पार्श्वनाथपुराण, द्वितीय गुणवर्मा [ ई० सन् लगभग १२२५ ] का पुष्पदन्तपुराण, कमलमव [ ई० सन् लगभग १२३५ ] का शान्ताश्वरपुराण, मधुर [ ई० सन् लगभग १३८५ ] का धर्मनाथपुराण, मङ्गरस [ ई० सन् १५०८ ] का नेमिजनेशसङ्गति, शान्तिकीर्ति [ ई० सन् १५१९ ] का शान्तिनाथपुराण, दाहृय्य [ ई० सन् १५५० ] का चन्द्रप्रभपुराण प्रमुख हैं। इनमें पदलालित्य, प्रसाद और सौष्ठव आदि काव्यांचित सभी गुण मौजूद हैं।

इसी प्रकार षट्पाद ग्रन्थोंमें मंगरसका सम्यक्त्वकौमुदी, कुमुदंडु [ ई० सन् लगभग १२७५ ] का कुमुदेन्दुरामायण, भास्कर [ ई० सन् १४२४ ] का जीवधरचरित, कल्याणकीर्ति [ ई० सन् १४३९ ] का ज्ञानचन्द्राभ्युदय, बौम्मरस [ ई० सन् १४८५ ] का सनत्कुमारचरित, काटेश्वर [ ई० सन् १५०० ] का जीवधरषट्पाद और मङ्गरसका जयनृपकाव्य, साङ्गत्यम रत्नाकर वर्णा [ ई० सन् १५५७ ] का भरतशिवभव, पथनाभ [ ई० सन् लगभग १६८० ] का रामपुराण, चन्द्रम [ ई० सन् १६-५ ] का गाम्मटश्वरचरित और बाहुबलीका नागकुमारचरित; शतक ग्रन्थोंमें रत्नाकर वर्णाका शतकत्रयो, व्याकरण ग्रन्थामें नागवर्मा [ ई० सन् लगभग ११४५ ] का भाषाभूषण और शब्दस्मृति, केशराज [ ई० सन् लगभग १२६० ] का शब्दमाणदपण, भट्टाकलङ्क [ ई० सन् १६०४ ] का शब्दानुशासन; छन्दःशास्त्रमें नागवर्माका उन्दीम्ब्राध और अलङ्कार ग्रन्थामें नृपतुंग [ ई० सन् ८१४-८७७ ] का कविराजमार्ग, नागवर्माका काव्यालोकन, उदयादित्य [ ई० सन् लगभग ११५० ] का उदयादित्यालङ्कार और सात्व [ ई० सन् लगभग १५५० ] का रसरत्नाकर आदि बहुत प्रसिद्ध हैं।

उल्लिखित ग्रन्थोंके अतिरिक्त जैन कवियाने वंशक, ज्यातिष आदि लोकापकारी विद्याओं पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। वंशक ग्रन्थोंमें सामनाथ [ ई० सन् ११५० ] का कल्याणकारक, मङ्गराज [ ई० सन् लगभग १३६० ] का स्रगेंद्रमणदपण, श्रीधरदेव [ ई० सन् लगभग १५०० ] का वंशामृत, सात्वका वंशसागत्य, अभिनवचन्द्र [ ई० सन् लगभग १४०० ] का अवशशास्त्र, कीर्तिवर्मा [ ई० सन् लगभग ११२५ ] का गावंच; ज्यातिष ग्रन्थोंमें श्रीधराचार्य [ ई० सन् १०४६ ] का जातकतिलक; गणित ग्रन्थोंमें राजादित्य [ ई० सन् लगभग ११२० ] के व्यवहारगणित, क्षेत्रगणित, व्यवहाररत्न, लीलावती, चित्रहसुगं, जैनगणितटीकादाहरण एवं सूत्र (पाक) शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थोंमें मङ्गरसका सूपशास्त्र आदि उल्लेखनीय हैं।

महाकवि नागचन्द्र अगर उपासना-प्रिय हैं तो कवि नेमिचन्द्र उसके शृंगारोपासक हैं। कविचक्रवर्ती जन्न अगर अहिंसाप्रेमी हैं तो विरक्त कवि बन्धुवर्मा अध्यात्मप्रिय हैं। इसी प्रकार महाकवि अगल अगर संस्कृत पक्षपाती या छोटे कवि अंबस्य कन्नडपक्षपाती। सर्वप्रथम संस्कृत भाषाके बहुमूल्य भूषणोंको पहना कर कन्नड वाग्देवीको

सजानेका श्रेय एवं पीछे उस अलङ्कार भारसे दुःखी उसे उस भारसे मुक्त करनेका श्रेय दोनों जैन कवियोंकी ही प्राप्त है। साथ ही साथ कन्नड भाषामें जब क्रमशः शिथिलता आने लगी, तब उसमें दृढ़ता लानेवाला बंधा-करण केशिराज भी जैन था। इस प्रकार प्रत्येक पहलुओंसे जैन कवियाने कन्नड भाषाकी अटूट सेवा की है। यह अनुपम सेवा कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। जैन काव्योंमें हमें केवल काव्यधर्म ही नहीं, किन्तु आत्मवाद, साम्यवाद, अपेक्षावाद, अहिंसावाद आदि सभी मिल रहे हैं। पुराणोंमें भी हमें अभी ट महापुरुषों की जीवनीके साथ साथ अनुकरणीय आदर्श चरित्रका सकेत भी मिलता है। अगर इनके पूर्वार्धमें शृंगाररसकी स्वच्छ यमुना बहती है तो उत्तरार्धमें नियमसे शातरसकी विमल गंगा बहती मिलेगी। जैन पुराण एवं काव्योंमें उल्लेखनीय यह एक खास गुण है।

पंप, रत्न, नागचन्द्र और जन्न इन जैन कवियोंके नाम कन्नड साहित्यमें अचंच्छा अमर रहेंगे। अंडय्य और नेमिचन्द्र जैसे प्रीत कवियोंने लौकिक कथाओंको भी लिखा है जो कि बीसवीं शताब्दीके उपन्यासोंसे किसी भी दृष्टिसे कम नहीं है। रसिक कवि रत्नाकरका भरतेशवेभव तो एक अद्भुत चीज है। इससे रत्नाकरके विशाल अध्ययन तथा व्यापक ज्ञानका यथष्ट परिचय मिलता है। पंप और रत्नका महाभारत और नागचन्द्रकी रामायण दुर्घोषन तथा रावण जैसे व्यक्तियोंमें भी आदर-बुद्धि उत्पन्न कराती है। सारांशतः जैन कवियोंने हमें काव्य, काव्यलक्षण, जीवनोपयुक्त ज्ञान आदि सब कुछ दिया है।

गंग, राष्ट्रकूट, चालुक्य, हीयसल, विजयनगर तथा मंसूर आदि शासक उपर्युक्त मान्य कवियोंके पोषक एवं प्रोत्साहक बने रहे। इन्हीं राजा-महाराजाओंका आश्रय पाकर पंप, रत्न, पोल्ल और जन्न जैसे महाकवियोंने अपनी अमर कृतियोंके द्वारा कन्नड वाग्दवी का मुख उज्ज्वल-किया है।

जिस प्रकार अन्यान्य प्रान्तोंमें विद्वानोंके द्वारा अपने अपने साहित्यका काल निर्धारित है, उसी प्रकार कन्नड साहित्यका काल भी प्राचीन, माध्यमिक और वर्तमान यों अथवा क्षत्र, मतप्रचारक एवं वैज्ञानिक कालके भेदसे तीन श्रेणियोंमें विभक्त है। प्राचीन, काल नवमी शताब्दीसे बारहवीं शताब्दी तक, माध्यमिक काल बारहवीं शताब्दीसे सत्रहवीं शताब्दी तक, वर्तमान काल सत्रहवीं शताब्दीसे लेकर आज तक माना गया है। कन्नड साहित्य सेवाका भार तीन वर्मानुयायियोंके ही हाथों में रहा। जिस समय जिस जिस धर्मकी प्रधानता थी उस समय मुख्यतया उस धर्मके अनुयायियोंने पूर्ण रीतिसे साहित्यसेवा की है। प्रायः ई० सन् नवमी शताब्दीसे बारहवीं शताब्दी तक जैनोका विशेष प्रभाव था। अत एव कन्नड भाषाका प्रारंभिक साहित्य उन्हींका लेखनी द्वारा लिखा गया है। इस सबधमें कन्नड साहित्यके मर्मज्ञ विद्वान् शेष भी० पारि-शावाडके शब्दोंमें "लगभग ई० सन् छठी शताब्दीसे चौदहवीं शताब्दी तकके सात-आठ सौ वर्ष संबंधी जैनोके अभ्युदय-प्राप्ति-निमित्त जो वाड्यमय है, उसका अवलोकन करना समुचित है। तत्कालीन करीब २८० कवियोंमें ६० कवियोंका स्मरणाय एवं सफल कवि मान लेने पर इनमें ५० जैन कवियोंके नाम ही हमारे सामने आ उपस्थित हात है। इन ५० जैन कवियोंमें से ४० कवियोंको निस्सन्देह हम प्रमुख मान सकते हैं। लौकिक चरित्र, तीर्थकरोंके पारमार्थिक पुराण और दार्शनिक आदि अन्यान्य भी ग्रन्थ जैनोके द्वारा ही जन्म पाकर वे कन्नड साहित्यके ऊपर अपना प्रभाव शाश्वत जमाए हुए हैं।"

जैनोके बाद बारहवीं शताब्दीसे सत्रहवीं शताब्दी तक लिगायतों (शैव) का प्राधान्य रहा। अतः इन शताब्दियोंमें मुख्यतया कन्नड साहित्य इन्हींके हस्तगत रहा। सत्रहवीं शताब्दीसे आज तक ब्राह्मणोंकी प्रधानतामें दो तीन शताब्दियोंसे इस धर्मके कवि साहित्य-सेवा कर रहे हैं। प्राचीन समयमें धर्मोन्नतिके साथ साथ साहित्योन्नतिका संबंध कितना सुन्दर था। साथ ही साथ वह कितने विशदरूपसे अपने ऐतिहासिक रहस्यको प्रकट करता है। यद्यपि कन्नड भाषाका प्रारंभिक काल "जैन काल" माध्यमिक काल "लिगायत काल" और बर्द्धमान काल ब्राह्मणकाल कहलाता है अवश्य, फिर भी लिगायत या वर्तमान कालमें जैन अपनी परंपरागत पवित्र साहित्य सेवाको भूले नहीं हैं। इन समयोंमें भी अनेक जैन ग्रन्थ रचे गये हैं।

अब मैं जैन समाजके समक्ष एक परमावश्यक प्रस्ताव उपस्थित कर देना अपना कर्तव्य समझता हूँ। वह यह है कि कन्नड जैन साहित्यके मौलिक ग्रन्थोंका अनुवाद या तात्पर्याय हिंदीभाषामापी जनताके सामने आ जाना परमावश्यक है। खास कर जो कृतियाँ संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओंमें नहीं मिलती हैं, उनको तो प्रकाशमें आ जाना अनिवार्य ही कहा जा सकता है। जो संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओंमें प्राप्त होते हैं, बल्कि उसीके आदर्श पर कन्नडमें रचे गये हैं, उनका प्रकटीकरण भी अनुपादेय नहीं कहा जा सकता। क्योंकि इससे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्राचीन क्रमिक जैन-संस्कृतिका पता लगानेमें पर्याप्त सहायता मिलेगी। बल्कि इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये 'भारतीय ज्ञानपीठ काशी'की ओरसे इसकी एक शाखा मूडबिद्रीमें सन् १९४४ में स्थापित हुई थी। दुर्भाग्यवश इसके संचालकोंने खर्चको कम करने एवं कार्यशक्तिको केंद्रित करनेके स्थालसे इस शाखाको दो वर्षके बाद बंद कर दिया। फिर भी मैं 'ज्ञानपीठ'के संस्थापक दानवीर सेठ श्रीमान् शांतिप्रसादजीसे सादर एवं साग्रह निवेदन करना चाहता हूँ कि इस शाखाको फिरसे चालू करके पूर्वोक्त पवित्र उद्देश्यको अवश्य पूर्ण कर दें। क्योंकि काशीसे पत्र व्यवहारके द्वारा सुदूरवर्ती कर्णाटकमें कन्नड साहित्यका प्रकाशन एवं प्रचार होना बहुत कठिन है। मेरे स्थालमें शायद ही सफलता मिलेगी।

### जैन वाच्यकी रक्षाका श्रेय

यद्यपि हमारे जैन भाइयोंमें अनेक भाई भट्टारकोके खिलाफ हैं और वे यदा-कदा उनकी कटु समालोचना भी किया करते हैं। पर खेदके साथ लिखना पड़ता है कि वे इन अवसरों पर जैन धर्मके प्रमुख सिद्धांत अनेकान्त या अपेक्षावादको सर्वथा मूल जाते हैं। किसी वस्तुके गुणोंकी उपेक्षा करके केवल उसके दोषोंकी समालोचना करना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। यह नाति जैन धर्मके अपेक्षावादके सर्वथा प्रतिकूल है। मैं मानता हूँ कि परिमार्जन दृष्टिसे किसीके दोषोंको उद्घाटन करना बुरा नहीं है। परन्तु निष्पक्ष होकर दोषोंके साथ-साथ उनके गुणोंको व्यक्त करना भी विमर्शकका आवश्यक धर्म है। मेरे इस वक्तव्यका एक आशय यही है कि भट्टारकोके दोषोंकी जैसी कटु समालोचना की जाती है, वैसे ही उनके गुणोंकी अर्थात् उनके द्वारा समाजको प्राप्त लाभकी प्रशंसा नहीं की जाती। अनुकरणप्रियता रूपी भयकर साक्रामिक रोगसे सर्वसाधारण जनता ही नहीं, कभी कभी हमारे मान्य लेखक भी ग्रस्त हो जाते हैं, यह आश्चर्यका बात है।

वस्तुतः खास कर दिगंबर जैन वाङ्मयकी रक्षाका अधिकतर श्रेय भट्टारकोको प्राप्त है। आज भी जैन वाङ्मयका विशाल संग्रह हमें जैन मठोंमें ही दृष्टिगोचर होते हैं। मूडबिद्री, कारकल, वारंग, श्रवणबेलगोल, हुंबुज, कोल्हापुर, नागौर, कारंजा और ग्वालियर आदि किसी भी स्थानक मठका आप लाजिये वहां पर इस समय भी संकड़ों हजारों हस्तलिखित ग्रन्थ पाये जाते हैं। इतना ही नहीं, उत्तर भारतके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी अपेक्षा दक्षिण भारतके उसमें भी खास कर कन्नड या कर्णाटक लापम लाखत ग्रन्थ अधिक शुद्ध सिद्ध हुए हैं। तीन साढ़े तीन सालमें मेरे द्वारा राजवातिक, तत्त्वायवृत्ति, द्विसंधान और धम्मसाम्भुदयका टीका, न्यायाव-निश्चय, आदिपुराण और सर्वार्थसिद्धि आदि का जो भी प्रांतया यहाँसे सहायनम सहायतायें उत्तर भारतमें भेजी गई हैं, वे प्रायः सबके सब शुद्ध प्रभाणत हुई हैं। बल्कि कांई कांई प्रांत ऐसा निकला है कि सनादकान उसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। इससे मालूम होता है कि उत्तर भारतके लेखकाका अपेक्षा दक्षिण भारतके उसमें भी खास कर कर्णाटकके लेखक अधिक सुबुद्ध थे। इसका कारण भी है—

कुछ शताब्दियों तक कर्णाटक प्रांत दिगंबर विद्वानोंका लोलाभूमि ही बना रहा। दिगंबर संप्रदायके स्वर्ण समर्थ जानेवाले भूतबलि, पुष्पदंत, समंतभद्र, पूज्यपाद, वीरसेन, जिनसेग, गुणभद्र, अकलंक और विद्या-नंदी आदि जितने प्रधान आचार्य इस समय प्रसिद्ध हैं, वे सब ही कर्णाटकके निवासी थे। कर्णाटककी संस्कृति पर इस संप्रदायकी अमित छाप पड़ी हुई है। इस बातको निष्पक्ष प्रकृत जैनैतर विद्वान् भी सहर्ष स्वीकार करते हैं। बल्कि एक जमानेमें कारण-विधेयसे निराश्रित दिगंबर जैन संप्रदायको हस्तावलंबन देकर इसकी रक्षा एवं अभिवृद्धिका सफल तथा पवित्र श्रेय कर्णाटक प्रांतको ही प्राप्त है। यदि उल्लिखित ये दिगंबर आचार्य कर्णाटकमें

जन्म लेकर दिगंबर वाक्ययकी शीवुद्धि नहीं करते तो बहुत कुछ संभव था कि आज भारतीय अन्यान्य क्लृप्त संप्रदायोंकी तरह इसका भी केवल नाम ही नाम रह जाता। क्योंकि यह निर्विवाद सिद्ध बात है कि कोई संप्रदाय बिना अपने मौलिक साहित्यके दीर्घकाल तक जीवित नहीं रह सकता। मैं समझता हूँ कि इस पेतुक साहित्य-संपत्ति जैसी अमूल्य एवं अलभ्य निधिकी रक्षा करनेके उपलक्ष्यमें उत्तर भारतका दिगंबर जैन समाज कर्णाटकका सदा कृतज्ञ बना रहेगा।

अस्तु, मेरे लिखनेका आशय इतना ही है कि उपर्युक्त इन विद्वान् आचार्योंके उपरान्त भी दीर्घकाल तक कर्णाटकमें पठन-पाठनकी परिपाटी बनी रही और ग्रन्थ-लेखनादि साहित्यरक्षाके कार्य बराबर चलते रहे। दानचिन्तामणि अक्षयम्बिके द्वारा कविशकवर्ती महाकवि पोन्नकृत शान्तिनाथपुराणकी एक हजार प्रतिभोंको लिखवाकर शास्त्र दान करनेका शुभ उल्लेख उपर्युक्त मेरी इस धारणाके लिये उज्ज्वल निदर्शन है। दूर जानेकी आवश्यकता नहीं है। इस ग्रन्थतालिकामें पाठक स्वयं देख सकते हैं कि मूडबिद्रीमें विराजमान धवला टीकाकी आद्य प्रति मण्डलानाडु भुज्जबली गङ्गपेर्मादिकी सास देमियक्कके द्वारा कोपण तीर्थके प्रसिद्ध दानी जिन्नयसे लिखवाकर बन्निकेरे उत्तुग जिनचैत्यालयके सिद्धान्तमुनि श्री भृगुचन्द्रदेवको अपने श्रीपञ्चमीव्रतकी उद्यापनाके उपलक्षमें शास्त्र दानमें दी गई थी। इसीकी दूसरी प्रतिको राजा गण्डरादित्यके सेनापति मल्लिदेवने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि श्रीकुलभूषणको शास्त्रदान किया था। इसी प्रकार यहाँकी जयधवला टीकाकी आद्यप्रतिको चिन्नकमय्यके बल्लिसेट्टिने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि श्रीपद्मसेनको और महाबन्धकी आद्य प्रतिको राजा शान्तिसेन की पत्नी मल्लिकम्मादेवीने (उदयादित्यसे लिखवा कर) अपने श्रीपञ्चमीव्रतकी उद्यापनाके उपलक्षमें श्रीसिद्धान्तमुनि माधनन्दीको शास्त्रदान किया था। शास्त्रदान सम्बन्धी इस प्रकारके उदाहरण आपको दो-चार नहीं, सैकड़ों मिलेंगे। बल्कि मुझे कुछ ऐसी भी प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं जो कि ग्रन्थ रचयिताके सास विद्वान् शिष्य वा प्रशिष्योंके द्वारा ही लिखी गई हैं।

### ग्रन्थ-भण्डारोंका संक्षिप्त परिचय

इस ग्रन्थ-तालिकामें जैन मठ तथा श्रीवीर-वाणीबिलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडबिद्री, जैन मठ कारकल, आदिनाथ ग्रन्थ-भण्डार अलियूर और अन्यान्य फुटकर संग्रह मूडबिद्रीके ताडपत्र एवं कागज पर लिखे गये दोनों प्रकारके ग्रन्थोंके नाम संगृहीत हैं। इन भण्डारोंमें जैन मठ और श्री वीर-वाणी-बिलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडबिद्री, जैन मठ कारकल, आदिनाथ जैन भण्डार अलियूर तथा फुटकर संग्रहोंमें सिर्फ सिद्धान्त बसदि मूडबिद्रीका परिचय ही उल्लेखनीय है। अन्य फुटकर संग्रहोंका परिचय देना कष्टसाध्य नहीं, मेरी दृष्टिमें उतना आवश्यक भी नहीं है। इसलिये यहाँ पर पूर्वोक्त भण्डारोंका आवश्यक परिचय निम्न प्रकार दिया जाता है—

**जैनमठ, मूडबिद्री**—मूडबिद्री मद्रास प्रान्तके दक्षिण कन्नड (South Kanara) जिलेमें एक विश्रुत प्राचीन जैन तीर्थ है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी यह स्थान जिसे भरमें सर्वोत्तम समझा जाता है। इस जिलेमें जैनों का आगमन कब हुआ यह निःसन्देह रूपसे कहना बहुत कठिन है। फिर भी इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि ई० सन् प्रथम शताब्दीमें यहाँ पर जैन-धर्म मौजूद था। क्योंकि ई० सन् ७८ में बारकूरमें<sup>१</sup> शासन करने वाला भूतालपांडय जैनधर्मावलम्बी था। हाँ, साधनाभावके कारण तीसरी-चौथी शताब्दियोंमें इस जिलेमें जैन धर्मकी स्थिति केंसी रही, यह नहीं कहा जा सकता। ५ वीं शताब्दीके पश्चात् यहाँ पर शासन करनेवाले चालुक्य, राष्ट्रकूट और होय्सल शासनोंमें भी कई जैन धर्मावलम्बी ही रहे। १२ वीं शताब्दीके बाद तो इस जिलेमें जैन धर्म फिर विशेष रूपसे परलुप्त हुआ। ई० सन् १३ वीं शताब्दीसे १६ वीं शताब्दी तक राज्य करने वाले विजयनगरके शासकोंके शासन-कालमें यहाँ पर जैन धर्म विशेष रहा। इन्हीं शताब्दियोंमें कारकलकी गोम्मटेश्वर मूर्ति (१४३२), मडबिद्रीका होसवसा, अथवा त्रिभुवन-चूडामणि (१४२९) तथा भैरादेवी-मण्डप (१४५१) कन्नकलका चतुर्मुख-बसवि अथवा त्रिभुवन-तिलक-चैत्यालय (१५२१) और वेणूरकी गोम्मटेश्वरमूर्ति (१६०४) निर्मापित हुई हैं।

१. केंसे 'जैन-सिद्धान्त-भाष्य' भा० ४, कि० ४ में प्रकाशित भैरा 'बारकूर' लेख।

अब बेलना है कि मूडबिंदीमें मठ कब स्थापित हुआ। पर यह उतना आसन्न काम नहीं है। इसमें शक नहीं है कि मूडबिंदीका मठ अणबेलगोल मठका ही शाखा है। इसीलिये दोनों मठके मठाधीशोंका नाम भी एक ही चारुकीर्ति है। हाँ, यह शाखामठ कब स्थापित हुआ, इसे जाननेके लिये हमारे पास कोई साधन नहीं है। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि मूडबिंदीका मठ कमसे कम ८०० वर्ष पूर्वका अवश्य है। क्योंकि मूडबिंदी मठाधीशका ही दूसरा एक मठ उसी जिलेके नल्लूर ग्राममें ई० सन् ११२० में स्थापित हुआ है जिसका प्रमाण मौजूद है।

में अन्यत्र लिख चुका है कि जैन मठोंमें ग्रन्थ-संग्रह एवं रक्षाका कार्य सुदीर्घ कालसे चला आ रहा है। अतः मूडबिंदी मठमें भी यह सत्कार्य प्रारम्भसे ही चालू रहा होगा। परन्तु सुननेमें आया है कि स्वर्गीय भट्टारकजीके कालमें संग्रहका कार्य तेजीसे हुआ। उस वक्त अन्यान्य मन्दिरों एवं श्रावकोंके घर पर जो ग्रन्थ संगृहीत थे, उनमेंसे अधिकांश ग्रन्थ सुरक्षाके ख्यालसे मठमें ही भेजा लिये गये। इसके प्रेरक जिनवाणीभक्त वारा-निवासी स्व० श्रीमान बाबू देवकुमारजी थे जिनका जैन सिद्धान्त-भवन दिगम्बर जैन समाजमें एक बहुमूल्य निधि समझी जाती है। खैर, ये सब ग्रन्थ अब मठमें नहीं हैं। वर्तमान मठाधीश चारुकीर्तिजीके द्वारा धर्मशालाके ऊपर निर्मापित नवीन भव्य भवनमें रक्षा पूर्वक रखे गये हैं। आजकल इसके व्यवस्थापक पं० श्री नागराजजी शास्त्री, न्यायतीर्थ हैं।

श्री बीर वाणी-विलास जैन सिद्धान्त-भवन मूडबिंदी—यह भवन सन् १९३३ में स्थापित हुआ। इसके संस्थापक सरस्वतीभूषण पं० श्रीलोकनाथजी शास्त्री हैं। इसमें शास्त्रीजीके निजी ग्रन्थोंके अतिरिक्त अन्यान्य उदार दानियोंके द्वारा भी सैकड़ों हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थ प्रदान किये गये हैं। सामान्यतया संग्रह अच्छा है। शास्त्रीजीके प्रयत्नसे इस ग्रन्थ-भण्डारके लिये एक सुन्दर भवन भी बन गया है जिसमें स्थानीय और बाहरके अन्यान्य उदार दानियोंका पैसा भी लगा है। अभी भी इसकी व्यवस्था प्रेमसे स्वयं शास्त्रीजी ही कर रहे हैं। आप शीघ्र इसका एक ट्रस्टहोड करनेवाले हैं।

जैन मठ, कारकल—कारकल पूर्वमें जैन धर्मान्यायी भैरवराज राजाओंकी समृद्धिशाही राजधानी रही। उस जमानेमें निर्मापित गोम्मटेश्वरकी विशालकाय भव्य मूर्ति, शिलामय त्रिभुवन तिलक-चैत्यालय आदि सुन्दर जिनालय, रामसमुद्र, आनेकेरे आदि चित्ताकर्षक जलाशय वगैरह आज भी यहाँके पूर्व वैभवको सूचित कर रहे हैं। इस समय कारकल तालुकाका हेड क्वार्टर है। यद्यपि आजकल यहाँ पर जैनोंकी संख्या कम है। फिर भी भुजबलि-ब्रह्मचर्याश्रम, जैन कन्या पाठशाला, जैन जीर्णोद्धार-सङ्घ और जैन विद्यार्थी-निलय आदि कुछ संस्थाएँ काम कर रही हैं। यहाँका विशेष परिचय में जैन सिद्धान्त-भास्कर आदिमें कई बार दे चुका है, इसलिये उन्हीं बातोंको फिरसे दुहराना पिष्टपेषण होगा।

पर एक बात पर यहाँ प्रकाश डाल देना आवश्यक प्रतीत होता है। वह यह है कि एक ताजपत्र के आधार पर कुछ विद्वानोंका कहना है कि यहाँका गुरुमठ (मठ) ई० सन् १५०४ में स्थापित हुआ था। किन्तु मैं इससे सहमत नहीं हूँ। क्योंकि कारकलकी गोम्मटेश्वरमूर्तिके दक्षिण पार्श्वमें वर्तमान एक लेखसे स्पष्ट है कि ई० सन् १४६२ में भी श्री ललितकीर्तिजी ही भैरवराज राजाओंके मनोनीत गुरु थे और उन्हींकी अध्यक्षतामें गोम्मट-मूर्तिके प्रतिष्ठासहोत्सवका समारोह सम्पन्न हुआ था। हाँ, इतनी बात तो अवश्य है कि जैसे मूडबिंदीका मठ अणबेलगोलके मठकी शाखा है, उसी प्रकार कारकलका मठ हनसोगे (मैसूर) मठकी शाखा है। खैर, कारकल मठके ग्रन्थोंकी रक्षा वर्तमान भट्टारकजी स्वयं कर रहे हैं। आप पढ़े-लिखे एक उत्साही त्यागी हैं। मेरा ख्याल है कि यहाँके संग्रहमें श्रद्धेय श्री नेमिसागरजी वर्णिके ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं, जिन्होंने लगभग २५ वर्ष पूर्व 'ललितनेमिग्रन्थ संग्रह'के नामसे मैसूरमें एक ग्रन्थालय स्थापित किया था। उल्लूक उन्हें मैंने भी कुछ ग्रन्थ देहाताँसे एकत्रित करके दिया था। उस समय मैं मैसूरमें विद्याध्ययन कर रहा था।

आदिनाथ ग्रन्थ-भण्डार, अन्निपुर—यह कारकल तालुकामें मडबिंदी से ९ मील दूरी पर पूर्व दिशामें

अवस्थित है। इस समय तो अलियूर एक सामान्य ग्राम है। हाँ, सुननेमें आता है कि पूर्वमें यह एक नगर रहा। अ दिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मजलोडि स्व० अनंतय्य शेट्टि द्वारा हालहीमें कराया गया। मन्दिरका स्थान बहुत सुंदर है। स्थान काफी ऊँचा भी है। मन्दिरकी व्यवस्थाके लिये स्थानीय श्रावकोंके सिवाय सरकारसे भी कुछ वर्षाधान नियमित रूपसे मिलता है। मन्दिरके वर्तमान अर्चक श्री अनन्तराजेंद्र उत्साही हैं। सुना है कि इनके पूर्वज बड़े विद्वान् थे। खास कर ज्योतिष और मन्त्र-शास्त्रमें उनकी अच्छी गति रही। इस आदिनाथ ग्रन्थ-भण्डारके कुल ग्रन्थ पहले अर्चकके घर पर थे। मेरी प्रेरणासे अब वे मन्दिरमें ही एक आलमारीमें सुरक्षित रखे गये हैं।

सिद्धान्त बसदि मूडबिद्री—स्थानीय यठके मठाधिपतिका पट्टाभिषेक इसी मन्दिरमें होता है। इसलिये इसे गुरुबसदि भी कहते हैं। बल्कि धबला, जयधबला और महाबंधकी प्राचीन प्रतियाँ इसीमें विराजमान होनेसे सिद्धान्त बसदि भी इसका नाम है। इसमें सोना, चाँदी, स्फटिक, नीलम, गसडोद्गार, गोमेधक, वैडूर्य, माणिक्य, मोती, हीरा, पुल्लराग और मूगा आदि रत्न तथा उपरतनोंकी ३२ अमूल्य एवं अनर्घ्य जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं जिनके दर्शनके लिये दूर दूरसे अधिक संख्यामें यात्री यहाँ पर आया करते हैं। ये प्रतिमाएँ आधे अंगुलसे लेकर ९ अंगल तक की हैं। वस्तुतः इनके दर्शनसे हृदयमें एक अमृतपूर्व आनंद पैदा होता है। जनश्रुति है कि धबलादि ग्रन्थ पहले बंबई प्रान्तके धारवाड जिलेके बंकापुरमें थे और वहाँसे देवताओंके द्वारा यहाँ पर लाये गये हैं। एक जमानेमें बंकापुर बहुत ही उन्नत स्थितिमें था। यह नगर जैन वीर बंकेयके<sup>१</sup> द्वारा बसाया गया था। उस जमानेमें बंकापुरमें ५ धार्मिक महाविद्यालय<sup>२</sup> वर्तमान थे। खैर, यह विषयांतर है। उक्त सिद्धान्त बसदिमें ९ फीट उन्नत शिलामयी पार्वनाथजीकी कायोत्सर्ग मूर्ति है। यह ई० सन् ७१४ में स्थापित हुई है। मूडबिद्रीके कुल मन्दिरोंमें यह सर्व प्राचीन है।

उपर्युक्त ग्रन्थभण्डारोंमें वर्तमान अप्रकाशित ग्रन्थोंमेंसे कुछ ग्रन्थोंके नाम—

### विषय—सिद्धान्त

क्रम नं०	ग्रन्थ का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	पं०सू०पृ०
१	आरोहणसार	×	संस्कृत	१
२	आसवसन्तति	श्रुतिमुनि	प्राकृत	१
३	कर्मप्रकृति	अभयचन्द्र	संस्कृत	२
४	कालस्वरूप	×	प्राकृत	४+
५	चतुर्गतिबन्ध तथा चतुर्बन्ध	×	कन्नड	८
६	त्रिभङ्गीटीका	कनकनन्दी	संस्कृत	१०
७	त्रिभङ्गीटीका	श्रुतमुनि	कन्नड	१०
८	द्रव्यसंग्रहलघुवृत्ति	बालचन्द्र	"	१३
९	*नवपदार्थनिश्चय	वादीभसिंह (?)	संस्कृत	१३
१०	पदार्थसार	माघनन्दी	सं०, प्रा०, क०	१३
११	*परमागमसार	श्रुतमुनि	प्रा०, सं०	१५
१२	बन्धूपदेश	बालचन्द्र	संस्कृत	१६

### विषय—अध्यात्म

१३	†ध्यानस्तव	भास्करनन्दी	संस्कृत	२६
----	------------	-------------	---------	----

१. देखें 'जैन सिद्धान्तभास्कर' भा० १३, कि० १ में प्रकाशित मेरा "जैन वीर बंकेय" लेख।

२. देखें 'बन्धुर्गति' प्रतिके प्राचीन जैन स्मारक' पृष्ठ ११६।

× इस नामके दो-दो ग्रन्थ और हैं। † यह 'जैन सिद्धान्त भास्कर' में प्रकाशित हुआ है।

विषय-धर्म

१४	*आराधनासमुच्चय	रविचन्द्र	संस्कृत	१७
१५	उद्योगसार	नेमिचन्द्र	"	१९
१६	तत्त्वरत्नप्रदीपिका	बालचन्द्र	कन्नड	४४
१७	तत्त्वार्थवृत्ति	प्रभाचन्द्र	संस्कृत	४५
१८	तत्त्वार्थलघुवृत्ति	विद्याकरमुनीन्द्र	कन्नड	४५
१९	त्रैवर्णिकाचार	इन्द्रनगरी	संस्कृत	४७
२०	दानसार	प्रभाचन्द्रदेव	कन्नड	४७
२१	प्रायश्चित्तविधि	इन्द्रनन्दी	प्राकृत	५८
२२	भब्यजनकण्ठरत्नाभरण	अभयचन्द्र	कन्नड	६०
२३	गुणप्रकाश	×	संस्कृत	२०७

विषय-न्याय

२४	न्यायमणिदीपिका	×	संस्कृत	९६
२५	*परीक्षामुखवृत्ति	शुभचन्द्रदेव	"	९८
२६	विषयतत्त्वप्रकाश	भावसेन	"	१०३
२७	सत्यशासनपरीक्षा	विद्यानन्दी	"	१०३
२८	*स्याद्वादसिद्धि	वादीभसिंह	"	१०४
२९	प्रवचनपरीक्षा	अभयचन्द्र	"	२२१

विषय-व्याकरण

३०	कातन्त्रविस्तर	वर्धमान	"	१०७
३१	चिन्तामणिटीका	समन्तभद्र	"	१०७
३२	मन्त्रव्याकरण	समन्तभद्र	"	२२३
३३	जैनेन्द्रन्यास	प्रभाचन्द्र	"	२९०

विषय-काव्य

३४	चन्द्रप्रभचरितव्याख्या	मुनिचन्द्र	"	१२३
३५	धर्मशर्माभ्युदयटीका	देवर	"	१२५
३६	नेमिनिर्वाणटीका	×	"	१२६
३७	यशोधरकाव्यटीका	लक्ष्मण	"	१३०
३८	राघवपाण्डवीयटीका	देवर तथा सूरि (१)	"	१३१
३९	शृंगारसुधाविधि	मङ्गरस	कन्नड	१३४
४०	पञ्चसंधान	शान्तिराज	संस्कृत	२९१
४१	यशोधरटीका	लक्ष्मण	"	२९२
४२	सरसजनचिन्तामणि	शान्तिराज	"	२९२
४३	सन्देहहर्षांतदीपिका	यशःकीर्ति	"	२९३

विषय-अलङ्कार

४४	*अलङ्कारसंग्रह	अमृतानन्दी		१३५
४५	वाग्भटालंकार	बालचन्द्र		१३७

		<b>विषय—पुराण</b>		
४९	त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण	मल्लिवेण	संस्कृत	१४६
४७	*धर्मनाथपुराण	बाहुबली	कन्नड	१४६
४८	पाण्डवपुराण	वादिचन्द्र	संस्कृत	१४८
४९	पार्वनाथपुराण	पार्वनाथ	कन्नड	१४८
५०	श्रीपुराण	हस्तिमल्लि	संस्कृत	१४८
		<b>विषय—चरित</b>		
५१	ज्ञानचन्द्राभ्युदय	कल्याणकीर्ति	कन्नड	१५२
५२	ज्ञानचन्द्रचरित	पायणवर्णी	"	१५२
५३	पार्वनाथचरित	शान्तिकीर्ति	"	१५४
५४	प्रभञ्जनचरित	मंगरस	"	१५५
५५	प्रद्युम्नचरित	महासेन	संस्कृत	१५५
५६	श्रीपालचरित	सकलकीर्ति	"	१५७
५७	ज्ञानभास्करचरित	नेम्मण	कन्नड	२३१
५८	धन्यकुमारचरित	आदिनाथ	"	२३२
५९	नागकुमारषड्पदि	विजयण	"	२३३
६०	"	कल्याणकीर्ति	"	२३३
६१	बाहुबलिचरित	चिक्कण	"	२३३
६२	यशोधरचरित	चन्द्रण	"	२३४
६३	रोहिणीचरित	जिनचन्द्र	"	२३४
६४	लोभदत्तचरित	नेमरस	"	२३४
६५	वर्धमानचरित	पद्म	"	२३४
६६	वसन्ततिलकाचरित	नेमिचन्द्र	"	२३४
६७	विजयकुमारीचरित	श्रुतिकीर्ति	"	२३४
६८	श्रीपालचरित	इन्द्रदेवरस	"	२३४
६९	"	वर्धमान	"	२३५
७०	श्रेणिकचरित	जिनदेवण	"	१३५
७१	अनन्तमतिचरित	सातणवर्णी	"	२६७
७२	बञ्जनाचरित	शिशूमायण	"	२६९
७३	बांजनेयचरित	मायण	"	२६९
७४	सुकुमारचरित	शान्तिनाथ	"	२६९
७५	सुदर्शनचरित	नेमरस	"	२६९
		<b>विषय—इतिहास</b>		
७६	श्रीपालचरित	केशण	"	२९७
७७	गोम्मटेश्वरचरित (कारकल)	चन्द्रम	"	१६४
७८	" (वेणूर)	गुरुराम	"	२३८
		<b>विषय—वैद्यक</b>		
७९	कल्याणकारक	सोमनाथ	"	१६५
८०	बालप्रहृषिकिस्ता	देवेन्द्रमुनि	"	२७१

विषय-ज्योतिष

८१	अक्षरकेवलप्रश्न	×	”	१६६
८२	केवलज्ञानहोराशास्त्र	चन्द्रसेन	”	१६६
८३	केवलप्रश्न	×	कन्नड	१६७
८४	गर्भप्रश्न	×	”	२४२
८५	चन्द्रोन्मीलनप्रश्न	×	संस्कृत	२४२
८६	जिनेन्द्रमाला	×	कन्नड	२४२
८७	*ज्योतिज्ञानविधि	श्रीधराचार्य	संस्कृत	२४२
८८	अट्टमत	अहंदास	कन्नड	२७३
८९A	तीर्थकेवलप्रश्न	×	संस्कृत	२७४
८९B	*केवलज्ञानचूडामणि	समन्तभद्र (?)	”	२४७

विषय -गणित

९०	गणितविलास	चन्द्रम	कन्नड	१६८
९१	*गणितसार	श्रीधराचार्य	संस्कृत	१६९
९२	गणितसंग्रह	राजादित्य	कन्नड	१६९

विषय-मन्त्रशास्त्र

९३	गणधरवल्यकल्प	×	संस्कृत	१६९
९४	पञ्चनमस्कारचक्र	×	”	१७०
९५	*कामचाण्डालिनीकल्प	मल्लिषेण	”	२४४
९६	ज्वालिनीकल्प	इन्द्रनन्दी तथा मल्लिषेण	”	२४४-५
९७	ब्रह्मविद्याविधि	×	”	२४५
९८	विद्यानुवादांग	×	”	२४६
९९	सरस्वतीकल्प	मल्लिषेण तथा विजयकीर्ति	”	२९६
१००	*श्रीदेवताकल्प	अरिष्टनेमि	”	२७६

विषय-स्तोत्र

१०१	निजाष्टक	योगीन्द्रदेव	प्राकृत	१८९
१०२	वृषभनाथगद्य	हस्तिमल्ल	संस्कृत	१९३
१०३	सिद्धस्तोत्र	भाशाधर	”	१९६
१०४	अहंभक्ति	”	”	२५०
१०५	चतुर्विंशतिस्तव	केशवसेन	”	२५०
१०६	चन्द्रप्रभस्वामिघोष	पूज्यपाद	”	२५०
१०७	चतुर्विंशतिस्तोत्र	माधनन्दी	”	२७८
१०८	आरोग्यस्तोत्र	श्रुतकीर्ति	कन्नड	३०३
१०९	प्रश्नोत्तरचतुर्विंशतिजिनस्तव	धर्मचन्द्र	संस्कृत	३०४

विषय-प्रतिष्ठा तथा पूजा

११०	प्रतिष्ठाकल्प	मद्गाकलङ्क	संस्कृत	२१४
-----	---------------	------------	---------	-----

१११	अष्टमनन्दीश्वरपूजा	विद्यानन्दी	संस्कृत	२१६
११२	सिद्धचक्रपूजा	आशाधर	,,	२२०
११३	संक्षिप्तश्रुतज्ञानविधान	चन्द्रम	,,	२२०

## विषय-आराधना तथा व्रतविधान

११४	भुजबलिकल्याणव्रतविधान	पद्मनन्दी	,,	२१८
११५	श्रुतस्कन्धाराधना	विजयवर्णी	,,	२१९

## विषय-परीक्षा

११६	अश्वपरीक्षा	अमिनवचन्द्रम	कन्नड	२४६
-----	-------------	--------------	-------	-----

## विषय-क्रियाकाण्ड

११७	*दशभक्त्यादिसंग्रह	वर्धमान	सं०, प्रा०, क०	२४९
-----	--------------------	---------	----------------	-----

## विषय-कथा

११८	चन्द्रषष्ठिकथा	माधवचन्द्र	संस्कृत	२३५
११९	त्रैलोक्यविधानकथा	अभ्रदेव	संस्कृत	२३६
१२०	रत्नत्रयकथा	पद्मनन्दी	,,	२३६
१२१	रुक्मिणीकथा	सोमदेव	,,	२३६

## विषय-गीत

१२२	आदिनाथयक्षगान	सदानन्द	कन्नड	२५१
१२३	पद्मावतीयक्षगान	बाहुबली तथा शङ्कर भट्ट	,,	२५२

## विषय-नीति

१२४	*नीतिवाक्यामुत्पीका	नेमिनाथ	कन्नड	२९३
-----	---------------------	---------	-------	-----



## ग्रन्थतालिका-निर्माणमें कठिनाइयों

ग्रन्थतालिकानिर्माणमें सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि एक बंडलमें एक-दो नहीं, किसी-किसीमें दस-बीस ग्रन्थ तक रहते हैं। वे भी एक विषयके नहीं, भिन्न-भिन्न विषयके। ऐसा भी है कि किसी-किसी बंडलमें पूर्ण ग्रन्थ एक भी नहीं मिलता। किन्तु किसीका एक पत्र, किसीके दो पत्र, किसीके चार पत्र और किसीके आठ। इसके साथ-साथ दूसरी यह विषयक भी है कि ताडपत्रीय ग्रन्थोंकी लिपि बहुत ही बारीक रहती है। बल्कि, किसी-किसीकी लिपि इतनी खराब होती है कि वह पढ़ी ही नहीं जाती। ऐसे भी संग्रह मिलते हैं कि एक ही में ज्योतिष, मंत्रशास्त्र, कामशास्त्र, स्तुति और मजनादि सब कुछ भर दिये गये हैं। जैसे कोई आधे पत्रमें, कोई एक पत्रमें, कोई दो पत्रोंमें और कोई चार पत्रोंमें। पाठक ही सोचें कि इसका क्या नाम लिखा जाय और क्या विषय। इसे एक छोटा नोट-बुक कहना ही समुचित है।

वस्तुतः प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंकी तालिका तैयार करना आसान काम नहीं है, जैसे कुछ व्यक्ति समझ रहे हैं। प्रत्युत यह बहुत ही कष्टसाध्य एवं क्लेश काम है। इस बातका अनुभव एक मुक्तभोगी ही कर सकता है। बंडलके प्रत्येक पत्रको सावधानीसे उलट-पुलट कर देखना आवश्यक होता है। अन्यथा बीचमें जो ग्रन्थ छिपा हुआ है, वह छूट ही जाता है। गणितसार-श्रीधराचार्य, परीक्षामुखवृत्ति-शुभचन्द्र, स्याद्वादसिद्धि तथा नवपदार्य-निश्चय-वादीभिर्सिंह, आराधनासार-रविचन्द्र और ध्यानस्तव-भास्करनंदी आदि अभी उपलब्ध अप्रकाशित नये ग्रन्थ क्या पहलेसे भाण्डारोंमें मौजूद नहीं थे? फिर इसके पूर्व, पूर्वमें तालिकानिर्माण करनेवालोंको ये ग्रन्थ क्यों नहीं मिले? कृपया इसका अर्थ कोई यह न लगावे कि प्रस्तुत तालिका त्रुटियोंसे संबंधा मुक्त है। इसमें भी बहुत सी त्रुटियाँ होंगी और उन त्रुटियोंका होना कोई अस्वाभाविक नहीं है। हाँ, सावधानीसे काम लिया गया है। फिर भी एक व्यक्तिके हाथका काम नहीं है, मैं इस पर बिना पाठकोंको पूर्ण विश्वास दिला दूँ।

## धन्यवाद समर्पण

अंतमें ग्रन्थभाण्डारके संरक्षकों एवं अन्यान्य सहयोगियोंको धन्यवाद देना भी मेरा कर्तव्य है। ग्रन्थ-भाण्डारके संरक्षकोंमें खास कर अद्वैत स्वस्ति श्री भट्टारक षाडकीतिजी मुडबिंदी और स्वस्ति श्री भट्टारक लालत-कीर्तिजी कारकल विशेष धन्यवादके पात्र हैं। आप दोनोंने अपने यहाँके ग्रन्थ-तालिका-निर्माणमें विशेष रूपसे सहायता की है। इसके अतिरिक्त श्री बीरवाणी-बिलास जैन सिद्धान्त-भवनके संचालक सरस्वतीभूषण पं० बी० लोकनाथजी शास्त्री, आधिनाथ ग्रन्थभाण्डार अलियूरके अधिकारी श्री अनतराजेंद्रजी, मुडबिंदीके अन्यान्य फुटकर संग्रहोंके संरक्षक जैसे सिद्धांत बसदिके प्रबंधक जैन पंच, शीटर श्री धर्मसाम्राज्यजी, पं० श्री नेमिराजबा सेट्टि, पं० श्री एम० एस० पयनाभजी शास्त्री, बंकणतिकारीबसदि श्री जिनराजेंद्रजी, हासबसदि श्री शातिराजेंद्रजी पडुबसाद श्री अनन्तराजेंद्रजी और मा० श्री देवराजजी साठु भी धन्यवादके अधिकारी हैं, जिन्होंने बड़ी उदारतासे सूचीनिर्माणार्थ अपने यहाँके बहुमूल्य ग्रन्थोंको सहर्ष प्रदान किया है।

सहायिगियोंमें सरस्वतीभूषण पं० श्री० लोकनाथजी शास्त्री, पं० श्री एस० चन्द्रराजेंद्रजी शास्त्री, पं० श्री एम० एस० पयनाभजी शास्त्री तथा पं० श्री एम० पी० भोजराजजी पुवणिका भी मे नहीं भूल सकता जिनकी सहायतासे इस ग्रन्थ तालिकाको मैं इस रूपमें आप पाठकोंके समक्ष रख सका। इस अवसर पर 'जैन विद्या-वर्द्धक संघ' मुडबिंदीके सुयाय कार्यदर्शी श्री एम० जगत्पालजीके उपकारका स्मरण करना भी मैं अपना धर्म समझता हूँ, जिन्होंने बड़ी उदारतासे 'भारतीय ज्ञावर्षठ' के शाखा-कार्यालयको लगभग दो साल तक बिना प्रति-फलपेक्षाके अपने ही यहाँ संघ-भवनमें स्थान दे कर इसके प्रत्येक कार्यमें समय-समय पर सहायता की है। इस तालिका-निर्माण-कार्यमें मठके ग्रन्थभाण्डारके व्यवस्थापक पं० श्रीनागराजजी शास्त्रीसे भी काफी सहायता मिली है, अतः वे भी धन्यवादके पात्र हैं।

\* इस विषयके ग्रन्थ भारतीय ज्ञानपीठकी ओरसे प्रकाशित होनेवाले हैं।

## मेरा निवेदन

अब ग्रन्थ-तालिकाके संपादनके संबंधमें भी दो शब्द लिख देना परमावश्यक है। इस ग्रन्थ-तालिकाका निर्माण काई सिस्टममें 'भारतीय ज्ञानपीठ' काशीके शाखाकार्यालय मूडबिद्रीमें हुआ। बाद आशानुसार ये काई सबके सब प्रधान कार्यालय काशीमें भेज दिये गये, और व्यवस्थापकजीको लिख दिया था कि इसका प्रूफ मेरे पास आ जाना चाहिये, ताकि प्रूफमें सुधारी जानेवाली आवश्यक बातें सहज सुधार दी जाय। किंतु छपाई आदिकी असुबिधासे वे ऐसा नहीं कर सके। परिणामस्वरूप ग्रन्थ-तालिका में कहीं ग्रंथ तथा ग्रंथकर्तके जैसे-चंद्रमका चंद्रप, शान्तिका शान्ति और यंत्रप्रतिष्ठा विधानका यथाप्रतिष्ठाविधान, यंत्रविधि का यंत्रविधि आदि नामोंमें भी अशुद्धियाँ रह गई हैं।

ग्रंथ तालिकातर्गत अर्जन ग्रंथोंको \* इस चिन्हके द्वारा सूचित करनेका प्रयास कार्यालय वालोंने किया है अवश्य, पर यह भी कहीं कहीं छूट गया है।

अस्तु, इस ग्रंथ-तालिकाको प्रकाशमें लानेके उपलक्षमें 'भारतीय ज्ञानपीठ'के संस्थापक श्रीमान् दानवीर सेठ शांतिप्रसादजी, मंत्री बाबू श्री अयोध्याप्रसादजी गोयलीय तथा न्यायाचार्य श्रीमान् पं० महेंद्रकुमारजी शास्त्री इन तीनोंका समाज अवश्य कृतज्ञ रहेगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि ग्रंथ-तालिकाके दूसरे भागमें बारंग, हुंबुज, श्रवणबेलगोल और काव्हापुर आदि दक्षिणके शेष ग्रंथभागधारोंके ग्रंथ भी अवश्य सम्मिलित किये जायेंगे। तब ही 'ज्ञानपीठ' का यह कार्य पूर्ण संपन्न हुआ समझा जायगा।

मूडबिद्री }  
६।११।४७ }

-युजबली शास्त्री

# कन्नड प्रान्तीय ताडपत्रीय ग्रन्थसूची



# कन्नडग्रन्थसूची

## मूडबिद्री जैनमठके ताडपत्रीय ग्रन्थ

### विषय—सिद्धान्त

ग्रन्थ नं० २०७ ।

१ आसवह्यासार-..... पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें गुणस्थानक्रमारोहणपर प्रकाश डाला गया है ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

२ आसवतिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें कन्नडवृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ५११ ।

३ आसवसंतति-श्रुतमुनि । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें बालचन्द्रकृत कन्नडटीका भी है । टीकाका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है—  
अभिवन्ध जिनान्वीरान् सद्ज्ञानादिगुणात्मकान् । कर्णाटभाषया वक्ष्ये टीकामासवसन्तते: ॥

ग्रन्थ नं० ७७४ ।

४ आसवसंतति-श्रुतमुनि । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

ग्रन्थ नं० ४२ ।

५ कम्मपयडि [ कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० २० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें कन्नडवृत्ति एवं 'रयणसार' के कुछ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

६ कम्मपयडि [ कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें मूलमात्र है ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

७ कम्मपयडि [ कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७५ ।

८ कम्मपयडि [ कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मुनि प्रभाचन्द्रदेवकृत कन्नडटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५६३ ।

९ कम्मपयडि [ कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें कन्नडटीका है तथा 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के कुछ खण्डित पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५६३ ।

१० कम्मपयडि [ कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें 'सूक्तिमुक्तावली' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

११ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८६ ।

१२ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र संख्या-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४५ ।

१३ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

१४ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५१ ।

१५ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

अन्तिम पद्य-जयन्ति विधुताशेषपापाञ्जनसमुच्चयाः । अनन्तानन्तधीदृष्टिसुखवीर्या जनेश्वराः ॥

कृतिरियमभयचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तिनः ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

१६ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं० २४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

प्रारम्भिक पद्य-प्रक्षीणावरणद्वैतमोहप्रत्यूहकर्मणे । अनन्तानन्तधीदृष्टिसुखवीर्यात्मने नमः ॥ १ ॥

विशेष-यह ग्रन्थ 'गोम्मटसार' से भिन्न है, तथा गद्यरूप है ।

ग्रन्थ नं० ५८२ ।

१७ कर्मप्रकृति-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११९ ।

लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।  
अन्तिम पद्य—जयन्ति बिधुताशेषपापाऽञ्जनसमुच्चयाः । अनस्तानन्तधीदृष्टिसुखवीर्या जिनेष्वराः ॥

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

१८ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६० । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१९ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—५ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५० ।

२० कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—७ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९५ । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५१ ।

२१ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—८ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—६९ । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—जीर्ण ।  
विशेष—इसमें कन्नडटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ९० ।

२२ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—१३ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७८ । लिपि—कन्नड ।  
विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।  
विशेष—मेहनन्दिके शिष्य जिनचन्द्रदेवने तेंकण आदियण्णके वास्ते इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २१४ ।

२३ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—१५ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१८ । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

२४ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—२५ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४२ । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

२५ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—७ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९२ । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—प्रतिमें इसका नाम 'कर्मप्रकृतिबोलिल' है ।

ग्रन्थ नं० ४६४ ।

२६ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—८ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४२ । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८१ ।

२७ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—१९ । पंक्ति प्रतिपत्र—५ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४६ । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य-शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

२८ कर्मप्रकृति—..... । पत्र सं०—१७ । पंक्ति प्रतिपत्र—४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड ।  
भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६५९ ।

२६ कर्मप्रकृति-..... । पत्र सं०-८० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७४५ ।

३० कर्मप्रकृति-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें 'लोकस्वरूप' का भी एक पत्र है ।

ग्रन्थ नं० ७६८ ।

३१ कर्मप्रकृति-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें 'पंचपरमेष्ठिस्वरूप' ( कन्नड ) के भी २ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ९०३ ।

३२ कर्मप्रकृति-..... । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३५ ।

३३ कालविभाग-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

३४ कालस्वरूप-..... । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें बीच बीच में संस्कृतविवरण भी है ।

प्रारम्भिक पद्य-वन्दिता पंचगुरू सदिदपरिपूजिए अर्णतगुणे । भरद्वेरावद्वेत्तजकालसरुवं पवक्खामि ॥१॥

ग्रन्थ नं० ७४० ।

३५ कालस्वरूप-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

३६ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड तथा कर्मकाण्ड ] आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-  
७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा  
शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संवृष्टिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८९ ।

३७ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड तथा कर्मकाण्ड ] आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-  
५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा  
अशुद्ध । दशा-अतिजीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें 'दशबैकालिक' तथा 'आप्तमीमांसा' के भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

३८ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ] आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० ९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें केशववर्णीकृत संस्कृतटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६६ ।

३६ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० २२४ । पंक्ति प्रतिपत्र ६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा- सामान्य ।

विशेष-इसमें आचार्य अभयचन्द्रकी संस्कृतटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८० ।

४० गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९३ । \*

४१ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें धनञ्जयनाममालाके भी ३ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५१ ।

४२ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० २६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा- प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९६ ।

४३ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

विशेष-इसमें केशववर्णिकृत कन्नडटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५११ ।

४४ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

४५ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५६७ ।

४६ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० १७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७३ ।

४७ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं० ५० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति १२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कवि अण्णलकृत 'चन्द्रप्रभपुराण' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७४ ।

४८ गोम्मतसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र- ६ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय- सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५८८ ।

४९ गोम्मतसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर  
प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा- प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-  
उत्तम ।

विशेष-इसके अन्तकी ७ गाथाएँ नहीं हैं । इसमें केशववर्णिकृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड  
टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६७२ ।

५० गोम्मतसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'द्रव्यसंग्रह' तथा 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७६७ ।

५१ गोम्मतसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-११२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय- सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें केशववर्णविरचित 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नडवृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ७८७ ।

५२ गोम्मतसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-  
सामान्य ।

विशेष-इसमें मूलगाथाओंकी संस्कृत-छाया है तथा त्रिभंगी आदिके भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८१३ ।

५३ गोम्मतसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें षोडशभावनाके गीत भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ९०५ ।

५४ गोम्मतसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें संदृष्टियाँ तथा संस्कृतटिप्पणी भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८ ।

५५ गोम्मतसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२९४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें चामुण्डरायके द्वारा शालिवाहन षक १८२१ में रचित कन्नडवृत्ति भी है । वृत्तिके अन्तमें  
एक विस्तृत कन्नडप्रशस्ति लगी है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

५६ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति—११० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें केशववर्णिकृत विस्तृत कन्नडटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

५७ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति—११० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २९४ ।

५८ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—३१७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१३२ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसमें केशववर्णिकृत कन्नडटीका है । यह टीका शालिवाहन शक १२८१ विकारि संवत्सर, चैत्र शुक्ला ५ के दिन रची गई है ।

ग्रन्थ नं० ४२३ ।

५९ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड की टिप्पणी ]—पत्र सं० १२ । पंक्ति प्रतिपत्र—१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१९९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४३२ ।

६० गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—२२५ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—२०० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें केशववर्णिकृत कन्नडटीका है । भट्टारक धर्मभूषणकी आज्ञासे उक्त केशववर्णिने शालि शक १२८१ में इस टीकाकी रचना की है । लेखक पण्डितदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० ५०९ ।

६१ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—३० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६३ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५४४ ।

६२ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—१७१ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१६० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अतिजीर्ण ।

विशेष—इसमें बीच बीचमें कन्नडटीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५८६ ।

६३ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—२८१ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२५ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । शालि शक १२५१ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अतिजीर्ण ।

विशेष—इसमें केशववर्णिकृत कन्नडवृत्ति है । यह वृत्ति शालि शक १२५१ विकारि संवत्सर, चैत्र शुक्ला ५ के दिन रची गई है ।

ग्रन्थ नं० ६७० ।

६४ गोष्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत तथा कन्नडवृत्ति है, तथा पूजा एवं वैद्यक संबंधी कुछ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५०० ।

६५ चतुर्गतिबन्धक्रम-.....पत्र सं० ५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

६६ चतुर्बन्ध-..... पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

६७ चतुर्बन्ध-.....पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८१ ।

६८ ठिदिबन्ध-[ स्थितिबन्ध ]-.....पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

६९ स्वस्वरूप-.....पत्र सं०- ६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

७० तत्त्वानुशासन-मुनि रामसेन । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७०६ ।

७१ तत्त्वानुशासन-मुनि रामसेन । पत्र सं० १४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

७२ तत्त्वानुशासन-मुनि रामसेन । पत्र सं० ५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें किसी धर्मग्रंथके संस्कृतटिप्पणीके आद्यन्तरहित ५ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २९१ ।

७३ तत्त्वार्थराजवार्तिक-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२८० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८७ ।

७४ तत्त्वार्थराजवार्तिक-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-१७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४९७ ।

७५ तत्त्वार्थराजवार्तिक-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८८९ ।

७६ तन्त्रार्थैर्गात्रवार्तिक-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २० ।

७७ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें गोम्मटसारकी सन्दृष्टिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४३ ।

७८ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नडवृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ५१ ।

७९ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

ग्रन्थ नं० १२८ ।

८० तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

८१ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६४ ।

८२ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९० ।

८३ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें बालचन्द्रकृत कन्नडवृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ४१७ ।

८४ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०६ ।

८५ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

ग्रन्थ नं० ६०९ ।

८६ तिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नडटीका है ।

ग्रन्थ नं० ७२६ ।

८७ त्रिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत 'आदिपुराण' के भी कुछ पत्र हैं । उक्त ग्रंथ कन्नडटीकासहित है ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

८८ त्रिभंगी-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २०३ ।

८९ त्रिभंगीटीका-आचार्य कनकनन्दी । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०४ ।

९० त्रिभंगीटीका-श्री श्रुतमुनि । पत्र सं०-१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

९१ त्रिभंगीटीका-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रंथ नं० ७७१ ।

९२ त्रिभंगीवृत्ति-केशवण्ण । पत्र सं०-८९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह 'गोम्मटसार' [ कर्मकाण्ड ] का एक प्रकरण है । ग्रंथारंभमें मुनि जयकीर्ति कृत संस्कृत अवतरणिका भी इसमें उद्धृत की गयी है ।

ग्रन्थ नं० २० ।

९३ द्रव्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रंथ नं० २६ ।

९४ द्रव्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि० शक-११९५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें लेखनकाल-"शकवर्षे बाणपदार्थकलाधररूपसंख्येयं" अर्थात् शालिवाहन शक ११९५ लिखा है । इसमें बालचन्द्रदेवकी कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ४१ ।

९५ द्रव्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । विषय-सिद्धान्त । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'गोम्मटसार' ( जीवकाण्ड ) के कुछ पत्र और संदृष्टि भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५० ।

९६ द्रव्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

६७ दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१८ $\frac{१}{२}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

६८ दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२८ ।

६९ दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

१०० दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शीर्ण ।  
विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ३०० ।

१०१ दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१६ ।

१०२ दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-११६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ४५२ ।

१०३ दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

१०४ दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३ $\frac{१}{२}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

१०५ दृढसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें कन्नड वृत्ति है । इसके रचयिता पण्डित बालचन्द्र हैं । यह शालि० शक ११९५ आंगिरस संवत्सर कार्तिक कृष्णा पंचमीके दिन रची गयी है ।

ग्रन्थ नं० ५५२ ।

१०६ दृष्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—७५ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अतिजीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष—इसमें श्रीब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका है । ग्रंथ पूर्ण है, पर बीच-बीच में कुछ पत्र खण्डित हैं ।

ग्रन्थ नं० ५९८ ।

१०७ दृष्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—१७ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

१०८ दृष्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—७ । पंक्ति प्रतिपत्र—४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें ७७ गाथाएँ हैं ।

ग्रन्थ नं० ६७८ ।

१०९ दृष्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—५९ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । शालि० शक १६६८ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें पण्डित बालचन्द्र कृत कन्नड टीका है । यह टीका शालि० शक ११९५ आंगिरस संवत्सर कार्तिक कृष्णा ५ के दिन रची गयी है ।

ग्रन्थ नं० १७९ ।

११० दृष्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५५ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—अडगूहनवासी मत्पण्णने मुनि जिनदेवके लिये शास्त्रदान-निमित्त इसे लिखा है । इसमें 'अकल-काष्टक' भी है ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

१११ दृष्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—१८३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८४ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६९६ ।

११२ दृष्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—६३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७८२ ।

११३ दृढ्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८०९ ।

११४ दृढ्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८१३ ।

११५ दृढ्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपत्र-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१५ ।

११६ दृढ्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

११७ दृढ्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

११८ दृढ्यसंग्रह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८९ ।

११९ द्रव्यसंग्रहलघुवृत्ति-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि० शक ११९५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-वृत्तिके रचयिता बालचन्द्र भट्टारक नेमिचन्द्र तथा अभयचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

१२० नवपदार्थनिश्चय-वादीमसिह । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २६८ ।

१२१ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३८२ ।

१२२ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९२ ।

१२३ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९१ ।

१२४ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५६३ ।

१२५ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ८०७ ।

१२६ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४१

१२७ पयडिसमुक्कित्तण [ प्रकृतिसमुत्कीर्तन ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । विशेष-यह 'गोम्मटसार' [ कर्मकाण्ड ] का एक प्रकरण है ।

ग्रन्थ नं० ५० ।

१२८ पयडिसमुक्कित्तण [ प्रकृतिसमुत्कीर्तन ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २८१ ।

१२९ पयडि नमुक्कित्तण [ प्रकृतिसमुत्कीर्तन ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३१३ ।

१३० पयडिपमुक्कित्तण [ प्रकृतिसमुत्कीर्तन ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत छाया एवं कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

१३१ पयडियत्तट्टाण [ प्रकृतिसम्बन्धस्थान ] की टीका-आचार्य कनकनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

१३२ परमागमसार—श्रुतिमुनि । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा—प्राकृत तथा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—यों तो यह ग्रंथ प्राकृतमें है । पर अन्तमें थोड़ी सी टिप्पणी संस्कृतमें दी गयी है ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

१३३ परमागमसार..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५८ ।

१३४ परमागमसार..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५६ ।

१३५ पत्रयणसार [ प्रवचनसार ]—आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें मुनि पद्मनन्दिकृत कन्नड तात्पर्यवृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

१३६ पत्रयणसार [ प्रवचनसार ]—आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें आचार्य अमृतनन्दि कृत 'तत्त्वदीपिका' नामक संस्कृत वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ५३६ ।

१३७ पत्रयणसार [ प्रवचनसार ]—आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१०५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अति जीर्ण ।

विशेष—इसमें 'पंचास्तिकायप्राभृत' के कुछ पत्र हैं, एवं संस्कृत व्याख्या भी है ।

ग्रन्थ नं० ६९२ ।

१३८ पत्रयणसार [ प्रवचनसार ]—आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

१३९ पत्रयणसार ( प्रवचनसार )—आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ५५४ ।

१४० पंचपरब्रह्मणा—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—यह 'गोम्मटसार' [ जीवकाण्ड ] का एक भाग है ।

ग्रन्थ नं० ३१ ।

१४१ पंचसत्तावरणा [ सप्तर्षवाशदास्यत्र ]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । शुद्ध तथा

अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह 'गोमटसार' का एक प्रकरण है । इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रंथ नं० १५४ ।

१५२ पंचसंमारविस्तर-पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रंथ नं० ३१८ ।

१४३ पंचस्थिकाय-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रंथ नं० ६९२ ।

१४४ पंचस्थिकाय-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मलघारी पद्यप्रश्न देव कृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रंथ नं० ७५६ ।

१४५ पंचस्थिकाय-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रंथ नं० १४१ ।

१४६ बन्धूपदेश-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५४ ।

१४७ बन्धूपदेश-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

१४८ बन्धूपदेश-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कर्म-बन्धों का लक्षण कहा गया है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१४९ मोक्षपाहुड [ मोक्षप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह १०५ गाथाओंमें मूलमात्र है ।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

१५० मोक्षपाहुड [ मोक्षप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष:-इसमें बीच बीच में संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४९४ ।

१५१ मोक्षपाहुड [ मोक्षप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य

शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५२९ ।

१५२ मोक्खपाहुड [ मोक्षप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७५८ ।

१५३ मोक्खपाहुड [ मोक्षप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें पण्डित बालचन्द्रकृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

१५४ मन्दप्रबोधिनी-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-यह गोम्मटसार [ पंचसंग्रह ] की वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

१५५ लद्धिसार [ लब्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४२ ।

१५६ लद्धिसार [ लब्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

१५७ लद्धिसार [ लब्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'गोम्मटसार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २९८ ।

१५८ लद्धिसार [ लब्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४१९ ।

१५९ लद्धिसार [ लब्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशववर्णी कृत संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५१

१६० लद्धिसार [ लब्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका एवं न्यायसम्बन्धी कुछ खण्डित पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

१६१ लद्धिसार [ लब्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५६० ।

१६२ लद्धिसार [ लब्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५० ।

१६३ बीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि०शक १४४० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसे बोम्मि सेट्टिके पुत्र चन्दि सेट्टिने श्री वर्धमानदेवके लिये लिखवाया है । इसमें विस्तृत कन्नड टीका भी है, इसका अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है-

“स्याद्वादाचलकेसरीकुमतजालक्षोणीभृवासवः श्रीबालेन्दुपदारविदमकरन्दानन्दपुष्पन्धयः ।

सिद्धान्तामृतवार्धाधिवर्धनकरप्रालेयरोचिः सदा जीयाद् भूनुतपद्मनन्दियतिपस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ ।

यह गोम्मटसार (जीवकाण्ड) का अपर नाम है ।

ग्रन्थ नं० ७७ ।

१६४ बीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि०शक १६७३ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है । वृत्तिके रचयिता अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीके शिष्य केशण्ण हैं । इसे मूडबिद्रीके त्रिभुवनचूडामणि मन्दिरमें स्थानीय अय्यण्ण सेट्टिने श्री मुनि श्रुतकीतिके लिये लिखा है । यह गोम्मटसार [जीवकाण्ड] का अपर नाम है ।

ग्रन्थ नं० २४५

१६५ बीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध-दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें मुनि बालचन्द्रके अग्रशिष्य त्रैविद्यचक्रवर्ती पद्मप्रभके द्वारा रचित विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० २६० ।

१६६ बीसपरूवणा [विंशतिप्ररूपणा]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१०० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें बालचन्द्रके शिष्य त्रैविद्यचक्रवर्ती पद्मप्रभके द्वारा रचित कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २७३ ।

१६७ बीसपरुबणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल × । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें त्रैविद्यचक्रवर्ती पद्मप्रभ कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३४० ।

१६८ बीसपरुबणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका है । इसके टीकाकार श्री पद्मप्रभ त्रैविद्यचक्रवर्ती हैं ।

ग्रन्थ नं० ४५२ ।

१६९ बीसपरुबणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५४० ।

१७० बीसपरुबणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

१७१ बीसपरुबणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५७१ ।

१७२ बीसपरुबणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल × । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें आचार्य पद्मप्रभदेव कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५७४ ।

१७३ बीसपरुबणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें पद्मप्रभ त्रैविद्यदेव कृत कुछ संस्कृत पद्य भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७७ ।

१७४ बीसपरुबणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें अमरकोश पदवृत्ति के भी ७ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८२ ।

१७५ वीसपरुवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०४ ।

१७६ वीसपरुवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६१५ ।

१७७ वीसपरुवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

१७८ वीसपरुवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है तथा, 'प्रमेयरत्नमाला' एवं 'सागारधर्माभूत' के कुछ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ७०६ ।

१७९ वीसपरुवणा [ विंशतिप्ररूपणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५६९ ।

१८० सत्ततिभंगी [ सत्त्वत्रिभंगी ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५३७ ।

१८१ समयपाहुड [ समयपाभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७३६ ।

१८२ समयसार-कवि ब्रह्मदेव । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २३२ ।

१८३ सिद्धराशिबर्णन-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

१८४ सिद्धराशिबर्णन-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१८५ सिद्धशशिषर्णन—कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रंथ नं० ९

१८६ सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष—यह ८१ गाथाओंमें मूल मात्र है ।

ग्रंथ नं० ५१ ।

१८७ सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

अन्तिम पद्य—

प्रभाचन्द्रं स्तुवे नित्यं मोक्षमार्गप्रकाशकम् । अमेया यद्गुणा लोके प्रयान्ति गणनीयताम् ॥ १ ॥

तस्मै भव्यगुणाम्भोषिवर्धनाय महीयसे । नष्टं जगत्तमो यस्मात्प्रभेन्दुमुनये नमः ॥ २ ॥

विशेष—इसमें प्रभाचन्द्रकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रंथ नं० १०१ ।

१८८ सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रंथ नं० १४५ ।

१८९ सिद्धन्तसार-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रंथ नं० २३७ ।

१९० सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रंथ नं० २८३ ।

१९१ सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रंथ नं० ५४४ ।

१९२ सिद्धन्तसार-आचार्य जिनचन्द्र । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रंथ नं० ६९२ ।

१९३ सिद्धन्तालाव..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा उत्तम ।

विशेष—इसके लेखक माघनन्दी हैं ।

ग्रंथ नं० १८१

१९४ सिद्धान्तसारवृत्ति-आर्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—यह आचार्य जिनचन्द्र कृत प्राकृत 'सिद्धान्तसार' की कन्नड वृत्ति है ।



## विषय—अध्यात्म

ग्रन्थ नं० १४ ।

१ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

२ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है । वृत्तिकार माघनन्दी हैं । इनका काल शालि० शक १३१४ है ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

३ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

४ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१७ ।

५ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

६ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

७ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

८ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४४३ ।

९ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४८५ ।

१० आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

११ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५०५ ।

१२ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
ग्रन्थ नं० ५०८ ।

१३ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।  
ग्रन्थ नं० ५५४ ।

१४ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ५५५ ।

१५ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है तथा 'प्रवचनसार' के भी ९ पत्र हैं ।  
ग्रन्थ नं० ५७५ ।

१६ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।  
ग्रन्थ नं० ७२१ ।

१७ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ७२३ ।

१८ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें हास्तमल्ल भट्टोपाध्याय कृत 'ऋषभनाथगद्य' के २३ पत्र, एवं मुनि शुभकीर्ति कृत  
'आरोग्यस्तवन' के २३ पत्र भी सम्मिलित हैं ।  
ग्रन्थ नं० ७६२ ।

१९ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ७४८ ।

२० आत्मज्योति-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ३९८ ।

२१ चारुतत्त्वभेदाष्टक-कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० २०२ ।

२२ चिन्मयचिन्तामणि-मुनि कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० २३२ ।

२३ चिन्मयचिन्तामणि-कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४८ ।

२४ चिन्मयचिन्तामणि—कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६८ ।

२५ चिन्मयचिन्तामणि—कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३३८ ।

२६ चिन्मयचिन्तामणि—कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६८ ।

२७ चिन्मयचिन्तामणि—कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

२८ चिन्मयचिन्तामणि—सिहराज । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

२९ जीवसम्बोधन—कवि बन्धुवर्म । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

३० जीवसम्बोधन—बन्धुवर्म । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९५ ।

३१ जीवसम्बोधन—बन्धुवर्म । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष—रचनाकाल-शालि० शक १४४४ चित्रभानु संवत्सर आश्वयुज शुक्ला ७ शुक्रवार ।

ग्रन्थ नं० २१६ ।

३२ जीवसम्बोधन—बन्धुवर्म । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४२६ ।

३३ जीवसम्बोधन—बन्धुवर्म । पत्र सं०-१३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष—सेमितदेवके जामाता काज कुन्दय सेट्टिने नन्दीश्वरव्रतोद्यापनके उपलक्ष्यमें इसे शास्त्रदान किया है ।

ग्रन्थ नं० ६४५ ।

३४ जीवसम्बोधन—बन्धुवर्म । पत्र सं०-२०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

३५ जीवसम्बोधन—बन्धुवर्म । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ५६२ ।

३६ जोगसार [ योगसार ]—आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०—५७ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५७ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—आनन्द संवत्सर कार्तिक शुक्ला १ मङ्गलवारके दिन सूगुरनिवासी अन्तर्णके पुत्र चन्द्रणने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ६६३ ।

३७ जोगसार [ योगसार ]—आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५७ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें 'गोम्मटसार' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

३८ जोगसार [ योगसार ]—आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०—२६ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें पद्मनन्दि कृत कन्नड टीका है, एवं 'आनन्दाष्टक'के कुछ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ७०७ ।

३९ जोगसार [ योगसार ]—आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०—९२ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४३ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसमें पद्मनन्दि कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८२५ ।

४० जोगसार [ योगसार ]—आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०—३० । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५८ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३२ ।

४१ ज्ञानसार—..... । पत्र सं०—६ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—शालि शक १४८७ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—यह ग्रन्थ शालि० शक—१४८७ क्रोधन संवत्सर श्रावण शुक्ला १३ सौम्यवारके दिन बद्धमान अण्णके द्वारा लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

४२ ध्यानलक्षण—..... । पत्र सं०—८ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

४३ ध्यानलक्षण—..... । पत्र सं०—१ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८२ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

४४ ध्यानलक्षण—..... । पत्र सं०—२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—अध्यात्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इमें 'लघुप्रायश्चित्त' तथा [ कन्नड टीका सहित ] 'गोम्मटसार' [ जीवकाण्ड ] के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

४५ ध्यानस्तव-भास्करनन्दी । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह ग्रन्थ प्रकाशनीय है ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

४६ ध्यानस्वरूप-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

४७ ध्यानामृत-..... । पत्र सं० १२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

४८ निजात्माष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४२ ।

४९ परमपपयासु [ परमात्मप्रकाश ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मुनि पद्मनन्दीकी कन्नड टीका भी है । सेनगणोप मुनिभद्रदेव के शिष्य सेवनूर मुनियण्ण ने कोट्टूरु निवासी ज्ञानथी के लिये इसे लिखवाकर दिया था ।

ग्रन्थ नं० ५१० ।

५० परमपपयासु [ परमात्मप्रकाश ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मुनि पद्मनन्दिकृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

५१ परमपपयासु [ परमात्मप्रकाश ]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८२७ ।

५२ परमात्मउद्योति-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'क्रियापाठ' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

५३ भवनाष्टक-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

५४ भावनाष्टक-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

५५ योगामृत-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

५६ योगामृत-..... । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १६० ।

५७ रत्नाकरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

५८ रत्नाकरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-रक्ताक्षि संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला ७, बृहस्पतिवारके दिन रामराजने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ६३१ ।

५९ रत्नाकरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत ज्योतिष तथा कन्नड अनुप्रेक्षा सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८३० ।

६० रत्नाकरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८३२ ।

६१ रत्नाकरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

६२ विषमपदव्याख्यान-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह आ० गुणभद्रकृत 'आत्मानुशासन' की टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

६३ शतकत्रय-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म आदि । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'रत्नाकरशतक' 'अपराजितेश्वरशतक, एवं 'त्रिलोकशतक' हैं ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

६४ शतकद्वय-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म आदि । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७७ ।

६५ शतकद्वय-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म आदि । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३२ ।

६६ षोडशभाषनापद्य-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ न० ६२८ ।

६७ सद्गोधचन्द्रोदय-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१११ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ न० ३६ ।

६८ समयसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ न० ३५५ ।

६९ समयसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ न० ५४० ।

७० समयसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें 'आत्मरूपाति' नामक संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ न० ५५३ ।

७१ समयसार-आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें 'आत्मरूपाति' नामक संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ न० ७५६ ।

७२ समयसारचूलिया-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ न० ३१७ ।

७३ समयसारवृत्ति-आचार्य अमृतचन्द्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ न० ४९ ।

७४ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ न० १०१ ।

७५ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें आचार्य मेघचन्द्र त्रैविद्य कृत कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ न० १०१ ।

७६ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

७७ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८२ ।

७८ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३१६ ।

७९ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१४<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें महाकवि पम्पके पुत्रके लिये यति मेघचन्द्रके द्वारा रचित कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४४३ ।

८० समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

८१ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-३<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४७६ ।

८२ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९२ ।

८३ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५०९ ।

८४ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें यति मेघचन्द्र कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५१७ ।

८५ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें पण्डित प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका है । टीकाका अन्तिम भाग—“श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्वासनिवासिना परापरपरमेष्ठिप्रणामोपाजितामलपुण्यनिराकृताखिलमलकलङ्केन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपण्डितेन समाधि शतकटीका कृतेति ।”

ग्रन्थ नं० ५५२ ।

८६ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें पण्डित प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका है । टीकाका अन्तिम भाग—“श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्वासनिवासिना परापरपरमेष्ठिप्रणामोपाजितामलपुण्यनिराकृताखिलमलकलङ्केन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपण्डितेन समाधि शतकटीका कृतेति ।”

श्रीमद्वासनिवासिना परापरपरमेष्ठिप्रणामोपाजितामलपुण्यनिराकृताखिलमलकलङ्केन श्रीमत्प्रभाचन्द्रपण्डितेन समाधि शतकटीका कृतेति ।”

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

८७ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ६८९ ।

८८ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ७५८ ।

८९ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ७७१ ।

९० समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें इष्टोपदेशके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७७५ ।

९१ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
ग्रन्थ नं० ८०१ ।

९२ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ८३८ ।

९३ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ४०२ ।

९४ सहजात्मप्रकाश-(संग्रह)-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत , संस्कृत तथा कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-'मोक्षपाहुड' 'परमात्मप्रकाश' 'जीवसम्बोधना' आदि ग्रन्थोंके इलोक इसमें संग्रह किये गये हैं ।  
प्रकाशमें कन्नड टीका भी है । दुंदुभि संवत्सर आश्वयुज शुक्ला ७ के दिन बेलतंगडिस्थ ब्रह्मासूरिके शिष्य  
पद्मगणने गोमटपुर-निवासी भोगी सेट्टिके पुत्र चउडि सेट्टिके लिथे इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ६०३ ।

९५ सहजात्मप्रकाश-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

९६ स्वरूपभाषनाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

९७ स्वरूपभाषनाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

१८८ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-कन्नड टीकाकार नयसेनके शिष्य महासेन तथा श्रोता सिद्धान्तचक्रवर्ती वासुपूज्य सिद्धान्तदेवके शिष्य पद्मरस हैं ।

डा० ए० एन० उपाध्याय का मत है कि इसके रचयिता आचार्य अकलङ्क नहीं हैं किन्तु आचार्य महासेन हैं । पर सभी प्रतियोंमें अकलङ्क ही लिखा मिलता है ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

१८९ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं० ७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड वृत्ति भी है । वृत्तिकार पं० नयसेनके शिष्य पं० पद्मसेन हैं ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

१९० स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १३४ ।

१९१ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

१९२ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

१९३ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-शालि० शक १३६८ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें पण्डित महासेन कृत कन्नड वृत्ति है । यह वृत्ति सूरस्तगणीय वासुपूज्य सिद्धान्तचक्रवर्तीके शिष्य पद्मरसके वास्ते पाण्डत महासेनके द्वारा रची गयी है । प्रतिलिपिकार वाडगेरे निवासी अण्णि सेट्टिके पुत्र नागण्ण हैं ।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

१९४ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

१९५ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५४ ।

१०६ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१६ ।

१०७ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें नयसेनके शिष्य पण्डित महासेनकृत संस्कृत टीका तथा सिद्धान्तमुनि वामुपुज्य के शिष्य पद्यरस कृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

१०८ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७६ ।

१०९ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९२ ।

११० स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०९ ।

१११ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५१४ ।

११२ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें पद्यरसकृत कन्नड टीका है, साथ ही साथ संस्कृत टीका भी ।

ग्रन्थ नं० ५२९ ।

११३ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशववर्षकृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५२ ।

११४ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है । टीकाका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है:-

'स्वरूपसम्बोधनाख्य'-ग्रन्थस्यानम्य तन्मुनिम् । रचितस्याकलङ्केन वृत्ति वक्ष्ये जिनं नमिम् ॥"

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

११५ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

११६ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-प्रस्तुत प्रतिमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७७१ ।

११७ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें व्याकरण तथा धर्मसम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७७५ ।

११८ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

११९ स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



## विषय—धर्म

ग्रन्थ नं० २६७

१ अकृत्रिमचैत्यालयवर्णन—.....। पत्र सं०-११। पंक्तिप्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४५८।

२ अकृत्रिमचैत्यालयवर्णन—.....। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-मूडबिद्रीस्य पट्टुबसदि निचासी पट्टुमय्य उपाध्यायके पुत्र पट्टुमने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ३५३।

३ अगुत्रतियोंके अन्तराय—.....। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २९।

४ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-१९६। पंक्ति प्रतिपत्र १२। अक्षर प्रतिपंक्ति-९६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-शालि० शक १५००। हेमलंबी संवत्सर निज आश्वयुज कृष्णा ३ मंगलवार रोहिणी नक्षत्र। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका भी है। सरस्वती-गच्छ, बलात्कार-गण, कुन्दकुन्दाभ्यायके मूनि महेन्द्रकीर्तिदेवके शिष्यान्यतम श्री चन्द्रकीर्तिदेवके लिये बंगवाडीके सान्तु सेट्टिके पुत्र आदि सेट्टि ने शास्त्रदान किया है।

प्रतिलिपिकार-बंगवाडीके बोम्मय्यणके पुत्र ब्रह्मय्य हैं।

ग्रन्थ नं० १३१।

५ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-१७४। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है। बीच, बीच में कुछ पत्र खण्डित हैं।

ग्रन्थ नं० १३८।

६ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-२०१। पंक्ति प्रतिपत्र-१३। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० १७५।

७ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-६५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है।

ग्रन्थ नं० ४५३।

८ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-८१। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०९।

९ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-२३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं ५३५ ।

१० अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।  
विशेष-इसमें आचार्य महावीरकृत संस्कृत 'गणितसारसंग्रह' के भी तीन पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७५ ।

११ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६२५ ।

१२ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें व्रतविधान सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६२५ ।

१३ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें 'गोम्मटसार' जीवकाण्ड सम्बन्धी संदृष्टिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

१४ अनगारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० १६० ।

१५ अपराजितेश्वरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६९ ।

१६ अपराजितेश्वरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१७ अपराजितेश्वरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

१८ अपराजितेश्वरशतक-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३४ ।

१९ अमृताशीति-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें बालचन्द्रकी कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं २०९ ।

२० अमृताशीति-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-प्रभाकरभट्टके प्रतिबोधनार्थ श्री योगीन्द्रदेवने इस ग्रंथ को रचा । सिद्धास्तचक्रवर्ती नवकीर्ति  
के शिष्य मुनि बालचन्द्रने चन्द्रप्रभायके लिये इसकी कन्नड वृत्ति रची ।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

२१ अमृताशीति-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५५ ।

२२ अमृताशीति-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें बालचन्द्र कृत कन्नड टीका है । अवलिस्थ बोंमणके पुत्र माणिकदेवने बुल्लिसेट्टिके लिये  
इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

२३ अर्हत्प्रवचन [लघुनन्वार्थसूत्र ] ..... पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७२१ ।

२४ आचारवृत्ति-आचार्य वसुनन्दी । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-जीर्ण ।

विशेष-मूल प्राकृतमें है ।

ग्रन्थ नं० ६० ।

२५ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६८ ।

२६ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-९५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ९४ ।

२७ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-१४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत और कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० १५४ ।

२८ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०७ ।

२९ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

अन्तिम पद्य:-

विशेषचन्द्रोज्ज्वलमूर्तिकीतिस्समस्तसैद्धान्तिकचक्रवर्ती ।

श्रीवीरनन्दी कृतवानुदारमाचारसारं यतिवृत्तसारम् ॥

ग्रन्थ नं० ३३० ।

३० आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५९ ।

३१ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६४ ।

३२ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

३३ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-आति जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६८७ ।

३४ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-काणूरगण श्री मुनि देवकीतिकी शिष्या गुम्भकने देशीगण देवकीतिकी शिष्या चिक्कमल्लि देवी अब्बको इसे दान किया है ।

ग्रन्थ नं० ७७५ ।

३५ आचारसार-आचार्य वीरनन्दी । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' द्विसन्धानकाव्य' तथा 'धनकुमारचरित' (कन्नड) के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

३६ आप्तस्वरूप-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

३७ आप्तगमस्वरूप-..... । पत्रसं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

३८ आराधनासमुच्चय-मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

अन्तिम पद्य:-

श्रीरविचन्द्रमुनीन्द्रैः पनसोगेग्रामवासिभिर्ग्रन्थः ।

रचितोऽयमखिलशास्त्रप्रवीणविद्वन्मनोहारी ॥

श्रावकाधारसम्बन्धी यह ग्रंथ प्रकाशनीय है ।

ग्रन्थ नं० ५५४ ।

३९ आराधनासमुच्चय-मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०३ ।

४० आराधनासमुच्चय-मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

४१ आराधनासमुच्चय—भुनि रविचन्द्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५४ ।

४२ आराहणासार[आराधनासार]—आचार्य देवसेन । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११५ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें संस्कृत छाया भी है ।

ग्रन्थ नं० ५५४ ।

४३ आराहणासार [आराधनासार]—आचार्य देवसेन । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

४४ आशीर्वादपद्य..... पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

४५ आशीर्वादपद्य..... पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें संस्कृत टीका एवं 'गायत्रीमन्त्र' का अर्थ भी है ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

४६ इष्टोपदेश—आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें कन्नड वृत्ति भी है । यह महाकवि पंपके सुपुत्रके लिये श्री यति मेघचन्द्रके द्वारा रची गयी है ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

४७ इष्टोपदेश—आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

४८ इष्टोपदेश—आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

४९ इष्टोपदेश—आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें संस्कृत और कन्नड टीका भी है । संस्कृत टीकाकार कवि मेघचन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३१६ ।

५० इष्टोपदेश—आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२१ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

५१ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९२ ।

५२ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

५३ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । पक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५२ ।

५४ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें केशववर्य कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

५५ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'स्वरूपसम्बोधनपंचविंशति' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७५८ ।

५६ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७५ ।

५७ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८०१ ।

५८ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें प्रारम्भिक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ८३८ ।

५९ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

६० इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३३५ ।

६१ उद्योगसार-यति नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २२२ ।

६२ उद्योगसार-.....। पत्रसं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०३ ।

६३ उद्योगसार-.....। पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४८१ ।

६४ उद्योगसार-.....। पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०० ।

६५ उद्योगसार-.....। पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

६६ उद्योगसार-.....। पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ६७२ ।

६७ उद्योगसार-.....। पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

६८ उपवासविधि-.....। पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें सर्वतोभद्र आदि उपवासोंकी संख्या बतलायी गयी है ।

ग्रन्थ नं० १५७ ।

६९ उपासकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

'विशेष-इसमें 'जिनचतुर्विंशतिका' आदि स्तोत्रोंके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४८८ ।

७० उपासकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

७१ उपासकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

७२ उपासकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

७३ उपासकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३४७ ।

७४ उपासकाचार-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

७५ उपासकाचार-..... पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

७६ उपासकाचार-..... पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा- संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'पद्मनन्दिपंचविंशति' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

७७ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३४७ ।

७८ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

७९ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'क्रियाकाण्डचूलिका' भी है ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

८० उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७४ ।

८१ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६७३ ।

८२ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

८३ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

८४ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२७ ।

८५ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'रत्नाष्टक' सटीक, प्राकृत 'पंचस्तोत्र' तथा 'द्रव्यसंग्रह' के भी कुछ पत्र हैं ।



ग्रन्थ नं० ६३६ ।

६७ एकत्वसप्तति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७७१ ।

६८ एकत्वसप्तति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति पंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७७५ ।

६९ एकत्वसप्तति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-२<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८०१ ।

१०० एकत्वसप्तति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-६<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें प्रारम्भिक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

१०१ एकत्वसप्तति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ८३८ ।

१०२ एकत्वसप्तति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६६८ ।

१०३ गुणप्रकाशक-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें अहिंसा धर्म तथा अधर्म का वर्णन है । इसीमें पद्मनन्दी कृत 'क्रियाकाण्डचूलिका' भी है ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१०४ गोसावित्री-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६९ ।

१०५ चारित्रमार-चामुण्डराय । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७५८ ।

१०६ चारित्रसार-चामुण्डराय । पत्र सं०-२७<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें पण्डित बालचन्द्रकृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१०७ जपलक्षण-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३६ ।

१०८ जिनमुनितनय-चन्द्रसागर वर्णी । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५८ ।

१०९ जिनमुनितनय-चन्द्रसागर वर्णी । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४५ ।

११० जिनमुनितनय-चन्द्रसागर वर्णी । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड भावार्थ भी है ।

ग्रन्थ नं० ६४५ ।

१११ जिनमुनितनय-चन्द्रसागर वर्णी । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८३२ ।

११२ जिनमुनितनय-चन्द्रसागर वर्णी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

११३ जीवरगले-..... पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-'रगले' कन्नड छन्दका एक भेद है । इसमें पंचाणुव्रत दान आदिका वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

११४ जीवरगले-..... पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५०५ ।

११५ ज्ञानदीपिका-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-यह प० आशाधरकृत 'धर्माभूत' की स्वोपज्ञ पंचिका है ।

ग्रन्थ नं० ३४८ ।

११६ ज्ञानसार-..... पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६८ ।

११७ तत्त्वचरत्नप्रदीपिका-पण्डित बालचन्द्र देव । पत्र सं०-१९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह आचार्य उमास्वाति कृत 'तत्त्वार्थसूत्र' की विस्तृत कन्नड वृत्ति है । यह वृत्ति श्री मूलसंघ देशीयगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयी चन्द्रकीर्ति मुनिके सुत-शिष्य राद्धान्तचक्री पण्डित नयकीर्तिके पुत्र-शिष्य मुनीन्द्र बालचन्द्रके द्वारा रची गयी है ।

ग्रन्थ नं० ७६३ ।

११८ तत्त्वचरत्नप्रदीपिका-पण्डित बालचन्द्र देव । पत्र सं०-१३६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

११९ तत्त्वार्थवृत्ति-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

अन्तिम पद्यः-

ज्ञानस्वच्छजलस्मुरत्ननिचयश्चारित्रवीचीचयस्सिद्धान्तादिसमस्तशास्त्रजलधिः धीपद्ममन्दिप्रभुः ।  
तच्छिष्यान्निखिलप्रबोधजननं तत्त्वार्थवृत्तेः पदं सुव्यक्तं परमागमार्थविषयं जातं प्रभाचन्द्रतः ॥  
श्रीपद्ममन्दिसेद्धान्तशिष्योऽनेकगुणालयः । प्रभाचन्द्रश्चिरं जीयात्पादपूज्यपदे रतः ॥  
मुनीन्दुर्नन्दतादिन्दन्निजमानन्दमन्दिरम् । सुधाधारोद्गिरन्मूर्तिः काममामोदयज्जि (ज्ज) नम् ॥

ग्रन्थ नं० ५७ ।

१२० तत्त्वार्थलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर  
प्रतिपंक्ति-१३० । विषय-धर्म । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

१२१ तत्त्वार्थलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर  
प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७३ ।

१२२ तत्त्वार्थलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र । पत्र सं०-६९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह आचार्य उमास्वाति कृत 'तत्त्वार्थसूत्र' की कन्नड लघुवृत्ति है । श्री भट्टारक चन्द्रकीर्ति के  
प्रशिष्य, सिद्धान्तदेव पद्मनन्दीके शिष्य सिद्धान्त-मुनीन्द्र दिवाकरनन्दीके द्वारा यह वृत्ति रची गयी है । प्रतिलि-  
पिकार जिपलग्राम निवासी गुरुवण्य है ।

ग्रन्थ नं० ७८५ ।

१२३ तत्त्वार्थलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९०६ ।

१२४ तत्त्वार्थलघुवृत्ति-भट्टारक दिवाकर मुनीन्द्र । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९०८ ।

१२५ तत्त्वार्थसुखबोधवृत्ति-भास्करनन्दी । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
२०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २२९ ।

१२६ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य उमास्वाति । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३०३ ।

१२७ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य उमास्वाति । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-शालि० शक १६८० । पूर्ण तथा शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें भट्टारक बिम्बकरणुनि कृत कन्नड वृत्ति भी है । लक्ष्मीसेन मठके अधिकारी बिक्रसेट्टि के  
पुत्र, विद्यार्थी चन्दने भट्टारक लक्ष्मीसेनके लिये शा० शक १६८०, बहुधान्य संवत्सर मार्गशिर कृष्णा १४ के  
दिन मूडबिंदी के त्रिभुवनचूडामणि चैत्यालयमें इसे लिखा है ।



ग्रन्थ नं० ७८ ।

१४० त्रैवर्णिकाचार-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल- शालि० शक १५२१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-लेखक छत्रत्रय-नगरनिवासी अध्यापक पद्मण का पुत्र चंदप्प है ।

अन्तिम पद्य:-

शाकाब्दे विषुदक्षराब्जकलिते पुष्ये विलंब्यब्दके पूते सोमजवारयुक्प्रथमभद्रायां तिथौ सर्पभे ।

श्रीमत्क्षेमपुरे चतुर्मुखमहाचैत्यालये श्रेयसस्तीर्थेशस्य पदाम्बुजद्वयपुरोदेशे सिते पक्षके ॥

श्रीछत्रत्रयनामधेयनगरीचैत्यालये चाष्टमस्तीर्थेशोऽस्ति तदंघ्रिभक्तिभरणः श्रीपद्मणोऽध्यापकः ।

तस्य ऋचोरसचंदनपन (चंदपेन) तु मया भट्टाकलङ्कार्यसत्पादाब्जभ्रमरेण लेखितमिदं शास्त्रं चिरं तिष्ठतु ॥

ग्रन्थ नं० ४६७ ।

१४१ त्रैवर्णिकाचार-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

१४२ त्रैवर्णिकाचार-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८६४ ।

१४३ त्रैवर्णिकाचार-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमे प्रारंभके तीन पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ४९६ ।

१४४ दशधर्मव्याख्यान-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

१४५ दानपञ्चाशत्-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

१४६ दानपञ्चाशत्-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६८४ ।

१४७ दानशासन-महर्षि वासुपूज्य । पत्र सं०-१७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १३४३ विषु संवत्सर, माघ शुक्ला १० के दिन यह ग्रंथ रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

१४८ दानसार-प्रभाचन्द्रदेव । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह ग्रन्थ देशी-गणान्वयश्रीपण्डितदेवाचार्यप्रसाधित श्री योगीन्द्रप्रभाचन्द्रदेवके द्वारा रचित है ।

ग्रन्थ नं० ८१५ ।

१४९ दानसार-.....। पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७०८ ।

१५० दीक्षाविधि-.....। पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

१५१ दीक्षादानविधि-.....। पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५१ ।

१५२ दीक्षाविचार-.....। पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

१५३ द्वादशाङ्गव्याख्यान-अभयसूरि सिद्धान्तचक्रवर्ती । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

१५४ द्वादशाङ्गव्याख्यान-अभयचन्द्रसूरि । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचारंग आदि १२ अंगोंका संक्षिप्त वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० ३३७ ।

१५५ द्वादशानुप्रेक्षा-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१५६ द्वादशानुप्रेक्षा-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह 'उपासकसंस्कार' का एक भाग है ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

१५७ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

प्रारम्भिक पद्य-

द्वादशापि सदा चिन्त्या अनुप्रेक्षा महात्मभिः । तद्भावना भवत्येवं कर्मणः क्षयकारणम् ॥

ग्रन्थ नं० ८२३ ।

१५८ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८ ।

१५९ द्वादशानुप्रेक्षा-विजयण्ण । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें ज्योतिष के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

१६० द्वादशानुप्रेक्षा—कवि विजयण्ण । पत्र सं०—३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । शालि० शक १७२२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—प्रतिलिपिकारतुमकूर गुम्भणके पुत्र यल्लप्प हैं ।

ग्रन्थ नं० १५३ ।

१६१ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपत्र—५२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २२७ ।

१६२ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—११ । पंक्ति प्रतिपत्र—५ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४७ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २४६ ।

१६३ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—६८ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६७ ।

१६४ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४३ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें आदिका एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ५७९ ।

१६५ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—७५ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें आदिके २ पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८० ।

१६६ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—१६ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—९० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८३९ ।

१६७ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—७२ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

१६८ द्वादशानुप्रेक्षा—कल्याणकीर्ति । पत्र सं०—५३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अति जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ७७० ।

१६९ द्वादशानुप्रेक्षा—बाहुबली । पत्र सं०—१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १४९ ।

१७० द्वादशानुप्रेक्षा—..... पत्र सं०—३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५९ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९४ ।

१७१ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें अन्यान्य विषयके कुछ और भी खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१७२ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

१७३ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१७४ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

१७५ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७७ ।

१७६ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६० ।

१७७ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड स्तोत्रों के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८६७ ।

१७८ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'वृत्तरत्नाकर' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

१७९ द्वाविंशतिपरीषहजयसूत्र-.....। पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

१८० द्वाविंशतिपरीषहजयसूत्र-.....। पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६१ ।

१८१ धर्मोपदेशामृत-(पद्मनन्दपंचविंशति का एक प्रकरण)-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'अनित्य-पंचाशत्' 'सिद्धस्तुति' एवं न्यायविषयके भी कुछ खण्डित तथा जीर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६३३ ।

१८२ धर्मोपदेशासूत्र-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण । विशेष-इसमें 'अमरकोश' तथा 'सारसमुच्चय' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

१८३ धर्मोपदेशासूत्र-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'पद्मनन्दिपंचविंशति' का एक प्रकरण है ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

१८४ नित्यनिर्गोदधिबरण-..... पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल- शालि० शक १४३९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसे शालि० शक० १४३९, घातुसंवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० को तिलुवल्लि शान्तिनाथ मन्दिर में दोन्नति सांतप्यके पुत्र पालप्पने बाहुबलीके वास्ते लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ५४६ ।

१८५ नियमसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें मलघारी पद्यप्रभेदेवकृत तात्पर्यवृत्ति नामक संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१८६ नीतिसारसमुच्चय-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है । इसका अपरनाम समयभूषण है ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

१८७ नीतिसारसमुच्चय-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

१८८ नीतिसारसमुच्चय-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२० ।

१८९ नीतिसारसमुच्चय-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

१९० नीतिसारसमुच्चय-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

१९१ नीतिसारसमुच्चय-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

१६२ पद्मलेखनक्रम-.....। पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें मुनि अजिका आदि त्यागियोंको पत्र लिखने का क्रम दिया है ।

ग्रन्थ नं० ५३ ।

१६३ पद्मनन्दिपंचविंशति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें 'सम्यक्त्वकीमुदी' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १९८ ।

१६४ पद्मनन्दिपंचविंशति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें 'सद्बोधचन्द्रोदय' की कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३१७ ।

१६५ पद्मनन्दिपंचविंशति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें विस्तृत संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

१६६ पद्मनन्दिपंचविंशति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।—

१६७ पद्मनन्दिपंचविंशति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

१६८ पद्मनन्दिपंचविंशति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २०३ ।

१६९ परभागमसार-चन्द्रकीर्ति । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७८ ।

२०० परभागमसार-चन्द्रकीर्ति । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७१ ।

२०१ परभागमसार-चन्द्रकीर्ति । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

२०२ परभागमसार-चन्द्रकीर्ति । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८०४ ।

२०३ परमाममसार-चन्द्रकीर्ति । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

विशेष-इसमें 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' तथा 'क्रियापाठ' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

२०४ परीषहजय-कवि मुकुन्द । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४५ ।

२०५ परीषहजय-कवि मुकुन्द । पत्र सं०-४<sup>१</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७८ ।

२०६ परीषहजय-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

२०७ पुढ्बागुपेहा [ पूर्वानुप्रेक्षा ]-..... । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें यति बाहुबलीकृत कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० २४३ ।

२०८ पञ्चकल्याणपद्य-..... । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ९९ ।

२०९ पञ्चपरमेष्ठिन्याख्यान-..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०२ ।

२१० पञ्चपरमेष्ठिन्याख्यान-..... । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें पंचपरमेष्ठियोंके गुणोंका विस्तृत वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

२११ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसके रचयिता बालचन्द्र सिद्धान्तवेदी अभयचन्द्रके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ३४४ ।

२१२ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-२<sup>१</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३४८ ।

२१३ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-६<sup>१</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'जिनगुणसंपत्तिमंत्र' का भी एक पत्र है ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

२१४ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

२१५ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९० ।

२१६ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४५ ।

२१७ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-१६<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

२१८ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें इस ग्रन्थकी दो प्रतियाँ हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३३ ।

२१९ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें भिन्न-भिन्न विषयोंके १०० अपूर्ण पत्र भी सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ७४५ ।

२२० पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९१ ।

२२१ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-६<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८१६ ।

२२२ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'अकलङ्काष्टक' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८३५ ।

२२३ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-बालचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'समवसरणाष्टक' 'दृष्टाष्टक' 'पञ्चपरमेष्ठिस्तोत्र' (कन्नड) भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ३७ ।

२२४ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-..... । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

२२५ पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप-..... । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



ग्रन्थ नं० १०१ ।

२३९ पञ्चसंसारविस्तर-.....। पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें गणित विषयके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

२४० पञ्चसंसारविस्तर-.....। पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५१ ।

२४१ पञ्चसंसारविस्तर-.....। पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

२४२ प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

अन्तिम पद्य-विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका । रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलङ्कृतिः ॥

ग्रन्थ नं० ९३ ।

२४३ प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

२४४ प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र ६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

२४५ प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१८ ।

२४६ प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५९ ।

२४७ प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८० ।

२४८ प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

२४९ प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०४ ।

२५० प्रभोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६२८ ।

२५१ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६७२ ।

२५२ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें आ० प्रभाचन्द्र कृत 'व्रतस्वरूप' भी है ।

ग्रन्थ नं० ६७३ ।

२५३ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें नीतिसम्बन्धी २ पत्र और हैं ।

ग्रन्थ नं० ७०९ ।

२५४ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

२५५ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

२५६ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०३ ।

२५७ प्रायश्चित्तविधि-..... पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११५ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०१ ।

२५८ प्रायश्चित्तविधि-..... पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६३७ ।

२५९ प्रायश्चित्तविधि-..... पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७७१ ।

२६० प्रायश्चित्तविधि-..... पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'केशलुञ्चनविधि' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७७२ ।

२६१ प्रायश्चित्तविधि-..... पत्र सं० ६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८४१ ।

२६२ प्रायश्चित्तविधि-..... पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'ऋषिमण्डलस्तोत्र' 'दीक्षाविधि' संगीत एवं ज्योतिष संबंधी भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १०२ ।

२६३ प्रायश्चित्तविधि-.....। पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'गणधरवल्लयन्त्राराधना' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७७१ ।

२६४ प्रायश्चित्तविधि-स्वामी अकलङ्क । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें प्रायश्चित्त-संबंधी और भी २ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७७२ ।

२६५ प्रायश्चित्तविधि-इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-३१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-ग्रन्थमें इस प्रकरणका नाम 'छेदपिण्ड' लिखा मिलता है । नं० ३५४ वीं गाथा इस प्रकार है:- 'भावेद् छेदपिण्डं जो एदं इन्द्रणन्दिगणिरचिदं । लोइय लोउत्तरिए ववहारे होइ सो कुसलो ॥'

ग्रन्थ नं० १८२ ।

२६६ प्रायश्चित्तसमुच्चय-.....। पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके अन्तमें प्रायश्चित्तसे सम्बन्ध रखनेवाले कन्नड भाषाके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २२५ ।

२६७ प्रायोपगमनविधान-.....। पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

२६८ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-मूलमें इसका नाम 'अनुप्रेक्षा' ही लिखा हुआ है । वास्तवमें 'अणुपेहा' होना चाहिये ।

ग्रन्थ नं० ९० ।

२६९ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-प्राकृतमें इसका नाम 'अणुपेहा' होना चाहिये । इसमें 'द्रव्यसंग्रह' तथा 'समवसरण-स्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

२७० बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २५९ ।

२७१ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८३ ।

२७२ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-स्वामी कार्तिकेय । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०५ ।

२७३ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३५ ।

२७४ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

२७५ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०९ ।

२७६ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-स्वामी कार्तिकेय । पत्र सं०-४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४९ ।

२७७ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

२७८ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें बहुबलिसिद्धान्तिकृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८२४ ।

२७९ बारस अणुपेहा अथवा अणुपेक्खा [ द्वादशानुप्रेक्षा ]-स्वामिकार्तिकेय । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४२७ ।

२८० भव्यकुमुदचन्द्रिकाटीका-पण्डित आशावर । पत्र सं०-१७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें सागारधर्माभूत और अनगारधर्माभूतकी सिर्फ टीकाएँ हैं ।

ग्रन्थ नं० २९९ ।

२८१ भव्यजनकएठरत्नाभरण-अभयचन्द्र । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-अभयचन्द्रदेव श्रीबालचन्द्रदेव एव नेमचन्द्रदेवके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

२८२ मुनिरगले-मायण्ण । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके रचयिता मायण्ण नागण्णके पुत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७६५ ।

२८३ मूढविद्वीके मन्दिरोंका दानविवरण-..... । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-स्थानीय मन्दिरोंको भिन्न २ दानियोंके द्वारा प्रदत्त चावल, तैल आदि पूजाद्रव्योंका विवरण इसमें अंकित है ।

ग्रन्थ नं० ५६ ।

२८४ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-२०२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । विषय-धर्म । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । अन्तिम पद्य-

मूलाचाराख्यशास्त्रं वृषभजिनवरोपज्ञमहत्प्रवाहादायात् कुण्डकुन्दाह्वयचरमलसञ्चारणैस्तुप्रणीतम् ॥

तद्व्याख्यां वामुनन्दीमबुधविलिखनावचनानायाशमक्त्या(?)

संशोध्याध्यैतुमहामकृतयतिकृति (?).....॥२०५॥

इसमें आचार्य वसुनन्दीकी विस्तृत संस्कृत वृत्ति भी है । प्रारंभमें मूल-रचयिताका नाम 'कोण्डकुन्द' ही लिखा है, और अन्तमें 'कुण्डकुन्द, भी मिलता है ।

ग्रन्थ नं० १६४ ।

२८५ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१८० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मुनि भेषचन्द्रके द्वारा रचित कन्नड वृत्ति भी है । बीच-बीचमें इसके कुछ पत्र खण्डित हैं ।

ग्रन्थ नं० २७९ ।

२८६ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१९८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्य वसुनन्दिकृत संस्कृत वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ६२९ ।

२८७ मूलाचार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

२८८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । शुद्ध तथा पूर्ण । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

२८६ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । विषय-धर्म । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

२९० रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १४६ ।

२९१ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा साधारण शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति तथा पंचाणुव्रत एवं अष्टांगकी कथाएँ भी हैं । इसे श्रवणबेल्लोलके चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके प्रशिष्य मुनि प्रभाचन्द्र के शिष्यने लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

२९२ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०३ ।

२९३ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३३ ।

२९४ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

२९५ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६१ ।

२९६ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २७२ ।

२९७ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७४ ।

२९८ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'अष्टांग' 'पंचाणुव्रत' आदि की कन्नड कथाएँ भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ३०५ ।

२९९ रत्नकरएडश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३०५ ।

३०० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३१५ ।

३०१ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३१८ ।

३०२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३४७ ।

३०३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४८ ।

३०४ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपत्र-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें अमोघवर्ष कृत 'प्रश्नोत्तररत्नमाला' के भी २ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५२ ।

३०५ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१०० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें १५५ श्लोक हैं । एवं विस्तृत कन्नड टीका भी " । आदिके ३ पत्र खण्डित हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३०६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष- इसमें प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है । विभवसंवत्सर, कार्तिक शुक्ला ५ शुक्रवारके दिन मट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य गुणसागरने बंगवाडिस्थ शान्तीश्वर चैत्यालयमें इसे लिखा ।

ग्रन्थ नं० ३६० ।

३०७ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है । कोपण निवासी चन्दिसेट्टिके पुत्र चन्द्रमने रायबाग निवासी बाहुबलिदेवके लिये इसे लिखा है । यह ग्रन्थ विरोधी संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला १० मङ्गलवारके दिन लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० ४४३ ।

३०८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें प्रभाचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

३०९ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४७४ ।

३१० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-९५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४७८ ।

३११ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४७८ ।

३१२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७९ ।

३१३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है । इसके लेखक देवणके पुत्र मंचण है ।

ग्रन्थ नं० ४८१ ।

३१४ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४९५ ।

३१५ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

३१६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५१७ ।

३१७ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-पंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

३१८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२६ ।

३१६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय- धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-  
सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५३७ ।

३२० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-  
अति जीर्ण ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५४७ ।

३२१ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५४९ ।

३२२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-  
अतिजीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

३२३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण  
तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५७८ ।

३२४ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'आत्मावृक्षासन' के भी ६ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६०७ ।

३२५ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२०<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६३७ ।

३२६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३६<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-  
सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६७० ।

३२७ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इस ग्रन्थ की २ प्रतियां हैं, तथा इसकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

३२८ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है, आ० पद्यनन्दिकृत 'एकत्वसप्तति' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७९८ ।

३२९ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'व्रतस्वरूप' तथा शान्त्यष्टक के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८०९ ।

३३० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८१३ ।

३३१ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें आ० वीरनन्दिकृत 'आचारसार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८२४ ।

३३२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९०३ ।

३३३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२९<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६०१ ।

३३४ रत्नमाला-आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'सज्जनचित्तवल्लभ' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १८६ ।

३३५ रयणसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

३३६ रयणसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३६ ।

३३७ रयणसार—आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०—१४ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४२ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१५ ।

३३८ रयणसार—आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०—१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—६६ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें कन्नड टीका है, तथा 'त्रिलोकसार' का एक पत्र भी है ।

ग्रन्थ नं० ५० ।

३३९ लघुप्रायश्चित्त—..... । पत्र सं०—३ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९५ । विषय—धर्म । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

३४० लघुप्रायश्चित्त—..... । पत्र सं०—७ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८३ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

३४१ लघुप्रायश्चित्त—..... । पत्र सं०—८४ । पंक्ति प्रतिपत्र—५ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें बीच २ में अन्यान्य ग्रन्थों के उद्धरण दिये गये हैं । ग्रन्थ संग्रहात्मक मालूम होता है ।

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

३४२ व्यासवचनसंग्रह—..... । पत्र सं०—७ । पंक्ति प्रतिपत्र—४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—इतरधर्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें वर्णाश्रमधर्म तथा पुराण आदि का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

३४३ व्रतस्वरूप—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०—६ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६३ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३७ ।

३४४ व्रतस्वरूप—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०—८ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—इसका अपर नाम 'व्रतफलवर्णन' है । इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

३४५ व्रतस्वरूप—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०—३ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

३४६ व्रतस्वरूप—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०—३ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०८ ।

३४७ व्रतस्वरूप—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५३ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।



ग्रन्थ नं० ६६२ ।

३६० व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

३६१ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७०८ ।

३६२ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१७ ।

३६३ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

३६४ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

३६५ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७७० ।

३६६ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७९१ ।

३६७ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८३८ ।

३६८ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका एवं 'स्वरूपसंबोधना' 'सध्यावन्दना' आदि के कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ९०३ ।

३६९ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३९ ।

३७० शास्त्रसारसमुच्चय-आचार्य माधवन्दी । पत्र सं०-२३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २३१ ।

३७१ शास्त्रसारसमुच्चय-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-२२३ । पंक्ति-प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४१६ ।

३७२ शास्त्रसारसमुच्चय-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-१३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५६४ ।

३७३ शास्त्रसारसमुच्चय-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६१० ।

३७४ शास्त्रसारसमुच्चय-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । तथा कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७९२ ।

३७५ शास्त्रसारसमुच्चय-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-१४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'त्रैवर्णिकाचार' के भी दो पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३७६ शैवशास्त्र ..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति-प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-इतरधर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २०२ ।

३७७ श्रावकचरित्र ..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-विषु संवत्सर, माघ शु० १०, शुक्रवार अगलि के आदीश्वरचैत्यालय में विद्यानगरी के मुनि बीरसेन ने चन्द्रमति अम्म के लिये इसे लिखा । इस चरित्र में श्रावकों के आचार पर प्रकाश डाला गया है ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

३७८ श्रावकप्रायश्चित्त ..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३७९ श्रावकप्रायश्चित्त ..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१ ।

३८० श्रावकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २९९ ।

३८१ श्रावकाचार-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७७ ।

३८२ श्रावकाचार-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

३८३ श्रावकाचार-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'चिक्क श्रावकाचार' के नामसे प्रसिद्ध है ।

ग्रन्थ नं० ५७९ ।

३८४ श्रावकाचार-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह ग्रन्थ 'चिक्क श्रावकाचार' के नाम से प्रसिद्ध है ।

ग्रन्थ नं० ६४५ ।

३८५ श्रावकाचार-..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसका अपर नाम 'चिक्क श्रावकाचार'

ग्रन्थ नं० ६४९ ।

३८६ श्रावकाचार-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसका अपर नाम 'चिक्क श्रावकाचार' है ।

ग्रन्थ नं० ३०९ ।

३८७ श्रावकाचार-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

३८८ श्रावकाचार-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२५ ।

३८९ श्रावकाचार-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-क्षय संवत्सर, निजश्रावण कृष्णा १ शुक्रवार के दिन शृंगेरी पुट्टय्य । के पुत्र पोम्मय्य । ने धर्ममति अजिका के लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

३९० श्रीपदाशीति-कवि आचरण । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २५९ ।

३९१ श्रीपदाशीति-कवि आचरण । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

३८२ श्रीपदाशीति—कवि आचरण । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

३८३ श्रीपदाशीति—कवि आचरण । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४९ ।

३८४ श्रीपदाशीति—कवि आचरण । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७० ।

३८५ षोडशभाषनाचरित्र-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०२ ।

३८६ सकलागमसार..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३१४ ।

३८७ सकलागमसार-..... । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५०० ।

३८८ सकलागमसार-..... । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

४०९ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५७ ।

४०० सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड लघु वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

४०१ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० १३६ ।

४०२ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

४०३ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



ग्रन्थ नं० ५२३ ।

४१५ सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६२८ ।

४१६ सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

४१७ सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें अभिनव श्रुतमुनि कृत कन्नड टीका भी है । टीकाके अन्तिम पद्य-“श्रीमत्सज्जनचित्तवल्लभ इति प्रख्यातनाम्नः कृतेः टीका भव्यविभावका बुधजनश्रव्या हि नव्या कृता । कामानेकपकेसरीश्रुतमुनेः शुद्धा-त्मसंवित्तवनेः पादाब्जाल-सुचन्द्रकीर्तितिनः शिष्येण पुण्यात्मना ॥ या अभिनवश्रुतमुनिना गुणिना साध्वी हिता कृता लघ्वी । तां शोधयन्तु निपुणाः श्रीजैनागमसुधाब्धिविधुसङ्काशाः ॥ ”

ग्रन्थ नं० ६५८ ।

४१८ सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

४१९ सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७९१ ।

४२० सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८१३ ।

४२१ सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१६ ।

४२२ सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

४२३ सज्जनचित्तवल्लभ—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४३ ।

४२४ सर्वार्थसिद्धि—आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । विषय-धर्म । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत ! लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

४२५ सर्वार्थसिद्धि—आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २८६ ।

४२६ सर्वार्थसिद्धि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-११६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-शालि० शक १५२१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-शालि० शक १५२१, विलंबि संवत्सर भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदाके दिन सरस्वती-गच्छ बलात्का-  
रण कोण्डकुन्दान्वयके भा० वसुन्धरने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

४२७ सर्वार्थसिद्धि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७६ ।

४२८ सर्वार्थसिद्धि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१३ ।

४२९ सर्वार्थसिद्धि-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

४३० सद्बोधचन्द्रोदय-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

४३१ सागारधर्माभूत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-ग्रंथ स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

४३२ सागारधर्माभूत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें स्वोपज्ञ टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १०० ।

४३३ सागारधर्माभूत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है । इसके अन्तके ६ श्लोक नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ११२ ।

४३४ सागारधर्माभूत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३२४ ।

४३५ सागारधर्माभूत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३७६ ।

४३६ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है । यह टीका शालि० शक १५३६, आनन्द संवत्सर आश्वयुज शुक्ला ५  
के दिन खेमपुर (गेरुसोपे) निवासी बाहुबली (भुजबली) उपाध्यायके द्वारा रची गयी है । राक्षस संवत्सर  
कार्तिक १० के दिन मूलके निवासी कुत्यने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ४४३ ।

४३७ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४७३ ।

४३८ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ४७५ ।

४३९ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५१२ ।

४४० सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

४४१ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५३३ ।

४४२ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५४ ।

४४३ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५६६ ।

४४४ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५८५ ।

४४५ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें व्याकरणसंबंधी कुछ पत्र है ।

ग्रन्थ नं० ५९८ ।

४४६ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'आप्तपरीक्षा' के भी ३ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५९८ ।

४४७ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५९८ ।

४४८ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-११<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०९ ।

४४९ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें अनुप्रेक्षा संबंधी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६३२ ।

४५० सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७५१ ।

४५१ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

४५२ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

४५३ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें विमलसूरि कृत कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

४५४ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ९१ ।

४५५ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० १०० ।

४५६ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें विमलसूरि कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १७५ ।

४५७ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८२ ।

४५८ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । आदिके २२ पद्य नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

४५९ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७३ ।

४६० सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-कीलक संवत्सर माघ शुक्ला ५ रविवारके दिन जीयणके शिष्य नेमिचन्द्र देवने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ३०८ ।

४६१ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें विमलसूरिकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३१८ ।

४६२ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

४६३ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३५ ।

४६४ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४८ ।

४६५ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

४६६ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७७ ।

४६७ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है, एवं 'परीक्षामुख' के कुछ खण्डित पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ३८० ।

४६८ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४०९ ।

४६९ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५२० ।

४७० सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५४ ।

४७१ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०२ ।

४७२ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें संस्कृत 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६२५ ।

४७३ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१५<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें संस्कृत 'पार्वनाथाष्टक' आदिके भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६३१ ।

४७४ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें संस्कृत 'अहंस्तोत्र' 'सिद्धस्तोत्र' तथा 'रत्नत्रयस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

४७५ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-८<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७२३ ।

४७६ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

४७७ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-३<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ८६२ ।

४७८ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका हैं । खर संवत्सर भाद्रपद प्रतिपदा मङ्गलवारके दिन उपाध्याय अनन्त भट्टके पुत्रने वेणुपुर-[मूडबिंद्री] स्थ कोटिसेट्टिबसदि [नेमिनाथ चंत्यालय] में इसे लिखा है ।



### विषय—योगशास्त्र

ग्रन्थ नं० ६७१ ।

१ ज्ञानन्दविंशतिका-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें योगशास्त्रसंबंधी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २८३ ।

२ ध्यानस्वरूप-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

३ ध्यानस्वरूप-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७७ ।

४ योगरत्नाकर-कवि शान्तरस । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । शालि० शक १६४१ विकारी संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-सोमवंशीय राजा लक्ष्मणसरराय (बंगभपाल) के गुरु आचार्य चन्द्रशेखरके पुत्र पद्यनाभने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७४४ ।

५ योगरत्नाकर-कवि शान्तरस । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । शालि० शक १६५३ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १६५३ खर संवत्सर आश्वयुज शुक्ला १५ भार्गव (शुक्र) वारके दिन मूरान्त निवासी चन्दप्पने सिधु उपाध्यायके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ८९२ ।

६ योगरत्नाकर-कवि शान्तरस । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'गोम्मटसार (जीवकाण्ड) 'तथा आशीर्वादपद्य' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २१४ ।

१० प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि— कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'नन्दीश्वरपूजा' के भी २० पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २५१ ।

११ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि—आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६८२ ।

१२ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि—आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है तथा 'जिनसहस्रनाम' एवं 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३० ।

१३ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि—आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७७९ ।

१४ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि—आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २३४ ।

१५ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०६ ।

१६ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-यह ग्रन्थ पूर्ण है, पर आदि के कुछ पत्र खण्डित हैं ।

ग्रन्थ नं० ८८१ ।

१७ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-शा० शक १७९९ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८९१ ।

१८ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'गणितविलास', 'क्षत्रचूडामणि' तथा 'व्याकरण' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७० ।

१९ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११५ ।

२० प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-

१०४ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें कन्नड वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० २६३ ।

२१ प्रतिष्ठासारोद्धार—पण्डित आशाधर । पत्र सं०—१६ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसका अपर नाम 'जिनयज्ञकल्प' है ।

ग्रन्थ नं० ८७२ ।

२२ यथाप्रतिष्ठाविधान—..... । पत्र सं०—२० । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें 'ध्वजारोहणविधि' भी है ।

ग्रन्थ नं० १९० ।

२३ यन्त्रीविधि..... । पत्र सं०—१४ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें प्रतिष्ठा में काम आनेवाले कतिपय यन्त्रों के नियम दिये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ८८२ ।

२४ यंत्रसंग्रह—नेमिचन्द्र । पत्र सं०—१४ । पंक्ति प्रतिपत्र—X । अक्षर प्रतिपंक्ति—X । लिपि—कन्नड । भाषा—X । विषय—प्रतिष्ठा । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—इसमें प्रतिष्ठा सम्बन्धी कतिपय यंत्र संग्रह किये गये हैं ।



## विषय—व्रतविधान

ग्रन्थ नं० ७८३ ।

१ अनन्तव्रतविधान—..... । पत्र सं०—१३ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४७ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत तथा कन्नड । विषय—व्रतविधान । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें 'यज्ञोपवीतलक्षण' 'मुद्रालक्षण' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

२ अभिषेकपाठ—..... । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें और भी कतिपय स्तोत्रों के कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५५ ।

३ अभिषेकपाठ—ब्रह्मसूरि । पत्र सं०—६ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४१ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७१३ ।

४ अभिषेकपाठ—..... । पत्र सं०—२२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८९३ ।

५ अभिषेकपाठ-.....। पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'वज्रपाणि' नाम से प्रसिद्ध है ।

ग्रन्थ नं० ३८१ ।

६ अभिषेकपूजापाठ-.....। पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८८ ।

७ अभिषेकपूजापाठ-.....। पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

८ अर्हत्पूजा-.....। पत्र सं०-१ । पंक्ति-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८९४ ।

९ आराधनासंग्रह-.....। पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'कलिकुण्डाराधना' 'नागार्जुनयंत्राराधना' तथा 'वज्रपञ्जराराधना' आदि कई आराधनाएं संग्रह की गई हैं । एवं 'शान्तिहोमविधि' भी है ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

१० कर्मदहनआराधना-.....। पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३५ ।

११ कर्मदहनपूजाविधान-.....। पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २२७ ।

१२ कर्मदहनमंत्र-.....। पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८१० ।

१३ कर्मदहनमंत्र-.....। पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'सिद्धचक्र' 'दशलक्षण' तथा 'भूतज्ञान' के जाप्यमंत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ३६३ ।

१४ कल्पामरव्रतविधान-.....। पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५० ।

१५ कलिकुण्ड-आराधनादिसंग्रह-.....। पत्र सं०-१३० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

१६ गणधराष्टक-.....। पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

१७ गणधराधिवासन-..... पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'त्रिभुवनतिलकव्रतकथा' के भी तीन पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८९० ।

१८ गणधरवल्लययंत्राराधना-..... पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४४५ ।

१९ ग्रहयज्ञविधान-..... पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८६३ ।

२० चतुर्विंशतिजिनपूजा-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें पंचपरमेष्ठी, श्रुत तथा गणधरपूजाएं भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ८७१ ।

२१ चतुर्विंशतितीर्थंकरसमुदायपूजा-..... पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें श्रुतपूजा, गणधरपूजा तथा रत्नत्रयपूजा भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ८४४ ।

२२ चारित्र्याराधनामंत्र-..... पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें १३ विध चारित्र्य-संबन्धी पूजामंत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

२३ चारित्र्यसिद्धिव्रतविधान-..... पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३४ ।

२४ चारित्र्यसिद्धिव्रत-पूजाविधान-भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं०-३३ ; पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-मन्मथ संवत्सर वंशाख कृष्णा ६ शनिवार के दिन बल्लसे वैलुर देवरसने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २१५ ।

२५ जिनगुणसंपत्तिव्रतविधान-..... पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र ९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ३३४ ।

२६ जिनगुणसंपत्तिव्रतविधान-..... पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ८७७ ।

२७ तीर्थंकरसंगलारती-..... पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकरों तथा पंचपरमेष्ठियोंकी आरती है ।

ग्रन्थ नं० ६७८ ।

२८ त्रिकालतीर्थकरपूजा-..... पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'अभिषेकपाठ' भी है ।

ग्रन्थ नं० ८३४ ।

२९ त्रिकालतीर्थकरपूजा-..... पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें आचार्य समन्तभद्र कृत 'स्वयंभूस्तोत्र' 'भक्तामरस्तोत्र' तथा 'समवसरणस्तोत्र' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६४७ ।

३० नवदेवतापूजाविधि-..... पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६३ ।

३१ नवनिधिभण्डारव्रतविधान-..... पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५३

३२ नित्यव्रतादानक्रम-..... पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें श्रावकोंके प्रतिदिन नियम लेने का क्रम बतलाया है ।

ग्रन्थ नं० ८५४ ।

३३ नन्दीश्वरपूजा-..... पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२९ ।

३४ नन्दीश्वरव्रतविधान-..... पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ०५७९ ।

३५ नन्दीश्वरव्रतविधान-..... पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७८ ।

३६ नान्दीमंगलविधान-..... पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७०० ।

३७ नान्दीमंगलविधान-संग्रह । पत्र सं०-११६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

३८ पलथविधानव्रतविधान-..... पत्र सं०-१ । पंक्ति-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०७ ।

३९ पूजापाठसंग्रह..... पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४०९ ।

४० पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा- संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६९९ ।

४१ पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८६८ ।

४२ पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१५ ।

४३ पंचकल्याणव्रतविधान-.....। पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

४४ पंचपरमेष्ठिपूजा-.....। पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८४८ ।

४५ पंचपरमेष्ठिपूजा-.....। पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'बाहुबलिपूजा' भी है ।

ग्रन्थ नं० ८४० ।

४६ पंचपरमेष्ठि तथा नवदेवतापूजा-.....। पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'नवदेवतास्तोत्र' भी है ।

ग्रन्थ नं० ८७६ ।

४७ ब्रह्मयज्ञार्चन-.....। पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'सुप्रभातस्तोत्र' 'स्वप्नावली' तथा 'त्रिलोकचरित' [कन्नड] भी है ।

ग्रन्थ नं० ६५८ ।

४८ भुजबलिकल्याणव्रतविधान-पद्मनन्दी वर्णी । पत्र सं०-१९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१३ ।

४९ भूमिशुद्धिविधान-.....। पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६७८ ।

५० महापुण्याहवाचना-.....। पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-यह 'नान्दीमङ्गलविधान, का एक अंश है । इसमें 'अकलङ्काष्टक' 'नन्दीश्वरपूजा' तथा 'षोडश-भावनापूजा' के कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५५ ।

५१ महाभिषेक-.....। पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४७ ।

५२ महाभिषेक-.....। पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८९३ ।

५३ महाभिषेक-.....। पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८९५ ।

५४ महाभिषेक-.....। पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

५५ मुक्तावलीव्रतविधान-.....। पत्र सं०-१ । पंक्ति-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८९४ ।

५६ मृत्युञ्जयआराधना-.....। पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५८० ।

५७ वस्तुकल्याणव्रतविधान-.....। पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नन्दीश्वरव्रतविधान' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६४७ ।

५८ वास्तुपूजा तथा शान्तिविधान-.....। पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'नान्दीमङ्गलविधान' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८४७ ।

५९ वास्तुपूजा तथा शान्तिविधान-.....। पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४७ ।

६० विमानशुद्धिविधान-.....। पत्र सं०-११३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८९३ ।

६१ विमान [ चैत्यालय ] शुद्धिविधान-.....। पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-ईसवी सन् १८७५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-ईसवी सन् १८७५ जुलाई ता० २३ के दिन पदुमसेट्टिने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ६०४ ।

६२ व्रतविधानसंग्रह-.....। पत्र सं०-४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७०७ ।

६३ शुक्रवारव्रतविधान.....। पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें प्रभाचन्द्रकृत 'व्रतस्वरूप' है तथा कविरत्नाकर कृत 'भरतेशवैभव' के कुछ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ३२५ ।

६४ श्रुतज्ञानमन्त्र.....। पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

६५ श्रुतज्ञानव्रतोपासकम.....। पत्र सं०-१ । पंक्ति-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८५ ।

६६ श्रुतस्कन्धपूजाविधान.....। पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

६७ श्रुताष्टक.....। पत्र सं०-१ । पंक्ति-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

६८ श्रुताधिवासन.....। पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८१ ।

६९ षोडशभावनापूजा.....। पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६३ ।

७० सप्तपरमस्थानव्रतविधान.....। पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६३ ।

७१ सर्वतोमद्भव्रतविधान.....। पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४७ ।

७२ सर्वदोषपरिहारव्रतविधान.....। पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३२५ ।

७३ सहस्रनाममन्त्र-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६३ ।

७४ सिद्धचक्रव्रतविधान.....। पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

७५ सिंहमायोपगमन-.....। पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-त्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## न्याय तथा दर्शन.

ग्रन्थ नं० ७१९ ।

\*१ अयर्वशिखोपनिषद्दीपिका-शंकरानन्द । पत्र सं०-६८ $\frac{१}{२}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'अयर्वशिखोपनिषत्' की टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७८३ ।

२ अष्टशती-आचार्य भट्टकलङ्कदेव । पत्र सं०-५५ $\frac{१}{२}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-शालि० शक १५९९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि०शक १५९९ विंगल संवत्सर पुष्य शुक्ला १३ बुधवार के दिन संकिषट्टस्थ वर्षमान चैत्यालय में यह ग्रन्थ लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० ९०७ ।

३ अष्टशती-आचार्य भट्टकलङ्कदेव । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४९ ।

४ अष्टसहस्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५१९ ।

५ अष्टसहस्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६२५ ।

६ अष्टसहस्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ९०७ ।

७ अष्टसहस्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-१७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें ज्योतिष तथा गणित संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ९०९ ।

८ अष्टसहस्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-१५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

\* तारकाङ्कित जनेतर ग्रन्थ हैं

ग्रन्थ नं० ५६४ ।

९ अहिसालक्षण (?)—..... पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-ग्रन्थ का 'अहिसालक्षण' यह नाम अनुमानपरक है । क्योंकि प्रारंभका पत्र खण्डित है । प्रारंभिक पद्य निम्नप्रकार है:-'आनम्य सन्मति देवमधर्मःऋतुहिसन । हिंसात्वादिति सिद्धपथंम.....ब्रुवे ॥ इसमें न्याय संबंधी और भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३ ।

१० आप्तपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९५ ।

११ आप्तपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७७ ।

१२ आप्तपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४११ ।

१३ आप्तपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

१४ आप्तपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९७ ।

१५ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०८ ।

१६ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्य अकलङ्कदेवकी संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २०८ ।

१७ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१८ ।

१८ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७७ ।

१९ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

२० आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

२१ आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७१ ।

२२ आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९२ ।

२३ आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें वैद्यकसम्बन्धी दो पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ४९७

२४ आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

२५ आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'शान्तिनाषाष्टक' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७८३ ।

२६ आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९६ ।

२७ आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी भी है ।

ग्रन्थ नं० ९०७ ।

२८ आत्ममीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

२९ आलापपद्धति-आचार्य देवसेन । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६७१ ।

\*३० खण्डनदीपिका-मुनि विस्तुख । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह महाकवि श्रीहर्ष कृत खण्डनग्रन्थ की संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५६० ।

\*३१ गौतमसिद्धान्त-पण्डित वाचाधर शर्मा । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'ताकिकरका' के भी तीन पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५२०।

\*३२ तत्त्वकौमुदी-श्री वाचस्पति मिश्र। पत्र सं०-३८। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ६७१।

\*३३ तत्त्वकौमुदी-वाचस्पति मिश्र। पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-१६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-दर्शन। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७२४।

\*३४ तत्त्वचिन्तामणि-महोपाध्याय गणेश्वर। पत्र सं०-८०। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-११६। लिपि-नागरी। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५३१।

\*३५ तत्त्वदीपिका-खण्डनाकन्य। पत्र सं०-२००। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-अतिजीर्ण।

ग्रन्थ नं० २०९।

३६ तत्त्वनिश्चय-प्रवरकीर्ति। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-६८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६८।

३७ तत्त्वप्रदीप-देवण। पत्र सं०-२७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-कालयुक्ति संवत्सर, श्रावण कृष्ण १४, शुक्रवारके दिन कृष्णने इसे लिखा है।

ग्रन्थ नं० ४८।

३८ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-४२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१४०। विषय-न्याय। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३६।

३९ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-१०४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०८।

४० तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-९३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ५८१।

४१ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-१८५। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५८४।

४२ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४३१।

४३ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार-आचार्य विद्यानन्दी। पत्र सं०-२५५। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१५८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-न्याय। लेखनकाल-शालि० शक १४२१। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इस प्रतिके लेखक पण्डितदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

\*४४ तर्कपरिभाषा-केशव मिश्र । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध ।

ग्रन्थ नं० ८१ ।

\*४५ तर्कपरिभाषा-केशव मिश्र । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६५ ।

\*४६ तर्कपरिभाषा-केशव मिश्र । पत्र सं-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-दुंदुभि संवत्सर ज्येष्ठ कृष्ण ७ के दिन नन्दावरपुरस्थ आदिनाथ चैत्यालय में यह ग्रन्थ लिखा गया ।

ग्रन्थ नं० ४१३ ।

\*४७ तर्कपरिभाषा-केशव मिश्र । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । शालि० शक १५०३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १५०३, विषु संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला १३, रविवारके दिन कनकपुरस्थ बोम्मरस ने होंगनूरुनिवासी पदुमण उपाध्यायके पुत्र चिक्कय्यके लिये क्षेमपुरस्थ शान्तिनाथमन्दिरमें लिखवाकर इसे दान किया था ।

ग्रन्थ नं० ६६६ ।

\*४८ तर्कदीपिका-..... । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२६ ।

\*४९ तर्कभाषा-केशव मिश्र । पत्र सं० ५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३९० ।

\*५० तर्कसंग्रह-अन्नभट्ट । पत्र सं०-९५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७२९ ।

\*५१ तर्कसंग्रह-अन्नभट्ट । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७६४ ।

\*५२ तर्कसंग्रह-अन्नभट्ट । पत्र सं०-१५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७६ ।

\*५३ तर्कसंग्रह-अन्नभट्ट । पत्र सं०-१६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आशीर्वाद गद्य भी है ।

ग्रन्थ नं० ७८९ ।

\*५४ तर्कसंग्रह-अन्नभट्ट । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १११ ।

\*५५ तर्कसंग्रहदीपिका-..... । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९० ।

\*५६ तर्कसंग्रहदीपिका-..... । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७८९ ।

\*५७ तर्कसंग्रहदीपिका-..... पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

\*५८ तर्किकरज्ञा-वरदराज । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८२ ।

\*५९ तर्किकरज्ञा-वरदराज । पत्र सं०-१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें गणित विषयके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७८ ।

\*६० तर्किकरज्ञा-वरदराज । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २०६ ।

\*६१ तर्किकरज्ञा-वरदराज । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४४८ ।

\*६२ तर्किकरज्ञा-मायिभट्ट । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें वरदराज कृत संस्कृत व्याख्या भी है ।

ग्रन्थ नं० ४१३ ।

\*६३ तर्किकरज्ञान्याख्यान-..... । पत्र सं०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । शालि० शक १५०५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १५०५ भानु संवत्सर, चैत्र शुक्ला पूर्णिमा के दिन इसकी प्रतिलिपि समाप्त हुई थी ।

ग्रन्थ नं० ६७१ ।

\*६४ तर्किकरज्ञा की टीका-पण्डित हरिहर । पत्र सं०-३१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह वरदराजकृत 'तर्किकरक्षा' की टीका है । साथमें न्यायसम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६४० ।

\*६५ नयलक्षण-..... । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह एक संग्रह-ग्रन्थ है

ग्रन्थ नं० ६७९ ।

६६ नयलक्षण-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७९ ।

६७ नयसंग्रह-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत 'समवसरणाष्टक' तथा 'वीतरागाष्टक' भी है

ग्रन्थ नं० ६ ।

\*६८ न्यायकन्दली-पाण्डुदास यति श्रीधर भट्ट । पत्र सं०-१३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-प्रारम्भके १४ पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७० ।

\*६९ न्यायकन्दलीटीका-राजा इरंगोल । पत्र सं०-१६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड तथा नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९०८ ।

७० न्यायकुमुदचन्द्र-प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'न्यायकुमुदचन्द्र' की अपूर्ण कारिकाएं तथा 'परीक्षामुख' के अपूर्ण सूत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८७ ।

\*७१ न्यायकुसुमाञ्जलि-कवि वरदराज । पत्र सं०-७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७७ ।

\*७२ न्यायदीपावलीकी टीका-मुनि मुखप्रकाश । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७१ ।

\*७३ न्यायदीपावलीविवेक-मुनि अमृतानन्द । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह 'न्यायदीपावली' की टीका है

ग्रन्थ नं० ७६९ ।

७४ न्यायमणिदीपिका-..... । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह आ० अनन्तवीर्यकृत 'प्रमेयरत्नमाला' नामक परीक्षामुखवृत्तिकी टीका है । टीकाकारने अपना नाम सिर्फ 'बालः' लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ८१ ।

\*७५ न्यायसार-..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१० ।

\*७६ न्यायसार-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८३ ।

\* ७७ न्यायमारटीका-..... । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१० ।

\* ७८ न्यायसारपद्पञ्चिका-पण्डित वासुदेव । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७८० ।

\* ७९ न्यायसारपद्पञ्चिका-पण्डित वासुदेव । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२१ ।

\* ८० न्यायसारपद्पञ्चिका-पण्डित वासुदेव । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८२४ ।

\* ८१ न्यायसिद्धान्तदीप-शशधर शर्मा । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०१ ।

\* ८२ न्यायामृत..... । पत्र सं०-१४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ९५ ।

८३ पत्रपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य

ग्रन्थ नं० ३७७ ।

८४ पत्रपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा शिथिल ।

ग्रन्थ नं० ४११ ।

८५ पत्रपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०९ ।

८६ पत्रपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

८७ पत्रपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

८८ पत्रपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८० ।

८९ परमतखण्डन-..... । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०८ ।

६० परीक्षामुख-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४१ ।

६१ परीक्षामुख-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९३ ।

६२ परीक्षामुख-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३०७ ।

६३ परीक्षामुख-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'प्रमेयकमलमार्तण्ड, आप्तपरीक्षा, आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४६३ ।

६४ परीक्षामुख-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-१०६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें अनन्तवीर्यकी संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६०४ ।

६५ परीक्षामुख-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

६६ परीक्षामुख-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७६१ ।

६७ परीक्षामुखवृत्ति-श्री शुभचन्द्रदेव । पत्र सं०-९४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३१० ।

\* ६८ प्रबोधसाधन-मायिभट्ट । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह वरदराज कृत 'सारसंग्रह' की टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

\* ६९ प्रबोधसाधन-मायिभट्ट । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-यह वरदराजीय न्याय-ग्रन्थकी संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९१ ।

१०० प्रमाणपदार्थ-..... । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १३२।

१०१ प्रमाणपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें ग्रन्थकर्ताका नाम नहीं मिलता है । प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है-  
त्रयन्ति निजिताशेषसर्वथैकान्तनोतयः । सत्यवाक्याधिपा शषवद्विद्यानन्दा जिनेश्वराः ॥

ग्रन्थ नं० २९३ ।

१०२ प्रमाणपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४११ ।

१०३ प्रमाणपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०८ ।

१०४ प्रमाणपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५४८ ।

१०५ प्रमाणपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७३ ।

१०६ प्रमाणनिर्णय-आचार्य वादिराज । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९५ ।

१०७ प्रमाणनिर्णय-आचार्य वादिराज । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थके अन्तिम पद्य-

श्रीमद्व्याकरणोन्नताग्रनखरं षट्कर्कदंष्ट्रोत्कर्तं सत्साहित्यवरोरुकेसरसटासुभ्राजितं सिंहवत् । यद्वाक्यं  
परवादिवारणगणध्वंसोदवाद्दुदतं (?) ते नन्दन्तु मुनीन्ववः सुकृतिनः श्रीनागवीरारमजाः ॥ काणादः कोणमेकं  
भजतु भयवशात्सोगतस्यागतोऽयं मृत्युर्ममासकाद्याः किमिति जडधियः कुर्वते गर्वबुद्धिम् । येनाय न्यायमार्गप्रकट-  
पटुवचःप्रौढपयीयकूढो बाढ दुस्तकंगाढग्रहणपरिवृढान्वादिराजस्तुणेधि ? ॥०॥ विद्यानन्दबुधाग्रणीः समयनाथोऽन-  
न्तवीर्यो मुनिनेत्रद्वन्द्वसमी मता भगवतो भट्टाकलङ्कस्य च । लालाटं पुनरीक्षणं समजनि श्रीवादिराजो मुनिर्मध्यात्वा-  
दिपुरत्रयस्य दहने देवस्त्रिणेत्रो भुवि ॥

ग्रन्थ नं० ४११ ।

१०८ प्रमाणनिर्णय-आचार्य वादिराज । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसे पोसवल्ल चन्द्रमति अन्वने विजयोपाध्यायके पुत्र पण्डितदेवके लिये लिखवाया ।

ग्रन्थ नं० ५४९ ।

१०९ प्रमाणनिर्णय-आचार्य वादिराज । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें आचार्य विष्णुसेन कृत 'समवसरणस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६६८ ।

११० प्रमाणनिर्णय-आचार्य वादिराज । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७१ ।

\* १११ प्रमाणमालातात्पर्यटीका-मुनि चित्तसुख । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६३९ ।

११२ प्रमाणसिद्धि-..... । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें षड्दर्शनोंका संक्षिप्त वर्णन भी है ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

११३ प्रमेयकमलमार्तण्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-२२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-शालिवाहन श०१५३८ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२ ।

११४ प्रमेयकमलमार्तण्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-२४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । विषय-न्याय । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १०८ ।

११५ प्रमेयकमलमार्तण्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४२९ ।

११६ प्रमेयकमलमार्तण्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४३९ ।

११७ प्रमेयकमलमार्तण्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४४४ ।

११८ प्रमेयकमलमार्तण्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७२२ ।

११९ प्रमेयकमलमार्तण्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-२१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

१२० प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५४ ।

१२१ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८० ।

१२२ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर-प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

१२३ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५६४ ।

१२४ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१४ ।

१२५ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'सप्तभंगी' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३५ ।

१२६ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-शीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७६४ ।

१२७ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-२७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८०८ ।

१२८ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-८० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८३० ।

१२९ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०८ ।

१३० प्रबचनप्रवेश-आचार्य भट्टकलक । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९०८ ।

१३१ प्रबचनप्रवेश-आचार्य भट्टकलक । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४८९ ।

\* १३२ बृहदारण्यकभाष्य-..... । पत्र सं०-२६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण । विशेष-इसमें 'आप्तमीमांसा' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

\* १३३ भगवद्गीता-..... । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १११ ।

\* १३४ भाषापरिच्छेद-विश्वनाथ भट्टाचार्य । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १११ ।

\* १३५ मुक्तावलीप्रकाश-महादेव भट्ट । पत्र सं०-६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२० ।

१३६ युक्त्यनुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है । टीकाकार आचार्य विद्यानन्दी हैं ।

ग्रन्थ नं० २०८ ।

१३७ युक्त्यनुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५७५ ।

१३८ युक्त्यनुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें आ० मल्लिषेण कृत 'सज्जनचित्तवल्लभ' के भी तीन पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

१३९ युक्त्यनुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५५ ।

१४० युक्त्यनुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७८३ ।

१४१ युक्त्यनुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'शारदाष्टक' तथा 'नवदेवाष्टक' भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

१४२ लघोयस्त्रय-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-१७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्य अभयचन्द्र कृत वृत्ति भी है । यह ग्रन्थ हृशेरबीड मुनिचन्द्रदेवके द्वारा मंजेश्वरके  
नेमिनाथमन्दिरमें लिखा गया ।

ग्रन्थ नं० २३५ ।

१४३ लघोयस्त्रय-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें आचार्य अभयचन्द्र कृत तात्पर्यवृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ४९२ ।

१४४ लघोयस्त्रय-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०२ ।

१४५ विश्वत्रयत्रयकेश-आचार्य भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-११३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १९६ ।

\* १४६ वेदान्तकल्पतरु-अमलानन्द । पत्र सं०-३२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७२४ ।

\* १४७ शब्दखण्डख्याख्यान-..... । पत्र सं०-१२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११८ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१९ ।

\* १४८ शिवसूत्रत्रिशिका-..... । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २८८ ।

१४९ श्लोकरात्रिक-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-१४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

१५० षष्टमत तर्क-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५२२ ।

१५१ सत्यशासनपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६५२ ।

१५२ सत्यशासनपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-१८९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७९ ।

१५३ सप्तमंगो-..... । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका सहित गोम्मटसार जीवकाण्डके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७८ ।

\* १५४ सारसंग्रह-वरदराज । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-यह वादिराज कृत 'तार्किकरक्षा' की टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३१० ।

\* १५५ सारसंग्रह-वरदराज । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १११ ।

\* १५६ सिद्धान्तमुक्तावली-विश्वनाथ भट्टाचार्य । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०१ ।

१५७ सुष्टिवाचपरीक्षा-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें न्यायसंबंधी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६७१ ।

\* १५८ सांख्यसप्तति-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०९ ।

१५९ व्याख्यादसिद्धि-वादोभसिंह । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जोर्ण । विशेष-इसमें व्याकरण संबंधी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २८२ ।

१६० स्वमतस्थायन-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## व्याकरण

ग्रन्थ नं० ६४८ ।

\* १ अणादिवृत्ति-दुर्गसिंह । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७८३ ।

\* २ अणादिवृत्ति-दुर्गसिंह । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'सर्वदोषपरिहारव्रत' तथा 'गोम्मटसार' संबंधी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७९३ ।

\* ३ अणादिवृत्ति-दुर्गसिंह । पत्र सं०-३०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'घातुरूपमाला' के भी ३ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३६१ ।

४ कर्णाटकभाषाभूषण-नागवर्म । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें मूलसूत्र संस्कृतमें और वृत्ति कन्नडमें है । दोनोंके रचयिता नागवर्म ही हैं । यह बहुत पुराना कन्नड व्याकरण है ।

ग्रन्थ नं० ४६ ।

५ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-२०५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

६ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-२०५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य

ग्रन्थ नं० ७९ ।

७ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८५ ।

८ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-शालि० शक १३०५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-सेनगणाप्रगण्य भट्टारक जिनसेनके शिष्य पायणके वास्ते श्रवणबेलगोलके बोगार लकिक सेट्टिने  
इसे लिखवाया है ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

९ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१३० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५२ ।

१० कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७१ ।

११ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७४ ।

१२ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १७९ ।

१३ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९९ ।

१४ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१३ ।

१५ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-११५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-अन्यत्र 'त्रैविद्य' शब्द का अर्थ आगम, तर्क तथा व्याकरणका ज्ञाता बतलाया गया है ।

ग्रन्थ नं० २३० ।

१६ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५२ ।

१७ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-शालि० शक १२८९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि० शक १२८९, प्लबंग संवत्सर श्रावण शुक्ला १५ गुरुवारके दिन कनकप्रभद्रदेवके लिये कल्लह निवासी बेचिसेट्टिने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २६६ ।

१८ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७० ।

१९ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २८९ ।

२० कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५९ ।

२१ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५५ ।

२२ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१०० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५०७ ।

२३ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-११६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५१३ ।

२४ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७१ ।

२५ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५८० ।

२६ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' के भी चार पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६५० ।

२७ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१८ ।

२८ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें सूत्रपाठ तथा परिभाषा-सूत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३२ ।

२९ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५३ ।

३० कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५९ ।

३१ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१८ ।

३२ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४४१ ।

३३ कातन्त्रविस्तर-कवि वर्धमान । पत्र सं०-१३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४८० ।

३४ कारकरूप-..... । पत्र सं०- ४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७७ ।

३५ कारकरूप-..... । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २६५ ।

३६ कारकरूप-..... । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०६ ।

\* ३७ कारकान्यसम्बन्धपरीक्षा-पाणिनि । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसे उपाध्याय पुष्पदन्तने लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ५४५ ।

३८ काशिकावृत्ति-जिनेन्द्रबुद्धि । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

विशेष-यह पाणिनीय व्याकरणकी वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० २ ।

३९ चिन्तामणिकी टीका-समन्तभद्र । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

प्रारम्भिक पद्य-जिनचिन्तामणिमीधं नत्वा चिन्तामणेः स्फुटां टीकाम् ।

विषमोदाहृतिसिद्धयै कुर्वे शकस्या समन्तभद्रोऽहम् ॥

विशेष-इसमें व्याकरणसे सम्बन्ध रखनेवाले और भी ११ पत्र हैं । पर पता नहीं लगता है कि ये पत्र इसीके हैं या दूसरे के ।

ग्रन्थ नं० १३३ ।

४० चिन्तामणिकी टीका-समन्तभद्र । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९७ ।

४१ चिन्तामणिकी टीका-समन्तभद्र । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०५ ।

४२ चिन्तामणिधृति-आचार्य यक्षवर्म । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'शाकटायनव्याकरण' की वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ५४३ ।

४३ जैनेन्द्र-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें संस्कृत वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० ५९८ ।

४४ जैनेन्द्र-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५९१ ।

४५ जैनेन्द्रप्रक्रिया-आचार्य गुणनन्दी । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अनि जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १५२ ।

४६ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४१ ।

४७ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८४ ।

४८ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र सं० १०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-शालि अक० १६७९ ईश्वर संवत्सर मार्गशीर्ष कृष्ण १० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-मूडबिंदीनिवासी त्रिकसेट्टिके पुत्र चन्दय्यने मूरालनिवासी चन्दय्यरसके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ३८५ ।

४९ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९४ ।

५० धातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६११ ।

५१ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति ४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७२८ ।

५२ धातुपाठ-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-१७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसके लेखक वेणुपुर ( मूडबिंदी ) निवासी हिरैबसदि पायण्ण है ।

ग्रन्थ नं० ८६२ ।

५३ धातुपाठ-केशव । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५७ ।

५४ धातुपाठ-..... । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र ७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५१८ ।

५५ धातुपाठ-..... । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५२ ।

५६ धातुपाठ ( सार्थ )-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-अर्थ कन्नड भाषामें है । इसमें 'कातन्त्ररूपमाला'के भी १२ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८१६ ।

५७ धातुपाठ-..... । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८३ ।

५८ धातुपाठ-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'ज्योतिष' तथा 'पूजापाठ' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७७ ।

५९ धातुरूपमाला-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८४५ ।

६० धातुरूपमाला-..... । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

६१ प्रक्रियासंग्रह-..... । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

\* ६२ प्राकृतमञ्जरी-श्री वररुचि । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

६३ रूपसिद्धि-मुनि दयापाल । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपत्र-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५३८ ।

६४ रूपसिद्धि-मुनि दयापाल । पत्र सं०-८१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

६५ रूपसंग्रह-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

अन्तिम पद्य-सिद्धरूपमभिष्टुत्य प्रणम्य प्रणिधाय च । प्रसिद्ध-रूपसिद्धयर्थं क्रियते रूपसंग्रहः ॥

ग्रन्थ नं० ३४३ ।

६६ शब्दमणिदर्पण-केशिराज । पत्र सं०-१४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६२ ।

६७ शब्दमणिदर्पण-केशिराज । पत्र सं०-१३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३७९ ।

६८ शब्दमणिदर्पण-केशिराज । पत्र सं०-१५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४६६ ।

६९ शब्दमणिदर्पण-केशिराज । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२७ ।

७० शब्दमणिदर्पण-केशिराज । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

७१ शब्दमणिदर्पण-केशिराज । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-शालि० शक १४७३ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि० शक १४७३ नल संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ८ गुरुवारके दिन उद्दिसि-निवासी देवरसके पुत्र बोम्मिप्पने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

७२ शब्दमणिदर्पण-केशिराज । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३८४ ।

७३ शब्दरूपावली-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें धनञ्जय कृत 'नाममाला' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९४ ।

७४ शब्दरूपावली-..... । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७५ ।

७५ शब्दरूपावली-..... । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८४५ ।

७६ शब्दरूपावली-..... । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८५ ।

७७ शब्दरूपावली-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७५ ।

७८ शब्दधतुरूप-..... । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४३० ।

७९ शब्दानुरूप तथा समासचक्र—..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

८० शब्दानुशासन-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-२६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'चिन्तामणि वृत्ति' भी है ।

ग्रन्थ नं० ८३ ।

८१ शब्दानुशासन-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें अभयनन्दी कृत 'प्रक्रियासंग्रह' नामक वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० १२३ ।

८२ शब्दानुशासन-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-९८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५० ।

८३ शब्दानुशासन-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५१५ ।

८४ शब्दानुशासन-आचार्य भट्टकलङ्क । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८३२ ।

८५ शब्दानुशासन-भट्टकलङ्क । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'एकत्वसप्तति' 'क्षुतावतार कथा' 'तत्त्वार्थसूत्र' एवं 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' आदि के भी अधूरे पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८६२ ।

८६ शब्दानुशासन-भट्टकलङ्क । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०५ ।

८७ शब्दानुशासनपरिभाषासूत्र—..... । पत्र सं०-९५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शार्वरि संवत्सर, ज्येष्ठ कृष्ण ३० के दिन रामभट्टने चरकल्लिनिवासी रविवर्म अरसके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २२६ ।

८८ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-८१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें अन्तका एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० २७५ ।

८६ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-२०९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-देशीगणाग्रगण्य प्रभेन्दुदेवने कल्लहल्लि-निवासी विजयण्णके शिष्य पदुमके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ४५९ ।

६० शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें स्त्रीप्रत्यय तक ही है ।

ग्रन्थ नं० ५१६ ।

६१ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-८१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण

ग्रन्थ नं० ५७१ ।

६२ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५७३ ।

६३ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कवि माष कृत 'शिशुपालवध' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८४ ।

६४ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । शालि०शक १४७५ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शालि०शक १४७५ परिषावी संवत्सर कार्तिक शुक्ल (?) मंगलवारके दिन हंपनायककी पौत्री नागम्म नायकीने शास्त्रदानार्थ इसे लिखवाया है ।

ग्रन्थ नं० ६२२ ।

६५ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६८६ ।

६६ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-११५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ७११ ।

६७ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०- १९७ । पंक्ति प्रतिपत्र- ० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-शालि० शक १७०५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १७०५ श्मश्रुन् संवत्सर श्रावण शुक्ला १५ गृहवारके दिन वेणुपुरनिवासी विक्रम सेट्टिके पुत्र सोमने स्थानीय त्रिभुवनतिलक-चूडामणि चैत्यालयमें इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७१४ ।

६८ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०—१० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५० ।

६९ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०—६३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७७ । लिपि—नागरी । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

१०० शाकटायनप्रक्रियासंग्रह—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०—१३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९४ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८१८ ।

१०१ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह—आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०—९२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २२१ ।

१०२ शाकटायन अमोघवृत्ति—आचार्य शाकटायन । पत्र सं०—१७९ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । अन्तिम पद्य—श्रीमत्कारकले ग्रामे माभिश्चेष्टी मुदूक् सुधीः । विशालकीर्तिदेवेभ्योऽमोघां वृत्तिमलीलिखत् ॥

ग्रन्थ नं० ६३६ ।

१०३ शाकटायन अमोघवृत्ति—आचार्य शाकटायन । पत्र सं०—२९ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१३९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २११ ।

१०४ षट्कारक—विनश्वरनन्दी । पत्र सं०—४० । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५१ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६५ ।

१०५ षट्कारक—विनश्वरनन्दी । पत्र सं०—२४ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१५ ।

१०६ षट्कारक—विनश्वरनन्दी । पत्र सं०—१९ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—६४ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें आ० पूज्यपादकृत 'सर्वार्थसिद्धि' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २८२ ।

१०७ समासचक्र—..... । पत्र सं०—२३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९४ ।

१०८ समासचक्र—..... । पत्र सं०—४ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

१०६ समासचक्र-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें व्याकरणसंबन्धी ८ पत्र और भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ६४९ ।

११० समासचक्र-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

१११ सारस्वतप्रक्रिया-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६८ ।

११२ सारस्वतप्रक्रिया-..... । पत्र सं०-२५<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



## विषय-कोश

ग्रन्थ नं० १५८ ।

१ अभिधानचिन्तामणि-आचार्य हेमचन्द्र । पत्र सं०-१५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७४ ।

२ अभिधानचिन्तामणि-आचार्य हेमचन्द्र । पत्र सं०-६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७८ ।

३ अभिधानरत्नमाला-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'चतुरास्यनिघण्टु' (कन्नड) के भी २ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८०१ ।

४ अभिधानरत्नमाला-नागवर्म । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ३५६ ।

५ अनेकार्थनाममाला-पण्डित रामचन्द्र । पत्र सं०-१७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

६ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें प्रारम्भके १७ पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० २५ ।

७ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-तमिल । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२६ ।

८ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें विस्तृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

९ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-११७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १९१ ।

१० अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २८० ।

११ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें विठल कृत कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० २८२ ।

१२ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९४ ।

१३ अमरकोश (तृतीयकाण्ड मात्र)-अमरसिंह । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९७ ।

१४ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९७ ।

१५ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४३७ ।

१६ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-सौम्य संवत्सर वैशाख कृष्ण ७ शुक्रवारके दिन पदुमण्णाने इसे लिखा है । इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५२८ ।

१७ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०१ ।

१८ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६१२ ।

१९ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६५१ ।

२० अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें लिंगयमूरिकृत पदविवृति नामक संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७१६ ।

२१ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-नागरी ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१७ ।

२२ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७६० ।

२३ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-१७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें संस्कृत तथा कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८३६ ।

२४ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें 'क्षत्रचूडामणिकाव्य' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८५८ ।

२५ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९०० ।

२६ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें विट्टलकृत 'विदग्धचूडामणि' नामक संस्कृत टीका तथा कन्नड टिप्पणी भी है ।

ग्रन्थ नं० ६०७ ।

२७ अमरकोशकी टीका-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २४९ ।

२८ अमरकोशपदविवृति-लिङ्गयमूरि । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८२ ।

२९ एकाक्षरनिघण्टु-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६५३ ।

३० एकाक्षरनिघण्टु-..... । पत्र सं०-२<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'हरदनीति' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३७४ ।

३१ एकाक्षरनाममाला-अमरेन्द्र । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

\* ३२ चतुरास्यनिघण्टु-चतुरास्य । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५६४ ।

\* ३३ चतुरास्यनिघण्टु-चतुरास्य । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६५३ ।

\* ३४ चतुरास्यनिघण्टु-चतुरास्य । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७८६ ।

३५ नानार्थकोश-कवि चक्रवर्ती । पत्र सं०-२१<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'एकाक्षरनिघण्टु' तथा 'त्रिलोकमार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

३६ नानार्थरत्नाकर-कवि नागवर्म । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५५३ ।

३७ नानार्थरत्नाकर-नागवर्म । पत्र सं०-५६<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-शालि० शक १५०४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । शालि० शक १५०४ विषु संवत्सर ज्येष्ठ शु० ५ रविवारके दिन श्री अकलङ्कदेवके शिष्य हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने घातकीपुरस्थ नेमिनाथ चैत्यालय में इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ६५३ ।

\* ३८ नानार्थरत्नाकर-रामचन्द्र द्राविड । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-शालि० शक-१५०४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-शालि० शक १५०४ विषु संवत्सर, ज्येष्ठ शु० ५ रविवारके दिन श्रीअकलङ्कदेवके शिष्य हन्नावर-निवासी जयकीर्तिदेवने घातकीपुरस्थ नेमिनाथ चैत्यालयमें इसे लिखा है । इसमें कन्नड टीकाके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५३ ।

३६ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३६ ।

४० नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७२ ।

४१ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३१८ ।

४२ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५८ ।

४३ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४६९ ।

४४ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६५३ ।

४५ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-१५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-शा० शक १५०५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १५०५ चित्रभानु संवत्सर वैशाख शु० १२ के दिन हत्तावर-निवासी जयकीर्तिदेवने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७८२ ।

४६ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८३० ।

४७ नाममाला-महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४३० ।

\* ४८ विद्गधचूडामणि-पण्डित विट्टल । पत्र सं०-१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह अमरसिंह कृत 'नामलिङ्गानुशासन' की विस्तृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४६६ ।

\* ४९ विद्गधचूडामणि-पण्डित विट्टल । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४९४ ।

\* ५० विदग्धचूडामणि—पण्डित विट्ठल । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५४८ ।

\* ५१ विदग्धचूडामणि—पण्डित विट्ठल । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-यह 'अमरकोश' की कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७८८ ।

\* ५२ विदग्धचूडामणि—पण्डित विट्ठल । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'अमरकोश' की टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९२ ।

\* ५३ वैजयन्तीकोश-..... । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७७८ ।

५४ शब्दमञ्जरी-प्रदीप्यसूरि । पत्र सं०-२९<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें व्याकरण सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

### विषय-काव्य

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

\* १ अमरुशतक-कवि अमरुक । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें लक्ष्मीधराचार्यके पुत्र चेन्निभट्ट कृत 'शृंगारदीपिका' नामक संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

\* २ अमरुशतक-कवि अमरुक । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें पेट्टकोमटिग वेम भूपाल विरचित 'शृंगारदीपिका' नामक संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५५८ ।

\* ३ किरातार्जुनीय-महाकवि भारवि । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६१९ ।

\* ४ किरातार्जुनीय-महाकवि भारवि । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'मेषदूत' तथा 'रघुवंश' के भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

\* ५ कुमारसम्भव-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

\* ६ कुमारसम्भव-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७०५ ।

\* ७ कुमारसम्भव-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०५ ।

\* ८ कुमारसम्भवटीका-मल्लिनाथ । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३२ ।

\* ९ कुमारसम्भवदीपिका-नन्दिसूरि । पत्र सं०-१०६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

विशेष-यह कालिदास कृत 'कुमारसम्भव' की टीका है । इनके रचयिता पण्डित नारायणार्यके पुत्र पं० नन्दिसूरि हैं ।

ग्रन्थ नं० १ ।

१० क्षत्रचूडामणि-महाकवि वादीभसिंह । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३६ ।

११ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४१ ।

१२ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३९ ।

१३ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८४ ।

१४ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२१ ।

१५ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

१६ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२६ ।

१७ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६३५ ।

१८ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६६८ ।

१९ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४० ।

२० क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६७३ ।

२१ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१५ ।

२२ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२२ ।

२३ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८५६ ।

२४ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'समासचक्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १८७ ।

२५ क्षत्रचूडामणि टीका- . . . . . । पत्र सं०-६९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४० ।

\*२६ स्वयंभुवग्रन्थ<sup>१</sup>-श्रीहर्ष । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

२७ गद्यचिन्तामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

२८ गद्यचिन्तामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

१ यह दर्शन ग्रन्थ मालूम होता है । -सम्पा०

ग्रन्थ नं० ४ ।

२६ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-प्रारम्भके ४८ पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

३० चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११० ।

३१ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४३ ।

३२ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसे बिदरे पार्श्वनाथ चैत्यालयमें ब्रह्मचारी वासुपूज्यने लिखवाया ।

ग्रन्थ नं० १६६ ।

३३ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-८९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें १५ पत्रोंमें 'विषमपदपंचिका' नामक संस्कृत टिप्पणी भी है ।

ग्रन्थ नं० २८१ ।

३४ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९६ ।

३५ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४१४ ।

३६ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४३० ।

३७ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५५५ ।

३८ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५६७ ।

३९ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६१५ ।

४० चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४६ ।

४१ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६८० ।

४२ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'द्विसंधानकाव्य' के भी ७ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७४३ ।

४३ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१७ ।

४४ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११० ।

४५ चन्द्रप्रभचरित-व्याख्यान-विद्यार्थी मुनिचन्द्र । पत्र सं०-१०० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-व्याख्यानका नाम विद्वन्मनोवल्लभ है । व्याख्याता अलगंचीपुरीके निवासी द्विजोत्तम देवचन्द्रके पुत्र विद्यार्थी मुनिचन्द्र हैं । यह व्याख्यान प्रमोदूत संवत्सर माघ शुक्ला प्रतिपत् रोहिणी वक्षत्रमें रचा गया ।

ग्रन्थ नं० ४९४ ।

\* ४६ चम्पूरामायण-भोजराज । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११९ ।

\* ४७ जगन्नाथविजय-..... । पत्र सं०-१३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३०० ।

\* ४८ जयनृपकाव्य-कवि मंगरस । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-निट्टूरु निवासी समन्तभद्रदेवने बिदुरेके चन्द्रप्रभ चंत्थालयमें इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २१९ ।

४९ ज्ञानचन्द्राभ्युदय-कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२ ।

५० धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-९४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

५१ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

प्रशस्तिका प्रारम्भिक पद्य-श्रीमानमेयमहिमास्ति स नेमदानां वंशः समस्तजगतीबलयावतंसः ॥

हस्तावलम्बनमवाप्य यमूल्लसन्ती वृद्धापि न स्खलति दुर्गपदेषु लक्ष्मीः ॥१॥

ग्रन्थ नं० २८ ।

५२ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४ ।

५३ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें चित्रबन्धोंकी कुछ रचनायें भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

५४ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १८३ ।

५५ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-८७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १८४ ।

५६ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । अन्तिम पद्य-आर्द्रदेवमुतेनेदं काव्यं धर्मजिनोदयम् । रचितं हरिचन्द्रेण परमं रसमन्दिरम् ॥ यह पद्य मुद्रित प्रतिमें नहीं मिलता है ।

ग्रन्थ नं० २३५ ।

५७ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२२ ।

५८ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५७ ।

५९ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें बीच बीचमें टिप्पणी भी दी गई है ।

ग्रन्थ नं० ४५७ ।

६० धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६२७ ।

६१ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'सर्वार्थसिद्धि' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६८० ।

६२ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें गुणस्थान संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६९१ ।

६३ धर्मशार्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-८१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७२० ।

६४ धर्मशार्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७८४ ।

६५ धर्मशार्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७८४ ।

६६ धर्मशार्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

६७ धर्मशार्माभ्युदयटीका-कवि देवर । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

प्राग्भिक पद्य-अनेकान्तगिरां पत्युरङ्गप्रिद्वयनखानि वः । अमृतश्रीरिरंमनां सन्नु शृङ्गारदर्पणाः ॥ १ ॥

अरलिश्रेष्ठिनः स्नेहादातनिष्यति दीपिकाम् । धर्मशर्मति रुढस्य काव्यस्य कविदेवरः ॥ २ ॥

विशेष-टीका १२ सर्गाविधि है ।

ग्रन्थ नं० ६०१ ।

६८ धर्मशार्माभ्युदयटीका-कवि देवर । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७८४ ।

६९ धर्मशार्माभ्युदयटीका-कवि देवर । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'अमरकोश,' 'द्विसंधानकाव्य' तथा 'धर्मशार्माभ्युदयटिप्पणी' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २८१ ।

७० धर्मशार्माभ्युदयविषमपदटिप्पणी-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७७ ।

७१ नेमिनिर्वाणकाव्य-वाग्भट । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९१ ।

७२ नेमिनिर्वाणकाव्य-वाग्भट । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४९७ ।

७३ नेमिनिर्वाणकाव्य-वाग्भट । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५९४ ।

७४ नेमिनिर्वाणकाव्य-वाग्भट । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६२८ ।

७५ नेमिनिर्वाणकाव्य-वारभट । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७६२ ।

७६ नेमिनिर्वाणकाव्यटीका-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०४ ।

\*७७ नैषधकाव्य-श्रीहर्ष । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३३१ ।

\*७८ नैषधकाव्य-श्रीहर्ष । पत्र सं०-८७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४७२ ।

\*७९ नैषधकाव्य-श्रीहर्ष । पत्र सं०-८० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें नरसिंह पण्डितके पुत्र नारायण कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४९६ ।

\*८० नैषधकाव्य-श्रीहर्ष । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

८१ पार्श्वभ्युदय-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । विषय-काव्य । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । शुद्ध तथा पूर्ण । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'नागकुमार' चरित के कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १६५ ।

८२ पार्श्वभ्युदय-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४७ ।

८३ पंपरामायण-अभिनव पंप (नागचन्द्र) । पत्र सं०-१७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-प्रजोत्पत्ति संवत्सर भाद्रपद सप्तमीके दिन मलधारी भट्टारक ललितकीर्तिके शिष्य देवचन्द्रके पुत्र कल्लह (?) निवासी चन्दणने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १०५ ।

\* ८४ भट्टिकाव्य (रामकथा)-भट्टि । पत्र सं०-२०६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'जयमंगल' नामक संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६१७ ।

\* ८५ भट्टिकाव्य-भट्टि । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४४ ।

८६ मुनिसुव्रतकाव्य-कवि अर्हदास । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध ।



ग्रन्थ नं० ४३० ।

६८ मुनिसुव्रतकाव्य—कवि अर्हंदास । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४८४ ।

६९ मुनिसुव्रतकाव्य—कवि अर्हंदास । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६०४ ।

१०० मुनिसुव्रतकाव्य—कवि अर्हंदास । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६३० ।

१०१ मुनिसुव्रतकाव्य—कवि अर्हंदास । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८३२ ।

१०२ मुनिसुव्रतकाव्य—कवि अर्हंदास । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'गायत्री' तथा 'आशीर्वाद-पद्य' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८९० ।

१०३ मुनिसुव्रतकाव्य—कवि अर्हंदास । पत्र सं०-१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४१८ ।

१०४ मुनिसुव्रतकाव्य टीका—कवि अर्हंदास । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-शालि० शक १७५३ विकृत संवत्सर कार्तिक कृष्ण १३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार पायसागर वर्णी हैं । इसमें सिर्फ टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६६८ ।

१०५ मुनिसुव्रतकाव्यटीका—कवि अर्हंदास । पत्र सं०-२१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-शालि० शक १४२५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शालि० शक १४२५ दुंदुभि संवत्सर आश्वयुज कृष्ण १३ बुधवारके दिन गंगुमेन बोवके पुत्र गोपणने मुनि विशालकीतिके शिष्य ब्र० धर्मदासका ग्रंथ देखकर चंद्रप्रभदेवके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १६५ ।

\*१०६ मेघसन्देश—महाकवि कालिदास । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३०१ ।

\*१०७ मेघसन्देश—महाकवि कालिदास । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

\*१०८ मेघसन्देश—महाकवि कालिदास । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७०५ ।

\*१०६ मेघसन्देश-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८१७ ।

\*११० मेघसन्देश-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें मल्लिनाथकृत 'संजीवनी' नामक टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५३२ ।

\*१११ मेघसन्देश टीका-कवि मल्लिनाथ । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अति अशुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २०५ ।

११२ यशोधरकाव्य-कवि वादिराज । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४२ ।

११३ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २५५ ।

११४ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०३ ।

११५ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका भी है । यह टीका क्षेमपुरके नेमिनाथ चैत्यालयमें रची गई है ।

ग्रन्थ नं० ३७० ।

११६ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें तृतीय सर्ग तक कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३७० ।

११७ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें द्वितीय सर्ग तक भट्टारक लक्ष्मोसेन कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

११८ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५६७ ।

११९ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'प्रायश्चित्तविधि'के भी चार पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५७८ ।

१२० यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७०३ ।

१२१ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७८० ।

१२२ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७९९ ।

१२३ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ८१२ ।

१२४ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें चिक्कणके पुत्र लक्ष्मण कृत संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८१६ ।

१२५ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके लेखक पायण्ण हैं ।

ग्रन्थ नं० १९९ ।

१२६ यशोधरकाव्यटीका-पण्डित लक्ष्मण । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । अन्तिम पद्य-अकारयदिमां टीकां चिक्कणो गुणरक्षणः । अकरोज्जिनदासोऽयं चिक्कणात्मजलक्ष्मणः ॥१॥ श्रीमत्पद्मणगुम्भटेल्यमिहितो श्रीवर्णिनौ भूतले भातश्चारुचरित्रवर्धिहिमगू तत्प्रीतये लक्ष्मणः । मन्दो बन्धुरवादिराजविदुषः काव्यस्य कल्याणदां टीकां क्षेमपुरेऽकरोद्गुस्तरश्रीनेमिचैत्यालये ॥२॥ विशेष-इस प्रतिमें सिर्फ टीका है । सम्भव है कि मूल अन्यत्र रखा गया हो । टीका सुन्दर है ।

ग्रन्थ नं० १५५ ।

\*१२७ रघुवंशकाव्य-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४० ।

\*१२८ रघुवंशकाव्य-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४९ ।

\*१२९ रघुवंशकाव्य-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

\*१३० रघुवंशकाव्य—महाकवि कालिदास । पत्र सं०—३५ । पंक्ति प्रतिपत्र—१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१३० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

\*१३१ रघुवंशकाव्य—महाकवि कालिदास । पत्र सं०—४२ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७१ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६३ ।

१३२ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०—१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र—४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५३ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य

विशेष—इसमें संस्कृत टीका भी है । टीकाका अन्तिम पद्य इस प्रकार है—

अकारयदिमां टीकामरळिःश्रेष्ठिपुंगवः । अकरोदमृताशिलष्टवचनः कविदेवरः ।

ग्रन्थ नं० १२५ ।

१३३ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०—८७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—११२ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें संस्कृत टीका भी है । प्रत्येक सर्गके अन्तमें टीकाका पद्य इस प्रकार है—

साधीयसी कृत! टीका काव्यस्यास्य लघीयसी । पुष्पसेनार्यवर्यस्य प्रियशिष्येण सुरिणा ॥

ग्रन्थ नं० ५०४ ।

१३४ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०—६ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें व्याकरण सम्बन्धी भी कुछ पत्र है ।

ग्रन्थ नं० ५५१ ।

१३५ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०—३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें संस्कृत टीका है । एवं व्याकरणसम्बन्धी कुछ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ५६२ ।

१३६ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०—४० । पंक्ति प्रतिपत्र—४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५६९ ।

१३७ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०—६१ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६३४ ।

१३८ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०—७८ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७४३ ।

१३६ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-२१ । पंक्ति-प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' के भी चार पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८२० ।

१४० राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नाममाला' तथा 'मुनिसुव्रतकाव्य' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८२७ ।

१४१ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ]—महाकवि धनञ्जय । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'वैजयन्तीकोश, 'विपापहारस्तोत्र' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५४९ ।

१४२ राघवपाण्डवीय [ द्विसन्धान काव्य ] की टीका-कविदेवर । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें न्यायसंबंधी कुछ अपूर्ण पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २७ ।

१४३ रामचरित [ पंपरामायण ]—महाकवि पंप । पत्र सं०-१२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । विषय-काव्य । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । लेखनकाल-शालि० शक १३५० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-देशीगणाग्रगण्य अनेकगुणगणालंकृत-सहस्रकीर्तिदेवके शिष्य चिट्टूर नागसेट्टिके पुत्र सिरियण्णके द्वारा लिखित ।

ग्रन्थ नं० ८४ ।

१४४ लीलावति-नेमिचन्द्र । पत्र सं०-८१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-भाव संवत्सर मार्गशीर्ष कृष्ण ३ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसके लेखक गोणियवीड निवासी देवण्णके पुत्र वोम्मरस हैं ।

ग्रन्थ नं० ८३८ ।

१४५ लीलावति-नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'दानविधि,' 'सर्वशकुन' तथा 'कर्मप्रकृति' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७५ ।

१४६ वर्द्धमानकाव्य-असग । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०९ ।

१४७ वर्द्धमानकाव्य-असग । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५४० ।

१४८ वर्द्धमानकाव्य-असग । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५४७ ।

१४९ वर्द्धमानकाव्य-असग । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें उच्चकीर्ति (?) कृत 'पुष्पाञ्जलिकाव्य' का भी एक पत्र है ।

ग्रन्थ नं० ५५५ ।

१५० वर्द्धमानकाव्य-असग । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'शाकटायनप्रक्रियासंग्रह'के भी पांच पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७९० ।

१५१ वर्द्धमानकाव्य-असग । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें अयकीर्ति [ ? ] कृत संस्कृत 'पुष्पाञ्जलिमहाकाव्य' का भी एक पत्र है ।

ग्रन्थ नं० ३३८ ।

१५२ विदग्धमुखमण्डन-धर्मदास । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२५ ।

१५३ विदग्धमुखमण्डन-धर्मदास । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'द्रव्यसंग्रह' तथा संस्कृत 'द्वादशानुप्रेक्षा' के कुछ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २८१ ।

१५४ विषमपदपञ्चिका-..... पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह महाकवि वीरनन्दि कृत 'चन्द्रप्रभकाव्य' की टिप्पणी है इसमें कन्नड अर्थ भी है ।

ग्रन्थ नं० १८४ ।

१५५ विषमपदपञ्चिका..... पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-यह महाकवि वीरनन्दि कृत 'चन्द्रप्रभकाव्य' की टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० २८७ ।

\*१५६ शिशुपालवध-महाकवि माघ । पत्र सं०-१०२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४९ ।

\*१५७ शिशुपालवध-महाकवि माघ । पत्र सं०-८४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६१९ ।

\*१५८ शिशुपालवध-महाकवि माघ । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथ खण्डित ।  
ग्रन्थ नं० ७९४ ।

\*१५९ शिशुपालवध टीका-मल्लिनाथ । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें सुभाषितसंबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।  
ग्रन्थ नं० ५५० ।

\*१६० शृङ्गारदीपिका-वेम भूपाल । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-यह कवि अमरक कृत 'शृंगारशतक' से संगृहीत है ।  
ग्रन्थ नं० ३६७ ।

१६१ शृङ्गारसुधाब्धि-कवि मंगरस । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।



## विषय-नाटक

ग्रन्थ नं० ६७ ।

\*१ अभिज्ञानशाकुन्तल-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ३०१ ।

\*२ अभिज्ञानशाकुन्तल-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ३०१ ।

\*३ नागानन्द..... । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ३०१ ।

\*४ मालविकाग्निमित्र-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ३०१ ।

\*५ विक्रमोर्धशीय-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।



## विषय-अलंकार आदि

ग्रन्थ नं० ५६५ ।

१ अलङ्कारचिन्तामणि—अजितसेन । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

२ अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्दी । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'क्रियाकाण्डचूलिका' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८६ ।

३ अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्दी । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

अन्तिम वाक्य-श्रीमत्तु (?) पुरस्थितस्य चन्द्ररसनामधेयस्य पुत्रेण चन्दप्पनाथनामधेयेन लिखितस्य..... । विशेष-इसमें 'वृत्तरत्नाकर' आदि और भी कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १४२ ।

४ अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्द । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६०० ।

५ अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्दी । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०४ ।

६ अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्दी । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६७४ ।

७ अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्दी । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'नाममाला' तथा 'वृत्तरत्नाकर' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७२७ ।

८ अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्दी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७४२ ।

९ अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्दी । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें व्याकरण सम्बन्धी २७ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ८१२ ।

१० अलङ्कारसंग्रह—अमृतानन्दी । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४१२ ।

\*११ काव्यप्रकाश-कवि मम्मट । पत्र सं०-९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७४६ ।

\*१२ काव्यप्रकाश-कवि मम्मट । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-प्रमाथी संवत्सर श्रावण कृष्णा प्रतिपदाके दिन नागमंगल निवासी अच्यप्पके पुत्र तिम्यने चौडरसोपाध्यायके पुत्र समन्तभद्रके लिये इसे लिखा है । इसमें 'भाषामञ्जरी'के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५५६ ।

\*१३ काव्यादर्श-कवि दण्डी । पत्र सं०-५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें महोपाध्याय केशव मिश्र कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६१५ ।

\*१४ काव्यादर्श-कवि दण्डी । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५९२ ।

\*१५ काव्यानुशासन-आचार्य हेमचन्द्र । पत्र सं०-१३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ११६ ।

\*१६ काव्यालोक-आनन्दवर्धन । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३८ ।

\*१७ काव्यालंकार-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१२ ।

\*१८ कुवलयानन्द-अप्पय दीक्षित । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०६ ।

\*१९ कुवलयानन्द-अप्पय दीक्षित । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४४ ।

\*२० चन्द्रालोक-जयदेव । पत्र सं०-११७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २१७ ।

\*२१ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र सं०-१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार आदि । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७६ ।

\*२२ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसका अपर नाम 'प्रतापरुद्रीयशोभूषण' है ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

\*२३ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र सं०-९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३३८ ।

\* २३ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र सं०-९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५० ।

\* २४ प्रतापरुद्रीय-पण्डित विद्यानाथ । पत्र सं०-१०६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११६ ।

\* २५ लोकलोचनालङ्कार-अभिनव गुप्त । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३८ ।

२६ वाग्भटालङ्कार-कवि वाग्भट । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९७ ।

२७ वाग्भटालङ्कार-कवि वाग्भट । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६०० ।

२८ वाग्भटालङ्कार-कवि वाग्भट । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८१२ ।

२९ वाग्भटालङ्कारटिप्पणी-बालचन्द्र । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०८ ।

३० शृङ्गारदीपिका-कोमटदेव भूपाल । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।



## विषय-छन्दःशास्त्र

ग्रन्थ नं० ५१४ ।

१ काव्यावलोकन-कवि नागवर्म । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४ ।

\*२ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-पण्डिताचार्य चारुकीर्तिके शिष्य बिदुरे सांतण्णके द्वारा लिखित ।

ग्रन्थ नं० १३२ ।

\*३ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें पण्डित गोविन्द भट्टके पुत्र पण्डित श्रीनाथके द्वारा रचित संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २१७ ।

\*४ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २३५ ।

\*५ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८४ ।

\*६ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५९६ ।

\*७ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३६९ ।

\*८ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६९५ ।

\*९ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कवि श्रीनाथ विरचित संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७०१ ।

\*१० वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-९४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-शालि० शक १६८० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कवि श्रीनाथ कृत संस्कृत टीका है । शालि० शक १६८० बहुधान्य संवत्सर मार्गशिर शुक्ला ५ मंगलवारके दिन लक्ष्मीसनके शिष्य पाशवं उपाध्यायने वेणुपुरस्थ त्रिभुवनतिलक चैत्यालयमें इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७२८ ।

\*११ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५९ ।

\*१२ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७६ ।

\*१३ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-शालि० शक १६९३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १६९३ खर संवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० के दिन केसरीपुर-निवासी सरसिङ्ग ने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७९५ ।

\*१४ वृत्तरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

\*१५ श्रुतबोध-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २८४ ।

\*१६ श्रुतबोध-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

\*१७ श्रुतबोध-महाकवि कालिदास । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## विषय-नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० १२८ ।

१ नीतिप्रकाशन-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । इसका प्रारम्भिक पद्य इस प्रकार है—

नत्वा जिनेश्वरं वीरं वक्ष्ये नीतिप्रकाशनम् । शिष्याचार्योक्तिसम्बन्धं प्रश्नोत्तरविधानकम् ॥

ग्रन्थ नं० ५८० ।

२ नीतिप्रकाशक-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें प्राकृत 'श्रुतभक्ति' की कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १४९ ।

३ नीतिरसायनशतक-शुभवन्द । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७७ ।

४ नीतिरसायन-..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

५ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

६ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-साधारण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४५ ।

७ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-८९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । टीकाकार मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवके शिष्य कवि नेमिनाथ हैं ।

ग्रन्थ नं० ३४५ ।

८ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-११४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९५ ।

९ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-८० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४४ ।

१० नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६७६ ।

११ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६९३ ।

१२ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-१६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६५ ।

१३ नीतिसंग्रह-..... । पत्र सं०-८४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

१४ पुराणश्लोकसंग्रह-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें महाभारत आदिके कुछ नीति श्लोक संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१५ राजनीति-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १८८ ।

\*१६ शतकद्वय-[ नीति तथा शृङ्गार ]-कवि भर्तृहरि । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

१७ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४७९ ।

१८ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६१७ ।

१६ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८७५ ।

२० सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें भजन, सरस्वती भजन आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १८२ ।

२१ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १६९ ।

२२ हरदनीति-सिहराज । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३६ ।

२३ हरदनीति-सिहराज । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४५ ।

२४ हरदनीति-सिहराज । पत्र सं०-१० $\frac{३}{४}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-प्रभव संवत्सर, भाद्रपद शुक्ला १२ के दिन बङ्गवाडिस्थ शान्तिनाथ-जिनालयमें मुनि गुणसागरने इसे लिखा है ।



## विषय-पुराण

ग्रन्थ नं० ५२८ ।

१ अजितनाथपुराण-महाकवि रत्न । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२८ ।

२ अनन्तनाथपुराण-महाकवि जन्न । पत्र सं०-११९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १४४० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसकी रचना शालि०शक ११५२ विक्रति संवत्सर चैत्र शुक्ला १०के दिन हुई है । एवं शालि०शक १४४० बहुधान्य संवत्सर श्रावण शुक्ला १० रविवारके दिन होललंकि निवासी नागेन्द्रके पुत्र पायणने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७४ ।

३ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—१९६ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११८ ।

४ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—यह ग्रन्थ शालि०शक ८६३ में रचा गया ।

ग्रन्थ नं० ४१० ।

५ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१३७ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४४६ ।

६ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—११० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५९ ।

७ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—८८ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—७३ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५९२ ।

८ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—८० । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०२ ।

९ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—१६ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें 'सञ्जनचित्तवल्लभ' तथा 'अकलङ्काष्टक' के भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६१४ ।

१० आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र—१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६९० ।

११ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—१३४ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—९० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—शालि० शक १५०० । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—शालि० शक १५०० ईश्वर संवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा १४ शुक्रवारके दिन हन्नावरनिवासी जय-कीर्तिने संगीत-पुरस्य आदिनाथ तथा चन्द्रप्रभमन्दिरके मध्यस्थित मानस्तंभके निकट इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७२० ।

१२ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—२४ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०१ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७३६ ।

१३ आदिपुराण—महाकवि पम्प । पत्र सं०—५८ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६४।

१४ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—२४७ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६१ ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २६० ।

१५ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—१२५ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७५ ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७८ ।

१६ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—२८९ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२२४ ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४४२ ।

१७ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—१७७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१६३ ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—शालि०शक १७३० फाल्गुन प्रतिपदाके दिन घर्मस्थलके स्वामी कुमारय्य हेग्डेको उनके गुरु श्री चारुकीतिने इसे दिया है ।

ग्रन्थ नं० ४४७ ।

१८ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—२३४ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१५० ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४४९ ।

१९ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—२३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२१७ ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४९६ ।

२० आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—३० । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—७० ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५०५ ।

२१ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७५ । लिपि—  
कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५०९ ।

२२ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—१५८ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५८३ ।

२३ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—११० ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५८४ ।

२४ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—१७५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९० ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६८१ ।

२५ आदिपुराण—आचार्य जिनसेन । पत्र सं०—२०४ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० ।  
लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७४७ ।

२६ आदिपुराण-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-१२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।  
विशेष-इसमें 'गोम्मटसार' 'सज्जनचित्तवस्त्र' तथा 'आचारसार' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४१५ ।

२७ आदिपुराण टिप्पणी-ललितकीर्ति । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५६१ ।

२८ आदिपुराण टिप्पणी-ललितकीर्ति । पत्र सं०-१४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६२३ ।

२९ आदिपुराण टिप्पणी-ललितकीर्ति । पत्र सं०-१६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें नं० ६६ का पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ४४० ।

३० उत्तरपुराण टिप्पणी-ललितकीर्ति । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४६० ।

३१ उत्तरपुराण टिप्पणी-ललितकीर्ति । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
१४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५३४ ।

३२ उत्तरपुराण टिप्पणी-ललितकीर्ति । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३० ।

३३ उत्तर-पुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१४० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसके कुछ पत्र खण्डित हैं ।

ग्रन्थ नं० ६५ ।

३४ उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९२ ।

३५ उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१७८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें संस्कृत टिप्पणी भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १२७ ।

३६ उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-९९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८५ ।

३७ उत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—१३१ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । शालि० शक १४७० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—शालि०शक १४७० कीलक संवत्सर श्रावण शुक्ला १३ सौम्यवार उत्तरानक्षत्र में पण्डित पद्मने इसे लिखा है । मुनि महेन्द्रकीतिके शिष्य चन्द्रकीतिके लिये कारकल-निवासी भैरव अरस की पटरानी वर्द्धमानकक ने इसे उन्हें शास्त्रदान किया है ।

ग्रन्थ नं० ३८७ ।

३८ उत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१४० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—वट्टगक पुराधीश्वरके पुत्र चिचिकंदप्परसने मुनि ज्ञानचन्द्रके लिये इसे लिखवाया है ।

ग्रन्थ नं० ४२० ।

३९ उत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—६६ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१३० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४३४ ।

४० उत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—१४३ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१५६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४३८ ।

४१ उत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—११३ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१७० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—शालि०शक ८२४ दृढाभि संवत्सर कार्तिक कृष्णा ५ बुधवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया ।

ग्रन्थ नं० ५४२ ।

४२ उत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१३० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५८५ ।

४३ उत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—४२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९२ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें 'आदिपुराण' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६६४ ।

४४ उत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—२५७ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—शालि०शक १७३४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—शालि०शक १७३४ श्रीमुख संवत्सर जेष्ठ शुक्ला ५ के दिन वेणुपुर (मूडबिंद्री) निवासी विक्रमसेट्टिके पुत्र चन्दय्योपाध्यायने स्थानीय त्रिभुवनतिलकचूडामणि (श्रीचन्द्रप्रभ) चैत्यालय में इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २५८ ।

४५ कन्नडभारत—वेदव्यास । पत्र सं०—३५० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८४ ।

४६ चन्द्रप्रभपुराण—अगलदेव । पत्र सं०—१४ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८९ ।

४७ चन्द्रप्रभपुराण—अगलदेव । पत्र सं०—९१ । पंक्ति प्रतिपत्र—१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—यह अगलदेव आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ४२८ ।

४८ चन्द्रप्रभपुराण—अगलदेव । पत्र सं०—१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१४० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

४९ चन्द्रप्रभपुराण—अगलदेव । पत्र सं०—१३ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें कन्नड 'रामायण' के भी १० पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

५० चन्द्रप्रभपुराण—अगलदेव । पत्र सं०—२६ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा—अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७६७ ।

५१ चतुर्विंशतितीर्थकरपुराण—मुनि शान्तिकीर्ति । पत्र सं०—७ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—शालि० शक १६४६ में यह ग्रन्थ रचा गया है । इसमें २४ तीर्थकरोकी भवावली तथा पंचकल्याणोंका संक्षिप्त वर्णन दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ६४२ ।

५२ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण—आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०—५९ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—६८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें 'अमरकोश' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५९९ ।

५३ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण—चामुण्डराय । पत्र सं०—५८ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७२ ।

५४ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण—चामुण्डराय । पत्र सं०—३९ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—११० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०२ ।

५५ धर्मनाथपुराण—यति बाहुवली । पत्र सं०—१९७ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—यह ग्रन्थ शालि० शक १२६४ ( चतुष्पाठद्वयैकांक ) में रचा गया है । गुम्मट उपाध्यायके पौत्र आदि उपाध्यायके पुत्र पद्मनाभने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७८७ ।

५६ धर्मनाथपुराण—यति बाहुवली । पत्र सं०—१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष-शालि०शक १२७४ नन्दन संवत्सर चैत्र शुक्ला ८ सोमवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० ५५ ।

५७ नेमिजिनेशासङ्गति ( हरिवंशपुराण )-मंगरस । पत्र सं०-२६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । विषय-पुराण । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ५०४ ।

५८ नेमिजिनेशासङ्गति-मंगरस । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७८७ ।

५९ नेमिजिनेशासङ्गति-मंगरस । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'अमरकोश' 'तीर्थकरजयमाला' ( कन्नड ) आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८२९ ।

६० नेमिजिनेशासङ्गति-मंगरस । पत्र सं०-१०६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका प्रारम्भ केरेवासे श्रीवर्धमान चैत्यालयमें अलदंगडि निवासी चुंडसेट्टिके पुत्र बिम्मयने आज्जीरस संवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा ४ को किया था ।

ग्रन्थ नं० १०३ ।

६१ नेमिनाथपुराण-कवि कर्णपार्य । पत्र सं०-१८० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । शालि०शक-१३५३ । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-यह कवि कर्णपार्य चारित्रचक्रवर्ती मुनि कल्याणकीतिके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ६०२ ।

६२ नेमिनाथपुराण-..... पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें व्याकरणसंबन्धी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ६१६ ।

६३ नेमिनाथपुराण-कर्णपार्य । पत्र सं०-१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७३५ ।

६४ नेमिनाथपुराण-कर्णपार्य । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र ८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४३५ ।

६५ पद्मपुराण-आचार्य रविषेण । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १३३१ विरोधि संवत्सर पुष्य शुक्ला प्रतिपदा । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-ब्रह्मण्यने कल्याणपुर निवासी वरधि सेट्टिकी धर्मपत्नी सुब्बाबिकाके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ८०२ ।

६६ पद्मपुराण-आचार्य रविषेण । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण तथा क्षणिक ।

ग्रन्थ नं० ७२५ ।

६७ पाण्डवपुराण—श्री वादिचन्द्र । पत्र सं०—१६० । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

६८ पार्श्वनाथपुराण—कवि पार्श्वपण्डित । पत्र सं०—८२ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६२ ।

६९ पुष्पदन्तपुराण—महाकवि गुणवर्म । पत्र सं०—१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९४ ।

७० पुष्पदन्तपुराण—महाकवि गुणवर्म । पत्र सं०—६० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१३८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६५५

७१ पुष्पदन्तपुराण—महाकवि गुणवर्म । पत्र सं०—१२९ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९५ ।

७२ वर्द्धमानपुराण—कवि वाणीवल्लभ । पत्र सं०—१९९ । पंक्ति प्रतिपत्र—४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—१३५१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—शालि०शक १३५१ कालक संवत्सर चैत्र शुक्ला ७ के दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० ५६८ ।

७३ वर्द्धमानपुराण—कवि वाणीवल्लभ । पत्र सं०—८० । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६१८ ।

७४ वर्द्धमानपुराण—कवि वाणीवल्लभ । पत्र सं०—१८५ । पंक्ति प्रतिपत्र—३ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें आदिका एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ८९२ ।

७५ वर्द्धमानपुराण—कवि वाणीवल्लभ । पत्र सं०—३२ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—४८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३९ ।

७६ शान्तीश्वरपुराण—कवि कमलभव । पत्र सं०—१३४ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६६१ ।

७७ शैवपुराण—..... । पत्र सं०—२५ । पंक्ति प्रतिपत्र—२ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें कन्नड टीका है । एवं 'द्रव्यसंग्रह' व्रतस्वरूपी, आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

७८ श्रीपुराण—आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र सं०—२१ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१४५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

अन्तिम पद्य-

श्रीपुराणसामान्यायमान्नात हस्तिमल्लिना ।  
तरण्डं सर्वशास्त्राब्धेरखण्डं धारयन्त्वमुमु ।

विशेष-इसमें २-४ पत्र खण्डित हैं ।

ग्रन्थ नं० ५३ ।

७६ श्रीपुराण-आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६५ ।

८० श्रीपुराण-आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२१ ।

८१ श्रीपुराण-आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'गोम्मटसारके' तथा 'पद्मनन्दपञ्चविंशति' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १२७ ।

८२ श्रीपुराण-आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९३ ।

८३ श्रीपुराण-आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र सं०-९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

८४ श्रीपुराण-आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६४० ।

८५ श्रीपुराण-आचार्य हस्तिमल्लि । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५९२ ।

८६ हरिवंशपुराण-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।



### विषय-चरित्र

ग्रन्थ नं० १७६ ।

१ अनन्तव्रतचरित-कवि आदियप्प । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-होगिनुठके राजा लरक्खभैरवके वास्ते विप्रकुलोत्तम आदियप्पने इसकी रचना की है ।

ग्रन्थ नं० ३०० ।

२ अहिंसाचरित-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८९ ।

३ आदीश्वरजन्माभिषेक चरित-विजयवर्णी । पत्र सं०-१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'व्रतस्वरूप' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५० ।

४ अञ्जनाचरित-..... । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७१ ।

५ कामदेषचरित-..... । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-कन्नडमें इसका नाम 'कामनतोरवि' है ।

ग्रन्थ नं० ७०४ ।

\* ६ किराताजुनचरित-..... । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-तेलुगु । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १३० ।

\* ७ कृष्णचरित-..... । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७२ ।

८ गोमटेश्वरचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२५ ।

९ चन्द्रप्रभचरित-कवि दोडुय्य । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४६७ ।

१० चन्द्रप्रभचरित-कवि ब्रह्म । पत्र सं०-१०० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके रचयिता पश्चिमबुर्गके स्वामी देवरायके पुत्र कवि ब्रह्म हैं ।

ग्रन्थ नं० २३२ ।

११ जिनचरित-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-प्रतिमें इसका नाम 'जिनान्तचरित' लिखा है । इसमें तीर्थकरोंके लाञ्छन, यक्ष-यक्षी, मुक्तिस्थान आदिका संक्षिप्त वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

१२ जिनचरित-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८५१ ।

१३ जिनदत्तचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीमाहात्म्य' है । इसमें 'तर्कसंग्रह', 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' तथा 'तत्त्वार्थसूत्र' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८५५ ।

१४ जिनदत्तचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-१११ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-रक्ताक्षि संवत्सर, आषाढ शुक्ला प्रतिपदाके दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० ८५७ ।

१५ जिनदत्तचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० ६४१ ।

१६ जीवन्धरचरित-कवि ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । ग्रन्थ नं० १७६ ।

१७ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह ग्रन्थ बसवणांके पुत्र, जिनभक्त कवि भास्करके द्वारा पेनुगोण्डेके श्री शान्तिनाथ चैत्यालयमें रचा गया । रचनाकाल शालि० शक १३४५ क्रोधि संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० रविवार है ।

ग्रन्थ नं० २५६ ।

१८ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि० शक १३८५ क्रोधि संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० शनिवारके दिन पेनुगोण्डे शान्तिनाथ चैत्यालयमें कवि भास्करने इसकी रचना की है ।

ग्रन्थ नं० ४२५ ।

१९ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-'षट्पदि' कन्नड छन्द का एक भेद है । शालि० शक १३४५ क्रोधि संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० सोमवारके दिन मेरपिनगुंडिस्य शान्तिनाथ मन्दिरमें यह ग्रन्थ रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० ६९० ।

२० जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

२१ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें 'सुकुमारचरित' तथा 'मोक्षप्राभूत'के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८३१ ।

२२ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-१५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८४ ।

२३ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शालि० शक १३४५ क्रोधि संवत्सर फाल्गुन शुक्ला १० रविवारके दिन पेनुगोण्डे पुरस्थ शान्तिनाथ चैत्यालयमें यह ग्रन्थ रचा गया है । इसमें व्याकरण तथा स्तोत्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

२४ ज्ञानभास्करचरित्र-नेमण्ण । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२० ।

२५ ज्ञानभास्करचरित्र-नेमण्ण । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७५ ।

२६ ज्ञानचन्द्रचरित-पायण्ण वर्णी । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८४३ ।

२७ ज्ञानचन्द्रचरित-पायण्ण वर्णी । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें सिर्फ ६ वां आश्राम है ।

ग्रन्थ नं० ८९२ ।

२८ ज्ञानचन्द्रचरित-पायण्ण वर्णी । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपरनाम 'ज्ञानचन्द्रचरितपुराण' है ।

ग्रन्थ नं० ४२५ ।

२९ ज्ञानचन्द्राभ्युदय-कवि कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि० शक १६६२ सिद्धार्थि संवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला ५ रविवारके दिन यह ग्रन्थ रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० १३० ।

\* ३० तुलसीचरित-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

३१ तीर्थकरचरित-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें २४ तीर्थकरोंके उत्सव, आयु एवं मुक्तिस्थान आदिका संक्षिप्त वर्णन दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३२ तीर्थकरवर्णन-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें २४ तीर्थकरोंके उत्सव, आयु आदिका वर्णन दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० १६१ ।

३३ त्रिपुरदहनचरित-कवि शिशुमायण । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । शालि०शक १४५० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह ग्रन्थ शालि० शक १४५० नल संवत्सर श्रावण कृष्णा चन्द्रवारके दिन लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

३४ त्रिपुरदहनचरित-कवि शिशुमायण । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८४३ ।

\*३५ त्रिपुरदहनचरित-कावि शिशुमायण । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१२ ।

३६ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

३७ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
प्रारम्भिक पद्य-श्रीनेमिजिनमानम्य सर्वसत्त्वहितप्रदम् । वक्ष्ये नागकुमारस्य चरितं दुरितापहम् ।। १ ॥

ग्रन्थ नं० ४८२ ।

३८ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४८४ ।

३९ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५०८ ।

४० नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५२१ ।

४१ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

४२ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५९५ ।

४३ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६२० ।

४४ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें वादीभसिंहसूरि कृत 'क्षत्रचूडामणि' के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३२ ।

४५ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७३८ ।

४६ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२२ ।

४७ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८५९ ।

४८ नागकुमारचरित-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार'के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४३० ।

४९ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७३१ ।

५० नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-शीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

५१ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें चन्द्रनाथाष्टक, अनन्तनाथाष्टक तथा पार्व्वनाथाष्टक भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ८६१ ।

५२ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८९ ।

५३ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २३८ ।

५४ पद्मावतीचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७२ ।

५५ पद्मावतीचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७२ ।

५६ पार्श्वनाथचरित-कवि पार्श्वपण्डित । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह ग्रन्थ लोकण नायक और कामियक्कके पुत्र, नागण्णके लघु भ्राता तथा आचार्य वामुपुज्य-के शिष्य पार्श्वपण्डितके द्वारा रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० ७६८ ।

५७ पार्श्वनाथचरित-मुनि शान्तिकीर्ति । पत्र सं०-१० । पंक्ति-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह ग्रन्थ शालि०शक १६५५ प्रमादीच संवत्सर, मार्गशिर शुक्ला ५ गुरुवारके दिन तीलबदेशीय वेणुपुर-( मूडबिंदी ) स्थ विक्रमसेट्टिबसदि [ आदिनाथ-मन्दिर ] में रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० ३६८ ।

५८ पुरुषेवचरित-मुनि शान्ति । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति- ६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३३३ ।

५९ प्रभञ्जनचरित-कवि मंगरस । पत्र सं०-७८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

६० प्रभञ्जनचरित..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५२३ ।

६१ प्रभञ्जनचरित-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३५ ।

६२ प्रभञ्जनचरित-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

६३ प्रद्युम्नचरित-पण्डित महासेन । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । विषय-चरित्र । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५०९ ।

६४ प्रद्युम्नचरित-पण्डित महासेन । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसके रचयिता फप्पट गुरुके शिष्य आचार्य महासेन है ।

ग्रन्थ नं० ६५६ ।

६५ प्रद्युम्नचरित-पण्डित महासेन । पत्र सं०-९४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

अन्तिम भाग:-“इति श्रीसिन्धुराजसक्तमहामहत्तमश्रीपप्पटगुरोः पण्डितमहासेनाचार्यकृते प्रद्युम्नचरिते त्रयोदशमः सर्गः ।”

ग्रन्थ नं० ७९५ ।

६६ बाहुबलिचरित-कवि चिक्कण । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० २३४ ।

६७ भरतेशवैभव-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

६८ भरतेशवैभव-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७२ ।

६६ भरतेशवैभव-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-१३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि शक० १५९८ तल संबत्सर पुष्य कृष्णा ५ बृहस्पतिवार । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

७० भरतेशवैभव-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९९ ।

७१ भरतेशवैभव-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१७ ।

७२ भरतेशवैभव-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें जिनचतुविंशतिका तथा दृष्टाष्टक भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ८६० ।

७३ भरतेशवैभव-कवि रत्नाकर । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५४ ।

७४ मण्डूकदेवचरित-कवि रायण । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें समवसरण जाते हुए महाराज श्रेणिकके हाथी के पादाघातसे मरकर तत्क्षण ही स्वर्गमें देव-पर्यायको प्राप्त करनेवाले मण्डूकका चरित्र वर्णित है । इसमें महाकवि धनञ्जय कृत 'द्विसंधान' काव्यके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १८६ ।

७५ यशोधरचरित-चन्दन वर्णी । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह श्रुतमुनिके पीत्र-प्रशिष्य शुभचन्द्र मुनिके पुत्र शिष्य चन्दन वर्णीकी रचना है ।

ग्रन्थ नं० ५१२ ।

७६ यशोधरचरित-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शुक्ल संबत्सर मार्गशिर कृष्ण १ के दिन बंगवाडीस्थ शान्तिनाथचैत्यालय में ब्र० गुणसागरने इसे लिखा है । इसमें कन्नड 'चतुराम्य निघण्टु'के भी तीन पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५९८ ।

७७ यशोधरचरित-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७९५ ।

७८ यशोधरचरित-..... । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५०० ।

७६ यशोधरचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके रचयिता पद्मनाभ श्रुतकीतिके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३२ ।

८० यशोधरचरित-वादिराज । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि० शक १५१३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३०१ ।

\*८१ रामायण-..... । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५५७ ।

\*८२ रामायण-..... । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'प्रतापस्त्रीय' के भी कुछ श्लोक हैं ।

ग्रन्थ नं० ८४३ ।

८३ रोहिणोचरित-जिनचन्द्र । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके लेखक बिर्मण हैं ।

ग्रन्थ नं० ३११ ।

८४ विजयम्बिचरित-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसका अपर नाम 'विजयकुमारीचरित' है । इसमें विजयण्णाय कृत 'चन्दनाचरित' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४३ ।

८५ श्रीपालचरित्र-भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । विषय-चरित्र । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें बीचके तीन पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ४३३ ।

८६ श्रुतकीर्तिमुनिचरित-कवि रायण्ण । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि० शक १५८१ बहुधान्य संवत्सरमें यह ग्रन्थ रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० ७२३ ।

८७ श्रुतकीर्तिमुनिचरित-कवि रायण्ण । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०९ ।

८८ श्रेणिकचरित..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड 'सीताचरित' भी सम्मिलित है ।

ग्रन्थ नं० ७०८ ।

८६ श्रेयारोहणसंधि—कवि रत्नाकर । पत्र सं०—१० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२७ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—यह भरतेशवैभव का एक भाग है ।

ग्रन्थ नं० ६४१ ।

९० षोडशस्वप्रसन्धि—कवि रत्नाकर । पत्र सं०—५१ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—यह भरतेशवैभव का एक प्रकरण है ।

ग्रन्थ नं० ७०८ ।

९१ सीताचरित—..... । पत्र सं०—११ । पंक्ति प्रतिपत्र—१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४०३ ।

९२ सुकुमारचरित—..... । पत्र सं०—३१ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५६२ ।

९३ सुकुमारचरित—..... । पत्र सं०—५० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५९ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७२९ ।

९४ सुकुमारचरित—..... । पत्र सं०—२० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६३ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें 'लब्धिसार' को कन्नड टीकाके भी ४ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

९५ सुकुमारचरित—..... । पत्र सं०—३५ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण तथा क्षण्डित ।

विशेष—इसमें 'भरतेश्वरप्रशस्ति' (कन्नड) भी है ।

ग्रन्थ नं० ५९८ ।

९६ सुवर्णभद्रचरित—कवि पदुमण्ण । पत्र सं०—१३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें आदि और अन्तके पत्र नहीं हैं । इसका सुवर्णभद्रचरित यह नाम अनुमानपरक है ।

ग्रन्थ नं० ५०० ।

९७ सुवर्णभद्रचरित—कवि पदुमण्ण । पत्र सं०—८ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१४० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।



## विषय-कथा

ग्रन्थ नं० २२३ ।

१ अनन्तव्रतकथा-..... । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ७५१ ।

२ अनन्तव्रतकथा-..... । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ७८० ।

३ अनन्तव्रतकथा-..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ४०० ।

४ अरिस्त्रयभट्टारककथा-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ९९ ।

५ अष्टाङ्गपञ्चाणुव्रतकथा-..... । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ३१८ ।

६ आणतिव्रतकथा-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० २०३ ।

७ कौतुककलिकाकथा-..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

अन्तिम पद्य-देशीगणतिलकश्रीनेमिन्दुमुनेरनुज्ञया विवृतम् ।

कौतुककलिकाकथनं शुभेन्दुशिष्येण विधिनेदम् ॥

ग्रन्थ नं० २९२ ।

८ गुणरत्नमाला-कवि बोम्मरस । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० २१० ।

९ गौरीव्रतकथा-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
ग्रन्थ नं० ३२९ ।

१० जिनगुणसम्पत्तिव्रतकथा-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
ग्रन्थ नं० ९०२ ।

११ जैनकथासंग्रह-..... । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें अष्टांग पंचाणुव्रत आदि की २३ कथाएं संगृहीत हैं ।  
ग्रन्थ नं० २४८ ।

१२ धर्मकथासंग्रह-..... । पत्र सं०-७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें 'पंचाणुव्रत' 'अष्टांग' आदि की कथाएँ हैं। अन्त में 'गणधरवलय-पूजा' के कुछ पत्र भी हैं।

ग्रन्थ नं० १७।

१३ धर्माश्रित-नयसेन। पत्र सं०-४३। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-८४। विषय-कथा। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० १८०।

१४ धर्माश्रित-नयसेन। पत्र सं०-१२९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३०९।

१५ धर्माश्रित-नयसेन। पत्र सं०-३८। पंक्ति प्रतिपत्र-१७। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३१५।

१६ नवनिधिभागहार तथा कल्पकुञ्ज-व्रतकथा-.....। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ३९८।

१७ नागकुमारपञ्चमीकथा-आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५२३।

१८ नागकुमारपञ्चमीकथा-आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६०९।

१९ नागकुमारकथा-.....। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २६७।

२० नन्दीश्वरव्रतकथा-चन्दय उपाध्याय। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३०९।

२१ नन्दीश्वरव्रतकथा-चन्दनवर्णा। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-१५। अक्षर प्रतिपंक्ति-२५०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४७८।

२२ नन्दीश्वरव्रतकथा-.....। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ८७८।

२३ नन्दीश्वरव्रतकथा-.....। पत्र सं०-७ $\frac{१}{२}$ । पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६८। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष—इसमें गीतवीतराग के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ७०८।

२४ पत्यविधानव्रतकथा-.....। पत्र सं०-१२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—इसमें उक्त व्रतका फल भी दिया गया है।

ग्रन्थ नं० २०२ ।

२५ पार्श्वनाथव्रतकथा-..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'शान्त्यष्टक' 'सिद्धचक्रजयमाला' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २४९ ।

२६ पुण्यास्रवकथा-कवि नागराज । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७१२ ।

२७ पुण्यास्रवकथा-मुनि रामचन्द्र । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८९ ।

२८ पुरुदेवकथा-..... । पत्र सं०-१८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

२९ फलमङ्गलवारव्रतकथा-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

३० मुक्तावलीव्रतकथा-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

३१ रत्नत्रयव्रतकथा-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

३२ रोहिणीव्रतकथा-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १९९ ।

३३ लब्धिविधानव्रतकथा-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८७८ ।

३४ लब्धिविधानव्रतकथा-..... । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९५ ।

३५ ललिताङ्गदेवकथा-नयसेन । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-यह नयसेनकृत धर्माभूतान्तर्गत एक कथा है ।

ग्रन्थ नं० ३०९ ।

३६ बङ्गाराधना-आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३०९ ।

३७ **बङ्गाराधना**-आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-शालि०श० १३२५ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-शालि०शक १३२५ सुभानु संवत्सर कार्तिक कृष्ण अमावास्या बुधवारके दिन कल्लप्प सेट्टिने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १५९ ।

३८ **वस्तुकल्याणव्रतकथा**-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५९ ।

३९ **व्रतकथासंग्रह**-..... । पत्र सं०-१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-श्रवण-बेलगोलके भट्टारक चारुकीर्तिके प्रशिष्य, अन्नतकीर्तिके शिष्य, पायण्णके द्वारा लिखित ।

ग्रन्थ नं० ६२ ।

४० **व्रतकथासंग्रह**-..... । पत्र सं०-१६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६५८ ।

४१ **व्रतकथासंग्रह**-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'भक्तामर' आदि स्तोत्रोंके कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३४ ।

४२ **व्रतकथासंग्रह**-..... । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८३७ ।

४३ **व्रतकथासंग्रह**-..... । पत्र सं०-९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें १० व्रतोंकी कथाएं संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ८६५ ।

४४ **व्रतकथासंग्रह**-..... । पत्र सं०-१५० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें ३१ व्रतोंकी कथाएं हैं ।

ग्रन्थ नं० ८६९ ।

४५ **व्रतकथासंग्रह**-..... । पत्र सं०-११५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें २२ व्रतकथाएं हैं ।

ग्रन्थ नं० ९८ ।

४६ **सम्यक्तत्वकौमुदी**-मुनि धर्मकीर्ति । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६५४ ।

४७ **सम्यक्तत्वकौमुदी**-मुनि धर्मकीर्ति । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें पद्यभाग मात्र है ।

ग्रन्थ नं० ६९७ ।

४८ सम्यक्त्वकौमुदी—मुनि धर्मकोर्ति । पत्र सं०—५१ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें 'क्षत्रचूडामणि' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

४९ सम्यक्त्वकौमुदी—कवि नीलकण्ठ । पत्र सं०—१८ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—८४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसके रचयिता तिलिवल्लिपुरस्थ श्रीशान्ति तीर्थंकरके भक्त कवि नीलकण्ठ हैं । श्रवणबेलगोलस्थ भट्टारक चारुकीर्तिके शिष्य कुंबुलेनिवासी प्रभाचन्द्रदेवने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १४८ ।

५० सम्यक्त्वकौमुदी—कवि मंगरस । पत्र सं०—८७ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—यह ग्रन्थ यदुवंशभूवरसविद्वान्वर्यी कवि मंगरसके द्वारा शालि०शक १३३१ आश्वयुज शुक्ला प्रतिपदाके दिन रचा गया है । इसमें 'रामचारत,' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २२८ ।

५१ सम्यक्त्वकौमुदी—कवि मंगरस । पत्र सं०—९८ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४१ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—शालि०शक १४३१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—शालिवाहन शक १४३१ आश्वयुज शु० १ शनिवारके दिन यह ग्रन्थ लिखा गया ।

ग्रन्थ नं० ३६९ ।

५२ सम्यक्त्वकौमुदी—कवि मंगरस । पत्र सं०—१२५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—शा० शक १५१६ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—शालि०शक १५१६ मन्मथ संवत्सर आषाढ.....में रामचन्द्र के पुत्र चन्द्रप्रभने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ४५२ ।

५३ सम्यक्त्वकौमुदी—कवि मंगरस । पत्र सं०—६५ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—शालि०शक १७.....कीलक संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ३ गुरुवार । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—कनकपुरस्थ आदिनाथ मन्दिरके अर्चक कोटप्प इन्द्रके पुत्र भास्करने ह्यारग्रामके देवालयमें इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० ८०५ ।

५४ सम्यक्त्वकौमुदी—कवि मंगरस । पत्र सं०—९० । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष—शालि०शक १४३१ आश्वयुज शुक्ला १ शनिवारके दिन कवि मंगरसने इसकी रचना की है । सौम्य संवत्सर भाद्रपद शुक्ला १४ रविवारके दिन पण्डित देवप सेट्टिके पुत्र भद्रयने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १५९ ।

५५ सिद्धचक्रव्रतकथा—..... । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें और भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।



## विषय-इतिहास

ग्रन्थ नं० ८०० ।

१ **आयव्यविवरण**-..... । पत्र सं०-११० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मूडविद्री जैन मठके पुराने आयव्ययका विवरण दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ८१४ ।

२ **आयव्ययविवरण**-..... । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मूडविद्री जैन मठके पुराने आयव्ययका विवरण अङ्कित है । यह ग्रंथ नं० ८०० से भिन्न है ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३ **गुणभद्रप्रशस्ति**-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रशस्ति । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह भट्टारक गुणभद्रकी गद्यमय प्रशस्ति है ।

ग्रन्थ नं० ३२९ ।

४ **गोमटेश्वरचरित**-कदि चन्द्रप । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कार्कलस्थ बाहुवली मूर्तिका परिचय अङ्कित है ।

ग्रन्थ नं० ७३७ ।

५ **मूडविद्रीके जैन मन्दिर**-..... । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-शा० शक १७५३ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मूडविद्रीके प्रत्येक मन्दिरमें वर्तमान मूर्तियों एवं बर्तनोंकी सविवरण सूची दी गई है । यह सूची शालि० शक १७५३ खर संवत्सर आश्वयुज मासमें लिखी गई है ।

ग्रन्थ नं० ८४१ ।

६ **विज्ञप्तिपत्र**-..... । पत्र सं० ११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें श्रवणबेलगोल मठके भट्टारकजीकी अर्चक तथा श्रावकोंके द्वारा भिन्न-भिन्न समयमें लिखे गये विज्ञप्तिपत्र संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ६८५ ।

७ **शासनादिसंग्रह**-..... । पत्र सं०-१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें बारकूर तथा बटकलसे सम्बन्ध रखनेवाले कुछ शासन तथा भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंके द्वारा भिन्न-भिन्न समयमें स्थानीय देवालयोंकी संपत्तिकी रक्षाके लिये लिखे गये राजकीय पत्र एवं श्रवणबेलगोलके भट्टारकजीके पास लिखे गये कतिपय प्रार्थनापत्र भी संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

८ **सङ्घोत्पत्ति**-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें देव, सेन आदि संधोंकी उत्पत्तिका वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

९ **श्रुतावतार**-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## विषय-आयुर्वेद

ग्रन्थ नं० ३४४ ।

\*१ **अष्टांगहृदयदीपिका**-उदयादित्य भट्ट । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह वाग्भट कृत 'अष्टाङ्गहृदय' की टीका है । इसमें सिर्फ शरीरस्थान है ।  
ग्रन्थ नं० ९६ ।

\*२ **आरोग्यचिन्तामणि**-पण्डित दामोदर भट्ट । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-तारण संवत्सर मार्गशिर शुक्ला ५ । सौम्यवार । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-मुलवागिलनिवासी धनञ्जयदेवके पुत्र ब्रह्मदेवने विजयनगरस्थ चिवकोडेयरङ्गडि चैत्यालयके मुद्दुमाणिक्य तीर्थेशके निकट आरगके आदिपण्डितके वास्ते इसे लिखा है ।  
ग्रन्थ नं० ८४६ ।

\*३ **आरोग्यचिन्तामणि**-पण्डित दामोदर भट्ट । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ३४४ ।

४ **इन्दुदीपिका**-सुन्दर । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें सिर्फ 'सूत्रस्थान' की टीका है । पर मालूम नहीं हो सका कि यह किस ग्रन्थका प्रकरण है ।  
ग्रन्थ नं० २०० ।

५ **कल्याणकारक**-सोमनाथ । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें वैद्यकविषयक और भी कुछ खण्डित पत्र हैं । यह 'कल्याणकारक' आचार्य पूज्यपादके संस्कृत 'कल्याणकारक' का कन्नड अनुवाद कहा जाता है ।  
ग्रन्थ नं० ६७३ ।

६ **कृत्रिमविषकित्सा**-..... । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ५९२ ।

\*७ **धन्वन्तरिनिघण्टु**-धन्वन्तरि । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यककोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० २९९ ।

\*८ **योगरत्नाकर**-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० ८५२ ।

९ **योगरत्नावली**-कवि पार्ष्व । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ८११ ।

१० **योगशास्त्र**-..... । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-शालि० शक १३११ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-शालि० शक १३११ शुक्ल संवत्सरके वैशाख मासमें नागराजने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १९३ ।

११ रसरत्नाकर-नित्यनाथ सिद्ध । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-शालि० शक १४१३ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शालिवाहन शक १४१३ विरोधिकृत् संवत्सर कार्तिक शुक्ला ५ के दिन कुदिहिरनिवामी चन्दप्प गोडके पुत्र ? चन्दप्प गोड के वास्ते स्थानीय आदप्प उपाध्यायके पुत्र बोम्मरसके द्वारा यह ग्रन्थ लिखा गया ।

ग्रन्थ नं० ३३७ ।

१२ रसवैद्यसार-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८११ ।

१३ रसेन्द्रोदय-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४० । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अतिजीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-यह एक संग्रह ग्रन्थ है । इसमें 'सकल' 'सारसमुच्चय' 'रहस्यसंहिता' आदि ग्रन्थोंके रसप्रकरण का संग्रह है । तथा इसमें वैद्यक सम्बन्धी और भी कुछ खण्डित पत्र सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

१४ विषचिकित्सा-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपत्र-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०४ ।

१५ वैद्यसार-..... । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८५२ ।

१६ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## विषय-ज्योतिष

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

\*१ अक्षरकेलिप्रभ-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

२ कालज्ञान-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

३ केवलज्ञानहोराशास्त्र-मुनिचन्द्रसेन । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र ११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४८३ ।

४ केषलिप्रश्न-..... । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८३ ।

५ चिंतामणिप्रश्न-..... । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८९८ ।

६ ज्योतिष-..... । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७४९ ।

७ ज्योतिष-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'अनन्तनाथपूजा' तथा जयमाला (कन्नड) भी है ।

ग्रन्थ नं० १६९ ।

८ ज्योतिष-..... । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-एक संग्रह ग्रन्थ इसमें ज्योतिष की कुछ बातें बतलाई गई हैं ।

ग्रन्थ नं० २१५ ।

९ ज्योतिषसंग्रह-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८७० ।

१० ज्योतिषसंग्रह-..... । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'दूतलक्षण' 'चद्रगति' आदि ज्योतिषके कतिपय विषय संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ८९६ ।

११ पञ्चाङ्गगणित-..... । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९०१ ।

१२ पंचांगफल-..... । पत्र सं०-३०<sup>१</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८९९ ।

१३ पंचांगसंग्रह-..... । पत्र सं०-२२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-शालि० शक० १७९२ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८९७ ।

१४ पंचांग तथा जातकसंग्रह-..... । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-शालि० शक० १७८५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह पंचांग तथा जन्मपत्रोंका संग्रह है ।

ग्रन्थ नं० ३३९ ।

१५ प्रश्नचिन्तामणि-..... । पत्र सं०-७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३३९ ।

१६ प्रश्नचिन्तामणि-..... । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८५३ ।

१७ मुहूर्तदर्पण-..... । पत्र सं०-११३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१८ वायसशकुन-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१९ वास्तुनिर्माणमुहूर्त-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४६१ ।

२० शकुनशास्त्र-..... । पत्र सं -३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३९ ।

२१ सुग्रीवप्रश्न-सुग्रीव । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा संस्कृत तथा कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।



## विषय-गणित

ग्रन्थ नं० १६९ ।

१ गणितत्रिलास-चन्द्रम । पत्र सं० २९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२७ ।

२ गणितसार-आचार्य महावीर । पत्र सं० १३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल-शालि०शक १४४९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६१३ ।

३ गणितसार-आचार्य महावीर । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६३८ ।

४ गणितसार-आचार्य महावीर । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-गणित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६७७ ।

५ गणितसार—आचार्य महावीर । पत्र सं०—१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र—५ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—गणित । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८७३ ।

६ गणितसार—आचार्य महावीर । पत्र सं०—६४ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—गणित । लेखनकाल—शालि०शक १५९६ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—शालि०शक १५९६ आनन्द संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ७ गुरुवारके दिन मृनिभद्रदेवके शिष्यने वेणुपुरस्थ त्रिभुवनतिलक चैत्यालयमें इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७८१ ।

७ गणितसार—श्रीधराचार्य । पत्र सं०—४५ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—गणित । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें गणितज्ञ वल्लभ कृत आंध्र (तेलुगु)—भाषीय टीका भी है । ग्रन्थ प्रकाशनार्थ है ।

ग्रन्थ नं० ५९० ।

८ गणितसंग्रह—राजादित्य । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत तथा कन्नड । विषय—गणित । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें 'गोम्मटाष्टक', 'अकलंकाष्टक' तथा 'देवराजवल्लभाष्टक' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २८२ ।

९ चतुरंगलेखन तथा तण्डुलस्थापनक्रम—..... । पत्र सं०—२ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—गणित । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

## विषय-मन्त्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० ४५९ ।

१ गणधरकल्प—..... । पत्र सं०—८ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

२ गणधरबलय-मन्त्र—..... । पत्र सं०—२ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४३३ ।

३ गणधरबलयमन्त्र—..... । पत्र सं०—६ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसमें 'समवसरणाष्टक' 'पद्मावतीचरित्र' आदिके भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

४ गणधरबलयमन्त्र जपविधि—..... । पत्र सं०—१३ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८२ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

५ णामोकारमन्त्रकी अक्षरसंख्या-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२१ ।

६ पार्श्वनाथमन्त्राष्टक-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसका अपर नाम 'मालामन्त्र' है । इसमें विद्वेषण, उच्चाटन आदि कर्मोंके मन्त्र दिये गये हैं । यह 'कलिकुण्डयन्त्राराधना' में भी पाये जाते हैं ।

ग्रन्थ नं० २०१ ।

७ पञ्चनमस्कारचक्र-..... । पत्र सं०-२८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ ।  
लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-शालि० शक १२१४ मार्गशिर कृष्णा १३ बुध-  
वार । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें बीचका एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ८४९ ।

८ बृहच्छान्तिविधान-..... । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नवदेवतापूजा' 'अनन्तव्रतविधान' तथा शकुन सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७४८ ।

९ मन्त्रशास्त्र-..... । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कल्याणकीतिकृत कन्नड 'द्वादशानुप्रेशा' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४७० ।

१० यन्त्रमन्त्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८४२ ।

११ लघुशान्तिविधान-..... । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'अभिषेकपाठ' 'पञ्चपरमेष्ठी' तथा 'नवदेवता पूजा' एवं 'जयमाला'के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ८५० ।

१२ लघुशान्तिविधान-..... । पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'बास्तुपूजा' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८९३ ।

१३ लघुशान्तिविधि-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

१४ सकलीकरण-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।



## विषय-लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० ४९८ ।

\* १ तिलोयपणत्ति [ त्रिलोकप्रज्ञप्ति ]-आचार्य यतिवृषभ । पत्र सं०-१५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

विशेष-इसमें 'गोम्मटसार ( जीवकाण्ड )' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६४३ ।

२ तिलोयपणत्ति [ त्रिलोकविज्ञप्ति ]-आचार्य यतिवृषभ । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १० ।

३ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१४० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें आचार्य माधवचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

४ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२४ ।

५ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १३५ ।

६ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-८० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें बहुतसे पत्र गायब हैं ।

ग्रन्थ नं० १९२ ।

७ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २२९ ।

८ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०६ ।

९ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें आचार्य माधवचन्द्रकी संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३५१ ।

१० तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४२२ ।

११ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५८२ ।

१२ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें माधवचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६२१ ।

१३ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें माधवचन्द्र कृत संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६२४ ।

१४ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४४ ।

१५ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-शालि० शक १४५९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १४५९ मन्मथ संवत्सर आषाढ शुक्ला २ बृहस्पतिवारके दिन मरदालनिवासी चन्द्ररसके पुत्र देवरसने चन्द्रणके लिये इसे लिखा है । इसमें माधवचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७४१ ।

१६ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १०४ ।

१७ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें सन्दृष्टियां भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १६० ।

१८ त्रिलोकशतक-रत्नाकर वर्णी । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५३७ ।

१९ त्रिलोकशतक-रत्नाकर वर्णी । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १०९ ।

२० लोकतत्त्व-आचार्य सिंहसूरि । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध दशा-सामान्य ।

अन्तिम भाग—युक्तः प्राणिदयागुणेन विमलेस्तत्यादिभिश्च व्रतैर्मिथ्यादृष्टिकषायनिर्जयरुचिजिस्वेन्द्रियाणां वशम् ॥ ब्रह्मवा दीप्ततपोऽग्निना विरचितं कर्मापि सर्वं मनःसिद्धिं याति विहाय जन्मगहनं शार्दूल ( विक्रीडितम्) ॥  
... वर्द्धमानाहंता यत्प्रोक्तं जगतो विधानमखिलं ज्ञातं सुधर्मादिभिः ॥ आचार्यावलिकागतं विरचितं तत्सिंहसूरिषिणा भाषायाः परिवर्तनेन निपुणैस्सम्मान्यतां साधुभिः ॥ वैश्वे स्थिते रविमुते वृषभे च जीवे राज... लिकनामनि पाणराष्ट्रं<sup>१</sup> शास्त्रं पुरा लिखितवान्मुनि सर्वनन्दि (दी) ॥ संवत्सरे तु द्वाविंशे<sup>२</sup> कांचीशः सिंहवर्मणः अशीत्यब्दे शकाब्दानां सिद्धमेतच्छतत्रये ॥ पञ्चादशशतान्याहुः षट्त्रिंशदधिकानि वै ।

ग्रन्थ नं० १४८ ।

२१ लोकस्वरूप-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

२२ लोकस्वरूप-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

२३ लोकस्वरूप-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७७ ।

२४ लोकस्वरूप-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

२५ लोकस्वरूप-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड भावार्थ भी हैं ।



## विषय-शिल्पशास्त्र.

ग्रन्थ नं० २२ ।

१ वास्तुशास्त्र-सनत्कुमार । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल- X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ५२४ ।

२ वास्तुशास्त्र-सनत्कुमार । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल- X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६७ ।

३ वास्तुशास्त्र-सनत्कुमार । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल- X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।  
विशेष-इसमें 'प्रमाणनिर्णय' 'नाममाला' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

४ शिल्पशास्त्र-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल- X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।



## विषय-लक्षण तथा समीक्षा

ग्रन्थ नं० १४५ ।

१ नवरत्नपरीक्षा-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७६ ।

२ धर्मपरीक्षा-वृत्तविलास । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१० ।

३ धर्मपरीक्षा-वृत्तविलास । पत्र सं०-१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-शालि० शक १४३० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-शालि० शक १४३० शुक्ल संवत्सर चैत्र शुक्ला ५ भानुवारके दिन यह ग्रन्थ लिखकर समाप्त हुआ था ।

ग्रन्थ नं० २७१ ।

४ धर्मपरीक्षा-वृत्तविलास । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३०९ ।

५ धर्मपरीक्षा-वृत्तविलास । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८५ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसके लिपिकार वेलतंगडि-निवासी पायण्ण हैं ।

ग्रन्थ नं० १९२ ।

६ धर्मपरीक्षा-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

रचनाकालसम्बंधी पद्य-

संवत्सराणां विगते सहस्रे सप्ततौ विक्रमपाथिवस्य ।

इदं निषिद्धान्यमतं समाप्तं जिनेन्द्रधर्मप्रतिपादि शास्त्रम् ॥

ग्रन्थ नं० ७९० ।

७ धर्मपरीक्षा-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें 'सम्यक्त्वकौमुदी' के भी ३ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६२६ ।

८ समयपरीक्षा-कवि ब्रह्मदेव (ब्रह्मशिव) । पत्र सं०-१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।



## विषय-क्रियाकाण्ड

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

१ आलोचना-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

२ आलोचना-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

३ आलोचना-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'क्रियाकाण्डचूलिका' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३८ ।

४ आलोचनाक्रिया-..... । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । विशेष-इसमें 'संगीतसमयसार' और 'नीतिसार' के भी कुछ श्लोक हैं ।

ग्रन्थ नं० १६७ ।

५ आलोचनापाठ-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७८ ।

६ आलोचनापाठ-..... । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड । टीका है, तथा 'कालज्ञानवासुपूज्ययंत्र' का एक पत्र भी ।

ग्रन्थ नं० ३४६ ।

७ आलोचनाप्रतिक्रमण . . . . . । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'त्रिलोकसार' एवं 'गोम्मटसार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

८ ईर्यापथशुद्धि . . . . . । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

९ क्रियाचूलिका . . . . . । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह पद्यनन्दिकृत से भिन्न है ।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

१० क्रियाकलाप-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नडवृत्ति है । वृत्तिकार माघनन्दी हैं, जिनका काल शालि० शक १५१० है ।

ग्रन्थ नं० १४७ ।

११ क्रियाकलाप-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १२२ ।

१२ क्रियाकलापटीका . . . . . । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-यह 'क्रियाकलाप' की विस्तृत सुन्दर संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

१३ क्रियाकाण्डचूलिका-आचार्य पद्यनन्दी । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३४ ।

१४ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५२ ।

१५ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २२९ ।

१६ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द पूज्यपाद आदि । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।



लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६०६ ।

२८ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६०८ ।

२९ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१३० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

३० क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६८८ ।

३१ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

३२ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड श्रीपालचरित शान्तिनाथाष्टक आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७५३ ।

३३ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें प्रभाचन्द्रकृत संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८२० ।

३४ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

\* ३५ गायत्रीव्याख्यान-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-अक्षय संवत्सर, निज ज्येष्ठ शुक्ला ५ के दिन रामराज ने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ४७१ ।

३६ चत्वारिदशक तथा थोस्सामिदण्डक-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर

प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

३७ चैत्यभक्ति-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

३८ दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अशुद्ध तथा अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष:-इसमें 'रत्नकरण्ड-श्रावकाचार,' 'नक्षत्रमाला,' 'जिनमुनितनय' आदि अनेक ग्रन्थों के शिथिल पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

३९ दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०७ ।

४० दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७५४ ।

४१ दशभक्त्यादिसंग्रह-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-११२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३४६ ।

४२ दैनिकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति ४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५१ ।

४३ दैवसिकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४०१ ।

४४ दैवसिकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४१७ ।

४५ दैवसिकप्रतिक्रमण-..... । पत्रसं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २०९ ।

४६ नन्दीश्वरभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५० ।

४७ नन्दीश्वरभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें ज्योतिष तथा पूजा संबंधी भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६३७ ।

४८ नन्दीश्वरभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

४९ निर्वाणभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें आचार्य-भक्ति तथा योगभक्ति भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १६७ ।

५० पाक्षिकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४६ ।

५१ पाक्षिकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय- क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५१ ।

५२ पाक्षिकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १८५ ।

५३ प्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

५४ प्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७०१ ।

५५ प्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-७८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७४५ ।

५६ प्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'प्रायश्चित्त' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

५७ प्रतिक्रमणत्रय की टीका-पण्डित प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-८४ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके मूल-रचयिता गीतम स्वामी हैं ।

यन्मोक्षोश्चिदपि (?) प्रसन्नवचनैः निःशेषशुद्धिप्रदं, व्याख्यातं प्रवरं प्रतिक्रमणसद्ग्रन्थत्रयं धीमता ।

तद्येन प्रकटीकृतं भवहरं शब्दार्थतो निर्मलं सः श्रीमान्निखिलोपकारनिरतो जीयात्प्रभेन्दुर्बुधः ॥

पट्टेलापद्रके श्रीचन्द्रप्रभदेवपादानामग्रे श्रीगीतमस्वामिकृतप्रतिक्रमणत्रयस्य टीकात्रयं श्रीप्रभाचन्द्रपण्डितेन कृतमिति मङ्गलम् ।

ग्रन्थ नं० १६७ ।

५८ बृहत्पाक्षिकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०१ ।

५९ बृहत्पाक्षिकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७८ ।

६० महाव्रतप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें गणितसंबन्धी ५ पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १६७ ।

६१ श्रावकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

६२ श्रावकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८५१ ।

६३ श्रावकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'क्रियाकाण्ड' 'रयणसार' आदि के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८० ।

६४ श्रुतभक्ति तथा चारित्रभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है तथा 'त्रिलोकसार' के ११ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २०५ ।

६५ सामायिकपाठ-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

६६ सामायिकस्तव-..... । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'चत्वारिदण्डक' एवं 'धोस्सामिदण्डक' भी है ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

६७ संध्यावन्दना-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८७९ ।

६८ संध्यावन्दना-..... । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'लोकस्वरूप' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८८९ ।

६९ संध्यावन्दना-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।



## विषय-स्तोत्र

ग्रन्थ नं० १८२ ।

१ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १८५ ।

२ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० २७२ ।

३ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८४ ।

४ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१८ ।

५ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३३५ ।

६ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४१ ।

७ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३८० ।

८ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५१७ ।

९ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६२८ ।

१० अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८६७ ।

११ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'अहंस्तोत्र' तथा 'प्रश्नोत्तररत्नमाला' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६७५ ।

१२ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है तथा ग्राम्यगीत के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

१३ अकृत्रिमचैत्यालयनन्दनाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

१४ अक्षरमालिकास्तोत्र-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

१५ अद्याष्टक-..... । पत्र सं० २ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'समवसरणाष्टक' भी है ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

१६ अनन्तनाथाष्टक-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१७ अनन्तनाथाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

१८ अहंत्सिद्धस्तोत्र-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४६ ।

१९ अहंत्सस्तोत्र-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड 'गोमटेश्वराष्टक' भी सम्मिलित है।

ग्रन्थ नं० ६६२।

२० अर्हस्तोत्र-पण्डित आशाधर। पत्र सं०-२३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३७।

२१ अर्हदष्टक-.....। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० २५९।

२२ अर्हदष्टक-कवि नागचन्द्र। पत्र सं०-१। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ५०३।

२३ आदिनाथाष्टक-.....। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३८०।

२४ ऋषिमण्डलस्तोत्र-श्री गुणनन्दी। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

ग्रन्थ नं० ४७९।

२५ ऋषिमण्डलस्तोत्र-श्री गुणनन्दी। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७१। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३५५।

२६ एकीभावस्तोत्र-वादिराज। पत्र सं०-३३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३३६।

२७ एकीभावस्तोत्र-वादिराज। पत्र सं०-२३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४००।

२८ एकीभावस्तोत्र-वादिराज। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६६२।

२९ एकीभावस्तोत्र-वादिराज। पत्र सं०-२३। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-३९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७६२।

३० एकीभावस्तोत्र-वादिराज। पत्र सं०-३३। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७९७।

३१ एकीभावस्तोत्र-वादिराज। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है।

ग्रन्थ नं० ५७२ ।

३२ एकीभाव तथा विषापहारस्तोत्र—वादिराज तथा धनंजय । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'लघीयस्त्रय', 'युक्त्यनुशासन', 'द्रव्यसंग्रह', 'इष्टोपदेश' तथा 'स्वयंभस्तोत्र' आदिके भी कुछ अपूर्ण पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

३३ एलापुरनेमीश्वराष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

३४ कलिकुण्डस्तोत्र-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

३५ कल्याणमन्दिरस्तोत्र-कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

३६ कल्याणमन्दिरस्तोत्र-कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

३७ कल्याणमन्दिरस्तोत्र-कुमुदचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५८ ।

३८ कूष्माण्डिनीस्तोत्र-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह नेमिनाथ तीर्थङ्करकी यक्षी कूष्माण्डिनीका स्तोत्र है ।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

३९ कोल्लिपाकापुरचन्द्रनाथस्तोत्र-..... । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

प्रारम्भिक पद्य-स जयति जिनचन्द्रस्सद्गुणाम्बोधिचन्द्रः कुगतिगजमृगेन्द्रस्तुंगभद्रो नगेन्द्रः ।

शमदमयमरुन्द्रश्चारिचरिन्द्रसान्द्रश्चरणनतसुरेन्द्रः कोल्लिपाकापुरेन्द्रः

पाठान्तर-चन्द्रनाथो जिनेन्द्रः ॥१॥

ग्रन्थ नं० ३७८ ।

४० गणधरगद्य-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३३४ ।

४१ गणधरस्तोत्र-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

४२ गणधरस्तोत्र-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

४३ गोम्मटजिनाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

४४ गोम्मटेशाष्टक-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह श्रवणबल्योलस्थ श्री बाहुबली स्वामीकी स्तुति है ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

४५ गोम्मटेशाष्टक-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

४६ चतुर्विंशतिस्तोत्र-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

४७ चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र-व्रती माघनन्दी । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

४८ चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

४९ चारणाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

५० चारुकीर्तिपण्डिताचार्यस्तुति-..... । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह श्रवणबेलगोलस्थ भट्टारक जीकी स्तुति है ।

ग्रन्थ नं० ३८४ ।

५१ चन्द्रप्रभगद्य-कवि शब्दब्रह्म । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह सिंहपुरस्थ चन्द्रप्रभस्वामीका स्तोत्र है । प्रतिमें इसका नाम 'उदाहरणमालिकापूजा' भी लिखा मिलता है ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

५२ चन्द्रप्रभस्तोत्र-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

५३ चन्द्रप्रभाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

५४ चन्द्रनाथस्तोत्र-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३२८ ।

५५ चन्द्रनाथाष्टक-मुनिचन्द्र । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

५६ चन्द्रनाथाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

५७ चन्द्रनाथाष्टक-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

५८ जिनचतुर्विंशतिका-कवि भूपाल । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

५९ जिनचतुर्विंशतिका-कवि भूपाल । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६६ ।

६० जिनचतुर्विंशतिका-कवि भूपाल । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३७३ ।

६१ जिनचतुर्विंशतिका-कवि भूपाल । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

६२ जिनचतुर्विंशतिका-कवि भूपाल । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७२ ।

६३ जिनचतुर्विंशतिका-कवि भूपाल । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७९१ ।

६४ जिनचतुर्विंशतिका-कवि भूपाल । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

६५ जिनचतुर्विंशतिका-कवि भूपाल । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १२२ ।

६६ जिनशतक-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें महाकवि नरसिंह भट्ट कृत संस्कृत वृत्ति भी है ।

ग्रन्थ नं० २०५ ।

६७ जिनशतक-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६६ ।

६८ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५१७ ।

६९ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६३७ ।

७० जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें नागार्जुनके कुछ यंत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

७१ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-४ $\frac{१}{३}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६७५ ।

७२ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

७३ जिनाक्षरमाला-महाकवि पोन्न । पत्र सं०-२ $\frac{१}{३}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४९ ।

७४ जिनाक्षरमाला-महाकवि पोन्न । पत्र सं०-२ $\frac{१}{३}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

७५ तीर्थङ्कराष्टक-..... । पत्र सं०-१ $\frac{१}{३}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

७६ त्रैलोक्यरत्नामणिस्तव-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

७७ त्रैलोक्यचूडामणिस्तव-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५५ ।

७८ त्रैलोक्यचूडामणिस्तव-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६८ ।

७९ त्रैलोक्यचूडामणिस्तव-..... । पत्र सं०-५ $\frac{१}{३}$  । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष—इसका अपर नाम 'छत्तीसरत्नमाला' मिलता है ।

ग्रन्थ नं० ३७१ ।

८० त्रैलोक्यचिन्तामणिस्तव-..... । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

८१ दृष्टाष्टक-मुनि सकलचन्द्र । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५७२ ।

८२ दृष्टाष्टक-मुनि सकलचन्द्र । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

८३ दृष्टाष्टक-मुनि सकलचन्द्र । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

८४ नवधेवतास्तोत्र-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

८५ निजाष्टक-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'द्रव्यसंग्रह' भी है ।

ग्रन्थ नं० ८२७ ।

८६ नित्यानन्दाष्टक-..... । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें बालचन्द्र कृत कन्नड टीका भी है एवं 'ताकिकरक्षा', 'द्रव्यसंग्रह' तथा 'नागकुमारचरित' आदिके कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

८७ निर्मलरूपस्तवन-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७१ ।

८८ निरञ्जनस्तोत्र-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २९९ ।

८९ निरञ्जनाष्टक-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६८९ ।

९० निरञ्जनाष्टक-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २५१ ।

९१ निर्वाणलक्ष्मोपतिस्तोत्र-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४४ ।

६२ निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

६३ निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४६२ ।

६४ निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

६५ निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

६६ नेमिनाथस्तोत्र-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

६७ परमानन्दस्तोत्र-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

६८ परमानन्दस्तोत्र-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

६९ पार्श्वजिनाष्टक-..... । पत्र-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१०० पार्श्वनाथाष्टक-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-(?) × । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह कनकगिरिस्थ श्री पार्श्वनाथका स्तोत्र है ।

ग्रन्थ नं० ७७१ ।

१०१ पार्श्वनाथाष्टक-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह मंत्राक्षरयुक्त स्तोत्र है । इसमें पं० श्रुतकीर्ति विरचित संस्कृत टीका तथा दूसरा भी एक मंत्राक्षर-युक्त 'पार्श्वनाथाष्टक' है ।

ग्रन्थ नं० ८८० ।

१०२ पार्श्वनाथाष्टक-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'कलिकुण्डाराधना' 'गोम्मटाष्टक' तथा 'वेदीप्रतिष्ठा' आदि कई विषयोंके अधरे पत्र है ।

ग्रन्थ नं० ३२० ।

१०३ पार्श्वनाथस्तोत्र-विद्यानन्दी । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७८ ।

१०४ पार्ष्वनाथस्तोत्र—..... । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-प्रतिमें इसका नाम 'पार्ष्वनाथघोष' लिखा मिलता है ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

१०५ पञ्चनमस्काराष्टक..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

१०६ पञ्चपदाष्टक..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१०७ पञ्चपरमेष्ठिस्तोत्र..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८२ ।

१०८ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३१५ ।

१०९ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५४ ।

११० भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-२०१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

१११ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

११२ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

११३ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५९ ।

११४ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७७७ ।

११५ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत 'पार्ष्वनाथाष्टक' भी है ।

ग्रन्थ नं० ६६७ ।

११६ भैरवपद्यावतीस्तोत्र-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१ । पंक्ति-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६६ ।

११७ मैलापुरनेमीश्वरस्तोत्र-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

११८ मैलापुरनेमीश्वराष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

११९ मैलापुरनेमीश्वराष्टक-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८९३ ।

१२० मङ्गलाष्टक-..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९६ ।

१२१ वर्द्धमानस्तवन-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

१२२ वल्लभाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रत्येक पद्यके अन्तमें 'वल्लभ' शब्द है ।

ग्रन्थ नं० ३५५ ।

१२३ विषापहारस्तोत्र-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६६ ।

१२४ विषापहारस्तोत्र-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

१२५ विषापहारस्तोत्र-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७६२ ।

१२६ विषापहारस्तोत्र-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'स्वप्नावली' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७९७ ।

१२७ विषापहारस्तोत्र-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।



विशेष-इसमें न्यायसम्बन्धी तथा 'दशवैकालिक' आदि के भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३७४ ।

१४१ शान्त्यष्टकटीका-..... । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१३ ।

१४२ शान्तीश्वरनक्षत्रमाला-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५३ ।

१४३ बडारचक्रमाला-देवनन्दी । पत्र सं०-१ । पंक्ति-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

१४४ समवसरणष्टक-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १४९ ।

१४५ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३४८ ।

१४६ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३८३ ।

१४७ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१४८ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५४७ ।

१४९ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है, एवं 'शांत्यष्टक' 'एकीभावस्तोत्र' और 'विषाणहारस्तोत्र' के कुछ  
खण्डित पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ७४९ ।

१५० समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'सुप्रभातस्तोत्र' तथा 'स्वप्नावली' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७५६ ।

१५१ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-१ । पंक्ति-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११९ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८१९ ।

१५२ समवसरणस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

१५३ समवसरणाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९८ ।

१५४ सरस्वतीरगले-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३४६ ।

१५५ सरस्वतीस्तोत्र-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५९ ।

१५६ सरस्वतीस्तोत्र-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

१५७ सरस्वतीस्तोत्र-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

१५८ सरस्वतीस्तोत्र-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत 'रत्नत्रयस्तोत्र' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७५१ ।

१५९ सरस्वतीस्तोत्र-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें अगलदेव कृत कन्नड 'समवसरणगद्य' भी है ।

ग्रन्थ नं० ७५३ ।

१६० सरस्वतीस्तोत्र-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८३४ ।

१६१ सरस्वतीस्तोत्र-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'जिनसहस्रनाम', पंचपरमेष्ठिपूजा, 'जिनचतुर्विंशतिका' एवं 'एकीभावस्तोत्र' आदि ग्रन्थोंके भी अधूरे पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५२ ।

१६२ सहस्रनामस्तोत्र-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९६ ।

१६३ सिद्धगद्य-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६६२ ।

१६४ सिद्धस्तोत्र-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८५ ।

१६५ सिद्धपरमेष्विगद्य-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें तीर्थङ्करगद्य भी है ।

ग्रन्थ नं० १९८ ।

१६६ सिद्धिप्रियस्तोत्र-आचार्य देवनन्दी । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपरनाम 'षडारचक्र' है । इसमें संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३०८ ।

१६७ सुप्रभातस्तोत्र-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४०० ।

१६८ सुप्रभातस्तोत्र-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९९ ।

१६९ सुप्रभातस्तोत्र तथा स्वप्नावली-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड 'निर्वाणलक्ष्मीपतिस्तोत्र' भी है ।

ग्रन्थ नं० ३२ ।

१७० स्तोत्रसंग्रह-( पंचस्तोत्र, चतुर्विंशतिस्तोत्र आदि ) ..... । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । विशेष-इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' और 'दशभक्ति' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

१७१ स्तोत्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'थोस्सामि दण्डक' आदि कुछ स्तोत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १०७ ।

१७२ स्तोत्रसंग्रह-कवि भूपाल आदि । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'जिनचतुर्विंशतिका', 'विषापहार', 'अकलंक', आदि स्तोत्र तथा 'तत्त्वार्थसूत्र' भी है ।

ग्रन्थ नं० १६३ ।

१७३ स्तोत्रसंग्रह-कवि माणिकदेव । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—यह ग्रन्थ मंटूरके सुकवि माणिकदेवके द्वारा रचा गया है। इसमें चतुर्विंशतिस्तव, पार्श्वनाथ-स्तोत्र, जिनस्तवन आदि कई स्तोत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५१९।

१७४ स्तोत्रसंग्रह—आचार्य कौडकुन्द आदि। पत्र सं०—३६। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—६०। लिपि—कन्नड। भाषा—प्राकृत तथा संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७५३।

१७५ स्तोत्रसंग्रह—आचार्य मानतुंग आदि। पत्र सं०—९। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—८०। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य। विशेष—इसमें 'भक्तामर', 'समवसरण', निर्वाणलक्ष्मीपति' आदि स्तोत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ७८३।

१७६ स्तोत्रसंग्रह—पण्डित आशाधर आदि। पत्र सं०—५। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—५०। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य। विशेष—इसमें 'अर्हत्स्तोत्र' 'सिद्धस्तोत्र' 'गणधरस्तोत्र' 'रत्नत्रयस्तोत्र' तथा 'सरस्वतीस्तोत्र' हैं।

ग्रन्थ नं० ८८९।

१७७ स्तोत्रसंग्रह—कवि भूपाल आदि। पत्र सं०—१४<sup>३</sup>। पंक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपंक्ति—३७। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—उत्तम। विशेष—इसमें 'जिनचतुर्विंशतिका', 'मंगलाष्टक', 'दृष्टाष्टक', 'समवसरणाष्टक' 'अद्याष्टक' तथा अर्हत्-स्तोत्र है, एवं 'सिद्धभक्ति' 'नन्दीश्वरपूजा' तथा 'सिद्धपूजा' के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४००।

१७८ स्वप्रावलिस्तव—.....। पत्र सं०—२। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—४०। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३६६।

१७९ स्वयम्भूस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०—११। पंक्ति प्रतिपत्र—७। अक्षर प्रतिपंक्ति—६८। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ४००।

१८० स्वयम्भूस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०—११। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—४९। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

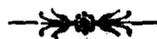
ग्रन्थ नं० ५१७।

१८१ स्वयम्भूस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०—९। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—६०। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७७७।

१८२ स्वयम्भूस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०—२४। पंक्ति प्रतिपत्र—६। अक्षर प्रतिपंक्ति—५४। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा—जीर्ण।

विशेष—इसमें 'जिनचतुर्विंशतिकास्तोत्र' आदि के भी कुछ पत्र हैं।



## विषय-भजन तथा गीत

ग्रन्थ नं० ३२३ ।

१ उदयराम [प्राभातिक-गीत]-..... । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

२ नेमिकुमारगीत-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३९१ ।

३ नन्दीश्वरगीत-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३२९ ।

४ पद्मावतीभजन-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८८ ।

५ पार्श्वनाथपञ्चकल्याणका गीत-..... । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'नेमीश्वरमंगलारती' 'पंचाणुव्रतगीत' 'त्रिलोकचरित' तथा 'आदिनाथयक्षगान' भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २९२ ।

६ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३२ ।

७ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३८६ ।

८ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३९३ ।

९ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४६५ ।

१० भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४८२ ।

११ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८१५ ।

१२ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ । लिपि-  
कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८६६ ।

१३ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८६ ।

१४ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें 'संध्याबन्दना' 'नवग्रहमंत्र' एवं २४ तीर्थंकरोंकी जयमाला भी है ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

१५ षोडशभावनोद्धारग-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।



### विषय-प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० २०६ ।

१ गायत्र्यादिसंग्रह-..... । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह एक संग्रह-ग्रन्थ है । इसमें कई विषय हैं ।

ग्रन्थ नं० २८४ ।

२ रत्नकरण्डभाषकाचार्यादिसंग्रह-आचार्य समन्तभद्र आदि । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८८ ।

३ वाक्यमञ्जरी-अनन्तपण्डित । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५१ ।

४ विवेकबिलास-जिनदत्तसूरि । पत्र सं०-५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म, ज्योतिष आदि । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४५४ ।

५ विवेकबिलास-जिनदत्तसूरि । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म, शिल्प आदि । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २८४ ।

६ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६५७ ।

७ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कुछ प्राम्थगीत भी सम्मिलित है ।

ग्रन्थ नं० २८२ ।

८ सुभाषित-वैद्य-ज्योतिषादिसंग्रह-..... । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५४१ ।

९ सूक्तिमुक्तावली-पण्डित जल्हण । पत्र सं०-१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-यह एक संग्रहग्रन्थ है । इसके संग्रहकर्ता जल्हण राजा अरिवृन्दनाथके पुत्र हैं । इनके महीधर, शाम्ब और गंगाधर नामके तीन सहोदर थे । इनमें से महीधरने राजा विज्जणको युद्धमें परास्त किया था । यह उल्लेख ग्रन्थके प्रारम्भिक पद्योंमें मिलता है । इसमें 'प्रतापरुद्रीय' के भी कुछ खण्डित पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २२० ।

१० सूक्तिसंग्रह-..... । पत्र सं०-११० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ६९४ ।

११ संग्रह-..... । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कई विषयोंके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ७३९ ।

१२ संग्रह-..... । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'भाषामंजरी' 'क्षत्रचूडामणि' 'धन्यकुमारचरित' आदि कतिपय ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ७५७ ।

१३ संग्रह-आचार्य समंतभद्र आदि । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'रत्नकरणध्रावकाचार' 'श्रुतभक्ति' आदि कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ७६५ ।

१४ संग्रह-..... । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'शाकटायनप्रक्रिया' 'समवसरणस्तोत्र' आदिके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ७६६ ।

१५ संग्रह-..... । पत्र सं०-१३० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें व्याकरण, धर्म, न्यायादि अनेक विषयोंके अपूर्ण पत्र संग्रहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ८०३ ।

१६ संग्रह-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'प्रतिक्रमण' 'वृत्तरत्नाकर' 'प्रश्नोत्तररत्नमाला' आदिके अपूर्ण पत्र संग्रहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ८१० ।

१७ संग्रह—पण्डित आशाधर आदि । पत्र सं०—७६ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४७ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत तथा कन्नड । विषय—विविध । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें 'सरस्वतीस्तोत्र' 'गणधरस्तोत्र' पंचपरमेष्ठिस्तोत्र तथा 'रघुवंश' आदिके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ८२६ ।

१८ संग्रह—भाचार्य समन्तभद्र आदि । पत्र सं०—१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड । विषय—विविध । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें 'रत्नकरणश्रावकाचार' 'भुनिसुव्रत-काव्य' आदि कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ८३३ ।

१९ संग्रह—कल्याणकीर्ति आदि । पत्र सं०—९३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड, प्राकृत, संस्कृत तथा तमिल । विषय—विविध । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें 'ज्ञानचन्द्राभ्युदय' 'दृष्टाष्टक' 'मंगलाष्टक' आदि कई ग्रन्थोंके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं ।

ग्रन्थ नं० ८८७ ।

२० संग्रह—भ० चारुकीर्ति आदि । पत्र सं०—४६ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३४ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—विविध । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

विशेष—इसमें 'गीतवीतराग' 'मंगलाष्टक' 'महाभिषेक' तथा पूजा आदि कई विषयोंके अपूर्ण पत्र संगृहीत हैं ।



# मूडबिद्री जैनभवनके ताडपत्रीयग्रन्थ

## विषय-सिद्धान्त

ग्रन्थ नं० २०४ ।

१ कम्मपयडि [ कर्मप्रकृति ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

२ कर्मप्रकृतिनिरूपण-आचार्य अमयनन्दी । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३६ ।

३ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें केशवणकी कर्णाटकवृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० १८४ ।

४ गोम्मटसार [ जीवकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-पंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५९ ।

५ गोम्मटसारकर्मकारणस्थसंहृष्टि-..... । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-नागरी । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

६ चतुर्बन्धनिरूपण-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार पायण सेट्टि हैं ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

७ तत्त्वानुशासन-मुनि नागसेन । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

८ तत्त्वानुशासन-मुनि नागसेन । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

९ तिभंगी-सिद्धान्तचक्रवर्ती कनकनंदी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

१० दंशणसार [ दर्शनसार ]-आचार्य देवसेन । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

११ द्ब्वसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवणकी कन्नड टीका है इसमें दो पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

१२ द्ब्वसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

विशेष-इसमें श्री बालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २०४ ।

१३ द्ब्वसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २०६ ।

१४ द्ब्वसंगह [ द्रव्यसंग्रह ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसकी गाथा संख्या ८९ है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१५ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-२२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह आचार्य माघनन्दी कुमुदचन्द्रदेवके शिष्य हैं ।

अन्तिम पद्य-नमो नम्रजनानादस्यन्दिने माघनन्दिने । जगत्प्रसिद्धसिद्धान्तवेदिने चित्रमोदिने ॥

सिद्धान्तसारसर्वस्वकोशावासकमूर्तये । नमः श्रीमाघनन्दाख्यविश्वविख्यातकीर्तये ॥

ग्रन्थ नं० ७८ ।

१६ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-८६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २२८ ।

१७ पदार्थसार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं० २४० ।

१८ पदार्थसार-आचार्य माधवन्दी । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

१९ पवयणसार [ प्रवचनसार ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४६५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १४६५, विकारी सं० श्रुतपञ्चमीके दिन पेशवलु शांति सेट्टीके पुत्र वर्धमान सेट्टीने इस ग्रन्थको लिखकर पूर्ण किया था । इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

२० पंचस्थिकाय [ समयसार ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-९४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें नयकीतिदेवके शिष्य मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

२१ पञ्चसंसारविस्तर..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । मङ्गलाचरण-पञ्चसंसारमुक्तेभ्यः सिद्धेभ्यः खलु सर्वदा । नमस्कृत्वा प्रवक्ष्येऽहं पञ्चसंसारविस्तरम् ॥

ग्रन्थ नं० २९ ।

२२ भव्यराशिपरिमाण-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२२ ।

२३ वीसपरुवणा [ विंशतिपरुवणा ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । इसके प्रतिलिपिकार भट्टारक सोमसेनके प्रिय शिष्य अभिनव समन्तभद्रदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

२४ सक्कम्मपंचिय [ सत्कर्मपञ्चिका ]-..... । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-२५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १९४१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

२५ समयसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि० शक १४६५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है । प्रतिलेखक वर्धमान सेट्टी हैं ।

ग्रन्थ नं० २३७ ।

२६ स्याद्वादमतसिद्धान्त-श्री चन्द्रय्य उपाध्याय । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## विषय-अध्यात्म

ग्रन्थ नं० १२२ ।

१ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है । इसके प्रतिलिपिकार अभिनव समीन्तभद्रदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० १९२ ।

२ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २३१ ।

३ आत्मानुशासन-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि०शक १३०० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २६६ । •

४ आत्मोदयसार-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

५ चिन्मयचिन्तामणि-श्री कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३८ ।

६ चिन्मयचिन्तामणि-मुनि कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४३ ।

७ चिन्मयचिन्तामणि-मुनि कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

ग्रन्थ नं० १५० ।

८ जीवसम्बोधन-श्री बंधुवर्म । पत्र सं०-११४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह ग्रन्थ प्रकाशनीय है ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

९ परमप्यासु [परमात्मप्रकाश]-आचार्य योगीन्द्रदेव । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका भी है ।

मङ्गलाचरण-जे आया ज्ञानगीये कम्मकलंक डहेवि । णिन्व णिरंजणणाणमया ते परमप्य गवेवि ॥

ग्रन्थ नं० २४६ ।

१० परमात्मस्वरूप-आचार्य अमितगति । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपर नाम 'सामायिकपाठ' भी है ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

११ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

१२ समाधिशतक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

विशेष-इसमें श्री बालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

१३ स्वरूपसन्बोधनपञ्चविंशति-आचार्य अकलङ्कदेव । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है ।



## विषय-धर्म

ग्रन्थ नं० ८७ ।

१ अनगारधर्मासृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

२ आप्तस्वरूप-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

मङ्गलाचरण-सर्वेन्द्रस्तुत्यपादाब्जं सर्वज्ञं दोषवर्जितम् । श्रीजिनाधीश्वरं नौमि परमानन्दमक्षयम् ॥

आप्तागमः प्रमाणं स्याद्यथावद्वस्तुसूचकः । यस्तु दोषैर्विनिर्मुक्तस्सोऽयमाप्तो निरञ्जनः ॥

ग्रन्थ नं० २९ ।

३ आराहणासार [आराधनासार]-आचार्य देवसेन । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवण्णकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

४ आराधनासमुच्चय-मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८७।

५ आराधनासमुच्चय-मुनि रविचन्द्र । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसे मुनि रविचन्द्रने पनसोमे ग्राम में रचा है ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

६ इष्टोपदेश-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें केशवणकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

७ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'पद्मनन्दिपञ्चविंशति' का एक प्रकरण है ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

८ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'पद्मनन्दिपञ्चविंशति' का एक प्रकरण है ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

९ एकत्वसंप्रति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें केशवणकृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १८१ ।

१० एकत्वसंप्रति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । विशेष-इसमें श्री बालचन्द्रदेवकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

११ गुणप्रकाशक-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्माधर्मस्वरूपविवरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । श्रीवर्धमानमानम्य धर्माधर्मस्वरूपकम् । गुणप्रकाशकं नाम वक्ष्ये भव्योपकारकम् ।

ग्रन्थ नं० ४४ ।

१२ जिनमुनितनय-नागचन्द्र । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९० ।

१३ जिनमुनितनय-कवि नागचन्द्र । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३४ ।

१४ जिनमुनितनय-कवि नागचन्द्र । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं० २५४ ।

१५ जिनमुनितनय-कवि नागचन्द्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७६ ।

१६ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य उमास्वामी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७२ ।

१७ तत्त्वार्थसूत्र-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९० ।

१८ तीर्थङ्करनामावली-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें पंचभरत और पंच ऐरावत क्षेत्रोंके त्रिकाल तीर्थङ्करोंके नाम प्रतिपादित हैं ।

ग्रन्थ नं० ३१ ।

१९ त्रैवर्णिकाचार-श्री ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५१ ।

२० त्रैवर्णिकाचार-श्री ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-४० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १८३९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मैसूरके ब्रह्मदेवय्य हैं ।

ग्रन्थ नं० १३० ।

२१ त्रैवर्णिकाचार-श्री ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५७ ।

२२ दानसार-ऋषि वासुपुज्य । पत्र सं०-८४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४२ ।

२३ द्वादशानुपेक्षा-विजयण्ण । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३१ ।

२४ द्वादशानुपेक्षा-विजयण्ण । पत्र सं०-१२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'सांगत्य' पद्य में है ।

ग्रन्थ नं० १८५ ।

२५ द्वादशानुपेक्षा-विजयण्ण । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३० ।

२६ द्वादशानुपेक्षा-विजयण्ण । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार श्री शान्तिसागरवर्णी हैं ।

ग्रन्थ नं० २४५ ।

२७ द्वादशानुपेक्षा-विजयण्ण । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

२८ द्वादशानुप्रेक्षा-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५१ ।

२९ द्वादशानुप्रेक्षा-वादीभसिंह । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'क्षत्रचूडामणि' काव्य से उद्धृत है । इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३८ ।

\* ३० द्विजबदनचपेटा-अश्वघोष भिक्षु । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम 'लघुषड्दर्शनसमुच्चय' भी है ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

३१ नीतिसारसमुच्चय-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

३२ पद्मनन्दिपञ्चविंशति-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २६६ ।

३३ परमागमसार-... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-शिथिल । विशेष-यह कन्नड गद्यरूप है ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

३४ पायश्चित्त [ प्रायश्चित्त ] त्रिधि-... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १६५ ।

३५ पञ्चपरमेष्ठिव्याख्यान-... । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४२ ।

३६ पञ्चपरमेष्ठिव्याख्यान-... । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

३७ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १७३ ।

३८ प्रश्नोत्तररत्नमाला-... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

३६ प्रायश्चित्त-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १८९ ।

४० प्रायश्चित्तविधि-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४६ ।

४१ प्रायश्चित्तविधान-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह कन्नड गद्यमें है ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

४२ बारस अणुपेहा [द्वादशानुप्रेक्षा]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें केशवणकी कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

४३ बारस अणुपेहा [द्वादशानुप्रेक्षा]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४१ ।

४४ बारस अणुपेहा [द्वादशानुप्रेक्षा]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

४५ बारस अणुपेहा [द्वादशानुप्रेक्षा]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४४ ।

४६ भव्यामृत-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५४ ।

४७ भव्यामृत-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

४८ भव्यानन्दशास्त्र-पाण्ड्यभूपति । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

४९ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है । इसके प्रतिलिपिकार मूलकी अनन्तव्य इन्द्रके पुत्र चन्दव्य इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७० ।

५० रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-कागज । लेखनकाल-विक्रम शक १९२९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें पं० सदासुखकी हिन्दी वचनिका भी है ।

ग्रन्थ नं० ७६ ।

५१ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२२ ।

५२ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्य प्रभाचन्द्रदेवकी संस्कृत टीका भी है । इसके प्रतिलिपिकार भट्टारक सोमसेनके प्रिय शिष्य अभिनव समन्तभद्रदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० १७० ।

५३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २०४ ।

५४ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें १९२ श्लोक हैं । विचारणीय है ।

ग्रन्थ नं० २९४ ।

५५ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शियल ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । इसकी श्लोकसंख्या २०४ है ।

ग्रन्थ नं० २७ ।

५६ रत्नमाला-आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १७३ ।

५७ रत्नमाला-आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४६ ।

५८ रत्नमाला-आचार्य शिवकोटि । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४१ ।

१६ रयणसार-आचार्य कुंदकुंद । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५६ ।

६० विद्यादिपद्धति-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें 'विद्यापद्धति' 'दानपद्धति' आदि बारह पद्धतियाँ हैं ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

६१ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

६२ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

६३ शास्त्रसारसमुच्चय-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९५ ।

६४ शिवलिङ्गमाहात्म्य-..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-गामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

६५ श्रावकाचार-आचार्य माघनन्दी । पत्र सं०-१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १६४२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार नगलेग्रामके राजय्य हैं । इसे नगले देवरसय्यके पुत्र ब्रोम्मरसय्यने लिखवाया है ।

ग्रन्थ नं० १० ।

६६ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

६७ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें आचार्य चन्द्रकीतिके शिष्य श्रुतकीतिकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४१ ।

६८ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११७।

६९ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११८।

७० सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११५।

७१ समवसरणस्वरूपविवरण-मूनि विजयण्ण । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह षट्पदिपद्यमें है । प्रकाशनीय है ।

ग्रन्थ नं० ८७।

७२ सागारधर्मामृत-पं० आशाधर । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०६।

७३ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १२८।

७४ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें खोपत्र टीका है । इसका अपर नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । इसके प्रतिलिपिकार ब्रह्ममूरि हैं ।

ग्रन्थ नं० २१।

७५ सिद्धपरमेष्ठिस्वरूप-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४०।

७६ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-सोमप्रभदेव आचार्य अजितदेवके शिष्य विजयसिंहके प्रशिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ४१

७७ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११८।

७८ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।



## विषय-योगशास्त्र

ग्रन्थ नं० १७।

१ योगामृत-.....। पत्र सं०-१३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३२। लिपि-कन्नड।  
भाषा-कन्नड। विषय-योगशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि०शक-१७८२। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।  
विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री चोलसेट्टिबसदि मंजप्प इन्द्रके पुत्र पुरोहित पाचप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० २७९।

२ योगामृत-.....। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५। लिपि-कन्नड।  
भाषा-कन्नड। विषय-योगशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।



## विषय-प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० १२।

१ जिनसंहिता-आचार्य एकसंधि। पत्र सं०-६२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि-  
कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।  
विशेष-इसमें अन्तके दो पत्र नहीं हैं। ग्रन्थ सट्टिप्पण है।

ग्रन्थ नं० १३।

२ जिनसंहिता-आचार्य एकसंधि। पत्र सं०-१०९। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-६५। लिपि-  
कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।  
विशेष-अन्तके दो पत्र नहीं हैं। किल्लिष्ट शब्दोंका अर्थ भी दिया गया है।

ग्रन्थ नं० ३४।

३ जिनसंहिता-आचार्य एकसंधि। पत्र सं०-५९। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-५७। लिपि-  
कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।  
विशेष-इसमें कठिन शब्दोंका अर्थ भी दिया गया है।

ग्रन्थ नं० २४१।

४ जिनसंहिता-आचार्य एकसंधि। पत्र सं०-३८। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-९०। लिपि-  
कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-शियिल।  
ग्रन्थ नं० १८९।

५ जिनसंहिता-आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र सं०-६६। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपत्र-७०। लिपि-  
कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १९४।

६ पञ्चकल्याणविधि-नेमिचन्द्र। पत्र सं०-५७। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-  
कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।  
विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री हिरेबसदि पाचप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० ५१।

७ प्रतिष्ठाकल्प-भट्टाकलंकदेव। पत्र सं०-७४। पंक्ति प्रतिपत्र-४०। अक्षर प्रतिपंक्ति-४१। लिपि-  
कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। वस्तु-कागज। लेखनकाल-सन् १८३९। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष—इसके प्रतिलिपिकार मैसूरके ब्रह्मदेवय्य हैं।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

८ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि—आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०—३२ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५३ ।

९ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि—आचार्य कुमुदचन्द्र । पत्र सं०—४१ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—३७ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—वीर शक २४५२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

१० प्रतिष्ठातिलक—नेमिचन्द्र । पत्र सं०—१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८८ । लिपि—कन्नड भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसके अन्तमें ग्रन्थकर्ताकी प्रशस्ति है । मुद्रित प्रशस्तिसे इसमें इतनी विशेषता है—

श्रीजैनागमवेदी गुणमणिगणरचितभूषणधारी ।

सोमरसनामसूरिर्जयति जिनेशाङ्घ्रि वनजलीनालिः ॥१॥

पायात्सदा निर्मलदिव्यचित्तं रत्नत्रयालङ्कृतसौख्यदेहम् ।

श्रीपार्श्वनाथस्सुजनैकसेव्यं सोमात्तनामाङ्कितभव्यरत्नम् ॥२॥

श्रीवीरद्रुमपत्तनावृतनदीतीरे मुचैत्यालये

पीठे निर्मलसिंहलाञ्छनयुते संरूढपार्श्व प्रभोः ।

नित्याद्यर्चनतत्परस्य लिखितः श्रीनेमिचन्द्रोत्तमे

नात्तः सोमरसाङ्घ्यस्य सकलप्रीत्यर्हपूजाक्रमः ॥३॥

श्रीमत्स्वर्णमहीधराप्रविलसच्छ्रीपार्श्वनाथाङ्घ्रि -

केजद्रन्द्र विलीनमत्तमधुपस्याख्यादिनाथस्य च ।

श्रीवत्सान्वयपूर्णचन्द्रसद्श्रीशान्तिनाथस्यसत्त-

पुत्रेणार्हमहामहं विलिखितं सोमात्तनाम्ना च ते ॥४॥

ग्रन्थ नं० १५ ।

११ प्रतिष्ठातिलक—ब्रह्मसूरि । पत्र सं०—८४ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९२ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसमें नं० ३१ से ४९ तक के पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ५१ ।

१२ प्रतिष्ठातिलक—ब्रह्मसूरि । पत्र सं०—११० । पंक्ति प्रतिपत्र—४० । अक्षर प्रतिपंक्ति—२५ । लिपि—कन्नड भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । वस्तु—कागज । लेखनकाल—सन् १८३९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—प्रतिलिपिकार मैसूर के ब्रह्मदेवय्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

१३ प्रतिष्ठाविधि अथवा विधान—हस्तिमल्ल । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६८ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५२ ।

१४ प्रतिष्ठासारसंग्रह—पण्डित अय्यप्पार्य । पत्र सं०—१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र—१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३७ । लिपि—देवनागरी । भाषा—संस्कृत । विषय—प्रतिष्ठा । वस्तु—कागज । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसका अपर नाम 'जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय' है ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

१५ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपरनाम 'जिनयज्ञकल्प' है । इसे विजयण्ण स्वामीके शिष्य पार्श्वने लिखा हैं ।

ग्रन्थ नं० १८६ ।

१६ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-७८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार श्रीचारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य मुनिचन्द्रदेव हैं ।



### विषय-पूजापाठ, आराधना तथा व्रतविधान

ग्रन्थ नं० २४१ ।

१ अष्टमनन्दीश्वरपूजा-विद्यानन्द । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९१ ।

२ आराधनाग्रन्थसंग्रह-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५१ ।

३ ऋषिमण्डलाराधना-मुनि गुणनन्दी । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७१ ।

४ ऋषिमण्डलाराधना-मुनि गुणनन्दी । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

५ कर्मदहनाराधना-..... । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

६ कर्मदहनविधान-श्री चन्द्रकीर्ति । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५५ ।

७ कर्मदहनादिविधानसंग्रह-..... । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १९२७ । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार पडुबसदि पाचप्प इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ८१ ।

८ क्षेत्रपालपूजा-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

६ गणधरबलयविधान-..... । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६७ ।

१० गणधरबलयाराधना-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६७ ।

११ गोमारियन्त्राराधना-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

१२ चक्रबालभ्रतविधान-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०६ ।

१३ चारित्रसिद्धिव्रतविधान-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

१४ जिनगुणसंपत्तिव्रतविधान-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३७ ।

१५ ध्वजारचनाविधि-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९६ ।

१६ नान्दिमङ्गलविधान-..... । पत्र सं०-८६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९७ ।

१७ नान्दिमङ्गलविधान-..... । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १५४ ।

१८ नान्दिमङ्गलादिपूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-१७० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २० ।

१९ निरयपूजाविधि-..... । पत्र सं०-१२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७२२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मंगलाष्टक, वज्रपाणि, भूमिशुद्धिविधान, पंचपरमेष्ठि-नवदेवता-बोडशभावनापूजा, महा-भिषेकविधान, विमानशुद्धिविधान आदि कई विषय हैं । -शालि० शक १७२२ रौद्री सं० भाद्रपद शु० ९ मडविद्धि कोटि सेट्टि बसदिमें पत्तय उपाध्यायने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

२० पत्यविधान-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-आचार्य महावीर्यं प्रणम्य (?) कल्याणनायकम् । भक्त्या पत्योपवास-लक्षणं विधीयते सम्यक् ।  
प्रतिलिपिकार नेमण उपाध्याय हैं ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

२१ पत्यविधान-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

२२ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २२४ ।

२३ पूजासंग्रह-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

२४ पूजाफलादिलक्षणसंग्रह-..... । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८१ ।

२५ पूजापूजकलक्षण-आचार्य इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

२६ पञ्चपरमेष्ठिआराधना-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११६ ।

२७ पंचमंदिरपूजा-..... । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-शिथिल ।  
विशेष-इसमें अष्टमनन्दीश्वरद्वीपकी पूजा भी है ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

२८ मुजबलीकल्याणव्रतविधान-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके रचयिता पद्मनन्दी हैं । यह देवेन्द्रकीतिके शिष्य श्रुतकीतिके प्रशिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ६६ ।

२९ भैरवाराधना-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९४ ।

३० महाभिषेकाविपूजाविधि-..... । पत्र सं०-१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-

४०। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—इसमें महाशांति, वास्तु, नान्दीमंगल आदि भी हैं।

ग्रन्थ नं० १४७।

३१ महाभियेकादिपूजासंग्रह—.....। पत्र सं०—६०। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—५३। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा तथा आराधना। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

विशेष—इसमें 'कलिकुण्ड', 'वज्रपंजर', 'मृत्युंजय' आदि आराधनाओंका संग्रह भी है।

ग्रन्थ नं० ३६।

३२ मुक्तावलिबिधान—.....। पत्र सं०—२। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—३९। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—व्रतविधान। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३६।

३३ रत्नत्रयबिधान—.....। पत्र सं०—७। पंक्ति प्रतिपत्र—१०। अक्षर प्रतिपंक्ति—४२। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—व्रतविधान। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५१।

३४ शान्तिचक्राराधना—.....। पत्र सं०—१४। पंक्ति प्रतिपत्र—५। अक्षर प्रतिपंक्ति—६४। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—आराधना। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१।

३५ श्रुतस्कन्धाराधना—विजयवर्णी। पत्र सं०—१२। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—५९। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—आराधना। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—श्रीमूलसंघ, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगणके आचार्य महेन्द्रकीर्तिके शिष्य, ज्ञानभूषणके प्रशिष्य विजयवर्णीने श्रीमुख सं० कार्तिक शु० १४ में इसकी रचना की है।

ग्रन्थ नं० ११६।

३६ श्रुतस्कन्धाराधना—मुनि विजयकीर्ति। पत्र सं०—३१। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—४५। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—आराधना। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा—सामान्य।

ग्रन्थ नं० ३६।

३७ श्रुतज्ञानबिधान—विजयवर्णी। पत्र सं०—१९। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—३८। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—व्रतविधान। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—सामान्य।

विशेष—श्रीचन्द्रमके पुत्र पार्श्वनाथने इसकी प्रतिलिपि की है।

ग्रन्थ नं० ३६।

३८ सर्वदोषपरिहारबिधान—.....। पत्र सं०—४। पंक्ति प्रतिपत्र—९। अक्षर प्रतिपंक्ति—३८। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—व्रतविधान। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१।

३९ सहस्रनामाराधना—.....। पत्र सं०—३०। पंक्ति प्रतिपत्र—८। अक्षर प्रतिपंक्ति—४५। लिपि—कन्नड। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। वस्तु—ताडपत्र। लेखनकाल—X। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा—उत्तम।

विशेष—इसे नेमण्य उपाध्यायने लिखा है।

ग्रन्थ नं० ५६ ।

४० सहस्रनामाराधना-..... । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १९२७ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसे पडुबस्ति पाचप्प इन्दने लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

४१ सिद्धचक्रार्चनाष्टक-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

सिद्धचक्रं प्रणम्यादौ सिद्धचक्रार्चनाष्टके ।

निबन्धं रचयन्त्येते श्रुतसागरसूरयः ॥ १ ॥

विशेष-इसमें श्रुतसागरकी संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

४२ सिद्धचक्रपूजा-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

४३ संचितश्रुतज्ञानविधान-उपाध्याय चन्द्रम । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्रतविधान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।



### विषय-न्याय तथा दर्शन,

ग्रन्थ नं० २१२ ।

१ आप्तमीमांसा-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २२० ।

२ तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार-स्वामी विद्यानन्द । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति १०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं० २५२ ।

\* ३ तर्कचिन्तामणि-महामहोपाध्याय गणेश्वर । पत्र सं०-९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति १०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं० २६८ ।

\* ४ तर्कसंग्रह-..... । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

\* ५ तार्किकरत्ना-बरदराज । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १ ।

६ न्यायविनिश्चयालंकार-मूलकर्ता-अकलंकदेव । टीकाकर्ता-वादिराजसुरि । पत्र सं०-३०२ । पंक्ति-प्रतिपत्र-..... । अक्षर प्रतिपंक्ति-..... । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपर नाम 'व्याख्यानरत्नमाला' है ।

ग्रन्थ नं० ७२ ।

७ न्यायविनिश्चयालंकार-अकलंकदेव । पत्र सं०-२७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-× । अक्षर प्रतिपंक्ति-× । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

८ पत्रपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'आप्तपरीक्षा' के मूलश्लोक भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

९ परोक्षामुखसूत्र-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५८ ।

१० परोक्षामुखसूत्र-आचार्य माणिक्यनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५८ ।

११ प्रमेयरत्नमाला-आचार्य अनन्तवीर्य । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

१२ भ्रषचनपरीक्षा-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१२ ।

१३ षड्दर्शनप्रपंच-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## विषय-कोश

ग्रन्थ नं० ८६ ।

१ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०३ ।

२ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें श्री विट्ठलकृत विदाधचूडामणिनामक कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११२ ।

३ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २२५ ।

४ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्र-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'धनंजय नाममाला' भी है ।

ग्रन्थ नं० २४४ ।

५ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-१३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडविद्री होसवसदि पाचप्य इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २४७ ।

६ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

७ नाममाला-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३३ ।

८ नाममाला-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें शब्दरूपावली, धातुपाठ और समासचक्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १७३ ।

९ नाममाला-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९३ ।

१० नाममाला-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २२३ ।

११ नाममाला-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३४ ।

१२ नाममाला-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २५४ ।

१३ नाममाला-महाकवि धनंजय । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।



## विषय-व्याकरण

ग्रन्थ नं० २१८ ।

१ कातन्त्र-शर्ववर्म । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'कौमार' है ।

ग्रन्थ नं० २५५ ।

२ कातन्त्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९९ ।

३ धातुपाठादिसंग्रह-आचार्य शाकटायन । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'शब्दरूपावली' 'समासचक्र' आदि भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १०२ ।

४ मन्त्रव्याकरण-..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके अंतमें 'इति समन्तभद्रस्वामिकृत मन्त्रव्याकरणम्' यह वाक्य मिलता है ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

५ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २०२ ।

६ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १८ ।

\* ७ सारस्वतव्याकरण-..... । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्रणम्य परमात्मानं बालधीबृद्धिसिद्धये । सारस्वतोमृजू कुर्वे प्रक्रियां नातिविस्तराम् ॥

ग्रन्थ नं० ९१ ।

\* ८ सारस्वत-..... । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार कवि निम्मण्णके पुत्र महाबल है ।



## विषय-काव्य

ग्रन्थ नं० २०० ।

१ काव्यसारसंग्रह-..... । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १६७ ।

२ क्षत्रचूडामणि-वादीभसिंह । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०५ ।

३ चन्द्रप्रभचरित-महाकवि वीरनन्दी । पत्र सं०-९८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।  
ग्रन्थ नं० २२ ।

४ जयनृपकाव्य-प्रभुराज मंगरस । पत्र सं०-१२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । षट्पदि । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १७१ ।

५ जयनृपकाव्य-प्रभुराज मंगरस । पत्र सं०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७७ ।

६ ज्ञानचन्द्राभ्युदय-कवि कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

७ नागकुमारकाव्य-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३१ ।

८ नागकुमारकाव्य-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अतिशिथिल ।

ग्रन्थ नं० १६८ ।

९ मुनिसुव्रतकाव्य-पण्डित अर्हदास । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १९५ ।

१० मुनिसुव्रतकाव्य-पण्डित अर्हदास । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५७ ।

११ मुनिसुव्रतकाव्य-पण्डित अर्हदास । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३२ ।

१२ यशोधरकाव्य-महाकवि वादिराजसूरि । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-साहित्य । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें सिर्फ चार सर्ग हैं ।



### विषय-अलङ्कार आदि

ग्रन्थ नं० ७२ ।

१ अलङ्कार संग्रह-अमृतानन्दी । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

\* २ काव्यादर्श-महाकवि दण्डी । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलङ्कार । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### विषय-छन्दः शास्त्र

ग्रन्थ नं० २७७ ।

\* १ वृत्तरत्नाकर-केदारभट्ट । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७७ ।

\* २ शृङ्गारमञ्जरी-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### विषय-नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० १४३ ।

१ नीतिश्लोकसंग्रह-..... । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २०० ।

२ नीतिसारसंग्रह-..... । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-नीति । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४८ ।

\* ३ शतकत्रय-श्री भर्तृहरि । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति आदि । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि०शक १७११ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंद्री चन्दय्य सेट्टि हैं ।

ग्रन्थ नं० १२५ ।

४ सुभाषितपद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-सुभाषित । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

## विषय-पुराण

ग्रन्थ नं० २१७।

१ अर्द्धनेमिपुराण-कवि नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७४।

२ अर्द्धनेमिपुराण-कवि नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४।

३ आदिपुराण-महाकवि पंप । पत्र सं०-१२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४८५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसे शालिवाहन शक १४८५ दुर्मति संवत्सर ज्येष्ठ शुक्ल १५, बुधवार के दिन मेलु बंगवाडी के पद्यरस ने लिखकर पूर्ण किया था ।

ग्रन्थ नं० ८।

४ आदिपुराण-महाकवि पंप । पत्र सं०-११३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसे आदिशान्तय्यके पुत्र गुम्मटने लिखा है । उम्मक्क-पम्मक्कने शास्त्रदानके लिये इनसे लिखवाया है ।

ग्रन्थ नं० १७६।

५ आदिपुराण-महाकवि पंप । पत्र सं०-१०१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९८।

६ आदिपुराण-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४६।

७ आदिपुराण-..... । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह कन्नडगद्यरूप है ।

ग्रन्थ नं० २।

८ उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि०शक १८२४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें क्लिष्ट शब्दों का अर्थ भी दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ७४।

९ उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१८६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक ८२४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें ग्रन्थसमाप्तिकाल शकनृपकालानतिसंवत्सरशतेषु अष्टसु चतुर्विंशत्यधिक दुंदुभि सं० कार्तिक कृष्ण ५ । यों लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ७४ ।

१० उच्चरपुस्तक टिप्पणी-..... । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १६३ ।

११ चतुर्विंशतितीर्थकरलघुपुराण-..... । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कई स्तोत्रोका संग्रह हैं । इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंद्री चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य कविदेशके अय्यण हैं ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

१२ चंद्रप्रभपुराण-अगलदेव । पत्र सं०-१८० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४३८ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १४३८, धातु सं०, आषाढ कृष्ण ५, बृहस्पति वारके दिन कोणसूर बिट्टिदेवरसके पुत्र पुट्टदेवरमने इसकी प्रतिलिपि की है ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

१३ चन्द्रप्रभपुराण-अगलदेव । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४८ ।

१४ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-चामुण्डराय । पत्र सं०-१३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १६०२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७३ ।

१५ त्रिषष्टिलक्षणपुराण-श्री चाउण्डराय । पत्र सं०-२०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका रचनाकाल शालि० शक ९०० है । आरगद विद्धार लक्कप्प सेट्टिके पुत्र शान्तण्ण सेट्टिने इसे लिखवाकर महेन्द्रकीर्तिके शिष्य अनन्तकीर्तिके शास्त्रदान किया है ।

ग्रन्थ नं० ४४ ।

१६ तीर्थकरपुराण-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१७ धर्मनाथपुराण-पण्डित बाहुबली । पत्र सं०-२३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १३४२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसे कार्कलेके भट्टारक ललितकीर्तिके शिष्य भंडारी देवर सेट्टिने लिखकर स्थानीय शातिनाथमंदिर को दान किया था ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

१८ नेमिताथपुराण—श्री कर्णप्यार्य । पत्र सं-१५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मनियण्ण हैं । यह समन्तभद्रदेवके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

१९ पद्मपुराण—आचार्य रविषेण । पत्र सं-२२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १२०४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके दो पत्र खण्डित हैं ।

ग्रन्थ नं० १८७ ।

२० पुष्पदन्तपुराण—श्री गुणवर्म । पत्र सं-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १४२२ । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार भुजबली हैं ।

ग्रन्थ नं० १२७ ।

२१ रामचन्द्रपुराण—महाकवि अभिनव पंथ । पत्र सं-१३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १३५९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अ शिथिल ।

विशेष-इसमें कई पत्र खण्डित हैं । इसके प्रतिलिपिकार कोपण नगरके सिरियण्ण ह । इस ग्रंथके रचयिता अभिनव पंथ मुनि बालचन्द्रके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २७६ ।

२२ लघुपुराण—..... । पत्र सं-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

२३ वृषभनाथपुराण—हस्तिमल्लि । पत्र सं-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'श्रीपुराण' है ।

ग्रन्थ नं० ५४ ।

२४ वृषभनाथपुराण—हस्तिमल्लि । पत्र सं-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । वस्तु-कागज । लेखनकाल-सन् १९३५ । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-श्रीपुराणसामान्यमाम्नातं हस्तिमल्लिना । तरण्डं सर्वशास्त्राब्धेरखण्डं धारयत्त्वमुम् ॥ इसे पंजिकल्लु पं० अनन्तराजेन्द्र ने लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ४१ ।

२५ संचिप्तचतुर्विंशतितोर्थकरपुराण—चामुण्डराय । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १७४ ।

२६ हरिवंशपुराण—प्रभुराज मंगरस । पत्र सं०-२३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ह । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार काबल गांबके मंजुनाथ

ग्रन्थ नं० २१० ।

२७ हरिवंशपुराण—प्रभुराज मंगरस । पत्र सं०—४२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १८० ।

२८ हरिवंशपुराण—प्रभुराज मंगरस । पत्र सं०—२२२ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—इसके प्रतिलिपिकार बंगर गोत्रके चन्दय्य उपाध्याय हैं ।



### विषय—चरित्र

ग्रन्थ नं० १५५ ।

१ अनन्तकुमारोचरित—वर्णी शान्तण्ण । पत्र सं०—१७ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—शालि० शक १७८६ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इस ग्रन्थके रचयिता वर्णी शान्तण्ण भारंगीपुरके निवासी हैं । प्रतिलिपिकार मूडबिंदी पडुबसदि पुरोहित पद्मय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७५ ।

२ अनन्तकुमारीचरित—वर्णी शान्तण्ण । पत्र सं०—२८ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४७ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६१ ।

३ अहिंसाचरित—वर्णी पायण्ण । पत्र सं०—३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—२० । अक्षर प्रतिपंक्ति—२६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । वस्तु—कागज । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १५५ ।

४ अहिंसाचरित—वर्णी पायण्ण । पत्र सं०—१८ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—६४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—शालि० शक १७८६ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इस ग्रन्थ का रचनाकाल शालि० शक १३६९ है । इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंदी पडुबसदि पुरोहित पद्मय्य इन्द्र के पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७५ ।

५ अहिंसारचित—वर्णी पायण्ण । पत्र सं०—२९ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४७ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसके प्रतिलिपिकार किपुर के गुम्मय्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

६ अंजनादेवीचरित—मायण्ण सेट्टि । पत्र सं०—११४ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—विरोधकृत् सं०, चंद्र शु १० के दिन स्वामी विद्यानन्दी के शिष्या ज्ञानमती अब्बे के लिये मायण्ण सेट्टि ने इस की रचना की ।

ग्रन्थ नं० १३५ ।

७ चन्द्रप्रभचरित-कवि दोड्डय्य । पत्र सं०-१९१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह चरित्र 'सामान्य' पद्य में है ।

ग्रन्थ नं० ४६ ।

८ जिनदत्तरायचरित-कवि पद्यनाभ । पत्र सं० ९० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है ।

ग्रन्थ नं० १०५ ।

९ जिनदत्तरायचरित-कवि पद्यनाभ । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अतिशयिल । विशेष-इसमें बीच २ के कई पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० १२४ ।

१० जिनदत्तरायचरित-कवि पद्यनाभ । पत्र सं०-८१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १६९० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंदी ब्रह्मय्य हैं । इसमें ७ से १० तक के चार पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० १८३ ।

११ जिनदत्तरायचरित-कवि पद्यनाभ । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६१ ।

१२ जिनदत्तरायचरित-कवि पद्यनाभ । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २६४ ।

१३ जिनदत्तरायचरित-कवि पद्यनाभ । पत्र सं०-११५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा- सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २२१ ।

१४ जीबन्धरषट्पदि-कवि बोम्मरस । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'षट्पदि' कन्नड छन्दका एक भेद है ।

ग्रन्थ नं० १११ ।

१५ जीबन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-२१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका रचनाकाल शालि० शक १३४५ है । इसकी रचना पैनगोंडे श्री शांतिनाथ चैत्यालयमें हुई है ।

ग्रन्थ नं० १४१

१६ जीबन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल- X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शयिल ।

विशेष-इसमें प्रथम पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० १६९ ।

१७ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१८ ।

१८ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-ग्रंथ रचनाकाल शालि० शक १३४५ है । इसके प्रतिलिपिकार पम्मण है ।

ग्रन्थ नं० २२७ ।

१९ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मुनिभद्रदेवके शिष्य लघु मुनिभद्रदेव हैं । इसकी प्रतिलिपि क्षेमपुर में हुई है ।

ग्रन्थ नं० २५९ ।

२० जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६७ ।

२१ जीवन्धरषट्पदि-कवि भास्कर । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

ग्रन्थ नं० १३९ ।

२२ जैमिनिभारत-कवि लक्ष्मीश । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०० ।

२३ ज्ञानचन्द्रचरित-वर्णा पायण्ण । पत्र सं०-१७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-१५८१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका रचनाकाल शालि० शक १५८१ है ।

ग्रन्थ नं० १८८ ।

२४ ज्ञानभास्करचरित-नेमण्ण । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इस ग्रंथका रचनाकाल शालि० शक १४८२ है ।

ग्रन्थ नं० २६० ।

२५ ज्ञानभास्करचरित-नेमण्ण । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७४५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २६२ ।

२६ ज्ञानचन्द्राभ्युदय-मुनि कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५५ ।

२७ त्रैलोक्यभूषणचरित-चन्द्रय्य उपाध्याय । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७८६ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके रचयिता मूडबिद्री निवासी हैं। प्रतिलिपिकार भी मूडबिद्री पडुबसदि पुरोहित पद्यय्य इन्द्र के पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० २६०।

२८ त्रैलोक्यभूषणचरित-श्री चन्दय्य उपाध्याय। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६१।

२९ धन्यकुमारचरित-कवि आदिनाथ। पत्र सं०-४६। पंक्ति प्रतिपत्र-२०। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १५५।

३० धन्यकुमारोचरित-कवि आदिनाथ। पत्र सं०-२१। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक१७८६। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इस ग्रन्थके रचयिता आदिनाथ चङ्गदेशके चप्परग्रामके निवासी हैं। प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पडुबसदि पुरोहित पद्यय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं।

ग्रन्थ नं० १७५।

३१ धन्यकुमारचरित-कवि आदिनाथ। पत्र सं०-२८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इस ग्रन्थके रचयिता चंगनाडु चप्पर गांवके निवासी हैं।

ग्रन्थ नं० ६८।

३२ नागकुमारपंचमोचरित-आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ३०।

३३ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली। पत्र सं०-२००। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११८।

३४ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली। पत्र सं०-२१६। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-५४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक १७२८। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री चन्दय्य उपाध्याय हैं।

ग्रन्थ नं० १४२।

३५ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली। पत्र सं०-१५३। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-८२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-अति शिथिल।

विशेष-इसमें बीच २ के कई पत्र नहीं हैं।

ग्रन्थ नं० १५३।

३६ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली। पत्र सं०-१७९। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६९ ।

३७ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० १७८ ।

३८ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-२२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार हामि गुम्मत सेट्टिके पुत्र कोडे अंतर्ण सेट्टि है ।

ग्रन्थ नं० २०१ ।

३९ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० १८२ ।

४० नागकुमारषट्पदि-विजयण । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।  
ग्रन्थ नं० २३२ ।

४१ नागकुमारषट्पदि-मुनि कल्याणकोति । पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
ग्रन्थ नं० १७९ ।

४२ नेमिजिनेशसंगति-प्रभुराज मंगरस । पत्र सं०-२३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मालद बसदि ब्रह्मय्य इन्द्रके पुत्र चन्दप्प इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६२ ।

४३ बाहुबलिचरित-पण्डित चिक्कण । पत्र सं०-११५ । पंक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड षट्पदि । विषय-चरित्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० २२७ ।

४४ बाहुबलिचरित-पण्डित चिक्कण । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ६० ।

४५ बुद्धिसागरचरित-कवि चिदानन्द । पत्र सं०-१०५ । पंक्ति प्रतिपत्र-२१ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० १६० ।

४६ बुद्धिसागरचरित-कवि चिदानन्द । पत्र सं०-१५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० १०९ ।

४७ भरतेशवैभव-रत्नाकरवर्णी । पत्र सं०-१६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ११० ।

४८ भरतेशवैभव-रत्नाकरवर्णी । पत्र सं०-२५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-कोल्लं सं०८७१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-समन्तभद्रके शिष्य, नन्दावरके निवासी चन्द्रमने शान्तिकीर्तिके ग्रन्थपर से इसकी प्रतिलिपि की है।

ग्रन्थ नं० १७७।

४६ भरतेशचैभभव-रत्नाकरवर्णी। पत्र सं०-१२९। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-९६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १५९।

५० यशोधरचरित-चन्द्रण वर्गी। पत्र सं०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-४१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसमें प्रारम्भके चार पत्र नहीं हैं। यह षट्पदि पद्यमें है। इसमें जैनव्रतकथाओंका भी संग्रह है। इनमें 'शक्तिगी' और 'मिद्वचक्रव्रतविधान' की कथायें संस्कृतमें शेष कन्नडमें हैं।

ग्रन्थ नं० ८५।

५१ रत्नशेखरचरित-पट्टाभिराम। पत्र सं०-११८। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६१।

५२ रोहिणीचरित-जिनचन्द्र। पत्र सं०-३८। पंक्ति प्रतिपत्र-२०। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह जिनचन्द्र मेरुनन्दीके शिष्य है।

ग्रन्थ नं० ६१।

५३ लोभदत्तचरित-कवि नेमरस। पत्र सं०-३९। पंक्ति प्रतिपत्र-२०। अक्षर प्रतिपंक्ति-२६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २६२।

५४ लोभदत्तचरित-कवि नेमरस। पत्र सं०-४०। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-३६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-शिथिल।

ग्रन्थ नं० ६८।

५५ वधेमानचरित-कवि पद्य। पत्र सं०-७०। पंक्ति प्रतिपत्र १८। अक्षर प्रतिपंक्ति-२७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २४।

५६ वसंतिलकाचरित-कवि नेमिचन्द्र। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-९५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २३०।

५७ विजयकुमारीचरित-श्रुतकीर्तिदेव। पत्र सं०-६६। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-६६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसका रचनाकाल शालि० शक १४८८ है। इसके प्रतिलिपिकार शान्तिसागरवर्णी है।

ग्रन्थ नं० १५७।

५८ विजयकुमारीचरित-श्रुतकीर्तिदेव। पत्र सं०-७८। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक १४८८। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४५।

५९ श्रीपालचरित-इन्द्रदेवरस। पत्र सं०-३२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-चरित्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १५५ ।

६० श्रीपालचरित-इन्द्रदेवरस । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७८६ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इस ग्रन्थके प्रतिलिपिकार मूडविद्री पडुबसदि पुरोहित पद्यव्य इन्द्रके पुत्र चन्दण इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७५ ।

६१ श्रीपालचरित-इन्द्रदेवरस । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

६२ श्रीपालचरित-कवि वर्धमान । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कई पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० १०४ ।

६३ श्रेणिकचरित-जिनदेवण । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'सांगत्य'पद्य में है ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

६४ श्रेणिकचरित-जिनदेवण । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

विशेष-इसमें कई पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

६५ होसचरित-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसे आनन्द सं० पुष्य बुधवार, भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य हिरिय माणिकस्वामी ने पद्यश्री अजिका के लिये कारडिगे जिनमंदिरमें लिखकर संपूर्ण किया था ।

### विषय-कथा

ग्रन्थ नं० २०९ ।

अष्टांगकथादिसग्रह-..... । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१३ ।

२ गोरव्रतकथा-..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

३ चन्द्रनषाष्टकथा-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

४ चन्द्रषष्ठिकथा-आचार्य माधवचन्द्र । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह माधवचन्द्र आ० नेमिचन्द्रदेवके शिष्य, मेघचन्द्र सिद्धान्तदेवके प्रशिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २३५ ।

५ चन्द्रषष्ठ्यादिप्रतकथा-.....। पत्र सं०-५०। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें ६ व्रतकथाएँ हैं।

ग्रन्थ नं० २४६ ।

६ जयकुमारकथा-.....। पत्र सं०-२०। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-यह गद्यरूप में है।

ग्रन्थ नं० १९।

७ त्रैलोक्यविधानकथा-अभ्रदेव। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-७६। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

इयं कथाभ्रदेवेन कथिता दुःखहारिणी।

एवं संस्तुयते भव्यलभ्यते मोक्षसंपदम् ॥ (?)

ग्रन्थ नं० २२६।

८ धर्माश्रुत-नयसेनदेव। पत्र सं०-१५७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५३।

९ धर्माश्रुत-नयसेन। पत्र सं०-१३८। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-७२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७३।

१० पुण्यास्रवकथा-मुनि रामचन्द्र। पत्र सं०-२१। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१३५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७३।

११ पुण्यास्रवकथा-कवि नागराज। पत्र सं०-११७। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१३५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २५१।

१२ पञ्चमोन्नतकथा-.....। पत्र सं०-१२। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-६२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९।

१३ रत्नत्रयकथा-आचार्य पद्मनन्दी। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-११३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ४९।

१४ रुक्मिणीकथा-पण्डित सोमदेव। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-११३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६५।

१५ षड्वाराधनाकथा-आचार्य शिवकोटि। पत्र सं०-२७। पंक्ति प्रतिपत्र-१८। अक्षर प्रतिपंक्ति-१६। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २८।

१६ व्रतकथा-.....। पत्र सं०-१६९। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१२१। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-कथा। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष—इसमें 'नंदीश्वरव्रतकथा' आदि ७८ कन्नड कथाएँ हैं। साथ-साथ रत्ननन्दिविरचित 'पत्यव्रतविधान' की संस्कृत कथा भी।

ग्रन्थ नं० ५५ ।

१७ व्रतकथा—..... । पत्र सं०—४०१ । पंक्ति प्रतिपत्र—१८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—कागज । लेखनकाल—सन् १९२७ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—इसमें ८३ कथाएँ हैं । इसके प्रतिलिपिकार मूढविद्वी पद्मवसदि पाचप्प इंद्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १२६ ।

१८ व्रतकथा—..... । पत्र सं०—७५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—इसमें ७३ कथाएँ हैं । इसे सणम्मि सेट्टितिने प्रतिलिपि कराकर ज्ञानचन्द्रदेवको शास्त्रदान किया है ।

ग्रन्थ नं० १२९ ।

१९ व्रतकथा—..... । पत्र सं०—१७५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—इसमें 'पुष्पांजलिव्रत' आदि ४३ व्रतकथाएँ हैं ।

ग्रन्थ नं० २५० ।

२० व्रतकथा—..... । पत्र सं०—१२० । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—इसमें 'षोडशभावनाव्रतकथा' आदि ४० कथाएँ हैं ।

ग्रन्थ नं० ४३ ।

२१ सम्यक्त्वकौमुदी—मंगरस । पत्र सं०—८३ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२९ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५८ ।

२२ सम्यक्त्वकौमुदी—मंगरस । पत्र सं०—३१२ । पंक्ति प्रतिपत्र—१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२३ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—कागज । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९२ ।

२३ सम्यक्त्वकौमुदी—मंगरस । पत्र सं०—१२५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—शालि० शक १४३१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १८२ ।

२४ सम्यक्त्वकौमुदी—मंगरस । पत्र सं०—५८ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—८९ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—यह षट्पदिपद्यमें है ।

ग्रन्थ नं० २२७ ।

२५ सम्यक्त्वकौमुदी—मंगरस । पत्र सं०—६० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९७ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इस ग्रन्थका रचनाकाल शालि० शक १४३१ है ।

ग्रन्थ नं० २३१ ।

२६ सम्यक्त्वकौमुदीकथा—मुनि धर्मकीर्ति । पत्र सं०—४९ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७२ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

२७ सिद्धचक्रप्रतकथा-.....। पत्र सं-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

२८ सुगंधदशमोकथा-.....। पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७६ ।

२९ सिंहप्रायोपगमन-केशियण्ण । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## विषय-इतिहास

ग्रन्थ नं० २२२ ।

१ गोम्मटेश्वरचरित-चन्द्रम । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७६१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कार्कलस्थ बाहुबलीस्वामीके मस्तकभिषेकका वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० २६१ ।

२ गोम्मटेश्वरचरित-चन्द्रम । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७६० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७५ ।

३ गोम्मटेश्वरचरित-गुरुराम । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-मूडबिद्रीके शासक चन्द्रशेखर चोटने वेणूरस्थ श्री बाहुबली स्वामीका मस्तकभिषेक करवाया था । इसमें उसीका वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० १८८ ।

४ जीर्णोद्धारचरित्र-.....। पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मूडबिद्री त्रिभुवनबूडामणि नामक श्री चन्द्रनाथ मंदिरका जीर्णोद्धार विषयक वर्णन है । इसका रचनाकाल शालि० शक १६६८ है । प्रकाशनीय है ।

ग्रन्थ नं० २५१ ।

५ तीर्थयात्राचरित्र-चन्द्योपाध्याय । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें दक्षिण कन्नड जिल्लाके जैनमन्दिरोंका वर्णन है ।

ग्रन्थ नं० २०० ।

६ पंपानेवोगद्य-कविराज चन्द्रशेखर । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १७४ ।

७ बेल्लिबीडुचरित्र-श्री चन्द्रम्य उपाध्याय । पत्र सं० ३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २१९ ।

८ लक्ष्मणबंगप्रशस्ति-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### विषय-आयुर्वेद

ग्रन्थ नं० २७ ।

१ कल्याणकारक-उग्रदित्य । पत्र सं०-१९५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १६४ ।

२ खगेन्द्रमणिदर्पण-मंगरस । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २११ ।

३ खगेन्द्रमणिदर्पण-मंगरस । पत्र सं०-८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

४ धन्वन्तरिनिघंटु-धन्वन्तरि । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२० ।

५ धन्वन्तरिनिघंटु-धन्वन्तरि । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यककोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५६ ।

६ रसराजचिन्तामणि-..... । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें बीच बीच के पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ४५ ।

७ वैद्य-..... । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४४ ।

८ वैद्यनिघंटु-..... । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-वैद्यककोश । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम औषधिकोश भी है । इसमें अकरादिक्रमसे शब्दोंका अर्थविवरण दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ६३ ।

९ वैद्यचिकित्सा-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड (कन्नड) । विषय-वैद्यक । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६९ ।

१० वैद्यसार-..... । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-२१ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३२ ।

११ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१०२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१२ वैद्यसंग्रह-भोजराज । पत्र सं० १८० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ५० ।

१३ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

१४ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८३ ।

१५ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

ग्रन्थ नं० ९७ ।

१६ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

१७ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२३ ।

१८ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार सिद्धप्य है ।

ग्रन्थ नं० १४६ ।

१९ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

ग्रन्थ नं० १९६ ।

२० वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३६ ।

२१ वैद्यामृतसंग्रह-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २३८।

२२ वैद्यामृतसंग्रह-.....। पत्र सं०-१३२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वैद्यक। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११५।

२३ वैद्यमंत्रवादसंग्रह-.....। पत्र सं०-६०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-वैद्यक तथा मंत्रवाद। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य।



### विषय-ज्योतिष

ग्रन्थ नं० २७०।

१ अक्षरप्रश्चिन्तामणि-.....। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-५। अक्षर प्रतिपंक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० १६६।

२ कर्मपरीक्षा-कविमाल नागार्जुन। पत्र सं०-१९। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३३। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें 'मरणसूचना', 'नेत्ररफुरण', भुजस्पंदन' आदि का शुभाशुभ फल दिया गया है।

ग्रन्थ नं० २१५।

३ करणप्रकाशिका-गणक ब्रह्मदेव। पत्र सं०-१७। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २७।

४ कालज्ञान-.....। पत्र सं०-६। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा अशुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ११३।

५ केवलज्ञानचूडामणि-आचार्य समन्तभद्र(?) पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४८।

६ केवलज्ञानचूडामणि-आचार्य समन्तभद्र(?) पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-५७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४८।

७ गर्भप्रश्न-.....। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-६४। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह ग्रन्थ कन्द पद्यमें है।

ग्रन्थ नं० ११३।

८ गर्भप्रश्नशास्त्र-.....। पत्र सं०-३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-यह ग्रन्थ कन्नड 'कन्द' पद्योंमें है।

ग्रन्थ नं० ११३।

\* ९ गार्ग्यसंहिता-गर्गषि। पत्र सं०-८। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० १४८ ।

\* १० गार्ग्यसंहिता-गर्गषि । पत्र सं०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम

ग्रन्थ नं० ५० ।

११ ब्रह्मशाफल-..... । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६५ ।

१२ ब्रह्मशाफलाफल-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

१३ चन्द्रोन्मीलनप्रश्न-..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४९ ।

१४ जातकसार-..... । पत्र सं०-१३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १७३ ।

१५ जिनेन्द्रमाला..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड गद्य में अर्थ मात्र है ।

ग्रन्थ नं० ४७

१६ ज्योतिर्ज्ञानविधि-श्रीधराचार्य । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

मंगलाचरण

प्रणिपत्य वर्षमानं स्फुटकेवलदृष्टतत्त्वमीशानम् । ज्योतिर्ज्ञानविधानं वक्ष्ये स्वायम्भुवं सम्यक् ।

ग्रन्थ नं० ५७ ।

१७ ज्ञानप्रदीपिका-..... । पत्र सं० २२ । पंक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

१८ ज्ञानप्रदीपिका-पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र ; लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११३ ।

१९ ज्ञानप्रदीपिका-..... । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४८ ।

२० ज्ञानप्रदीपिका-..... । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १७३ ।

२१ ज्ञानप्रदीपिका-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

२२ दीक्षापटल-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा- सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१५ ।

२३ देवद्वयल्लभ-श्रीपति । पत्र सं०-७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७ ।

२४ नरपिंगलि-शुभचन्द्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह शकुन-शास्त्र है ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

२५ नक्षत्रतिलक-..... । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १६७९ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंद्री सुराल चन्दय्य है ।

ग्रन्थ नं० ९५ ।

२६ पंचांगफल-..... । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

मंगलाचरण

प्रणम्य शिरसा नित्यं देवदेवं जिनेश्वरम् । यस्वार्थं संप्रवक्ष्यामि पंचांगफलमुत्तमम् ।

ग्रन्थ नं० । ३९ ।

२७ भाषाकेवलीप्रश्न-..... । पत्र सं० । ९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० । १४९ ।

२८ मुहूर्तदर्पण-पण्डित माधवभट्ट । पत्र सं०-१७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें नं० १ से २० तकके पत्र नहीं हैं । कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

२९ शंक्रुस्थापनादिमुहूर्त-..... । पत्र सं० ७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

३० सामुद्रिकशास्त्र-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-२३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

मंगलाचरण ।

आदिदेवं नमस्कृत्य सर्वज्ञं सर्वदशिनम् । सामुद्रिकं प्रवक्ष्यामि क्षुभांशं पुरुषस्त्रियोः ॥

ग्रन्थ नं० १६७ ।

३१ सुप्रीवमतशकुन-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह कंद पद्यमें है । प्रकाशनीय है ।



## विषय-मन्त्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० ८९।

१ गणितविलास-कवि चन्द्रम। पत्र सं-३२। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-५। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गणित। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० २१८।

२ गणितविलास-कवि चन्द्रम। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-३२। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-गणित। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें कन्नड टीका सहित 'नाममाला' भी है।

## विषय-मन्त्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० २१।

१ उत्पातदोषशान्तिकर्म-.....। पत्र सं०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

अथ शान्तिजिनं नत्वा शान्तिकान्तिसुखप्रदम्।

उत्पातदोषशान्त्यर्थं शान्तिकर्म प्रयुज्यते ॥

ग्रन्थ नं० ६३।

२ कामचाण्डालिनीकल्प-आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-२९। अक्षर प्रतिपंक्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० ७१।

३ कामचाण्डालिनीकल्प-आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ६४।

४ गणधरवलयकल्प-.....। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-२४। अक्षर प्रतिपंक्ति-४०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। वस्तु-कागज। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य।

ग्रन्थ नं० २४८।

५ गणधरवलययादिमन्त्रसंग्रह-.....। पत्र सं०-१७। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-४२। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-शालि० शक १७११। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूढबिद्री पडुर्बंसदि पद्यय्य इन्द्र है।

ग्रन्थ नं० १५।

६ उवालिनीकल्प-आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र सं०-१६। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-६३। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

ग्रन्थ नं० ७१।

७ उवालिनीकल्प-आचार्य इन्द्रनन्दी। पत्र सं०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-८०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-७६१। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम।

विशेष-इसके रचयिता इन्द्रनन्दी आचार्य बप्पनन्दीके शिष्य हैं। इसे खेटकटकमें अक्षयतृतीयाके दिन रखा है।

ग्रन्थ नं० १५ ।

८ ज्वालिनिकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

९ ज्वालिनिकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १०८० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-व्योमवसुरन्ध्रमितके वर्षे शकभूभुजे विलम्ब्यडे ।

कल्पो ज्वालिन्याख्यो लिखितः श्रीमल्लिषेणकृतः ॥

ग्रन्थ नं० १५ ।

१० ब्रह्मविद्याविधि-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । मंगलाचरण ।

श्रीमद्वीर महासेनं ब्रह्माणं पुरुषोत्तमम् । जिनेश्वरं च त वन्दे मोक्षलक्ष्म्येकनायकम् ॥ १ ॥

चन्द्रप्रभजनं नत्वा सर्वज्ञं त्रिजगद्गुरुम् । ब्रह्मविद्याविधि वक्ष्ये यच्चविद्योपदेशतः ॥ २ ॥

ग्रन्थ नं० ८१ ।

११ बालग्रहचिकित्सायन्त्रमन्त्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

१२ बीजाक्षरकोष-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

१३ भैरवपद्मावतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

१४ भैरवपद्मावतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

१५ भैरवपद्मावतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें बंधुषेण की संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १५८ ।

१६ भैरवपद्मावतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २५ ।

१७ मुद्रालक्षणसंग्रह-..... । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'अक्षरकेवलप्रश्न' तथा कई कन्नड पद्योंके पत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २६९ ।

१८ मंत्रशास्त्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

१९ विद्यानुवादांग-..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २६५ ।

२० विद्यानुवादांग-..... । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अतिशिथिल ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

२१ सरस्वतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इस ग्रन्थके रचयिता मल्लिषेण श्रीषेणके पुत्र या शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

२२ सरस्वतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

२३ सरस्वतीकल्प-मुनि विजयकीर्ति । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

## विषय-लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० ४७ ।

१ जम्बूद्विषयवृत्ति [ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ]-आचार्य परमन्दी । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५१ ।

२ तिलोयसार [त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ९७ ।

३ लोकस्वरूप-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-१७८२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री चोलसेट्टि बसविके पुरोहित पाषण्य इन्द्र हैं ।



### विषय-लक्षण तथा समीक्षा

ग्रन्थ नं० १३ ।

१ अश्वपरीक्षा-श्री अभिनवचन्द्रम् । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अश्वलक्षण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-यह ग्रंथ कन्नड कन्दपद्यों में रचा गया है । इसमें प्रथम पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

२ रत्नशास्त्र-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-रत्नपरीक्षा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

मंगलाचरण ।

रत्नत्रयाय भुवनत्रयवर्दिताय । कृत्वा नमः समवलोक्य च रत्नशास्त्रम् ॥

रत्नप्रवेकमधिकृत्य विमुच्य फल्गून् । संक्षेपमात्रमिति वृद्धजनोपदिष्टम् ॥

ग्रन्थ नं० ६४ ।

३ नवरत्नपरीक्षा-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-२२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-रत्नपरीक्षा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

४ संगीतलक्षणा-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-संगीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

मंगलाचरण ।

ये चक्रिणः स्युनिधयो नवेषु । शंखाभिधानो नवमो निधिर्नैः ॥

काव्यानि तूर्याणि च नाटकानि । सर्वाणि तत्रैव समुद्भवन्ति ॥



### विषय-क्रियाकाण्ड

ग्रन्थ नं० १० ।

१ क्रियाकलाप-आचार्य कोण्ड कुंद तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

२ क्रियाकलाप-आचार्य कोण्डकुन्द । और पूज्यपाद । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । तथा प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक । १७६२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें मुनि बालचन्द्रकी कन्नड टीका है । शालि० शक १७६२ शुभकृत् सं० पुष्य कृष्ण ३० चन्द्रवारको इसे अलुबन्दगर्गिड पार्श्व सेट्टिके पुत्र, कार्कलके भट्टारक ललितकीर्तिके शिष्य पद्यय्य सेट्टिने श्री शांतिसागरवर्णीके लिये लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ८४ ।

३ क्रियाकलाप-आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्रसं०-१०० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'दशभक्ति' 'पञ्चस्तोत्र' तथा 'तत्त्वार्थ सूत्र' भी [सटिप्पण] हैं ।

ग्रन्थ नं० १५२ ।

४ क्रियाकलाप-आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्र सं०-११५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और प्राकृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें [कन्नड टीका सहित,] 'दशभक्ति' 'पंचस्तोत्र' और 'स्वयंभूस्तोत्र' आदि हैं । इसके अन्तर्में तामिल लिपिके दो पत्र और हैं ।

ग्रन्थ नं० २२९ ।

५ क्रियाकलाप-आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्र सं०-७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'दशभक्ति' 'स्वयंभूस्तोत्र' 'सहस्रनाम' आदि [कन्नड टीका सहित] हैं ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

६ क्रियाकलाप-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें श्री आशाधरकृत 'सुप्रभातस्तोत्र', 'स्वप्नावली', 'दशभक्ति' आदि हैं । इसकी प्रतिलिपि बेलतङ्गडिके बाचणने की थी ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

७ क्रियाकाण्डचूलिका-आचार्य पद्यनन्दी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'पद्यनन्दपंचशति'का एक प्रकरण है ।

ग्रन्थ नं० ७६ ।

८ दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द । और पूज्यपाद । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'स्वयंभूस्तोत्र' तथा 'पंचस्तोत्र' भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २४३ ।

९ दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्र सं०-५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-अति शिथिल ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकर श्री गुणभद्रदेवके शिष्य माणिक्यदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० २१६ ।

१० दशभक्त्यादिसंग्रह-आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३३ ।

११ दशभक्त्यादिसंग्रह-आचार्य कोण्डकुन्द और पूज्यपाद । पत्र सं०-२५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'दशभक्ति' 'स्वयंभूस्तोत्र' आदि [कन्नड टीका सहित] हैं ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

१२ दशभक्त्यादिसंग्रह—मुनि वर्धमान । पत्र सं० ६७ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—क्रियाकाण्ड । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—अति शिथिल ।

विशेष—इसमें इतिहास से संबन्ध रखने वाली बहुतसी बातें हैं । ग्रन्थ प्रकाशनीय है ।

ग्रन्थ नं० ५६ ।

१३ दशभक्त्यादिसंग्रह—मुनि वर्धमान । पत्र सं० ९३ । पंक्ति प्रतिपत्र—१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३४ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—क्रियाकाण्ड । वस्तु—कागज । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० १३८ ।

१४ पडिकमण [प्रतिक्रमण]—..... । पत्र सं०—११ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—क्रियाकाण्ड । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ७६ ।

१५ पडिकमण [प्रतिक्रमण]—..... । पत्र सं०—१० । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—क्रियाकाण्ड । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ११७ ।

१६ श्रुतभक्ति—पण्डित आशाधर । पत्र सं०—३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—क्रियाकाण्ड । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ११७ ।

१७ सिद्धभक्ति—पण्डित आशाधर । पत्र सं०—३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—क्रियाकाण्ड । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।



## विषय—स्तोत्र

ग्रन्थ नं० २४३ ।

१ अकलंकस्तोत्र—भट्टाकलंकदेव । पत्र सं०—२ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० ११७ ।

२ अष्टकसंग्रह—..... । पत्र सं०—१० । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—स्तोत्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष— इसमें चारणाष्टक चन्द्रनाथाष्टक गुम्फटाष्टक चतुर्विंशतितीर्थकराष्टक शान्तिनाथाष्टक आदि कई अष्टक हैं ।

ग्रन्थ नं० २०० ।

३ अष्टकसंग्रह—..... । पत्र सं०—३२ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—८३ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—स्तोत्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।  
ग्रन्थ नं० २४३ ।

४ अष्टकसंग्रह—..... । पत्र सं०—१८ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत और कन्नड । विषय—स्तोत्र । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४८ ।

५ अष्टकसंग्रह-..... । पत्र सं०-५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७११ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिदो पडुयदि पण्य्य इन्द्र है ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

६ अर्हद्भक्ति-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २०० ।

७ श्रीगुरुशतक-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२१ ।

८ चतुर्विंशतिस्तव-केशवसेन । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २०० ।

९ श्रीचन्द्रचूडामणिशतक-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह प्रकाशनीय है । इसमें ६६ पद्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

१० चन्द्रप्रभस्वामिघोष-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष इस लेखक नेमण्ण उपाध्याय हैं ।

ग्रन्थ नं० २६६ ।

११ छत्तीसरत्नमाला-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

१२ जिनशतक-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें नरसिंह भट्ट की संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

१३ जिनशतक-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें नरसिंहभट्ट की संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७६ ।

१४ जिनसहस्रनामस्तोत्र-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३८ ।

१५ दृष्टाष्टकादिसंग्रह-..... । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'पंचस्तोत्र', 'पंचपरमेष्ठिव्याख्यान', 'तत्त्वार्थसूत्र' और 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २४८ ।

१६ पद्मावतीदेवीस्तोत्रसंग्रह—..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत और कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७११ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार भूडबिंद्री पडुवसदि पद्यय्य इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २०७ ।

१७ भक्तामरस्तोत्र-आचार्य मानतुंग । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें श्लोक नं० ३२ से 'गंभीरतारवरवपूरित' इत्यादि चार श्लोकोके स्थानपर 'नाथापरः परमधैर्यं' इत्यादि भिन्न ही चार श्लोक दिये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० २६६ ।

१८ योगाष्टक-श्री उदयार्क । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४३ ।

१९ श्रुतदेवतास्तवन-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २४२ ।

२० षडारचक्र-आचार्य बेवनन्दी । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम 'सिद्धिप्रियस्तोत्र' है ।

ग्रन्थ नं० २०८ ।

२१ समवसरणस्तोत्र-मुनि विष्णुसेन । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-शिथिल । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १६१ ।

२२ समवसरणाष्टकादिसंग्रह—..... । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०८ ।

२३ सहस्रनाम—..... । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसका अपर नाम 'लघुसहस्रनाम' है ।



### विषय-भजन तथा गीत

ग्रन्थ नं० ९० ।

१ अभिमन्युयज्ञगान—..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७५ ।

२ आदिनाथयज्ञगान-श्री सदानन्द । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

३ उदयरागपदसंग्रह-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपत्र-७२ । लिपि-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०७ ।

४ गीतवीतराग-श्री चारुकीर्ति । पत्र सं०-९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २०३ ।

५ जिनभजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७८ ।

६ नागार्णोताण्डवादिसंग्रह-..... । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्तिदेवीके समस्यापद्य भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १०८ ।

७ पद्मावतीयज्ञगान-श्री बाहुबली । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६० ।

८ पद्मावतीयज्ञगान-श्री राज्जूर भट्ट । पत्र सं०-४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १७४५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० २७६ ।

९ पारिजातयज्ञगान-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ११५ ।

१० रामायणयज्ञगान-..... । पत्र सं०-१५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'भारतयज्ञगान' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७२ ।

११ शोभनपद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २३९ ।

१२ शोभनसंग्रह-..... । पत्र सं०-१५५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कुछ भजन भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २६३ ।

१३ शोभनपद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विषय-प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० ८२ ।

१ लोकोपकारक-चामुण्डराय । पत्र सं०-१८४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-शालि० शक १५५४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है । गोवैद्य अश्ववैद्य आदि सब तरह की चिकित्साएं इसमें प्रतिपादित हैं । इसके प्रतिलिपिकार अप्पय हैं ।



## मूडविद्रीके अन्य ग्रन्थभण्डार

### विषय-सिद्धान्त

ग्रन्थ नं० ३२ ।

१ कम्मपयडि [कर्मप्रकृति]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि मूडविद्री ।

विशेष-यह गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] का एक अंश है । इसमें 'त्रिलोकसार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १ ।

२ कर्मप्रकृति-..... । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

ग्रन्थ नं० ३२ ।

३ कर्मप्रकृति-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

४ गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें संदृष्टि भी है । प्रति अति प्राचीन है । इसे श्री रेचण्णने लिखवाकर आचार्य माघनन्दीको शास्त्रदान किया था ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

५ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११९ । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडविद्री ।

विशेष-इसमें संदृष्टि भी है । प्रति अति प्राचीन है । इसे श्री रेचण्णने लिखवाकर आचार्य माघनन्दीको शास्त्रदान किया था ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

६ गोम्मटसारादिसंग्रह-आचार्य नेमिचन्द्र आदि । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडविद्री ।

ग्रन्थ नं० ३२ ।

७ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्री ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

८ जयधवल्ला टीका-आचार्य वीरसेन और जिनसेन । पत्र सं०-५१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३८ । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिंदी ।

विशेष-इसके मूल गाथासूत्रोंका नाम कषायप्राभृत है । आचार्य श्री गुणधरने सोलह हजार पदोंके पेञ्ज-पाहुड को संक्षिप्त करके १८० गाथाओंमें इसे रचा है । इसपर आचार्य यतिवृषभने छह हजार परिमित चूर्णी-सूत्र एवं उच्चारणाचार्यने बारह हजार प्रमाण उच्चारणासूत्र नामक टीका लिखी । इसी पर आचार्य वीरसेन और उनके शिष्य जिनसेनने अयधवल्ला नामक बृहटीका बनाई जिसके श्लोक परिमाण ६०००० हैं । प्रारंभ के २०००० पद्य परिमित टीकाको आचार्य वीरसेनने और अर्वाशिष्ट ४०००० पद्य परिमित टीकाको आचार्य जिनसेनने रचा है । इसे चिक्कमय्यके बल्लिसेट्टिने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि पद्मसेनको शास्त्रदान किया है । इस टीकाका रचनाकाल शालि०शक७५८ है । प्रतिलिपिकार भुजबली अण्ण है ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

९ जयधवल्ला टीका-आचार्य वीरसेन और जिनसेन । पत्र सं०-०६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल वीर नि०सं० २४३० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिंदी ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मिरजके पं० गजपति शास्त्रो हैं । उन्होंने वीर नि०सं० २४३० में प्रारम्भ कर वीर० नि० सं० २४३७ माघ सुदी ४ के दिन इसे संपूर्ण किया था ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१० जयधवल्लाटीका-आचार्य वीरसेन और जिनसेन । पत्र सं०-९७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० सं० २४३१ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिंदी ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंदी कलुबसदि शान्तप्प इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १० ।

११ जयधवल्लाटीका-आचार्य वीरसेन और जिनसेन । पत्र सं०-२०९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० सं० २४३१ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिंदी ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंदी देवराज सेट्टि हैं ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

१२ तन्त्रार्थराजवार्तिक-आचार्य भट्टकलक । पत्र सं०-४०० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०८ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० १ ।

१३ द्वावसंगह-[द्वयसंग्रह]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराजसेट्टि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें 'भव्यानुभाहि' नामक कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३२ ।

१४ द०बसंग्रह [द्रव्यसंग्रह]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २ ।

१५ धवलाटीका-आचार्य वीरसेन । पत्र सं०-१४१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३६ । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि जैन पंच, मूडबिद्री ।

विशेष-इस प्रतिको राजा गण्डरादित्यके सेनापति मल्लिदेवने लिखवाकर सिद्धान्तमुनि श्री कुलभूषण को शास्त्रदान किया था ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

१६ धवला टीका-आचार्य वीरसेन । सं०-६०५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-शिथिल । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें बीच २ के सँकड़ों पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० १ ।

१७ धवला टीका-आचार्य वीरसेन । पत्र सं०-५९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति १३८ । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत और संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष-इसके मूलसूत्रों का नाम षडखण्डवंगम है । इसके रचयिता पुष्पदन्त एवं भूतबलि हैं । इसका रचनाकाल शालि०शक ७३८ हैं । इसमें २, ७१ और ७२ नं० के पत्र नहीं हैं । इसको मण्डलीनाड भुजबली गंगेप्रेमिडि की सास देमियक्क ने कोषनीय के प्रसिद्ध दानी जिन्नप्प के द्वारा प्रतिलिपि कराकर बन्निकेरे उत्तुंग जिनबैत्यालय के सिद्धान्तमुनि श्री श्मच्चन्द्रदेव को अपने श्रीपंचमीत्रत की उद्यापना के उपलक्ष में शास्त्रदान किया था ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

१८ धवला टीका-आचार्य वीरसेन । पत्र सं०-१३०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि सं० २४२३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मिरजके पं० गजपति शास्त्री हैं । उन्होंने इसे वीर नि०सं०२४२३ में प्रारंभ कर वीर नि० सं० २४३० में लिखकर संपूर्ण किया है ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

१९ धवला टीका-आचार्य वीरसेन । पत्र सं०-१३९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० सं० २४२६ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री कल्लुबसदि शास्त्रप्प इन्द्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

२० धवला टीका-आचार्य वीरसेन । पत्र सं०-२७६० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष—इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंदी देवराज सट्टि हैं ।

ग्रन्थ नं० १ ।

२१ परमागमसार—..... । पत्र सं०—७ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३२ । लिपि—कन्नड । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—मा० देवराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

विशेष—इसमें वैद्यक तथा 'षोडशभावना' सम्बन्धी ओर भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

२२ महाबन्ध—आचार्य भूतबलि । पत्र सं०—१७६ । पंक्ति प्रतिपत्र—१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१७० । लिपि—प्राचीन कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिंदी ।

विशेष—इसके बीच २ के कुछ पत्र नहीं हैं । इसके प्रतिप्रतिलिपिकार श्री उदयादित्य हैं । इसको राजा शान्तिसेन की पत्नी मल्लिकब्बा देवी ने लिखवाकर अपने श्री पंचमीव्रत की उद्यापना के उपलक्ष में श्री सिद्धान्त मुनि माघनन्दी को शास्त्रदान किया था ।

ग्रन्थ नं० १२ ।

२३ महाबन्ध—आचार्य भूतबलि । पत्र सं०—५१८ । पंक्ति प्रतिपत्र—१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६० । लिपि—नागरी । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । वस्तु—कागज । लेखनकाल—वीर नि० सं० २४४२ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—सिद्धान्त बसदि ।

विशेष—इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंदी वि० लोहनाथ शास्त्री हैं ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

२४ महाबन्ध—आचार्य भूतबलि । पत्र सं०—८८५ । पंक्ति प्रतिपत्र—१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३२ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । वस्तु—कागज । लेखनकाल—वीर नि० सं० २४३९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिंदी ।

विशेष—इसके प्रतिलिपिकार मूडबिंदी पं० नेमिराज सेट्टि हैं ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

२५ लद्धिमार [लब्धमार]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—४१ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०८ । लिपि—प्राचीन कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिंदी ।

विशेष—यह अति प्राचीन प्रति है । इसे श्री रेचण ने लिखवाकर आचार्य माघनन्दी को शास्त्रदान किया है ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

२६ सत्तकम्मपंजिआ—..... । पत्र सं०—२७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१७० । लिपि—प्राचीन कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । वस्तु—ताडपत्र—लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिंदी ।

विशेष—इसके प्रतिलिपिकार श्री उदयादित्य हैं । इसे राजा शान्तिनाथ ने लिखवाकर आचार्य श्री माघनन्दी को शास्त्रदान किया है ।

ग्रन्थ नं० १२ ।

२७ सत्तकम्मपंजिआ—..... । पत्र सं०—६७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५५ । लिपि—नागरी । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । वस्तु—कागज । लेखनकाल—वीर नि० सं० २४४१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—सिद्धान्त बसदि, जैन पंच मूडबिंदी ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री वि० लोकनाथ शास्त्री हैं ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

२८ सप्तकम्मपंजिछा-..... । पत्र सं०-११५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-कागज । लेखनकाल-वीर नि० सं० २४३९ । पूर्ण तथा शुद्ध । भाषा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसति, जैन पंच मूडबिद्री ।

विशेष-इसके प्रतिलिपिकार मूडबिद्री पं० नेमिराज सेट्टि हैं ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

२९ सिद्धन्तालाव [ सिद्धान्तालाप ]-..... । पत्र सं-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२२ । लिपि-प्राचीन कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, मूडबिद्री ।



## विषय-अध्यात्म

ग्रन्थ नं० ३२ ।

१ समाधिशातक-आचार्य पूज्यपाद । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि मूडबिद्री ।



## विषय-धर्म

ग्रन्थ नं० ४ ।

१ आचारसार-बीरनन्दी । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्यनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

२ कल्याणमाला-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें शान्तिनाथ के पंचकल्पाणों का वर्णन है । इसके अतिरिक्त इसमें 'स्वयम्भूस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

३ कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयों का विवरण-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें २२ परीषहजय संबन्धी कुछ पद्य भी हैं ।

ग्रन्थ नं० २५ ।

४ जिनमुनितनय-चन्द्रसागरवर्णी । पत्र सं०-१२ पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्दी ।

विशेष-इसमें 'भक्तामर' 'समवसरण' 'पार्व्वेनाथ' तथा पद्यावतिस्तोत्र के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १ ।

५ तन्त्रार्थसूत्र-आचार्य उमास्वति । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि मडविद्दी ।

विशेष-इसमें 'भक्तामरस्तोत्र' तथा आशीर्वाद पद्य भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १ ।

६ द्वादशानुप्रेक्षा-विजयण्ण । पत्र सं०-८० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-क्षान्तिराज इन्द्र होसबसादि, मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

७ द्वादशानुप्रेक्षा-..... । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

८ नन्दीश्वरद्वीपवर्णन-..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिन-इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडविद्दी ।

विशेष-इसमें ज्योतिष संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

९ पंचनमस्कारभावना-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० ३० ।

१० पंचपरमेश्विस्वरूप-..... । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

११ पंचपरमेश्विस्वरूप-..... । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

१२ यतिधर्म-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्दी ।

विशेष-उसमें 'शीतलव्रत', 'सन्यासविधि', 'सामायिक', तथा श्रावकों की प्रतिमाओं का स्वरूप आदि भी हैं।

ग्रन्थ नं० २३।

१३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-४६। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-१४। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० १।

१४ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र। पत्र सं०-१०। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सायान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है, और 'रत्नाकरशतक [कन्नड], तथा 'गायत्रीव्याख्यान [कन्नड] के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १।

१५ षोडशभावताविवरण-.....। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-सामान्य। प्रतिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष-इसमें 'गुन्मटाष्टक' तथा सरस्वती स्तोत्र आदि के भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० १३।

१६ सज्जनचित्तवल्लभ-मल्लिषेण। पत्र सं०-२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-९४। लिपि कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ३५।

१७ सज्जनचित्तवल्लभ-आचार्य मल्लिषेण। पत्र सं०-४। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-४९। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० ७।

१८ सागारधर्मामृत-पण्डित आशाधर। पत्र सं० २७५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष-इसमें स्वोपन्न संस्कृत टीका भी है :

ग्रन्थ नं० १३।

१९ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ। पत्र सं०-७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-८८। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री।



## विषय-योगशास्त्र

ग्रन्थ नं० ३२ ।

१ ध्यानस्वरूप-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें 'एकत्वसप्तति' स्वरूपसंबोधन तथा 'दृष्टोपदेश' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

२ ध्यानलक्षण-..... । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

३ योगामृत-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-योगशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, हीसबसदि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें 'सरस्वतीस्तात्र' 'सृष्टिवाद' 'ब्राह्मणवाद' तथा 'वृत्तरत्नाकर' के भी कुछ पत्र हैं ।

## विषय-प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० २ ।

१ जिनसंहिता-इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र पडुवसदि मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें पूज्यपाद कृत 'महाभिषेक' [ पत्र सं०-१७ ] भी है ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

२ जिनसंहिता-इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-११४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

३ जिनसंहिता-इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० १ ।

४ प्रतिष्ठाकरूप-महाकलंक देव । पत्र सं०-१०३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-शालि० शक १६५५ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिंदी ।

विशेष-शालि० शक १६५५, अयं संवत्सर आश्वयुज कृष्ण ८ के दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

५ प्रतिष्ठाकल्प-भट्टकलकदेव । पत्र सं०-१८२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १२ ।

६ प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणी-कुमुदेन्दु । पत्र सं०-१६९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पयनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

७ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पयनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

८ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पयनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

९ प्रतिष्ठासरोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र । पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी भी है ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

१० प्रतिष्ठासरोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा क्षणिक । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

## विषय-आराधना, पूजापाठ, तथा व्रतविधान

ग्रन्थ नं० ८ ।

१ अनन्तव्रतविधान-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पयनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'अवपरीक्षा' तथा स्वान आदि के वाक्य के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २९ ।

२ आराधनासंग्रह-..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें बच्चयंघर, गर्भरक्षा, तथा संकरका इन आराधनाओं का संग्रह है ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

३ कछिकुस्त्रस्तधनादिसंग्रह-विद्यानन्दी आदि । पत्र सं०-१२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना तथा पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें कई प्रकार की आराधनाएं तथा पूजाएं संग्रह की गई हैं ।

ग्रन्थ नं० २५ ।

४ नन्दीश्वरपूजा-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

५ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें 'अभिषेकपाठ' 'पंचपरमेष्ठिपूजा' तथा आरती आदि संग्रह किये गये हैं । 'नान्दीमंगल,' तथा आशीर्वादपद्य के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

६ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-८७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । शालि० शक १७३३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें 'अभिषेकपाठ' तथा 'नान्दीमंगल' है । शालि शक १७३३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, श्रावण शुक्ला ७ शनिवार के दिन मूडबिंदी निवासी पडुबसदि पदुमय्य इन्द्र के पुत्र पाचप्प ने स्थानीय चोलसेट्टि बसदि [चैत्यालय] में इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

७ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-१४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें प्रतिष्ठासारसंग्रहोक्त कई पूजाएं संग्रह की गई हैं । इनके अतिरिक्त इसमें 'शान्तिविधान' तथा पण्डित आशाधर कृत 'महाभिषेक' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

८ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें 'संध्यावन्दना' 'अभिषेकपाठ' एवं 'नान्दीमंगल' है ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-१३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें 'महाभिषेक', 'लघुशान्ति', 'षोडश-भाबनापूजा' आदि संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

१० पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-११० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'महाभिषेक' 'विमानशुद्धि' 'वास्तुपूजा' तथा 'शान्तिविधान' है ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

११ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैंकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'नान्दीमंगल' 'त्रिकालतीर्थकरपूजा' तथा 'नन्दीश्वरपूजा' आदि संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० १८ ।

१२ व्रतविधान-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-व्रतविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें १७ व्रतों का विधान है ।



## विषय-न्याय तथा दर्शन

ग्रन्थ नं० ३१ ।

१ युक्तस्थनुशासन-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छनि । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३१ ।

२ नयलक्षण-..... । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ध्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'सप्तभंगी' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३१ ।

\* ३ शारौरिकसूत्र..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

४ षड्दर्शन..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'ब्रह्मपञ्जराराधना' 'चिन्तामणिस्तव' तथा 'आरोग्यचक्र' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।



## विषय-व्याकरण

ग्रन्थ नं० १६ ।

१ काशिकावृत्तिविवरणपंचिका-आचार्य जिनेन्द्रबुद्धि । पत्र सं०-२१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री ।

मंगलाचरण-

जयन्ति ते सदा सन्तं सत्त्वे या यैरुपाजितम् । गुणानां सुमहद्वन्द्वं दोषाणां च विवर्जितम् ॥

अन्यतः सारमाकृष्य कृतैषा काशिका यथा । वृत्तिरस्य यथाशक्ति क्रियते पंचिका मया ॥

ग्रन्थ नं० २ ।

२ गण्पाठ-..... । पत्र सं०-११३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

३ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । वस्तु-ताडपत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैनपंच, मूडबिद्री ।



## विषय-कोश

ग्रन्थ नं० २ ।

१ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-११६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

२ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

३ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-१४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

४ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-ग्रह द्वितीय-काण्ड तक है ।



## विषय-काव्य

ग्रन्थ नं० ३ ।

१ मुनिसुव्रतकाव्य-अर्हदास । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १ ।

२ विद्वन्धमुखमण्डन-धर्मदास । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज-इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।



## विषय-छन्दःशास्त्र ।

ग्रन्थ नं० १० ।

१ वृक्षरत्नाकर-केदार भट्ट । पत्र सं०-५८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्दःशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें श्रीनाथ कृत संस्कृत टीका भी है ।



## विषय-नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० १ ।

१ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिन-राज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १ ।

२ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

३ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्ति-स्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें न्यायसंबन्धी और भी ५ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १० ।

४ सुभाषितसंग्रह-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-सुभाषित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष—इसमें 'वायसशकुन' तथा किसी न्यायग्रंथके भी ११ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

५ सुभाषितसंग्रह—..... । पत्र सं०—८ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—२९ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंद्री ।



### विषय—पुराण

ग्रन्थ नं० १८ ।

१ छत्तरपुराण—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०—२७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—१२० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । वस्तु—ताडपत्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिंद्री ।

विशेष—इसमें सिर्फ श्री अनन्तनाथ पुराण तक है ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

२ चन्द्रप्रभपुराण—अगलदेव । पत्र सं०—२०३ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—पुराण । लेखनकाल—शालि०शक १६४२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिंद्री ।

ग्रन्थ नं० १ ।

३ तीर्थकरभवावली—..... । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५३ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिंद्री ।

विशेष—इसमें वर्तमान २४ तीर्थकरों के पूर्वभवों का वर्णन संक्षेपमें दिया गया है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

\* ४ पुराणश्लोकसंग्रह—..... । पत्र सं०—११ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—३२ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिंद्री ।

विशेष—इसमें हिन्दू पुराणों के कुछ श्लोक संग्रह किये गये हैं ।



### विषय—चरित्र

ग्रन्थ नं० ५ ।

१ अनन्तभतीचरित—सातणवर्णी । पत्र सं०—३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा—जीर्ण तथा क्षणिक । प्राप्तिस्थान—मा० देवराज सेट्टि, मूडबिंद्री ।

विशेष—इसके रचयिता सातणवर्णी क्षुतमुनिके शिष्य हैं । विरोधि संवत्सर पुष्य कृष्णा १० शुकवारके दिन पायसेट्टिके पुत्र ब्रह्मण्ण ने लिखा है । इसमें गीत तथा वैद्यक आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

२ आदितीयकरचरित-..... । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १ ।

३ अञ्जनाचरित-शिशुमायण । पत्र सं०-१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-चौटर धर्म साम्राज्यय्य, मूडबिद्री ।

विशेष-स्वभानु संवत्सर कार्तिक शुक्ला ३ चन्द्रवारके दिन यह प्रति लिखी गई है ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

४ अञ्जनाचरित-शिशुमायण । पत्र सं०-११६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-चौटर धर्मसाम्राज्यय्य, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

५ अञ्जनेयचरित-मायण । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पद्मनाम शास्त्री, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

६ जिनदत्तचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-७८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्यावतीचरित' है ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

७ जिनदत्तचरित-कवि पद्मनाभ । पत्र सं०-१२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें प्रारम्भिक पत्र नही है ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

८ नागकुमारचरित-कवि बाहुबली । पत्र सं०-१६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसका अन्तिम भाग कवि वर्धमान का रचा हुआ है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

९ नेमिनाथपंचकल्याणसंधि-..... । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१० नेमिजिनेशसंगति-मगरस । पत्र सं०-१६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष—इसमें 'परीषहजय' संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २ ।

११ रायविजय—देवप्य । पत्र सं०—१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—चौटर धर्मसाम्राज्यय्य, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

१२ श्रीपालचरित—मंगरस । पत्र सं०—९२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६४ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—पद्मनाभशास्त्री, मूडबिंदी ।

विशेष—इसमें बीचका एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

१३ सुकुमारचरित—शान्तिनाथ । पत्र सं०—१७५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिंदी ।

विशेष—इसमें अन्तिम एक पत्र नहीं है ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

१४ मुदर्शनचरित—नेमरस । पत्र सं०—१६ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—चरित्र । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—चौटर धर्मसाम्राज्यय्य, मूडबिंदी ।

विशेष—इसका रचनाकाल शालि०शक १४०६ है ।



## विषय—कथा

ग्रन्थ नं० ३९ ।

१ उपसर्गनिवारणव्रतकथा—..... । पत्र सं०—६० । पंक्ति प्रतिपत्र—१ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० २ ।

२ दीपावलिव्रतकथा—..... । पत्र सं०—१३३ । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३२ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । प्राप्तिस्थान—पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

३ नन्दीश्वरव्रतकथा—..... । पत्र सं०—२१० । पंक्ति प्रतिपत्र—६ । अक्षर प्रतिपंक्ति—९६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—पद्मनाभशास्त्री, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

४ व्रतकथासंग्रह—..... । पत्र सं०—१९२ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—१०० । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—कथा । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । प्राप्तिस्थान—पद्मनाभशास्त्री, मूडबिंदी ।

विशेष—इसमें ७५ व्रतों की कथाएँ हैं ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

५ श्रीपंचमीत्रतकथा-..... । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।



### विषय-इतिहास

ग्रन्थ नं० ६ ।

१ गुम्मतस्वामिचरित-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कारकलस्थ श्री गोम्मतेश्वरमूर्ति का इतिवृत्त अङ्कित है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

२ गुम्मतस्वामिचरित-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

### विषय-आयुर्वेद

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१ औषधगुणपाठ-बाहट । पत्र सं०-२९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

२ खगेन्द्रमणिदर्पण-मंगरस । पत्र सं०-९९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३४ ।

३ द्रव्यगुणपाठ-..... । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

४ धन्वन्तरिनिघण्टु-..... । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक [ कोष ] । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ३४ ।

५ नाडीविज्ञान-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

६ वास्तुग्रहणिक्रिस्ता-वेवेन्द्रमुनि । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक तथा मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्वी ।

ग्रन्थ नं० २८ ।

७ योगशास्त्र-वररुचि । पत्र सं०-७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमि-राज सेट्टि, मूडबिद्वी ।

विषय-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ३८ ।

८ वैद्यशास्त्र..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमि-राज सेट्टि, मूडबिद्वी ।

विशेष-इसमें सुवर्णनिर्माण तथा भस्म आदि बनाने की विधि भी उक्त है ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

९ वैद्यसंग्रह..... । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमि-राज सेट्टि, मूडबिद्वी ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

१० वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्वी ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

११ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्वी ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

१२ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्वी ।

ग्रन्थ नं० १० ।

१३ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्वी ।

विशेष-इसमें त्रैवर्णिकाक्षर, के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

१४ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्वी ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

१५ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

१६ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

१७ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

१८ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'अट्टमत' एवं यंत्र-मंत्र संबन्धी ओर भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २२ ।

१९ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर-प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें यंत्र-मंत्र संबन्धी ओर भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

२० वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३७ ।

२१ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

२२ वैद्यसार-..... । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'गोलीपतनफल' 'दीक्षानक्षत्र' तथा यंत्र मंत्र आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

२३ वैद्यामृत-श्रीधरदेव । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें ज्योतिष संबन्धी भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

२४ वैद्यामृत-श्रीधरदेव । पत्र सं०-११४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें वैद्यक तथा मंत्रशास्त्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १० ।

२५ वैद्यामृत-श्रीधरदेव । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें 'नित्यपूजा' आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

२६ वैद्यामृत-श्रीधरदेव । पत्र सं०-१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वैद्यक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें यंत्र-मंत्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

## विषय-ज्योतिष

ग्रन्थ नं० १५ ।

१ अट्टमत [ मेघलक्षणा ]-अट्ट अथवा अहंदास । पत्र सं०-५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें मेघसे सबन्ध रखनेवाली बहुत सी बातें बतलाई गई हैं ।

ग्रन्थ नं० १ ।

२ केवलज्ञानचूडामणि-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

\* ३ गार्ग्यसंहिता-यति गर्ग । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

४ ज्योतिषसंग्रह-..... । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराजइन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें केवल ग्रहनभाग है ।

ग्रन्थ नं० १८ ।

५ ज्योतिषसंग्रह-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिंदी ।

विशेष—कीलक संवत्सर कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा के दिन प्रविड देशीय अप्पण्ण सेट्टिने मूडबिद्री निवासी विक्रमसेट्टि बसदि पदुमप्य इन्द्र के लिये इसे लिखा है । इसमें 'मृनिमुव्रतकाव्य' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

६ तीर्थकेवलिप्रश्न-..... । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

७ तीर्थकेवलिप्रश्न-..... । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० १ ।

८ प्रैलोक्यदीपिका [ सर्वतोभद्रचक्र ]-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-अनन्तराजइन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १ ।

९ प्रश्नशास्त्र-केशवायं । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष- इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१० प्रश्नचिन्तामणि-..... । पत्र सं०-१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-शालि० शक १५८२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पद्मनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष-इसे शालि० शक १५८२ शार्वरि संवत्सर वैशाख शुक्ला ११ बुधवार के दिन मयूर पण्डित ने लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

११ बीजारोपणनक्षत्र-..... । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१२ मुहूर्तदर्पण-विद्यामाधव । पत्र सं०-४६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, वैकण्तिकाकारि बसादि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

१३ सामुद्रिक-..... । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

१४ सुभीवप्रश्न-..... । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं०नेमि-राज सेट्टि, मूडबिंद्री ।

विशेष-इसमें संस्कृत 'समवसरणचूलिका' भी है । इसके लेखक मूडबिंद्री निवासी पडुबसदि पट्टुमय्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २० ।

१५ स्वप्नफल-..... । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं०नेमि-राज सेट्टि, मूडबिंद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है । तथा गौलीपतन, गार्दभ एवं वायस आदि के शकुन भी दिये गये हैं ।



## विषय-गणित

ग्रन्थ नं० ७ ।

१ गणितबिलास-राजादित्य । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिंद्री ।



## विषय-मंत्रशास्त्र

ग्रन्थ नं० २ ।

१ गणधरवल्लयमंत्र-..... । पत्र सं०-६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-शास्त्रि-राज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिंद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

२ भैरवपद्मावतोकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा क्षण्डित । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडबिंद्री ।

विशेष-इसमें बन्धुषेण कृत संस्कृत टीका है । इसको एक टिप्पणी में 'उभयभाषा' का अर्थ प्राकृत तथा गीर्वाण कहा गया है । इसके अतिरिक्त इसमें कवि शान्तिनाथ कृत संस्कृत पार्वनाथ स्तोत्र का भी एक पत्र है ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

३ मंत्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमि-राज सेट्टि, मूडबिंद्री ।

विशेष-इसमें 'दृष्टिदोषनिवारण' मूषिकवाधानिवारण' आदि कई विषयों के मंत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २।

४ यंत्रमंत्रसंग्रह-.....। पत्र सं०-८५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-२५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री।

विशेष-इसमें ग्रहोच्चाटन आदिके कुछ यंत्र तथा मंत्र संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० १९।

५ श्रीदेवताकल्प-अरिष्टनेमि। पत्र सं०-२७३। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-२०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्रशास्त्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। प्राप्ति-स्थान-जिनराज इन्द्र, वैकण्ठिकारि बसदि, मूडबिद्री।

अन्तिम पद्य-"श्रीयुवतिसद्वनपथं राजेन्द्रशिरस्सु शोखरीकृतपथम। भव्यानां हितपथं श्रीवीरसेनपदयुगपथम् ॥ शिष्यः श्रीवीरसेनस्य विद्वद्विनयनायकः। गुणसेनो महोख्यातो वदवादीभकेसरो ॥ तस्य शिष्यो भुवि ख्यातो विद्वदम्भोजभास्करः। विशिष्टारिष्टनेमीशो दुष्टवादिमदापहः ॥ रचितं नेमिनाथेन त्रैविद्येन यतीशिना। स्थेयाञ्छ्री-देवताकल्पं यावञ्चन्द्रदिवाकरो ॥"

विशेष-इसमें पूजापाठ संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं। प्रकृत कल्प में प्रारंभिक भाग नहीं है।



### विषय-लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० १४।

१ तिलोयसार [त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-५१। पंक्ति प्रतिपत्र-११। अक्षर प्रतिपंक्ति-१०९। लिपि-प्राचीन कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-लोकविज्ञान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-सिद्धान्त बसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।

विशेष-यह अति प्राचीन ग्रंथ है। इसे श्री रेचण्ण ने लिखवाकर आचार्य माघनन्दी का शास्त्रदान किया है।

ग्रन्थ नं० १८।

२ तिलोयसार [त्रिलोकसार]-आचार्य नेमिचन्द्र। पत्र सं०-३८। पंक्ति प्रतिपत्र-१०। अक्षर प्रतिपंक्ति-१४०। लिपि-कन्नड। भाषा-प्राकृत। विषय-लोकविज्ञान। वस्तु-ताडपत्र। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-सिद्धान्तबसदि, जैन पंच, मूडबिद्री।



### विषय-शिल्प

ग्रन्थ नं० ३७।

१ वास्तुलक्षण-.....। पत्र सं०-९। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-२९। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-शिल्प। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।



### विषय-लक्षण, समीक्षा तथा पाकशास्त्र

ग्रन्थ नं० १५।

१ अश्वशास्त्र-अभिनवचन्द्र। पत्र सं०-१२३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३७। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-प्राणिशास्त्र। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। प्राप्ति-स्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री।

ग्रन्थ नं० २ ।

२ धर्मपरोक्षा-वृत्तविलास । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जोर्ण । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २ ।

३ सूयशास्त्र-मंगरस । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-सूयशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पद्यनाभ शास्त्री, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है । ग्रन्थ प्रकाशनीय है ।



### विषय-क्रियाकाण्ड

ग्रन्थ नं० १३ ।

१ क्रियाकाण्ड-..... । पत्र सं०-२६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड व्याख्यान भी है ।

ग्रन्थ नं० १ ।

२ दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, हासबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'कर्मप्रकृति' [ कन्नड ] के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

३ संध्यावन्दना-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिद्री ।



### विषय-स्तोत्र

ग्रन्थ नं० ९ ।

१ अकलंकाष्टक-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १ ।

२ ऋषिभरडलस्तोत्र-गीतमस्वामी । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'दीक्षाविधि' तथा 'दीक्षानक्षत्र' सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २० ।

३ गुम्फटाष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बंकेणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें सरस्वतीपूजा, स्तोत्र, नान्दीमंगल, वैद्यक, ज्योतिष आदि कई विषयोंके पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

४ चतुर्विंशतिस्तोत्र-माघनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० १८ ।

५ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

६ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २५ ।

७ जिनसहस्रनाम-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० २० ।

८ पार्श्वनाथस्तव-पद्मप्रभदेव । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बंकेणतिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

९ महाषिपयुपासन-..... । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पद्मबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें विस्तृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१० शान्तांशुति-कवि चन्द्रम । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसके रचयिता कवि चन्द्रम आचार्य श्रुतसागरके शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

११ समबसरगुस्तोत्र-आचार्य विष्णुसेन । पत्र सं०-८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पद्मबसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका और [संस्कृत] क्षेपपाठपूजा एवं स्तोत्र भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

१२ सुप्रभातस्तोत्र-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

१३ स्वप्नावली-..... । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

१४ स्तोत्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडविद्दी ।

विशेष-इसमें 'पंचपरमेष्ठिस्वरूप' तथा 'तीर्थंकरलघुपुराण' [कन्नड] आदिके भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१५ स्तोत्रसंग्रह-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडविद्दी ।

विशेष-इसमें पण्डित आशाधरकृत 'अर्हत्स्तोत्र' 'रत्नत्रयस्तोत्र' एवं 'सरस्वतीस्तोत्र' [कन्नड टीका सहित] संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

१६ स्तोत्रसंग्रह-आचार्य मानतुंग आदि । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-अनन्तराज इन्द्र, पडुबसदि, मूडविद्दी ।

विशेष-इसमें कन्नड टीकाके साथ 'भक्तामरस्तोत्र' 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' एवं 'विषापहारस्तोत्र' संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

१७ स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० २० ।

१८ स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडविद्दी ।

ग्रन्थ नं० २७ ।

१९ स्वयम्भूस्तोत्र-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३९ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-प० नेमिराज सेट्टि, मूडविद्दी ।

विशेष-इसमें कन्नड व्याख्यान भी हैं ।



## विषय-भजन तथा गीत

ग्रन्थ नं० १२ ।

१ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-२७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकरोंकी 'सुमनुजलि' (कन्नड) भी है ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

२ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-भजनके अतिरिक्त इसमें पूजापाठ संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

३ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड तथा तुलु । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें मूडबिद्रीके जिनमन्दिरोंसे संबन्ध रखनेवाले कुछ भजन संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

४ रामायण्यज्ञगान-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

५ शान्तीश्रृंगारपंचकल्याणगीत-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । प्राप्ति-स्थान-मा० देवराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें 'भरतेशवैभव' तथा भजन संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

६ शोभनगीतसंग्रह-..... । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-जिनराज इन्द्र, बैकण्तिकारि बसदि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें गर्भाधान आदि १६ संस्कारों में गाये जाने वाले गीत संग्रह किये गये हैं ।



## विषय-प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० ४० ।

१ चारुद आदि बनानेको विधि-..... । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोतुक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिद्री ।

विशेष-इसमें चालुषाबाज आदि बनानेका क्रम दिया है ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

२ भाषाकुसुममंजरी-विश्वनाथ । पत्र सं -८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रकीर्णक । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । प्राप्ति-स्थान-शान्तिराज इन्द्र, होसबसदि, मूडबिंदी ।

विशेष-यह 'संस्कृतपाठावली' के समान है । इसके रचयिता कोल्हापुर मठाधीश लक्ष्मीसेन भट्टारक के शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

\* ३ शिवतत्त्वस्वरत्नाकर-..... । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । प्राप्तिस्थान-पं० नेमिराज सेट्टि, मूडबिंदी ।

विशेष-इसमें वैद्यक, सामुद्रिक तथा तंत्रशास्त्र आदि कई विषय हैं । इन सब पर कन्नड टीका भी है ।



# श्री जैनमठ कारकलके ताडपत्र और कागज पर लिखे गये हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सविवरण—सूची

## विषय-सिद्धान्त

ग्रन्थ नं० १ ।

१ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—१६१ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रति-पंक्ति—१३६ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसमें आचार्य अभयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० २३ ।

२ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—२८ । पंक्ति प्रतिपत्र—११ । अक्षर प्रति-पंक्ति—१६८ । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २५ ।

३ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—२५७ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रति-पंक्ति—१०० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—शालि० शक १४७० । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसमें केशण रचित 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है । शालि० शक १४७० कोलक संवत्सर कार्तिक शुक्ला ५ के दिन होयसल देशान्तर्गत होलेयमूल्लरु के निवासी देवरसोपाध्याय के पुत्र सांतप्य ने मजुपाध्याय के पुत्र पघरसोपाध्याय के लिये इसे लिखकर दिया ।

ग्रन्थ नं० ४८ ।

४ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—११४ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—९० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—अति जीर्ण ।

विशेष—इसमें गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ], क्षपणसार आदि कई विषयों के अधूरे पत्र सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८ ।

५ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—२९ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रति-पंक्ति—१०० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें केशण कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १२३ ।

६ गोम्मटसार [जीवकाण्ड]—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०—१३७ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रति-पंक्ति—१६० । लिपि—कन्नड । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

विशेष—इसमें केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १ ।

७ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१३९ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्य अमयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० २ ।

८ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-शालि० शक १५२१ । पूर्ण तथा  
सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें आचार्य अमयचन्द्र के शिष्य केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड वृत्ति है । शालि०  
शक १५२१ विलम्ब संवत्सर आषाढ शुक्ला ५ के दिन सरस्वती गच्छ-बलात्कारण आचार्य कोण्डकुन्दान्वयी  
महेन्द्रकीर्ति के शिष्य बंगवाडी निवासी चन्द्रकीर्ति के लिये उलमय सेट्टिके पुत्र जोगिसेट्टि के बन्धु, मयिन्द सेट्टि  
ने इसे लिखवाकर दान किया है ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

९ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१३६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २६ ।

१० गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें केशण कृत कन्नड वृत्ति है ।

ग्रन्थ नं० ३४ ।

११ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-८० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-अति जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ५८ ।

१२ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१४० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें केशण कृत कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५९ ।

१३ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-६५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-  
पंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध ।  
दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १२७ ।

१४ गोम्मटसार [ कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
१२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-  
सामान्य ।

विशेष-इसमें केशण कृत 'जीवतत्त्वप्रदीपिका' नामक कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११६ ।

१५ गोम्मटसार [ जोषकाण्ड तथा कर्मकाण्ड ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-७८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संदृष्टियां भी सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ५८ ।

१६ लद्धिसार [ लद्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५८ ।

१७ लद्धिसार [ लद्धिसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल- शालि० शक १५४० । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि०शक १५४० पिंगल संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ७ गुरुवार को बालम्म सेट्टि ने सरस्वती-गच्छ-बलात्कारगण-कोण्डकुन्दान्वयी-मुनि हेमकीर्ति के शिष्य चन्द्रकीर्ति को मत्पुत्र से इसे लिखवाकर निर्दुःखसप्तमीव्रतोद्यापन के निमित्त दान किया है ।

ग्रन्थ नं० १२६ ।

१८ समयपाहुड [ समयप्राभृत ]-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १२६ ।

१९ समयसार-आचार्य कोण्डकुन्द । पत्र सं०-६९ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।



### विषय-अध्यात्म

ग्रन्थ नं० ९१ ।

१ रत्नाकरशतक-रत्नाकर वर्णी । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-अध्यात्म । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।



### विषय-धर्म

ग्रन्थ नं० ८४ ।

१ उद्योगसागर-बालचन्द्र । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

२ उपासकसंस्कार-आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष—यह 'पद्मनन्दिपंचविंशति' का एक प्रकरण है ।

ग्रन्थ नं० १३२ ।

३ उपासकसंस्कार—आचार्य पद्मनन्दी । पत्र सं०—९ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—५० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

\* ४ गायत्री—..... । पत्र सं०—४१ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—४० । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम । विशेष—इसमें संस्कृत व्याख्या है ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

५ जिनभक्तिसार..... । पत्र सं०—१७ । पंक्ति प्रतिपत्र—५ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६५ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३ ।

६ तत्त्वार्थसूत्र—आचार्य उमास्वाति । पत्र सं०—३४ । पंक्ति प्रतिपत्र—१० । अक्षर प्रतिपंक्ति—९५ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें दिवाकरनन्दि-कृत कन्नड लघुवृत्ति है; बीचके दो पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

७ त्रैवेणिकाचार—जिनसेन । पत्र सं०—१८९ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३६ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण । विशेष—इसमें प्रारंभिक एक तथा बीच के दो पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ९७ ।

८ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—८५ । पंक्ति प्रतिपत्र—८ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९८ ।

९ द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—८१ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३८ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—शालि० शक १४४२ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य । विशेष—शालि० शक १४४२ प्रमाथि संवत्सर आश्वयुज शुक्ल सोमवार को इसे बेलगोल निवासी चिक्कमकुट ने लिखा है । इसकी दो प्रतियाँ हैं । दूसरी प्रति साधारण संवत्सर कार्तिक कृष्णा ७ रविवार के दिन लूसिसल निवासी नागप्प के पुत्र ब्रह्मदेव के द्वारा लिखी गई है ।

ग्रन्थ नं० १०९ ।

१० द्वादशानुप्रेक्षा—विजयण्ण । पत्र सं०—७५ । पंक्ति प्रतिपत्र—९ । अक्षर प्रतिपंक्ति—६६ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

११ नीतिसारसमुच्चय—इन्द्रनन्दी । पत्र सं०—६ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—३७ । लिपि—कन्नड । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा—उत्तम ।

विशेष—इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ८४ ।

१२ पंचपरमेष्ठिस्वरूप—पण्डित बालचन्द्र । पत्र सं०—७ । पंक्ति प्रतिपत्र—७ । अक्षर प्रतिपंक्ति—७१ । लिपि—कन्नड । भाषा—कन्नड । विषय—धर्म । लेखनकाल—X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा—जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

१३ प्रश्नोत्तररत्नमाला-अमोघवर्ष । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

ग्रन्थ नं० ६९ ।

१४ मुल्लाशास्त्र-चन्द्रसागर वर्णी । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-श्रीमुख संवत्सर आषाढ़ शुक्ला ८ के दिन परिषद् के पुत्र पुट्टश्यामय ने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

१५ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ८४ ।

१६ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४९ ।

१७ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ९९ ।

१८ व्रतस्वरूप-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'गायत्री व्याख्यान' [ संस्कृत ] तथा 'सम्यक्त्वकीमुदी' [ कन्नड ] के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७१ ।

१९ श्रावकाचार-माघनन्दी । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

२० श्रावकाचारसंग्रह-पण्डित आशाधर आदि । पत्र सं०-१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें 'सागर धर्माभूत' 'रत्नकरण्डश्रावकाचार' आदि ग्रन्थों से श्रावकाचार संबन्धी कई बातें सप्रमाण संग्रह की गई हैं, साथमें कन्नड टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ८४ ।

२१ श्रीपदाशीति-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १२९ ।

२२ सज्जनचित्तबल्लभ-मल्लिषेण । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है । और 'अकलंकस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५० ।

२३ सागारधर्माभृत-पण्डित आशाधर । पत्र सं -४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२५ ।

२४ सागारधर्माभृतटीका-..... । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

२५ सूक्तिमुक्तावली-आचार्य सोमप्रभ । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



### विषय-प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० ११३ ।

१ जिनमंहिता-एकसन्धी । पत्र सं०-६६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४३ ।

२ जिनसंहिता-एकसंधी । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

३ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

४ प्रतिष्ठातिलक-ब्रह्मसूरि । पत्र सं०-१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-शालि० शक १५७७ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-खण्डित ।

विशेष-शालि० शक १५७७ पार्थिव संवत्सर भाद्रपद कृष्णा ८ गुरुवार को कोल्लेगाल निवासी विजय-ण्णोपाध्याय के पुत्र शान्तय्य ने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

५ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र सं -१४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-क्रौञ्च संवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला १० शनिवार के दिन मूनिचन्द्रदेव के लिये यह ग्रन्थ लिखा गया ।

ग्रन्थ नं० ४० ।

६ प्रतिष्ठातिलक-नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१८४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-शालि० शक १५७६ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

विशेष-शालि० शक १५७६ तारण संवत्सर ज्येष्ठ शुक्ला ५ के दिन सागडे निवासी विजयण्णोपाध्याय के पुत्र शान्तय्य ने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ३० ।

७ प्रतिष्ठासारोद्धार-पण्डित आशाधर । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-खण्डित ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

८ सिद्धचक्रप्रतिष्ठा-..... । पत्र सं०-६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रतिष्ठा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।



### विषय-आराधना, पूजापाठ तथा व्रतविधान

ग्रन्थ नं० ७५ ।

१ आराधनात्रय-..... । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-शालि० शक १८४० । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका प्रतिलिपिकाल शालि० शक १८४० पिंगल संवत्सर कार्तिक कृष्णा १३ बुधवार है । इसमें कलिकुण्ड, सिद्धचक्र तथा शान्तिचक्र ये तीन आराधनाएँ शामिल हैं ।

ग्रन्थ नं० १६३ ।

२ नान्दीमंगलादिसंग्रह-..... । पत्र सं०-१६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-२० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कई पूजाएँ तथा 'शान्तिविधान' भी सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ११० ।

३ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नान्दीमंगल' 'अभिषेकपाठ' तथा 'विमानशुद्धि' भी हैं ।

ग्रन्थ नं० ११२ ।

४ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'नान्दीमंगल' तथा 'लघुशान्तिविधान' है ।

ग्रन्थ नं० १५८ ।

५ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-२४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-नागरी । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-संवत् १७०९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह प्रति संवत् १७०९ श्रावण श्रवला २ शुक्रवार के दिन लिखी गई है ।

ग्रन्थ नं० १६० ।

६ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-२०७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत तथा हिन्दी । विषय-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १६२ ।

७ पूजापाठसंग्रह-..... । पत्र सं०-२६० । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ७५ ।

८ मृत्युंजयआराधना-..... । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आराधना । लेखनकाल-शालि० शक १८४१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसकी प्रतिलिपि शालि० शक १८४१ कालयुक्ति संवत्सर वैशाख शुक्ला प्रतिपदा शनिवार को समाप्त हुई है । प्रतिलिपिकार नागराजोपाध्याय के पुत्र ब्रह्मदेव हैं ।

ग्रन्थ नं० १६ ।

९ रत्नत्रयविधान-अथ्यप्प । पत्र सं०-२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-त्रयविधान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



### विषय-न्याय तथा दर्शन

ग्रन्थ नं० १४१ ।

१ अष्टसहस्री-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें व्याकरण सबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ६ ।

२ आप्तपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-४५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ५ ।

३ पत्रपरीक्षा-आचार्य विद्यानन्दी । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३५ ।

४ प्रमेयकमलमार्तण्ड-आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१६० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।



### विषय-व्याकरण

ग्रन्थ नं० १२८ ।

१ कातंत्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-११३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२९ ।

२ कातंत्ररूपमाला-भावसेन त्रैविद्य । पत्र सं०-४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४२ ।

३ चिन्तामणिकी टीका-आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं०-५० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ३२ ।

४ जैनेन्द्रन्यास-प्रभाचन्द्र । पत्र सं०-१३० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २८ ।

५ जैनेन्द्रप्रक्रिया-गुणनन्दी । पत्र सं०-१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसकी प्रतिलिपि आनन्द संवत्सर कार्तिक कृष्णा ३ शुक्रवार को की गई है ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

६ जैनेन्द्रप्रक्रिया-गुणनन्दी । पत्र सं०-१७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८२ ।

७ रूपसिद्धि-दयापाल । पत्र सं०-६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

८ शब्दानुशासन-भट्टाकलंक । पत्र सं०-१३० । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-यह ग्रंथ शालि०शक १५२६ शोभकृत संवत्सर फाल्गुन शुल्का ५ गुरुवार के दिन रचा गया है ।

ग्रन्थ नं० १३० ।

९ शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १३९ ।

१० शाकटायनप्रक्रियासंग्रह-आचार्य अभयचन्द्र । पत्र सं०-१३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

## विषय-कोश

ग्रन्थ नं० ३५ ।

१ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४४ ।

२ अमरकोश [ वनौषधिबर्ग ]-अमरसिंह । पत्र सं०-२५३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६३ ।

३ अमरकोश-अमरसिंह । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९१ ।

४ नानार्थरत्नाकर-देवोत्तम । पत्र सं०-१७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२२ ।

५ नानार्थसंग्रह—..... । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-तेलुगु । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९१ ।

६ नाममाला-महाकवि घनंजय । पत्र सं०-१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९१ ।

७ नाममाला-महाकवि घनंजय । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ४२ ।

८ विदग्धचूडामणि-विठ्ठल । पत्र सं०-७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-यह 'अमरकोश' की टीका है ।



### विषय-काव्य

ग्रन्थ नं० १२५ ।

१ चित्रचूडामणि-वादीमसिंह । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ४ ।

२ धर्मशार्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-१०४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २१ ।

३ पुरुदेवचम्पू-अर्हदास । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ४५ ।

४ पंचसन्धानकाव्य-कवि शान्तिराज । पत्र सं०-११२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका भी है ।

ग्रन्थ नं० ४६ ।

५ पंचसन्धानकाव्य-कवि शान्तिराज । पत्र सं०-१११ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें स्वोपज्ञ संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ६८ ।

६ भाषकजनकल्पवृक्ष-पद्मराज । पत्र सं०-१४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह कवि शान्तिराज कृत 'सरसजनचिन्तामणि' की व्याख्या है ।

ग्रन्थ नं० ६७ ।

७ मुनिसुब्रतकाव्य-अर्हदास । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११८ ।

८ मुनिसुब्रतकाव्य-अर्हदास । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९६ ।

९ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७७ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९६ ।

१० यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१८<sup>१</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १२५ ।

११ यशोधरकाव्य-वादिराज । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४२ ।

१२ यशोधरकाव्यटोका-लक्ष्मण । पत्र सं०-१०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें संस्कृत 'नागकुमारचरित' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ४७ ।

१३ सरसजनचिन्तामणि-कवि शान्तिराज । पत्र सं०-२७७ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें पद्यराजका बनाइ हुई संस्कृत टोका भी है ।

ग्रन्थ नं० ६२ ।

१४ सरसजनचिन्तामणि-कवि शान्तिराज । पत्र सं०-२०२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६८ ।

१५ सरसजनचिन्तामणि-कवि शान्तिराज । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०२ ।

१६ सरसजनचिन्तामणि-कवि शान्तिराज । पत्र सं०-३२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें संस्कृत टोका हैं ।

ग्रन्थ नं० २२ ।

१७ मुखबोधिनी-अर्हदास । पत्र सं०-१२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-शालि०शक १७४४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-यह 'मुनिसुब्रतकाव्य' की टीका है । शालि०शक १७४४ चित्रभानु सवत्सर फाल्गुन शुक्ल १० वींवार के दिन यह ग्रन्थ लिखकर समाप्त हुआ है ।

ग्रन्थ नं० १०५ ।

१८ सन्देहध्वान्तदीपिका-पण्डित यशःकीर्ति । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-यह 'धर्मशर्माभ्युदय' काव्य की टीका है । टीका के कर्ता यशःकीर्ति ललितकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य हैं ।

### विषय-अलङ्कार आदि

ग्रन्थ नं० १३३ ।

१ अलंकारसंग्रह-अमृतानन्द योगी । पत्र सं०-५९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-अलंकार । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें कन्नड टिप्पणी है ।

### विषय-नीति तथा सुभाषित

ग्रन्थ नं० ७४ ।

१ नीतिवाक्यामृत-आचार्य सोमदेव । पत्र सं०-८९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १५१ ।

२ नीतिवाक्यामृतटीका-नेमिनाथ । पत्र सं०-

ग्रन्थ नं० ९१ ।

३ हरदनीति-सिहराज । पत्र सं०-९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-नीति । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### विषय-पुराण

ग्रन्थ नं० ५३ ।

१ आदिपुराण-महाकवि पंप । पत्र सं०-१९८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १७३३ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि०शक १७३३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर पुष्य शुक्ल १४ शनिवार के दिन महाबंजपुरस्थ पादबंनार्थ चैत्यालय में उपाध्याय चैत्रप्य के पीत्र चन्दु उपाध्याय के द्वारा यह लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० १३६ ।

२ आदिपुराण [ पूर्वपुराण ]-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-१९५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १४५१ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शक १४५१ सर्वधारी संवत्सर फाल्गुन शुक्ल १० मंगलवार को वैपवादि निवासी धत्तक-१स के पुत्र नेमरस ने इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १४० ।

३ आदिपुराण [ पूर्वपुराण ]-आचार्य जिनसेन । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २७ ।

४ उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१६१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० १०८ ।

५ उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-२७५ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १४३५ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शक १४३५ अंगीरस संवत्सर मार्गशिर कृष्ण १० गुरुवार को कोणसूर विट्टदेव के पुत्र पुट्टदेवरस ने इसे लिखा है । इसमें प्रारंभिक पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० १२४ ।

६ उत्तरपुराण-आचार्य गुणभद्र । पत्र सं०-१२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक ८२४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शक ८२४ दुंदुभि संवत्सर कार्तिक कृष्ण ५ बुधवार के दिन अनन्तमति आर्यिका ने तरु-पुरस्थ चन्द्र के पुत्र चन्दप्प को इसे लिखवाकर दिया है ।

ग्रन्थ नं० ११९ ।

७ जिनभारत-ब्रह्मणांक । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४७ ।

८ जैमिनिभारत-लक्ष्मीश । पत्र सं०-११८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें यक्षगान संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ५२ ।

९ त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण-चामुण्डराय । पत्र सं०-१६३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०७ ।

१० वृषभनाथपुराण-भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र सं०-१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



### विषय-चरित्र

ग्रन्थ नं० २९ ।

१ जिनदत्तचरित-पद्मनाभ । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है । प्रतिलिपि का समाप्तिकाल शिवरदि संवत्सर कार्तिक शुक्ला ३ बुधवार है ।

ग्रन्थ नं० ७६ ।

२ जिनदत्तचरित-पद्मनाभ । पत्र सं०-८४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसका अपर नाम 'पद्यावतीचरित' है ।

ग्रन्थ नं० २० ।

३ ज्ञानचन्द्राभ्युदय-कल्याणकीर्ति । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ३ ।

४ नागकुमारचरित-बाहुबली । पत्र सं०-१५६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अन्तिम भाग कवि वर्धमान कारचा हुआ है ।

ग्रन्थ नं० ३१ ।

५ नागकुमारचरित-बाहुबली । पत्र सं०-१८० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-श्रीधर संवत्सर श्रावण कृष्णा १३ के दिन कुदर निवासी देवचन्द्र ने रामसमुद्र के जिह्मप्प सेट्टि के लिये इसे लिखकर दिया है ।

ग्रन्थ नं० ८८ ।

६ नागकुमारचरित-बाहुबली । पत्र सं०-१८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि० शक १७३८ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-शालि० शक १७३८ हेविलबि संवत्सर भाद्रपद शुक्ला १० सोमवार को इसे दासनल्लि गंगप्प के वास्ते नंजुंडप्प ने लिखकर दिया है ।

ग्रन्थ नं० ९५ ।

७ नागकुमारचरित-बाहुबली । पत्र सं०-८५ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि० शक १६७२ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि० शक १६७२ दुर्भति संवत्सर में इसे बालय्य ने धर्मण के वास्ते लिखकर दिया है । इसमें 'क्रियापाठ' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ९६ ।

८ नागकुमारचरित-मल्लिषेण । पत्र सं०-१८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५० ।

९ नेमिजिनेशसङ्कति-मङ्गरस । पत्र सं०-२२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि० शक १७७४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-शालि० शक १७७४ क्रौघि संवत्सर मार्गशिर शुक्ला ७ गुरुवार को तोबिनकेरे निवासी अलकूरप्पके पुत्र पुट्टण्णने ब्रह्मण को इसे लिखकर दिया है ।

ग्रन्थ नं० ५१ ।

१० नेमिजिनेशसङ्कति-मङ्गरस । पत्र सं०-१६० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-११३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अतिजीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५६ ।

११ नेमिजिनेशासंगति-मंगरस । पत्र सं०-१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि०शक १७३४ । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि०शक १७३४ आंगीरस संवत्सर ज्येष्ठ कृष्णा १४ सोमवारके दिन धांकिघट्टस्थ चन्द्रनाथ चैत्यालय में रामप्प के पुत्र नलिनाल्लवने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० ७३ ।

१२ नेमिजिनेशासंगति-मंगरस । पत्र सं०-२९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-यह ग्रन्थ प्रभव संवत्सर भाद्रपद शुक्ला ५ रविवारके दिन होलवनहल्लि निवासी पापण्णके पुत्र पोम्मण्णके द्वारा लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० १०६ ।

१३ नेमिजिनेशासंगति-मंगरस । पत्र सं०-९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि०शक १५२९ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-शालि०शक १५२६ शोभकृत संवत्सर कार्तिक कृष्णा ८ बुधवार के दिन यह ग्रन्थ लिखा गया है ।

ग्रन्थ नं० १३७ ।

१४ नेमिजिनेशासंगति-मंगरस । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९० ।

१५ भरतेशवैभव-रत्नाकर वर्णी । पत्र सं०-९० । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि०शक १६६८ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-शालि०शक १६६८ अक्षय संवत्सर आश्वयुज कृष्णा ५ मंगलवार रीत्रिणी नक्षत्रमें इसे नाम्प्य के पुत्र पदुमण्णने उत्तल निवासी पण्ण के वास्ते लिखकर दिया है । इसमें 'अनन्तव्रतविधान' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ९३ ।

१६ भरतेशवैभव-रत्नाकर वर्णी । पत्र सं०-१५४३ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८ ।

१७ माणिक्यजिनेशाचरित-..... । पत्र सं०-१५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-शालि०शक १७९३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि०शक १७९३ शुक्ल संवत्सर आषाढ़ शुक्ला ५ बुधवारको नेलहालु निवासी पुट्टण्णने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

१८ रामचरित-कवि चन्द्रशेखर । पत्र सं०-९८ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें १६ अध्याय [ सीतापहरण संधि ] तक है । इसके रचयिता चन्द्रशेखर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हैं ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१९ लक्ष्मीमतिस्वयंवर..... । पत्र सं०-७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम

विशेष-यह 'नागकुमारचरित' का एक अंश है ।

ग्रन्थ नं० ५८ ।

२० श्रीपालधरित-केशण । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-वरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### विषय-कथा

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१ चन्द्रमुखीकथा-.....पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १०३ ।

२ धर्माभृत-नयसेन । पत्र सं०-१३३ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३१ ।

३ धर्माभृत-नयसेन । पत्र सं०-८४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-१३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १४६ ।

४ धर्माभृत-नयसेन । पत्र सं०-१२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

\* ५ पंचतंत्र-दुर्गासिंह । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

\* ६ पंचतंत्र-दुर्गासिंह । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-शालि० शक १७७२ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-शालि० शक १७७२ सौम्य संवत्सर श्रावण कृष्ण १ गुरुवारके दिन इसे शीतगल्लु निवासी कालप्पके पुत्र गाल शेट्टिके वास्ते तोविन केरे निवासी वीरभद्रके पुत्र पुट्टण्णने लिखकर दिया है ।

ग्रन्थ नं० ८९ ।

७ बत्तीसपुत्थलीकथा-.....पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-घातु संवत्सर कार्तिक कृष्ण सोमवार को इसे कोलत्तूर निवासी बेंकटरामय्यने लिखा है ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

८ भेतालपंचविंशति-.....पत्र सं०-७२<sup>३</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× ; पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-भ्यय संवत्सर श्रावण शुकला ५ के दिन इसे चेन्नप्पने अपने वास्ते लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १४५ ।

९ खीलावती-नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२८ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १११ ।

१० अक्षरप्रतिपत्ति-..... । पत्र सं०-१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें ७२ व्रतों की कथाएं हैं ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

११ सम्यक्त्वकौमुदी-पत्र सं०-५१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### विषय-इतिहास

१ गोम्पटेश्वरचरित-चन्द्रम । पत्र सं०-१०२ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६४ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-यह कार्कलस्थ गोम्पटेश्वरप्रतिमा का चरित्र है । इसके रचयिता चन्द्रम, श्रुतमुनिके शिष्य हैं ।  
ग्रन्थ नं० १८ ।

२ भूतालपाण्ड्यके शासननियम..... । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४७ ।  
लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें भूतालपाण्ड्यके राज्यशासन सम्बन्धी कई विषय शामिल हैं ।  
ग्रन्थ नं० ७२ ।

३ शान्तिराजकविप्रशस्ति-कवि शान्तिराज । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-  
१० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-इतिहास । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

### विषय-आयुर्वेद

ग्रन्थ नं० ४४ ।

\* १ नाडीपरीक्षा-..... । पत्र सं०-१३८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० २० ।

२ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-७३ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-व्रति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४४ ।

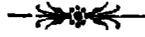
३ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७८ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।  
विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० ५४ ।

४ वैद्यसंग्रह-..... । पत्र सं०-२३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३३ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ९४ ।

१ वैद्यसंग्रह—..... । पत्र सं०-१६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८९ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।



## विषय-ज्योतिष

ग्रन्थ नं० ६४ ।

१ केवलज्ञानहोरा-मुनिचन्द्रसेन । पत्र सं०-३१ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५४ ।

२ ज्योतिष—..... । पत्र सं०-१६२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'शकुन' 'दूतलक्षण' आदि कई विषय शामिल हैं । परिष्ठावि संवत्सर फाल्गुन कृष्णा प्रतिपदा को श्रवणबेलगोल तिवासी पायि सेट्टिने इसे लिखकर समाप्त किया है ।

ग्रन्थ नं० १३४ ।

३ नवग्रहचिन्तामणि—..... । पत्र सं०-१०७ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-साम्य संवत्सर मार्गशिर शुक्ला ३ चन्द्रवारके दिन इसका लेखन समाप्त हुआ है ।

ग्रन्थ नं० ६१ ।

\* ४ बृहज्जातक-वराहमिहिर । पत्र सं०-२१२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-नागरी । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें बीच-बीचमें कन्नड टिप्पणियां हैं, तथा ज्योतिष संबंधी और भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ११७ ।

\* ५ बृहज्जातक-वराहमिहिर । पत्र सं०-७४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-X । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका भी है ।



## विषय-गणित

ग्रन्थ नं० ५४ ।

१ गणितकाष्ठक[पहाडा]-..... । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५४ ।

२ गणितविलास-राजादित्य । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ५४ ।

\* ३ गणितविलास-राजादित्य । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-X । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६० ।

\* ४ गणितविलास-राजादित्य । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गणित । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।



### विषय-मंत्रशास्त्र ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

१ ज्वालिनीमत-इन्द्रनन्दी । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसका अपर नाम 'ज्वालिनीकल्प' है ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

२ पद्मावतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-१७९ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । ग्रन्थ नं० ८१ ।

३ पार्थनाथमंत्राष्टक-..... । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-७३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें समन्तभद्र कृत 'मंत्रव्याकरण', 'शुवर्णनिर्माण', 'अष्टदिग्बन्धन' इनके भी एक एक पत्र हैं । ग्रन्थ नं० १५ ।

४ पंचनमस्कारकल्प-..... । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें आदि के दो पत्र नहीं हैं ।

ग्रन्थ नं० ८५ ।

५ यंत्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-१९ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३७ ।

६ लघुशान्तिहोम-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ३८ ।

७ लघुशान्तिहोम-..... । पत्र सं०-१५ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५६ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

८ श्रोतृवृत्ताकल्प-अरिष्टनेमि । पत्र सं०-५ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

९ सरस्वतीकल्प-आचार्य मल्लिषेण । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२० ।

१० होमविधान-..... । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है, तथा वैदिक संबंधी और भी कुछ पत्र हैं ।



विषय-लोकविज्ञान

ग्रन्थ नं० १० ।

१ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-१०९ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पंक्ति-१०८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० ११ ।

२ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-११२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रति-पंक्ति-८८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें संस्कृत टीका है ।

ग्रन्थ नं० १२ ।

३ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-९४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रति-पंक्ति-१५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

विशेष-इसमें आचार्य गुणभद्र कृत 'उत्तरपुराण' के भी १६ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

४ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रति-पंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें मंत्रशास्त्र सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १२५ ।

५ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-१२० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १५२ ।

६ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रति-पंक्ति-११० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।

ग्रन्थ नं० ८० ।

७ त्रिलोकसारवृत्ति-माधवचन्द्र । पत्र सं०-६७ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८३ ।

८ लोकस्वरूपविभाग-सिंहसूरि । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

विशेष-यह प्राकृत 'लोकविभाग' का संस्कृत रूपान्तर है ।

ग्रन्थ नं० ९१ ।

९ लोकस्वरूप-चन्द्रम । पत्र सं०-९ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× पूर्ण तथा शुद्ध । दशा-उत्तम ।



## विषय-लक्षण, समीक्षा तथा पाठशास्त्र ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१ धर्मपरीक्षा-पायण । पत्र सं०-११२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४६ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ११५ ।

२ धर्मपरीक्षा-वृत्तविलास । पत्र सं०-११६ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

३ लक्षणसंग्रह-..... । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-लक्षण । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ६४ ।

४ वज्रपरीक्षा..... । पत्र सं०-१६ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२४ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।



## विषय-क्रियाकाण्ड

ग्रन्थ नं० ७ ।

१ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-शालि० शक १६८४ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

२ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-४७<sup>१</sup> । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६५ ।

३ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-अति जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ७७ ।

४ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-५७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८२ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ८६ ।

५ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-८८ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२८ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १३८ ।

६ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-१३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कन्नड टीका है ।

ग्रन्थ नं० १५४ ।

७ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-२९७ । पंक्ति प्रतिपत्र-१४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'तत्त्वार्थसूत्र' 'व्रतस्वरूप' आदि भी हैं ।

ग्रन्थ नं० १६१ ।

८ क्रियापाठ-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-३०८ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १२१ ।

९ शब्दसंस्कारविधि-..... । पत्र सं०-३० । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

१० श्रावकप्रतिक्रमण-..... । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-क्रियाकाण्ड । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



## विषय-स्तोत्र

ग्रन्थ नं० ४० ।

१ अकलंकस्तोत्र-आचार्य अकलंकदेव । पत्र सं०-१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१२ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष-इसमें 'त्रैवर्णिकाचार' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ७० ।

२ आरोग्यस्तोत्र-अनकीर्ति । पत्र सं०-४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९४ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० १०० ।

३ दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-१३७ । पंक्ति प्रतिपत्र-११ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-शालि०शक १७१८ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'पंचस्तोत्र', 'स्वयंभूस्तोत्र' आदि भी हैं । साथ कन्नड टीका भी । शालि०शक १७१८ नल संवत्सर आषाढ शुल्का १५ के दिन इसे पडुवस्ति पदुमय्य उपाध्यायने चारुकीर्ति के शिष्य सन्मत्तिसागर के लिये लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १५५ ।

४ दशभक्ति-आचार्य कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद । पत्र सं०-१५० । पंक्ति प्रतिपत्र-१३ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'पंचस्तोत्र' भी सम्मिलित है ।

ग्रन्थ नं० ८७ ।

५ प्रश्नोत्तरचतुर्विंशतिजिनस्तघन--धर्मचन्द्र । पत्र सं०-१७ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ७ ।

६ स्तोत्रसंग्रह-आचार्य समन्तभद्र आदि । पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५१ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें स्वयंभ, जिनसहस्रनाम, भक्तामर, कल्याणमन्दिर, विषापहार, एकीभाव तथा जिनचतुर्विंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र एवं आचार्य पद्मनन्दिकृत क्रियाकाण्डचूलिका सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० ४१ ।

७ स्तोत्रसंग्रह-आचार्य मानतुंग आदि । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें निम्नलिखित स्तोत्र हैं-भक्तामर, जिनसहस्रनाम, जिनचतुर्विंशतिका, सुप्रभात, दृष्टाष्टक, अद्याष्टक तथा माघनन्दिकृत चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र । इसके अतिरिक्त इसमें 'स्वयम्भूस्तोत्र' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १०१ ।

८ स्तोत्रसंग्रह-आचार्य मानतुंग आदि । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण विशेष-इसमें 'भक्तामर' 'पार्श्वनाथाष्टक' आदि कई स्तोत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १५७ ।

९ स्तोत्रसंग्रह-आचार्य मानतुंग आदि । पत्र सं०-९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-२६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२२ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'भक्तामर' आदि कई स्तोत्र हैं । दशभक्ति के कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १६४ ।

१० स्तोत्रसंग्रह-आचार्य जिनसेन आदि । पत्र सं०-१७१ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत, प्राकृत तथा कन्नड । विषय-स्तोत्र । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'सहस्रनाम, नवदेवता' आदि कई स्तोत्र हैं । 'दशभक्ति' के भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं ।



## विषय-भजन तथा गीत

ग्रन्थ नं० ३३ ।

१ अभिमन्युयज्ञगान [ चक्रव्यूहभेदन ]-पत्र सं०-४४ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ६६ ।

२ अभिमन्युयज्ञगान-..... । पत्र सं०-४९ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३१ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० १४ ।

३ आदीश्वरयज्ञगान-..... । पत्र सं०-९३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-९० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-शालि० शक १७७३ । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-शालि० शक १७७३ विरोधिकृत संवत्सर फाल्गुन कृष्ण १२ बुधवार के दिन यलेकेतनहल्लि निवासी यिज्जघ ने अपने पुत्रके लिये इसे लिखा है ।

ग्रन्थ नं० १८ ।

४ देवीमाहात्म्ययज्ञगान-..... । पत्र सं०-६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५३ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

५ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-३६१/२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५८ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कई धार्मिक भजन संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० ३३ ।

६ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-२१ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'सोमेदवरशतक' के भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० ११४ ।

७ भजनसंग्रह-..... । पत्र सं०-१११ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-भजन । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें संस्कृत स्तोत्र सम्बन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

ग्रन्थ नं० १४४ ।

८ रामायणयज्ञगान-..... । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ५५ ।

९ श्रीकृष्णयज्ञगान-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-दुंदुभि संवत्सर पुष्य शुक्ला द्वितीया के दिन बैंगलूर निवासी कालण की पुत्री पद्मिनीके लिये भुजंगप्यने इसे लिख कर दिया है ।

ग्रन्थ नं० ३९ ।

१० सोमशेखरचित्रशेखरयज्ञगान-..... । पत्र सं०-७६ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६९ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

ग्रन्थ नं० ४३ ।

११ सोमशेखरचित्रशेखरयज्ञगान-..... । पत्र सं०-४७ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

### विषय-प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० १५६ ।

१ क्रियापाठादिसंग्रह-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-६० । पंक्ति प्रतिपत्र-१५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत तथा संस्कृत । विषय-प्रकीर्णक । वस्तु-कागज । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें कई स्तोत्र तथा अष्टक सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० १६५ ।

२ क्रियापाठादिसंग्रह-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-४६० । पंक्ति प्रतिपत्र-१९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । वस्तु-कागज । लेखन-काल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें कई स्तोत्र तथा कन्नड 'ध्यानस्वरूप' सम्मिलित हैं ।

ग्रन्थ नं० १४८ ।

३ योगरत्नाकरादिसंग्रह-शान्तरस आदि । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड तथा संस्कृत । विषय-प्रकीर्णक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें 'योगरत्नाकर' 'लोकस्वरूप' 'व्रतस्वरूप' आदि के अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० १५९ ।

४ रयणसारादिसंग्रह-आचार्य कोण्डकुन्द आदि । पत्र सं०-२८३ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२३ । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत, संस्कृत तथा कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । वस्तु-कागज । लेखन-काल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम ।

विशेष-इसमें 'रयणसार' 'सूक्तिमुक्तावली' 'ध्यानस्वरूप' आदि कई विषय हैं ।

ग्रन्थ नं० १९ ।

५ संग्रह-..... । पत्र सं०-१६८ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-६३ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें कई विषयों के अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० १५३ ।

६ संग्रह-..... । पत्र सं०-३५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रकीर्णक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित । विशेष-इसमें ज्योतिष तथा वैद्यकसंबन्धी कुछ अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं ।



## अलियूरु आदिनाथ-देवालयस्थ ताडपत्रीय ग्रन्थों की सविवरण-सूची

### विषय-धर्म

ग्रन्थ नं० २१।

१ द्वादशानुप्रेक्षा-विजयवर्णी। पत्र सं०-१४। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें जिनगुणसंपत्ति, उपसर्गनिवारण आदि कुछ व्रतकथाएं भी हैं।

ग्रन्थ नं० ३१।

२ द्वादशानुप्रेक्षा-.....। पत्र सं०-१०७। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-कन्नड। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें त्रिलोकवर्णन तथा व्रतवर्णनके भी कुछ पत्र सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० २२।

३ रत्नकरण्डश्रावकाचार-आचार्य समन्तभद्र। पत्र सं०-४५। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-१००। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-धर्म। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण तथा खण्डित।

विशेष-इसमें कथासहित विस्तृत कन्नड टीका भी है।

### विषय-प्रतिष्ठा

ग्रन्थ नं० ११।

४ जिनसंहिता-आचार्य एकसंधी। पत्र सं०-१२२। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-६०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-प्रतिष्ठा। लेखनकाल-×। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण।

विशेष-इसमें महावीराचार्य कृत गणितसार तथा कन्नड जीवन्धरषट्पदिके भी कुछ पत्र हैं।

### विषय-आराधना तथा पूजापाठ

ग्रन्थ नं० २९।

५ आराधनासंग्रह-.....। पत्र सं०-९७। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-आराधना। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें मृत्युञ्जय, सर्वरक्षा, गभंरक्षा, शान्तिचक्र, बज्रपञ्जर, कलिकुंड, सिद्धचक्र, नागार्जुन तथा गणधरबलय से ९ आराधनाएं हैं, तथा दशधर्मपूजा भी सम्मिलित है।

ग्रन्थ नं० १६।

६ आराधनासंग्रह-.....। पत्र सं०-११५। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-आराधना। लेखनकाल-×। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें कलिकुंड, वज्रपंजर, नागार्जुन ये तीन आराधनाएं तथा नेमिचन्द्र कृत प्रतिष्ठातिलकांतर्गत शान्तिहोम विधान भी हैं।

ग्रन्थ नं० ७।

७ नान्दीमंगलादिसंग्रह-.....। पत्र सं०-९७। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें नान्दीमंगल, कलिकुंडाराधना तथा मृत्युंजयाराधना सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० ३०।

८ नान्दीमंगलादिसंग्रह-.....। पत्र सं०-३९। पंक्ति प्रतिपत्र-९। अक्षर प्रतिपंक्ति-५५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-X। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-जीर्ण। विशेष-इसमें नान्दीमंगल नित्यपूजा आदि हैं, तथा गीतके भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ४।

९ पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-५। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-७५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-शालि० शक १८१३। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें संध्यावन्दना, मंगलाष्टक तथा नित्यपूजा है। यह शालि० शक १८१३ खर संवत्सर आश्वयुज कृष्णा ८ के दिन लिखा गया है।

ग्रन्थ नं० ५।

१० पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-५३। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-५०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-उत्तम। विशेष-इसमें अभिषेक, शान्तिपूजाविधान तथा पंचपरमेष्ठिपूजा आदि हैं।

ग्रन्थ नं० १३।

११ पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-७२। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-४५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-X। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें नादीमंगल, महाभिषेक आदि संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० १४।

१२ पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-३६। पंक्ति प्रतिपत्र-४। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें अभिषेक, नित्यपूजा आदि सम्मिलित हैं।

ग्रन्थ नं० २७।

१३ पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-४५। पंक्ति प्रतिपत्र-६। अक्षर प्रतिपंक्ति-२७। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-X। अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें महापुण्याहवाचना, ग्रहशान्तिपूजा आदि हैं, तथा ज्योतिष संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं।

ग्रन्थ नं० ३३।

१४ पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-१०३। पंक्ति प्रतिपत्र-८। अक्षर प्रतिपंक्ति-३०। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य। विशेष-इसमें नित्यपूजा, नान्दीमंगल, पंचपरमेष्ठिपूजा आदि संग्रह किये गये हैं।

ग्रन्थ नं० ३४।

१५ पूजापाठसंग्रह-.....। पत्र सं०-११४। पंक्ति प्रतिपत्र-७। अक्षर प्रतिपंक्ति-३५। लिपि-कन्नड। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। लेखनकाल-X। पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष-इसमें अभिषेक, नित्यपूजा, नान्दीमंगल आदि संग्रह किये गये हैं।

## विषय-कोश

ग्रन्थ नं० ३२ ।

१६ नाममाला-महाकवि घनंजय । पत्र सं०-१० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें पूजापाठ, स्तोत्र आदिके भी कुछ पत्र हैं ।



## विषय-काव्य

ग्रन्थ नं० १८ ।

१७ धर्मशर्माभ्युदय-महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं०-५२ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण तथा खण्डित ।



## विषय-पुराण

ग्रन्थ नं० १ ।

१८ पार्श्वनाथपुराण-पार्श्व पण्डित । पत्र सं०-१९६ । पंक्ति प्रतिपत्र-८ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-पुराण । लेखनकाल-शालि०शक १६०६ । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें आदिके ५ पत्र नहीं हैं । शालि०शक १६०६ रत्नाक्षि संवत्सर चैत्र कृष्णा ५ भानुवारके दिन देशीगणीय बाहुबली के शिष्य गुम्मटण्णने बेलतंगडिके शान्तिनाथ चैत्यालयमें नेमिचन्द्रदेवसे इसे लिखवाया ।

## विषय-चरित्र

ग्रन्थ नं० १२ ।

१९ जिनदत्तचरित-पद्मनाभ । पत्र सं०-७० । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसका अपर नाम 'पद्मावतीचरित' है ।

ग्रन्थ नं० ९ ।

२० जैमिनिभारत-जैमिनि । पत्र सं०-४२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५२ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ८ ।

२१ भरतेशवैभव-रत्नाकर वर्णी । पत्र सं०-११ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-४५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-चरित्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें चतुर्विध [कन्नड गद्य] तथा व्रतकथाओंके भी कुछ पत्र हैं ।



**विषय-कथा**

ग्रन्थ नं० ६ ।

२२ व्रतकथासंग्रह-..... । पत्र सं०-९२ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-८० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें १८ व्रतोंकी कथाएं हैं ।

ग्रन्थ नं० ३६ ।

२३ व्रतकथासंग्रह-..... । पत्र सं०-२४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-३५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-कथा । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें अनन्तव्रत तथा पुष्पाञ्जलिव्रत की कथा है ।

**विषय-ज्योतिष**

ग्रन्थ नं० २६ ।

२४ ज्योतिषसंग्रह-..... । पत्र सं०-२५ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-२५ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें ज्योतिष के भिन्न भिन्न विषय संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० १७ ।

२५ नक्षत्रतिलक-..... । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-ज्योतिष । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें ज्योतिष संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

**विषय-मंत्रशास्त्र**

ग्रन्थ नं० २३ ।

२६ बालप्रहृषिकित्सा-..... । पत्र सं०-२२ । पंक्ति प्रतिपत्र-६ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-मंत्रशास्त्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें मंत्रशास्त्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।

**विषय-लोकविज्ञान**

ग्रन्थ नं० २५ ।

२७ तिलोयसार [ त्रिलोकसार ]-आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र सं०-५४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-१०० । लिपि-कन्नड । भाषा-प्राकृत । विषय-लोकविज्ञान । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-इसमें अमयचन्द्र कृत संस्कृत टीका भी सम्मिलित है ।

### विषय-शिल्पशास्त्र

ग्रन्थ नं० २० ।

२८ वास्तुशिल्प-..... । पत्र सं०-३४ । पंक्ति प्रतिपत्र-१० । अक्षर प्रतिपंक्ति-२७ । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-शिल्पशास्त्र । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें मंत्रशास्त्र संबन्धी और भी कुछ पत्र हैं ।



### विषय-स्तोत्र

ग्रन्थ नं० १० ।

२६ स्तोत्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-५० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-उत्तम । विशेष-इसमें सुप्रभातस्तोत्र तथा स्वप्नावली है ।

ग्रन्थ नं० १५ ।

३० स्तोत्रसंग्रह-..... । पत्र सं०-४१ । पंक्ति प्रतिपत्र-४ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य । विशेष-इसमें मंगलाष्टक, पार्वर्नाथमंत्राष्टक तथा पद्यावत्यष्टक आदि स्तोत्र संग्रह किये गये हैं ।

ग्रन्थ नं० २४ ।

३१ स्तोत्रसंग्रह-कवि भपाल आदि । पत्र सं०-४० । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७५ । लिपि-कन्नड । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण । विशेष-इसमें पंचस्तोत्र और सिद्धस्तोत्र हैं । आप्तमीमांसा के भी कुछ पत्र हैं ।



### विषय-गीत तथा भजन

ग्रन्थ नं० १९ ।

३२ गीतसंग्रह-..... । पत्र सं०-३६ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-३० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० २ ।

३३ रामायण्यज्ञगान-..... । पत्र सं०-७२ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । पूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रन्थ नं० ३५ ।

३४ सभालक्षण [ यज्ञगान ]-..... । पत्र सं०-१३ । पंक्ति प्रतिपत्र-५ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४० । लिपि-कन्नड । भाषा-कन्नड । विषय-गीत । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।



## विषय-प्रकीर्णक

ग्रन्थ नं० ३ ।

३५ संग्रह-..... । पत्र सं०-१४८ । पंक्ति प्रतिपत्र-७ । अक्षर प्रतिपंक्ति-४४ । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।  
विशेष-इसमें ज्योतिष तथा स्थानीय चैत्यालय के दान आदि का विवरण है ।

ग्रन्थ नं० २८ ।

३६ संग्रह-..... । पत्र सं०-१४ । पंक्ति प्रतिपत्र-९ । अक्षर प्रतिपंक्ति-७० । लिपि-कन्नड ।  
भाषा-संस्कृत तथा कन्नड । विषय-प्रकीर्णक । लेखनकाल-× । अपूर्ण तथा सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।  
विशेष-इसमें सुभाषित, पूजापाठ आदिके अपूर्ण पत्र संग्रह किये गये हैं ।



## ग्रन्थकार-सूची

<b>अकलङ्कदेव</b>	
अकलङ्कस्तोत्र	१८२, १८३, २४९, ३१३
अकलङ्काष्टक	२७७
अष्टशती	९०
तत्प्राथम्यराजवातिक	८, ९, २५५
न्यायवि. मन्व्यालङ्कार	२२१
प्रतिष्ठाकल्प	२१४, २६१, २६२
प्रवचनप्रवेश	१०१
प्रायश्चित्तविनि	५८
लघीयस्त्रय	१०२
शब्दानुशासन	१११, २९०
स्वरूपसम्बोधनपञ्चविंशति	३१, ३२, ३३, २०६
<b>अगलदैव</b>	
चन्द्रप्रभपुराण	१४५, १४६, २२७, २६७
<b>अजितसेन</b>	
अलङ्कारचिन्तामणि	१३५
<b>अट्ट अथवा अहंहास</b>	
अट्टमत (मेघलक्षण)	२७३
<b>अनन्तपण्डित</b>	
वाक्यमञ्जरी	१९२
<b>अनन्तधीर्य</b>	
प्रमेयरत्नमाला	१००, १०१, २२१
<b>अणभट्ट</b>	
तर्कसंग्रह	९४
<b>आप्यदीक्षित</b>	
कुत्रलयानन्द	१३६
<b>अभयनन्दी</b>	
कर्मप्रकृतिनिरूपण	२०२
<b>अभयसूरि सिद्धान्तचक्रवर्ती</b>	
द्वादशाङ्ग व्याख्यान	४८
<b>अभिनवगुप्त</b>	
लोकलोचनालङ्कार	१३७

<b>अभिनवचन्द्र</b>	
अश्वशास्त्र	२७६
<b>अभिनवचन्द्रम</b>	
अश्वपरीक्षा	२४७
<b>अभिनव पंप ( नागचन्द्र )</b>	
पम्परामायण	१२६
रामचन्द्रपुराण	२२८
<b>अभ्रदेव</b>	
त्रैलोक्यविधानकथा	२३६
<b>अमरसिंह</b>	
अमरकोश	११४, ११५, ११६, २२१, २२, २६५, २९०,
अमरकोष (वनोषधिवर्ग)	२९०
<b>अमरक</b>	
अमरुशतक	११९
<b>अमरेन्द्र</b>	
एकाक्षरनाममाला	११७
<b>अमलानन्द</b>	
वेदान्तकल्पतरु	१०३
<b>अमितगति</b>	
उपासकाचार	४०
धर्मपरीक्षा	१७५
परमात्मस्वरूप	२०६
श्रावकाचार	६९, ७०
सामायिकपाठ	१८१
<b>अमितचन्द्र</b>	
समयसारवृत्ति	२८
<b>अमृतानन्द मुनि</b>	
न्यायदी-वलोविवेक	९६
<b>अमृतानन्द योगी</b>	
अलङ्कारसंग्रह	१३५, २२५, २९३

अमोघवधे	
प्रबन्धोत्तररत्नमाला	५६, ५७, २०९, २८६,
अच्यप्य	
रत्नत्रयविधान	२८९
अच्यप्यार्ये	
प्रतिष्ठासारसंग्रह	२१५
अरिष्टनेमि	
श्रीदेवताकल्प	२७६, ३००
अर्हदास	
पुरुदेवचम्पू	
मुनिमुन्नतकाव्य	१२७, १२८, २२४, २६६, २९२
मुनिमुन्नतकाव्यटीका	१२८
मुखबोधिनी	२९२
अरवघोष भिन्न	
द्विजवदनचपेटा	२०९
असग	
वर्द्धमानकाव्य	१३२, १३३
आचण्ण	
श्रीपदाशीति	७०, ७१
आदिनाथ	
धन्यकुमारचरित	२३२
आदियण्ण	
अनन्तव्रतचरित	१४९
आनन्दवर्धन	
काव्यालोक	१३६
आर्यप	
जिनेन्द्रकल्याणाभ्युदय	८१
आशाधर	
भनगारधर्मासुत	१४, ३५, २०६
अर्हस्तोत्र	१८४
अर्हभक्ति	२५०
क्रियाकलाप	२४८
चतुर्विंशतिजिनपूजा	८५
जिनयज्ञकल्पदीपक	८१
ज्ञानदीपिका	४४
प्रतिष्ठासारोद्याय	८२, ८३, २१६, २६२, २८८

धन्यकुमुदचन्द्रिकाटीका	५९
श्रुतभक्ति	२४९
सत्यभक्ति	२४९
सरस्वतीस्तोत्र	१९५
सागारधर्मासुत	७४, ७५, ७६, २१३, २८७
सिद्धचक्रपूजा	२२०
सिद्धचक्रार्चनाष्टक	२२०
सिद्धस्तोत्र	१९६
सूक्तिमुक्तावली	२६०
स्तोत्रसंग्रह	२७९
अशाधर आदि	
श्रावकाचारसंग्रह	२८६
संग्रह	२०१
स्तोत्रसंग्रह	१९७
इन्द्रदेवरस	
श्रीपालचरित्र	२३४, २३५
इन्द्रनन्दी	
जिनसंहिता	८१, २१४, २६१
ज्वालनीकल्प	२४४, ३००
त्रैवर्णिकाचार	४७
नीतिसारसमुच्चय	५१, २०९, २८५
पार्वनाथमन्त्राष्टक	१७०
पार्वनाथाष्टक	१९०
प्रायश्चित्तविधि	५८
श्रुतावतार	१६४
इरुगोल	
न्यायकन्दलीटीका	९६
उमादित्य	
कल्याणकारक	२३९
उदयादित्य भद्र	
अष्टाङ्गहृदय	१६५
उदयार्क	
योगाष्टक	२५१
उमास्थाति ( उमास्थामी )	
तत्त्वार्थसूत्र	४५, ४६, २०८, २५९, २८५
एकसन्धि	
जिनसंहिता	८१, २१४, २८७, ३०७

<b>कनकनन्दी</b>	
तिभंगी	२०२
त्रिभंगिटीका	१०
पयडिसत्तट्टाणकी टीका	१४
<b>कमलभव</b>	
शान्तीस्वरपुराण	१४८
<b>कर्णपार्य</b>	
नेमिनाथपुराण	१४७, २२८
<b>कल्याणकीर्ति</b>	
आरुतस्वभेदाष्टक	२३
चिन्मयचिन्तामणि	२३, २४, २०५
ज्ञानचन्द्राभ्युदय	१२३, १५२, २२४, २३१, २९५
द्वादशानुप्रेक्षा	४९
नागकुमारषट्पदि	२३३
सिद्धराशिवर्णन	२१
<b>कल्याणकीर्ति आदि</b>	
संग्रह	२०१
<b>कविमाल नागार्जुन</b>	
कर्मपरीक्षा	२४१
<b>कार्तिकेय</b>	
बारस अणुपेहा अथवा अणुपेवखा	५९
<b>कालिदास</b>	
अभिज्ञानशाकुन्तल	१३४
कुमारसम्भव	१२०
मालविकाग्निमित्र	१३४
मेघसन्देश	१२८, १२९
रघुवंशकाव्य	१३०, १३१
विक्रमोर्वशीय	१३४
श्रुतबोध	१३९
<b>कुमुदचन्द्र</b>	
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	१८५
प्रतिष्ठातिलक टिप्पणि	८२, २१५
<b>कुमुदेन्दु</b>	
प्रतिष्ठाकल्पटिप्पणि	२६२
<b>केदारभट्ट</b>	
वृत्तरत्नाकर	१३७, १३८, १३९, २२५, २६६

<b>केशव</b>	
श्रीपालचरित	२९६
<b>केशव</b>	
घातुपाठ	१०८
<b>केशवण</b>	
त्रिभंगीवृत्ति	१०
<b>केशव मिश्र</b>	
तर्कपरिभाषा	९४
तर्कभाषा	९४
<b>केशवसेन</b>	
चतुर्विंशतिस्तव	२५०
<b>केशवार्थ</b>	
प्रश्नशास्त्र	२७४
<b>केशिराज</b>	
शब्दमणिदर्पण	१०९, ११०
<b>कोण्डकुन्द</b>	
क्रियाकलाप	२४७
दशभक्ति	१७५, २४८
नियमसार	५१
पंचतथिकाय	१६, २०४
पवयणसार	१५, २०४
बारस अणुपेहा अथवा अणुपेवखा	५९, २१०
मूलाचार	६०
मोक्खपाहुड	१६, १७
रयणसार	६५, ६६, २१२
श्रुतभक्ति तथा चारित्रभक्ति	१८१
समयपाहुड	२०, २८४
समयसार	२८, २०४, २८४
समयसारचूलिया	२८
<b>कोण्डकुन्द आदि</b>	
क्रियाकलाप	१७६
क्रियापाठ	१७६, १७७, १७८, ३०२, ३०३
क्रियापाठादिसंग्रह	३०५, ३०६
रयणसारदिसंग्रह	३०६
सहजात्मप्रकाश	३०
संग्रह	२००
स्तोत्रसंग्रह	१९७

<b>कोण्डकुन्द तथा पूज्यपाद</b>	
क्रियाकलाप	२४७, २४८
दशमवित	१७९, २४८, २७७, ३०३
दशमवित्यादिसंग्रह	१७९, २४८
नन्दीश्वरभक्ति	१७९, १८०
<b>कोमटदेव भूपाल</b>	
शृङ्गारदीपिका	१३७
<b>खण्डनाकन्द</b>	
तत्त्वदीपिका	९३
<b>गङ्गेश्वर</b>	
तर्कचिन्तामणि	२२०
<b>गणेश्वर</b>	
तत्त्वचिन्तामणि	९३
<b>गर्गेश्वर</b>	
गार्ग्यसंहिता	२४१, २४२
<b>गुणनन्दी</b>	
ऋषिमण्डलस्तोत्र	१८४
जेनेन्द्रप्रक्रिया	१०८, २९०
<b>गुणनन्दी मुनि</b>	
ऋषिमण्डलाराधना	२१६
<b>गुणभद्र</b>	
आत्मामुशासन	२२, २३, २०५
उत्तरपुराण	१४४, १४५, २२६, २६७, २९४
<b>गुणवर्म</b>	
पुष्पबन्तपुराण	१४८, २२८
<b>गुरुदास</b>	
योगसार	८०
<b>गुरुराम</b>	
गोम्मटेश्वर	२३८
<b>गौतमस्वामी</b>	
ऋषिमण्डलस्तोत्र	२७७
<b>चन्द्रवर्ति ( ..वि )</b>	
नानार्थकोश	११७
<b>चतुरास्य</b>	
चतुरास्यनिघण्टु	११७

<b>चन्द्रवर्ण</b>	
यशोधरचरित	२३४
<b>चन्दन वर्णी</b>	
नन्दीश्वरव्रतकथा	१६०
यशोधरचरित	१५६
<b>चन्दय उपाध्याय</b>	
तीर्थयात्राचरित	२३८
त्रैलोक्यभूषणचरित	२३१, २३२
नन्दीश्वरव्रतकथा	१६०
स्थादादमतसिद्धान्त	२०४
<b>चन्द्रकीर्ति</b>	
कर्मवहनविधान	२१६
परमागमसार	५२, ५३
<b>चन्द्रम उपाध्याय</b>	
संक्षिप्तश्रुतज्ञानविधान	२२०
<b>चन्द्रम कवि</b>	
गणितविलास	१६८, २४४
गुम्मटस्वामीचरित	२७०
गोम्मटेश्वरचरित	१६४, २३८, २९८
यशोधरचरित	१५६
लोकस्वरूप	१७३, २४६, ३००
घान्तीशनुति	२७८
<b>चन्द्रशेखर कवि</b>	
दंपादेवीगद्य	२३८
रामचरित	२९६
<b>चन्द्रसागर वर्णी</b>	
जिनमनितनय	४३, ४४, २५९
मुस्लाशास्त्र	२८६
<b>चन्द्रसेन मुनि</b>	
केवलज्ञानहोरा	२९९
केवलज्ञानहोराशास्त्र	१६६
<b>चामुण्डराय</b>	
चारित्रसार	४३
त्रिषष्टिलक्षण हापुराण	१४६, २२७, २९४
लोकोपकारक	२५२
उक्षिप्तचतुर्विधतितीर्थचतुरास्य	२३८

गीतबीतराग	२५२
चाङ्गीर्ति आदि संग्रह	२०१
चिह्नण	
बाहुबलिचरित	१५५, २३३
चिस्मुख मुनि	
छण्डनदीपिका	९२
प्रमाणमाला तात्पर्यटीका	१००
चिदानन्द कवि	
बुद्धिसागरचरित	२३३
जम्भ	
अनन्तनाथपुराण	१४१
जयदेव	
चन्द्रालोक	१३६
जलहण	
शुक्तिमुक्तावली	२००
जिनचन्द्र	
रोहिणीचरित	१५७, २३४
सिद्धतसार	२१
जिनदत्त सूरि	
विवेकविलास	१९९
जिनदेवण	
श्रेणिकचरित	२३५
जिनसेन	
आदि पुराण	१४३, १४४, २२६, २९३, २९४
जिनसहस्रनाम	१८८, २७८
जिनसहस्रनामस्तोत्र	१९५
त्रयविंशकाचार	२८५
पार्श्वभ्युदय	१२६
सहस्रनाम मन्त्र	८९
सहस्रनाम स्तोत्र	२५०
जिनसेन (द्वितीय)	
हरिवंश पुराण	१४९
जिनसेन आदि	
स्तोत्रसंग्रह	६०४

जिनैन्द्रबुद्धि	
काशिकावृत्ति	१०७
काशिकावृत्तिविवरणपञ्चिका	२६५
जैमिनि	
जैमिनिभारत	३०९
दण्डी	
काव्यादर्श	१३६, २२५
दयापालमुनि	
रूपसिद्धि	१०९, २९०
दामोदरभट्ट	
आरोग्यचिन्तामणि	१६५
दिवाकरमुनीन्द्र भट्टारक	
तत्त्वार्थलघुवृत्ति	४५
दुर्गासिंह	
उणादिवृत्ति	१०४
पञ्चतन्त्र	२९७
देवण	
तत्त्वप्रदीप	९३
देवचन्द्री	
षडारचक्र	२५१
षडारचक्रमाला	१९४
मिद्धिप्रयस्तोत्र	१९६
देव८५	
रायविजय	२६९
देवरकवि	
धर्मशर्माभ्युदयटीका	१२५
देवसेन	
आराहणासार	३८, २०६
आलापपद्धति	९२
दसणसार	२०३
द्वेनेन्द्रमुनि	
बालप्रहृचिकित्सा	२७१
देषोत्तम	
नामार्यरत्नाकर	२९०
दोषुय	
चन्द्रप्रभचरित	१५०, २३०

	<b>धनञ्जय</b>	
नामसाला	११८, २२२, २९१, ३०९	
राधवपाण्डवीय (द्विसन्धान)	१३१, १३२	
विषापहारस्तोत्र	१९२, १९३	
	<b>धन्वन्तरि</b>	
धन्वन्तरिनिघण्टु	२३९	
	<b>धर्मकीर्ति</b>	
सम्यक्त्वकौमुदी	१६२, १६३, २३७	
	<b>धर्मचन्द्र</b>	
प्रश्नोत्तरचतुर्विंशतिजिनस्तवन	३०४	
	<b>धर्मदास</b>	
विदग्धमुखमण्डन	१३३, २६६	
	<b>नन्दिसूरी</b>	
कुमारसम्भव दीपिका	१२०	
	<b>नयसेन</b>	
धर्माभूत	१६०, २३६, २९७	
ललिता ऋग्वेद कथा	१६१	
	<b>नागचन्द्र</b>	
अर्हृष्टक	१८४	
जिनमुनितनय	२०७	
	<b>नागचन्द्र (अभिनव पंप)</b>	
पंपरामायण	१२६	
रामचन्द्रपुराण	२२८	
	<b>नागराज</b>	
पुष्याल्लवकथा	१६१, २३६	
	<b>नागधर्म</b>	
अभिधानरत्नमाला	११४	
कर्णटकभाषाभूषण	१०४	
काव्यालोकन	१३७	
नानार्थरत्नाकर	११७	
	<b>नागसेन मुनि</b>	
तत्त्वानुशासन	२०२	
	<b>नित्यनाथसिद्ध</b>	
रसरत्नाकर	१६६	
	<b>नीलकण्ठ</b>	
सम्यक्त्वकौमुदी	१६३	

	<b>नेमण्ण</b>	
ज्ञानभास्करचरित्र		१५२, २३१
	<b>नेमरस</b>	
सुदर्शनचरित्र		२६९
	<b>नेमरस कवि</b>	
लोमदत्तचरित्र		२३४
	<b>नेमिचन्द्र आचार्य</b>	
आसवतिभंगी		१
कम्मपयाडि		२, २०२, २५४
गोम्मटसार		४, २८४
गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)		२५४, २८३
गोम्मटसार (जीवकाण्ड)		२०२, २५४, २८२
जिनसंहिता		२१४
तिभंगी		९, १०
तिलोयसार	१७१, १७२, १७३, २४६, २७६, ३०१, ३१०	
दब्बसंग्रह	१०, ११, १२, १३, २०३, २५५, २५६	
ध्वजारोहणविधि		८१
पयडिसमृक्कित्तण		१४
पंचपरुवणा		१५
पंचसत्तावण्ण		१५
प्रतिष्ठातिलक		८२, २१५, २८७
यन्त्रसंग्रह		८३
लडिसार		१७, १८, २५७, २८४
लीलावती		२९७
वीसपरुवणा		१८, १९, २०, २०४
सत्ततिभंगी		२०
	<b>नेमिचन्द्र आदि</b>	
गोम्मटसारादिसंग्रह		२५४
	<b>नेमिचन्द्र कवि</b>	
अर्द्धनेमिपुराण		२२६,
वसन्ततिलकाचरित्र		२३४
	<b>नेमिचन्द्र यति</b>	
उद्योगसार		३९
लीलावती		१३२
	<b>नेमिनाथ</b>	
नीतिवाक्यामृतटीका		२९३

<b>पट्टाभिराम</b>	
रत्नशेखरचरित	२३४
<b>पदुमण्ण</b>	
सुवर्णभद्रचरित्र	१५८
<b>पद्म</b>	
वर्द्धमानचरित	२३४
<b>पंप</b>	
आदिपुराण	१४२, २२६, २९३
रामचरित (पंपरामायण)	१३२
<b>पद्मनन्दी आचार्य</b>	
आलोचना	१७५
उपासकसंस्कार	४१, २०७, २८४, २८५
एकत्वसंपत्ति	४२, ४३, २०७
क्रियाकाण्डचूल्का	२४८
जंबूदिग्द्वयपण्णति	२४६
दानपञ्चाशत्	४७
द्वादशानुप्रेक्षा	४८
धर्मोपदेशामृत	५०, ५१
पद्मनन्दिपञ्चविंशति	५२, २०९
भुजबलीकल्याणव्रतविधान	२१८
रत्नत्रयकथा	२३६
सद्गोघचन्द्रोदय	२८, ७४
सरस्वतीस्तोत्र	१९५
<b>पद्मनन्दी वर्णी</b>	
भुजबलिकल्याणव्रत विधान	८७
<b>पद्मनाभ</b>	
जिनदत्तचरित	१५०, १५१, २६८, २९४, २९५, ३०९
जिनदत्तरायचरित	२३०
पद्मावतीचरित	१५४
यशोधरचरित	१५७
<b>पद्मप्रभवेश</b>	
पार्ष्वनाथस्तव	२७८
<b>पद्मराज</b>	
भाषिकजनकल्पवृक्ष	२९१
<b>पाणिनि</b>	
कारकान्यसम्बन्धपरीक्षा	१०७

<b>पाण्डुदासयति श्रीधर भट्ट</b>	
न्यायकन्दली	९६
<b>पाण्ड्य भूपति</b>	
भव्यानन्दशास्त्र	२१०
<b>पायण वर्णी</b>	
अहिंसाचरित	२२९
ज्ञानचन्द्रचरित	१५२, २३१
धर्मपरीक्षा	३०२
<b>पार्ष्वपंडित</b>	
पार्ष्वनाथचरित	१५४
पार्ष्वनाथपुराण	१४८, ३०९
<b>पूज्यपाद</b>	
इष्टोपदेश	३८, ३९, २०७
उपासकाचार	४१
चन्द्रप्रभस्वामिघोष	२५०
चैत्यभक्ति	१७९
जैनेन्द्र	१०८
शान्त्यष्टक	१९३
समाधिशातक	२८, २९, ३०, २०६, २५८
सर्वार्थसिद्धि	७३, ७४
<b>पोन्न</b>	
जिनाक्षरमाला	१८८
<b>प्रदोम्यसूरि</b>	
शब्दमञ्जरी	११९
<b>प्रभाचन्द्र</b>	
जैनेन्द्रन्यास	२९०
प्रतिक्रमणत्रयकी टीका	१८१
<b>प्रभाचन्द्र आचार्य</b>	
तत्त्वार्थवृत्ति	४५
तत्त्वार्थसूत्र	२०८
न्यायकुमुदचन्द्र	९६
प्रमेयकमलमार्तण्ड	१००, २८९
व्रतस्वरूप	६६, ६७, ६८, २१२, २६०, २८६
सिद्धान्तसारवृत्ति	२१
<b>प्रभाचन्द्र देव</b>	
दानसार	४७

प्रवरकीर्ति	
तत्त्वनिश्चय	९३
बन्धुवर्म	
जीवसम्बोधन	२४, २०५
बालचन्द्र	
द्रव्यसंग्रह लघुवृत्ति	१३
बन्धूपदेश	१६
बालचन्द्रदेश	
तत्त्वरत्नप्रदीपिका	४४
बाहट	
श्रीषण्णपाठ	२७०
बाहुबली	
गोम्पटेश्वरचरित	१५०
द्वादशानुप्रेक्षा	४९
धर्मनाथपुराण	१४६, २२७
नागकुमारचरित	१५४, २३२, २३३, २६८, २९५
पद्मावतीयक्षज्ञान	२५२
बोम्बरस	
गुणरत्नमाला	१५९
जीवन्धरषट्पदि	२३०
ब्रह्म	
चन्द्रप्रभचरित्र	१५०
ब्रह्मणाक	
जिनभारत	२९४
ब्रह्मदेव कवि	
समयसार	२०
ब्रह्मदेव गणक	
करणप्रकाशिका	२४१
ब्रह्मदेव ( ब्रह्मशिव )	
समयपरीक्षा	१७५
ब्रह्मसूरि	
अश्रिषेकपाठ	८३
श्रीवर्णिकाव्यार	४७, २०८
प्रतिष्ठातिलक	८२, २१५, २६२, २८६
ब्रह्मसूरि कवि	
जीवन्धरचरित	१५१

अष्टि	
अष्टिकाव्य ( रामकथा )	१२६
भर्तृहरि	
शतकत्रय	२२५
शतकद्वय ( नीति तथा शृङ्गार )	१४०
भानुकीर्ति	
वाङ्मयवाष्टक	१९३
भारवि	
किरातार्जुनीय	११९
भावसेन त्रैविद्य	
कातन्त्ररूपमाला	१०४, १०५, १०६, १०७, २२३, २८९
विश्वतत्त्वप्रकाश	१०३
भास्कर	
जीवन्धरषट्पदि	१५१, २३०, २३१
भास्करनन्दी	
तत्त्वार्थसुखबोधवृत्ति	४५
ध्यानस्तव	२६
भूतबलि	
महाबन्ध	२५७
भूपाल	
जिनचतुर्विंशतिका	१८७
भूपाल आदि	
स्तोत्रसंग्रह	१९६, १९७
भोजराज	
चम्पूरामायण	१२३
वैद्यसंग्रह	२४०
मंगरस	
खगेन्द्रमणिदर्पण	२३९, २७०
अयनूपकाव्य	१२४, २२४
शैमिजिनेवासङ्गति	१३७, २३३, २६८, २९५, २९६
प्रभञ्जनचरित	१५५
शृङ्गारसुधाञ्जलि	१३४
श्रीपालचरित	२६९
सम्यक्त्वकीर्तनी	१६३, २३७
सूपशास्त्र	२७७
हरिबंशपुराण	२२८, २२९

काव्यप्रकाश	मंझिट	१३५, १३६
कृष्णारसम्भवनीका	महिनाराय	१२०
मेषसन्देशटीका		१२१
शिखुपालवधटीका		१३४
कामचाण्डालिनीकल्प	मह्लिषेण	२४४
ज्वालिनीकल्प		२४५
त्रिषष्टिलक्षणमहापुराण		१४६
नागकुमारकाव्य		२२४
नागकुमारचरित		१५३, १५४, २९५
नागकुमारपञ्चमीकथा		१६०
नागकुमारपञ्चमीचरित		२३२
पद्मावतीकल्प		३००
भैरवपद्मावतीकल्प		२४५, २७५
भैरवपद्मावतीस्तोत्र		१९२
सज्जनचित्तवल्लभ		७१, ७२, ७३, २१२, २१३, २६०, २८६
सरस्वतीकल्प		२४६, ३००
मुक्तावलीप्रकाश	महादेव भट्ट	१०२
गणितसार	महावीर	१६८, १६९
प्रबुधचरित	महासेन	१५५
शिखुपालवध	माघकवि	१३३, १३४
उद्योगसार	माघनन्दी आचार्य	२८४
चतुर्विंशतिस्तोत्र		२७८
पदार्थसार		१३, १४, २०३, २०४
शास्त्रमारसमुच्चय		६८, ६९, २१२
श्रावकाचार		२१२, २८६
चतुर्विंशतितीर्थह्रस्वस्तोत्र	माघनन्दी प्रती	१८६
स्तोत्रसंग्रह	माणिकदेव	१९६
परीक्षामुख	माणिक्यनन्दी	९८

परीक्षामुखसूत्र		२२१
चन्द्रषष्ठिकथा	माघबचन्द्र	१३५
त्रिलोकसारवृत्ति		३०१
महोत्तदर्पण	माघबभट्ट	२४३
भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्ग	१९१, २५१
स्तोत्रसंग्रह	मानतुङ्ग आदि	१९७, २७९, ३०४
आञ्जनेयचरित	मायण	२६८
मुनिरगले		६०
अञ्जनादेवीचरित	मायण सेट्टि	२२९
तार्किकरक्षा	मायिभट्ट	९५
प्रबोधसाधन		९८
परीषहजय	मुकुन्दकवि	५३
चन्द्रनाथाष्टक	मुनिचन्द्र	१८७
चन्द्रप्रभचरितव्याख्यान	मुनिचन्द्र विद्यार्थी	१२३
चिन्तामणिवृत्ति	यक्षवर्म	१०८
तिलोयपणसि	यतिवृषभ	१७१
सन्देशध्वान्तदीपिका	यशःकीर्ति	२९३
अमनाशीति	योगीन्द्रदेव	३५, ३६
जोगसार		२५
निजाष्टक		१८९
परमप्ययासु		२६, २०५
अपरराजितेश्वरशतक	ररनाकरकवि	३०
भरतेशबैभव		१५५, १५६
रत्नाकरशतक		२७
शतकत्रय		२७
शतकद्वय		२७

शेष्यारोहणसन्धि	१५८
षोडशस्वप्नसन्धि	१५८
रत्नाकर वर्णी	
त्रिलोकशतक	१७३
भरतेशवैभव	२३३, २३४, २९६
रत्नाकरशतक	२८४
रत्न	
अजितनाथ पुराण	१४१
रविचन्द्र मुनि	
आराधनासमुच्चय	३७, ३८, २०६, २०७
रविषेण	
पद्मपुराण	१४७, २२८
राजादित्य	
गणितविलास	२७५, २९९, ३००
गणितसंग्रह	१६९
रामचन्द्र	
अनेकार्यनाममाला	११४
रामचन्द्र द्वाविड	
नानार्थरत्नाकर	११७
रामचन्द्र मुनि	
पुष्यासूक्तकथा	१६१, २३६
रामसेन मुनि	
तत्त्वानुशासन	८
रायण कवि	
मण्डकदेवचरित	१५६
श्रुतकीर्तिमुनिचरित	१५७
लक्ष्मण	
यशोधरकाव्यटीका	१३०, २९२
लक्ष्मीश कवि	
जैमिनिभारत	२३१, २९४
ललितकीर्ति	
आदिपुराणटिप्पणी	१४४
उत्तरपुराणटिप्पणी	१४४
लिङ्गयसूरी	
अमरकोशपदविद्युति	११६
बरदराज	
तार्किकरक्षा	९५, २२०
सारसंग्रह	१०३
बरदराज कवि	
न्यायकुसुमाञ्जलि	९६
बरकृषि	
प्राकृतमण्डरी	१०९
बीगद्यतक	२७१

ब्रह्मजातक	वराहमिहिर	२९९
कातन्त्रविस्तर	वर्धमान कवि	१०७
श्रीपालचरित		२३५
दशभक्त्यादिसंग्रह	वर्द्धमान मुनि	२४९
आचारवृत्ति	वसुनन्दी	३६
नेमिनिर्वाणकाव्य	वाग्भट	१२५
वाग्भटालङ्कार		१३७
तत्त्वकौमुदी	वाचस्पति मिश्र	९३
वर्धमानपुराण	घाणीवल्लभ	१४८
पाण्डव पुराण	वादिचन्द्र	१४८
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	१८४
प्रमाणनिर्णय		९९
यशोधरकाव्य	१२९, १३०, २२४, २९२	१५७
यशोधरचरित		१५७
वादिराज तथा धनञ्जय		
एकीभाव तथा विषाणहारस्तोत्र		१८५
वादीभसिंह		
मन्त्रचूडामणि	१२०, १२१, २२४, २९१	१२१
गद्यचिन्तामणि		२०९
द्वादशानुप्रेक्षा		१३
नवपदार्थनिश्चय		१०४
स्याद्वादसिद्धि		
वासुदेव		
न्यायमारपदपञ्चिका		९७
वासुपूज्य		
दानशासन		४७
दानसार		२०८
विजयकीर्ति मुनि		
श्रुतस्कन्धाराधना		२१९
सरस्वतीकल्प		२४६
विजयण		
द्वादशानुप्रेक्षा	४८, ४९, २०८, २५९, २८५	२३३
नागकुमारषट्पद		२३३
विजयण मुनि		
समवसरणस्वरूपविवरण		२३१

<b>विजय वर्णी</b>	
आदीश्वरजन्माभिषेक चरित	१५०
द्वादशानप्रेक्षा	३०७
श्रुतज्ञानविधान	२१९
श्रुतस्कन्धा रावना	२१९
<b>विट्ठल</b>	
विदग्धचूडामणि	११८, ११९, २९०
<b>विद्यानन्द</b>	
अष्टमनन्दीश्वरपूजा	२१६
<b>विद्यानन्द स्वामी</b>	
अष्टसहस्री	९०, २८९
आप्तपरीक्षा	९१
तत्त्वार्थश्लोकवातिक	९३, १०३, २२०
पत्रपरीक्षा	९७, २२१
पार्श्वनाथस्तोत्र	१९०
प्रमाणपरीक्षा	९९
सत्यशासनपरीक्षा	१०३
<b>विद्यानन्दी आदि</b>	
कलिकुण्डारावनादिमग्रह	२६३
<b>विद्यानाथ</b>	
प्रतापश्रीय	१३६, १३७
<b>विद्यामाधव</b>	
मुहूर्तदर्पण	२७४
<b>विनश्चरनन्दी</b>	
पट्टकारक	११३
<b>विश्वनाथ</b>	
भाषाकुसुममञ्जरी	२८१
<b>विश्वनाथ भट्टाचार्य</b>	
भाषापरिच्छेद	१०२
सिद्धान्तमुक्तावली	१०३
<b>विष्णुमेन आ०</b>	
समवसरणस्तोत्र	१९४, १९५, २५१, २८
समवसरणाष्टक	१९४
<b>वीरनन्दी</b>	
आचारसार	३६, ३७, २५८
चन्द्रप्रभचरित	१२२, १२३
<b>वीरसेन</b>	
घबलाटीका	२५६
<b>वीरसेन और जिनसेन</b>	
जयधवलटीका	२५५
<b>श्रुतविलास</b>	
धर्मपरीक्षा	१७४, २७७, ३०२
<b>वेदव्यास</b>	
कण्डवमारत	१४५

<b>वेमभूपाल</b>	
शृङ्गारदीपिका	१३४
<b>शङ्करभट्ट</b>	
पद्यावनीयक्षमाण	२५२
<b>शङ्करानन्द</b>	
अथर्वशिक्षोपनिषद्दीपिका	९०
<b>शब्दब्रह्म</b>	
चन्द्रप्रभगण	१८६
<b>शर्वधर्म</b>	
कातन्न	२३३
<b>शशधर शर्मा</b>	
गीनमसिद्धान्त	९२
न्यायसिद्धान्तदीप	९७
<b>शाकटायन</b>	
धानुपाठ	१०८
धानुपाठादिसंग्रह	२२३
शब्दानुशासन	१११
श.कटायन अमोघवति	११३
<b>शान्तण वर्णी</b>	
अनन्तकुमारीचरित	२२९
<b>शान्तरस</b>	
योगरत्नाकर	७९
योगामृत	८०
<b>शान्तिरस आदि</b>	
योगरत्नाकरादिसंग्रह	३०७
<b>शान्ति मुनि</b>	
पुरुदेवचरित	१५५
<b>शान्तिवीरिणी मुनि</b>	
अनुशान्तितीर्थङ्करपुराण	१४६
पार्श्वनाथचरित	१५४
<b>शान्तिनाथ</b>	
सुकुमारचरित	२६९
<b>शान्तिराज कवि</b>	
पञ्चसन्धानकाव्य	२९१
शान्तिराजकविप्रगणित	२९८
सरसजनाचन्तामणि	२९२
<b>शिवकोटि आचार्य</b>	
रत्नमाला	६५, २११
बहुराराधना	१६१, १६२, २३६
<b>शिशुमायण कवि</b>	
अञ्जनाचरित्र	२६८
त्रिपुरदहनचरित	१५२, १५३
<b>शुभचन्द्र चरित</b>	
ज्ञानार्थ	८०

नरपिङ्गलि	२४३
नीतिरसायनसतक	१३९
<b>शुभचन्द्र देव</b>	
परीक्षामखवृत्त	९७
<b>शुभचन्द्र भट्टारक</b>	
चरित्र सिद्धिदत्तपूजाविधान	८५
<b>श्रीपति</b>	
द्वैतज्ञवल्लभ	२४३
<b>श्रीधर</b>	
बंशामृत	२७२, २७३
<b>श्रीधराचार्य</b>	
गणितसार	१६९
ज्योतिर्ज्ञानविधि	२४२
<b>श्रीहर्ष</b>	
क्षणहनग्रन्थ	१२१
नेषधकाव्य	१२६
<b>श्रुतकीर्ति</b>	
आरोग्यतोत्र	३०३
<b>श्रुतकीर्ति देव</b>	
विजयकुमारी चरित	२३४
<b>श्रुतमुनि</b>	
आसवसंतति	१
त्रिभंगीटीका	१०
परमागमसार	१५
<b>सकलकीर्ति भट्टारक</b>	
वृषभनाथपुराण	२९४
श्रीपाल चरित	१५७
<b>सकलचन्द्र मुनि</b>	
दृष्टाष्टक	१८९
<b>सदानन्द</b>	
आदिनाथ यक्षगान	२५१
<b>सनत्कुमार</b>	
वास्तुशास्त्र	१७४
<b>समन्तभद्र</b>	
आत्ममीमांसा	९१, ९२, २२०
केवलज्ञानचूडामणि	२४१
चन्द्रप्रभस्तोत्र	१८६
चिन्तामणिटीका (?)	२८९
चिन्तामणिटीका (?)	१०७
जिनशतक	१८७, १८८, २५०
युक्त्यनुशासन	१०२, २६४
रत्नकरण्ड श्रावकाचार	६०, ६१, ६२, ६३, ६४

	६५, २१०, २११, २६०,
	२८६
<b>स्वयम्भूस्तोत्र</b>	१९७, २७९
<b>समन्तभद्र आदि</b>	
रत्नकरण्डश्रावकाचारादिसंग्रह	१९९
संग्रह	२००, २०१
स्तोत्रसंग्रह	३०४
<b>सातण वर्णी</b>	
अनन्तमती चरित	२९७
<b>सिंहराज</b>	
चिन्मय चिन्तामणि	२४
हृदय नीति	१४१, २९३
<b>सिंहसूरि</b>	
लोकतत्त्व	१७३
लोकतत्त्वविभाग	३०१
<b>सुखप्रकाश मुनि</b>	
न्यायदीपावली की टीका	९६
<b>सुन्दर</b>	
इन्द्रदीपिका	१६५
<b>सोमदेव</b>	
द्वादशानपेक्षा	४८, २०९
नीलवाक्यामृत	१३९, १४०, २९३
रुक्मिणीकथा	२६६
<b>सोमनाथ</b>	
कल्याणकारक	१६५
<b>सोमप्रभ</b>	
सूक्तिमूक्तनावली	७६, ७७, ७८, ७९, २१३
	२६०, २८७
<b>हरिचन्द्र</b>	
धर्मशर्माभ्युदय	१२३, १२४, १२५, २९०, ३०९
<b>हरिहर</b>	
ताकिकरक्षा की टीका	९५
<b>हस्तिमल्ल</b>	
प्रतिष्ठाविधि	२१५
<b>हस्तिमल्ल कवि</b>	
वृषभनाथगद्य	१९३
वृषभनाथपुराण	२२८
श्रीपुराण	१४८, १४९
<b>हेमचन्द्र</b>	
अभिधानचिन्तामणि	११५
काव्यानुशासन	१३६

